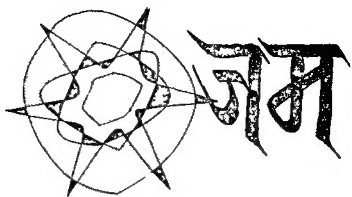
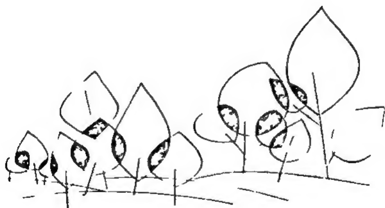
जग गया सूरज


जग



नया सूरज

अभिमन्यु अनत



सूर्य प्रकाशन मन्दिर
बीकानेर

प्रकाशक   पूर्व प्रकाशन मंदिर   दिल्ली
संस्करण   १९७३
मूल्य   तेरह रुपये मात्र
मुद्रक   विकास आर्ट प्रिंटर्स   शाहदरा   दिल्ली

JAM GAYA SURAJ   a novel   Abhi

चूकि इस उपन्यास मे
तुम्हारा नाम आ गया है
इसलिए यह समर्पित है
तुम्ही को
तुम अपने प्यार की गरमी से
पिघला देना
सूरज को
जब वह जम जायेगा

—अभिमन्यु अनत

जम गया सूरज

१

उसे समुद्र से प्यार था। बेहद प्यार था उसे उन फेनिल लहरों से। ज्वार भाटों से छूटी उन तरंगों को काली चट्टानों से टकराते देख उसे उतना ही आनन्द आता था जितना कि अपने लहलहाते खेत की हरियाली से। चट्टानों की कठोरता को वह हमेशा सराहता रहता। वह उसके लिए संकल्प की कठोरता थी। कभी न खंडित होने का संकल्प। वह चाहता कि उसके अपने भीतर भी इसी तरह की दृढ़ता आये। लहरों को भी वह उतना ही महत्त्व देता जितना कि अडिग चट्टानों को। लहरों के प्रण को सराहे बिना वह रह कैसे सकता था। ये वे लहरें थीं जो चट्टान के संकल्प को पहचानती हुई भी अपने प्रण से कभी बाज नहीं आतीं। लहरों ने भी हमेशा यही चाहा कि वे चट्टान को चकनाचूर करके ही दम लें। उनका गर्जन लालमन के कानों में यह कहता सा प्रतीत होता कि हम हार नहीं मानेंगी और जब तक ये चट्टानें चूर चूर नहीं हो जातीं तब तक हमें इनसे टकराते रहने से कोई भी ताकत नहीं रोक सकती।

लालमन को समुद्र से बेहद प्यार था। उतना ही प्यार जितना उसे अपने परिवार से था। उसे लहरों और चट्टानों दोनों पर उतना ही विश्वास था जितना उसे भामा पर था। जिस तरह समुद्र से दूर रहकर भी वह उसके नाद को सुना करता था ठीक उसी तरह भामा से दूर होकर भी वह उसके उन गीतों को सुना करता जो वह उसकी कविताओं के बदले में गाया करती थी। सागर का नीलापन उसे जितना प्यारा था उतनी ही प्यारी उसे अपने खेतों की हरियाली भी थी। उसके लिए समुद्र की अथाह गहराई और भामा की आँखों की स्निग्धता में एक समानता थी। समुद्र का संगीत भी उसे उतना ही प्रिय था जितना कि अपने खेत के पक्षियों का कलरव। फिर भी अगर हर बार *वह समुद्र तट नहीं पहुंच पाता* था तो केवल इसलिए कि वह अपने खेत से कुछ अधिक बँधा होता। अपने स्वन

के मामा का समय निकालना उसके लिए कठिन था। समुद्र उसके खेत से बहुत दूर भी न था, फिर भी अगर रोज वह उसके तट पर नही पहुँचता तो उसका यह भी एक कारण था कि उससे बहुत अधिक घनिष्ठता बढ़ाकर वह उसके महत्त्व को घटाना नही चाहता था। यह उसकी मा की हर समय की कहावत थी कि बहुत मीठे मे पिल्लू पड जाता है। लालमन चाहता था कि उसके भीतर समुद्र के लिए एक तडप रहे। हर वक्त उसके किनारे पहुँचकर वह उस चाह को मिटाना नही चाहता था। उस दिन उसने मामा से भी कहा था कि चीज जितनी दूर और जितनी दुर्लभ होती है आदमी की नजरो मे उसका महत्त्व भी उतना ही अधिक होता है। यह कहते हुए उसे क्या मालूम था कि वह बात उसके जीवन मे उतर आयगी। वह हमेशा सोचता था कि तडपने मे भी एक आनन्द निहित होगा पर जब अवसर आ ही गया तब कही जाकर उसे मालूम हुआ कि वह महगा सौदा ठहरा।

रविवार को अपने खेत का एक चक्कर काटकर वह घर लौट जाता था पर आज उसने ऐसा नही किया। घर को लौटाने वाली उस सीधी पगडडी को न लेकर आज उसने चक्करदार पगडडी को लिया था और इस समय समुद्र के किनारे आ पहुचा था। उसी की तरह समुद्र भी अशान्त था। चाँदी की तरह चम चम चमकती बालू पर बैठ जाने पर हेमन्त की वह धूप उसे और भी प्यारी लगी। प्रवाल रेखा की काली चट्टानो पर फेनिल ज्वारभाटे विद्रोह कर रहे थे। किनारे की लहरें भी उफनती हुई बालू पर काफी दूर तक बढी चली आती। समुद्र के बीच पाल गिराये एक नाव अकेली थी। उसने सोचा शायद इस तरह का दिन बहुत कम होता होगा। ठड के साथ चमकती धूप का उदास दिन। आकाश का यह नीलापन भी कुछ अधिक ही गहरा था जिससे समुद्र का रंग भी काफी चमकीला था। दूध की तरह फेनिल ज्वार भाटो का गर्जन काफी प्रलयकर था मानो वह अपनी सभी ताकत के साथ प्रकृति की उदासी को खण्डित कर देने की बात सोच रहा था। कुछ ही दूरी पर पल्लिक-बीच था। वहाँ रमणीयता तो थी पर उदासी भी थी। लेकिन वह यह भी मानने को तैयार था कि वह उसकी अपनी उदासी थी जिसे वह हर जगह अनुभव कर रहा था। बालू पर जहाँ तहाँ भाव के पशुओं की परछाइयाँ थी जो कि धूप के चमकीलेपन को भी धुधला और उदास बना रही थी।

सचमुच इस तरह का दिन बहुत कम होता होगा। पहली बार वह अपने को होश मे नही पा रहा था। उसके शरीर मे एक अजीब सी शिथिलता थी। उसके स्नायु भी असहाय थे। अपने जीवन मे पहली बार आज उसने मन मे कोई भी काम न किया था। स्वच्छी और उन्नीस नहा होने तो एक भी बधन न टूटता और मनवा मगन की शान्ता ओर जानो। कल उसे लगा लगा था मानो अब

उस खेत म कोई आकर्षण नही था। वह लहलहाता खेत उसे निर्जीव-सा लगा था। वहाँ से भागना चाहकर भी वह कल क पेड क नाच बठा ही रह गया था। न जाने कल दवती और जगदीश को भी क्या हो गया था जिसक कारण दोना म से किसी एक ने भी उसस बात नही की थी। यह अवश्य ही अविश्वसनीय था कि दोना को उसकी उदासी का पता न चला हो फिर भी उस उदासी का कारण जानने की उन्होंने कोशिश भी नही की। बाद म लालमन ने सोचा था एसा न करके दोना ने अच्छा ही किया था वरना वह क्या उत्तर देता। उस उदासी का कोई भी कारण मालूम नही था। यह सच था कि मामा की याद न उसे अचानक ही जोरा के साथ जकड़ लिया था पर यही उसकी उदासी का कारण रहा हो वह इस बात को कस मान सकता था। कभी-कभार रह रह कर मामा की याद उस अवश्य ही सता जाती थी पर वह याद उस निर्जीव सा बना दे यह मानन को वह तयार नही था।

वह चट्टाना और उससे टकराती लहरा को देखन लग जाता।

अपने चट्टाना जस प्रण क कारण ही उसन खत के उस चट्टानी भाग म भी सब्जिया की बलें लगा दी थी। इसक बाप न यह कहकर उस भाग को याही बजर सा छोड दिया था कि उस पथरीली जमीन म कुछ नही पैदा होगा। एक दिन समुद्र क इसी किनारे पर घनश्याम ने बालू से खलते हुए बात ही बात म कह दिया था कि यहूदिया जसा मेहनतकश शायद ही कही हो। बालू म खेती करके व लोग दुनिया को हैरत म डाल चुके हैं। उसी क्षण लालमन ने सोचा था कि अगर वे लोग बालू म खती कर सकत हैं ता मैं चट्टाना पर करूँगा। उसकी यह बात सुनकर उसक बाप को हसी आ गयी थी और उसने कह दिया था—'देख छोरी समधीन।' लकिन जिस दिन उस मालूम हुआ था कि उसक खत की उन चट्टाना पर कुम्हडे तुरई कद्दू और चिचडा उगन लायक थे उस दिन उसने ऊपर से तो कुछ न कहा था पर मन ही मन अवश्य ही कहा होगा कि तुम तो मुझस भी अच्छे खतिहर निकल लल्लू!

पत्तिक-बीच की भीड की ओर न जाकर वह उस जगली बादाम के पेड की ओर चल पडा जहाँ की तनहाई का कारण था वहाँ क बवण्डर म दो प्रमिया की मृत्यु। लालमन उस समय बहुत ही छोटा रहा होगा जब यह दुघटना घटी थी, पर उस समय गाँवभर म जो खलबली मच गयी थी वह उस आज भी याद है। गाँव के सभी लोग उस स्थान को मनहूस कहत। गगा-स्नान के अवसर पर कोई भूला भटका अगर वहाँ चला भी जाता ता वहाँ की लहरों की दद क साथ कराहट सुन भाग आता। लालमन अगर उस स्थान को पसन्द करता था तो उस दद भरी कराह के कारण ही। उस स्थान पर पहुँचन क लिए इवन बालू स होत हुए चट्टाना पर स भी होकर जाना पडता था। रत पर अरन क्षणिक प

िहा को छोड़कर वह चट्टानों पर सावधानी से पैर रखता हुआ बढ़ने लगा। चट्टानों पर अजीब फिसलन थी। काई पर से फिसल जाने पर उसे अपना हाथों की टेक से सँभालकर शरीर में संतुलन लाना पड़ जाता। हर कदम का कार्य अलग पत्थरों पर रखते हुए उसे पूरी सावधानी बरतनी पड़ रही थी। कभी फिसलते फिसलते सँभल जाता और कभी सँभलते सँभलते फिसल जाने में उसे मज़ा सा आ जाता। ऊबड़खाबड़ वाले स्थान के आस पास का समुद्र शांत था। वहाँ ज्वारभाटे नहीं थे। छोटी छोटी तरंगें थीं जो गिरते ही ऊपर पहुँची धूप के कारण शीशे के टुकड़ों की तरह चमचमा चमचमा रही थीं। यहाँ की स्थिरता को देखकर लालमन मन ही मन सोचता कि क्या इस सागर को इस तरह [illegible] न होना चाहिए था। अपने भीतर सारी ऊबड़खाबड़ छिपाए हुए भी लोगों को धोखा देने के लिए ऊपर से वह शांत रहता है। अधिक सोचने पर यह बात उसका गुण सा उसे प्रतीत होने लगती। आखिर चिल्ला चिल्लाकर अपनी शक्ति का प्रदर्शन क्या किया जाय?

ऊबड़खाबड़ के ठीक सामने आसमान की ऊपर आ गयी मोटी जड़ों पर खड़ा एक छोटा सा लड़का नीचे के पानी में तैरती हुई छोटी मछलियों को देख रहा था। चट्टानों से हटकर फिर बालू पर चलते हुए वह उस लड़के की ओर बढ़ने लगा। इधर की बालू कुछ इतनी अधिक भुरभुरी थी कि कदम धँसते चले जाते और उन्हें उठाने में कभी कभी कठिनाई पेश आ जाती। पैरों के हटते ही उनसे बने गड्ढे तुरन्त ही लहरों के साथ आये पानी से भर जाते और ऊपर झाग से ढँक जाते और फिर कुछ ही क्षण में बालू पानी को सोख जाती और झाग कुछ देर तक छाये रहते। इस स्थान से प्रवाल रत्नों के पास उठते प्रलयंकर ज्वारभाटे कुछ अधिक भयानक लगते। वह अकेली नाव इस समय आँखों से ओझल थी। बादलों से खाली आकाश में पक्षियों के कई झुंड उड़ चले जा रहे थे। कुछ ही क्षण पहले चट्टानों से टकराती लहरों के छींटों से लालमन के कपड़े कुछ भीग चले थे।

लड़के के पास पहुँचकर लालमन भी उसी भोलेपन के साथ मछलियों को देखता रहा। कभी लड़के की उम्र का वह था जब इन्हीं नन्हीं मछलियों को फँसाने के लिए वह दिन भर घर से बाहर रहता था। वे दिन उसके लिए एक अजीब विश्वास के दिन थे। मछलियाँ कभी हाथ नहीं लगती थीं फिर भी उसे हमेशा यही विश्वास रहता था कि आज न सही कल पर वह कल कभी नहीं आया था और उसकी प्रतीक्षा करते हुए दूसरे दिन वह अपने में नया विश्वास पाता। उसके सभी दोस्त भी उस समय उसी की तरह थे। अब उसके वे ही मित्र बात बात पर हताश और निराश दीखते हैं। उनमें से कुछ की नज़रों में लालमन अब भी बच्चा था। लालमन को इस बात की खुशी थी। वह चाहता भी

यही था कि जीवनभर बच्चा ही बना रहे। वह इस बात को भली भांति समझता था कि किन बातों के लिए उसके कुछ मित्र उसे ऐसा कहते थे। उसे वैसा रहना पसन्द था।

जंगली बादाम की जड़ों पर केकड़े इधर से उधर दौड़ रहे थे। समुद्र का गर्जन धीरे धीरे बढ़ता ही जा रहा था। लहरें प्रलयकारी होती जा रही थीं। लालमन के साथ साथ वह छोटा सा लड़का भी इस बात को अच्छी तरह समझता था कि कुछ ही देर में लहरों की फुहार उन जड़ों तक पहुँचने लग जायेगी जहां दोनों खड़े थे। लालमन एकटक उस लड़के को देखने लगा था और वह लड़का छोटी मछलियों के उस झुंड को देख रहा था जो पानी में खौलता सा प्रतीत हो रहा था। और जब लड़के पर से आंखें हटाकर लालमन ने उन मछलियों की ओर देखा उस समय उसे ऐसा महसूस हुआ कि आदमी के मस्तिष्क में विचार भी ठीक इन्हीं मछलियों की तरह खौलते रहते हैं।

लड़के को ध्यानमग्न छोड़ अपने ही ख्यालों में खोये हुए वह आगे बढ़ गया—उस ओर जहां मछुआ भी अपनी अपनी नावें किनारों पर बँधी छोटी मोटी तरंगों के साथ डगमगा रही थीं। इस ओर की बालू उतनी सख्त न होते हुए भी दूर तक फैली हुई थी जिससे इधर का किनारा काफी विस्तृत दिखाई पड़ता। जहां तहां मछुआ के जाल धूप में सूखने के लिए पड़े हुए थे। कहीं पाल अब भी अधभीगी हालत में थी तो कहीं मस्तूल को नारियल के पेड़ के सहारे खड़ा छोड़ दिया गया था। सामने की हरी काई के डर से कतराकर वह उस स्थान से आगे बढ़ा जहां उससे आगे आगे कोई अपने पैरों के चिह्न छोड़ गया था। वह आदमी भारी भरकम होगा तभी तो पैर के निशान उतने गहरे थे। पीछे मुड़कर अपने पैरों के निशानों को देखते हुए लालमन को वे किसी बच्चे के पैरों के निशान से लग रहे थे। उसका दाहिना पैर एक अधटूटे घरौंदे पर पड़ने ही वाला था कि उसने फुर्ती से उसे सम्भाल लिया और उसे लांघते हुए आगे बढ़ गया। मन ही मन सोचा न जाने इसे बनाने वाले बच्चे ने कितनी मेहनत की होगी और कितने अरमान के साथ इसे पूरा किया होगा। उससे पहले गुजरने वाले भारी भरकम कदम को इस बात की जरा भी परवाह नहीं थी तभी तो घरौंदे का एक भाग उसके भारी बोझ से ढह गया था। वह उस स्थान पर चलने लगा था जहां रात की उफनती लहरें सबसे अधिक दूरी तक आ सकी थीं। उस स्थान पर उन लहरों के निशान अब भी थे। काई और सूखे हुए झाग अभी भी स्पष्ट थे। लहरों की वह अंतिम सीमा थी जिससे उधर आना उनके लिए केवल तूफानों में सम्भव हो सकता है। अपने कदमों से उन सभी सीपियों और कौड़ियों को बचाते हुए वह चल रहा था जिन्हें रात को लहरों ने बेरहमी के साथ किनारे पर फेंक दिया था। उसने एक मरे हुए बड़े-से केकड़े को देखा जिस पर मक्खियाँ

मिनमिना रही थी। आखें नीचे किये वह चलता रहा। उसकी नजर उस पीले रग की कौडी पर पडी और वह ठिठक गया। इसी तरह की एक कौडी, पर इसस कम सुदर उसके अपने घर पर थी। वह उसके घर की अलमारी की उस दराज म थी जिसम उसकी माँ पसे रखती थी। जब वह उस कौडी को वहा से लेने की कोशिश करता उस समय उसकी मा उस लेने से रोकती हुई कहती—

—यह चित्त कौडी है।

—चित्त कौडी क्या होती है?—अपने पूरे भोलेपन के साथ वह मा से पूछता।

—पसा के बीच रखने स बरकत होती है।

अपनी माँ की वही बात सहरा की मिली जुली आवाज के साथ उस सुनाई पड गयी। वह घुटना के बल बठ गया। सामन की उस कौडी म एक अजीब चमक थी। उसका वह पीलापन अतीव सुदर था। आसपास की सभी कौडिया स भिन्न थी वह चित्तकौडी। अपनी तीन अगुलिया स थामकर लालमन ने उसे अपने दूसर हाथ की हथेली पर रखा और गौर स देखन लगा। बचपन की उसकी एक बहुत पुरानी तमन्ना पूरी हुई थी। उसके हाथ म बरकत की कौडी थी। उसकी अपनी कौडी! अपना भाग्य!! उस पर लगे रेत क कणा को उसने कमीज स पाछा। और भी चमक आ गयी उसम। खुशी खुशी उस अपनी जब के हवाल कर लालमन कुछ क्षण क लिए वही बठा रहा। यहाँ की बिसाइध गध स आज उसका सिर नही चकरा रहा था। आज मछलियो का शिकार बन्द होन क कारण वह रौनक नही थी। बगल क एक बँगल स एक गोरी लडकी तरन के हल्के नील कपडा म उमक सामने स गुजरी। वह उस देखता रहा। उसके शारीरिक लावण्य पर उसकी आँखें टिकी रही। यही मासल सुन्दरता मामा म भी थी और मामा की सूरत उसकी आँखा क सामने भिनमिना उठी।

मामा मांसल थी पर मोटी नही थी। लम्बी थी पर लालमन स कोई चार पाँच इच छोटी ही थी। उसकी आँखा म समुद्र जसा नीलापन था। उसकी वे नजरें स्निग्ध थी। वह जब लालमन की ओर देखती उस समय लालमन विचलित हो जाता। उसक बाल काली चट्टाना स भी अधिक काले और अयाल रेशा स भी अधिक लम्बे थ। उफनते ज्वार भाटा की ही तरह वे भी घुघराले थे और हवा के थोड स प्रोत्साहन पर उसी तरह विद्रोही भी थे।

लालमन न देखा उस गोरी लडकी को समुद्र क ठण्डे पानी म डुबकी लेते हुए कुछ हिचकिचाहट हुई पर फिर देखते ही देखते छलाग स वह पानी म कूद पडी। उसने उस सुन्दर शरीर की गतिशीलता को वह देखता रहा। मामा स मिलन की उसकी इच्छा भीतर-ही भीतर प्रबल हो चली थी लेकिन उसम साहस की बडी कमी भर भी थी। वह गोरी लडकी जो मामा जैसी न होकर भी लालमन को एकदम मामा जसी लग रही थी, हाथा स पानी को अपने पर मारती हुई सहरा की

विपरीत दिशा म तरती चली गयी। लालमन अपन स्थान से उठा और बालू पर छोडे अपन ही परा के निशाना का गिनता हुआ घर की ओर चल पडा। कुछ दूर आन पर उसने दखा कि बादाम की जड वाला वह लडका अपनी ही धुन म बालू पर उछलता कूदता उसक आग आग चला जा रहा था। लालमन ने सोचा, बच्चा का यह भालापन, यह निश्चितता बड हो जाने पर कहा गायब हा जाती है!

वह उस ऊबड खाबड रास्त पर चलने लगा था जा बलगाडियो के चलते रहने से अजीबोगरीब हालत म थी। जिन दो किनारा पर गाडियो के पहिय पडत थ वहाँ दो नालिया सी बन गयी थी। अगल बगल नोकीले पत्थर दाता की तरह बाहर निकले हुए थ। बीच म दूर तक जाती हुई हरी दूब की लम्बी कतार थी। रास्ते मे एक ओर भाव क पेड थ, दूसरी ओर ईख के लहलहाते खत कटन क लिए तयार खड़े थे। भाव के पेडा के बीच फुसफुसाहट थी। उधर देखे बिना ही लालमन का मालूम हो गया कि गाव के कुछ लोग भावे की लकडी चुरा रह थे। धीरे धीरे आस पास के सभी जगला के उठ जाने क कारण सचमुच ही लकडियो का मुहाल था। उस ओर अधिक ध्यान न देकर वह अपने ही खयाला के साथ कदम उठाता हुआ घर की ओर बढता गया।

जान-बूझकर उसन यह लम्बा रास्ता लिया था। यह रास्ता उस पगडडी से लगभग दुगुना लम्बा था जिसस होकर उसका रोज का आना जाना होता है। जिस रास्त से वह इस वक्त चल रहा था उसी पर गाँव का शिवालय मिलता है। इस समय लालमन की आँखें शिवालय के कलश पर थी। इस शिवालय को ध्यान स देखते हुए वह अपने उन पूवजा के बार म सोचने को विवश हो जाता जो भारत स यहा कुलिया क रूप म आय थ। उन गुलामी के दिना म भी जिन लोगा ने बिना किसी आधुनिक उपकरणा स इतना विशाल मन्दिर बना डाला हो वे कसे लोग होग? इस प्रश्न के सामन लालमन की कल्पना बावली हो जाती। धम सम्ब धी बाता पर बहुत कम ध्यान देत हुए भी उसका मस्तिष्क इस शिवा लय के सामन झुक ही जाता था। वह नतमस्तक हा जाता अपने पूवजो के गौरव के सामने। उसे लगता कि लोगा की यह धारणा गलत है कि आज का इसान पहले के इसान स अधिक आगे है। वह तो यही सोचता रहता था कि सभी सुविधाओ का पाकर भी आज का इसान अपनी असुविधा का कारण बन बैठा है।

लगभग आधा घटे बाद लालमन अपन घर पहुँचा। वह जानता था कि उसकी माँ उसे देखते ही पूछ बठगी कि आखिर आज उसन इतनी देर क्या कर दी। उसका प्रश्न अभी पूरा भी न हुआ था कि लालमन न उत्तर देत हुए कहा—

—घूमन चला गया था समुद्र की ओर।

—धरमन तुमसे मिलने आया था।

लालमन जानता था कि धरमन किस कारण उसस मिलने आया था।

२

अगल बगल धूमधाम के साथ ईखों की कटाई हो रही थी।

ईख के घने खेतों के बीच था वह सब्जियों का खेत जिसमें वह सुबह से शाम तक कुछ-न कुछ करते ही दिखाई पड़ता था। आज तक उससे पहले कभी भी कोई इन खेतों के बीच नहीं पहुंचा था और उससे देर कोई खेतों को छोड़ता भी नहीं था।

जुलाई का महीना था—ठंड से भरपूर। लहलहाती ईखों की कटाई शुरू हो चली थी। ईख के खेत जितने घने होते उतना ही घना होता मजदूरों का संकल्प। उजाला होने से पहले ही खेतों में चहल पहल शुरू हो जाती थी पर चूंकि वह हमेशा सभी से पहले खेत पहुँचने का आदी था इसलिए कटनी के मौसम में भी ठंडा लिये मजदूरों से पहले ही वह अपने खेत में पहुंच जाता। सामने की पगडंडियों से गुजरते हुए गांव के लोग उसे खेत में मौजूद देख हैरत में पड़ जाते। कुछ लोग कहते कि यह लालमन शायद खेत ही में सोकर रात बिताता होगा, तभी तो इसे आते जाते कोई देखता नहीं। अजीब नौजवान है यह—कोई कहता।

इस के हरे भरे खेत गर्व से लहलहाते हुए तैयार दीख रहे थे। इधर उधर के एक दो खेत कटनी के बाद साफ दिखाई पड़ते। ईख के सूखे पत्तों का पीला कालीन बिछा सा दिखता जिस पर जहाँ तहाँ मुडर के काले भूरे पत्थर भी दिखाई पड़ जाते थे।

शाम का सुनहरा रंग खेतों की हरियाली से आँख मिचौनी खेल रहा था। जब लालमन ने सिर उठाकर क्षितिज की ओर देखा सूरज ढल चुका था। तभी तो खुशी में समुद्र का गर्जन जोरदार हो चला था। सूरज को निगलकर हिंद महासागर की लहरें उफनती हुई अपने उल्लास को व्यक्त कर रही थीं। सुनहली किरणें भी धुंधली पड़ती गयीं पर उनकी छाप जाकि सूरज के डूब जाने के बाद

भी आसपास के खेतों पर अपनी छाप को बनाये रखती थी, आज भी ईख के हरे पत्तों से फिसलना नहीं चाह रही थी।

घटे हुए खेतों की रौनक समाप्त हो गयी थी। मैना और गौरैया के झुंड बसेरे को, काँय-काँय और चीं चीं की आवाजों के साथ उड़े जा रहे थे। आधा मील की दूरी पर के मंदिर और गिरजाघर के घंटे एक साथ बज उठे थे। ये घंटे कभी आगे पीछे भी बजते पर लालमन के लिए तब तभी बजते जब ये घंटे एक साथ बजते। यहां से ईख का कारखाना कोई तीन मील की दूरी पर था फिर भी माहौल शांत होने पर कभी कभार उसके चिल्लाने की आवाज भी इन खेतों तक पहुंच ही जाती।

देखते ही देखते सांवलेपन को घना करते हुए अँधेरा बढ़ता गया था और कंधे पर कुदाली और भात की टोकरी थामे लालमन भी घर की ओर बढ़ चला। कभी तो वह अँधेरे में और कभी घटाटोप अंधेरे में भी इस पगडंडी से होकर घर पहुंचा है। रास्ता भूलने की नौबत उसके सामने कभी नहीं आयी। उसे इस मटियाली पगडंडी पर पूरा विश्वास था—अपनी जवान आँखों से भी अधिक क्योंकि यह उसे सीधे घर तक पहुंचाकर ही दम तोड़ती थी। अपने घर से खेत तक पहुंचाने वाले इस तंग रास्ते को छोड़कर वह अपने गाँव के बहुत कम रास्तों को जानता था। वह तो यही सोचता था कि हर काम मौके से होता है और उसे तो इस रास्ते से दूसरे रास्ते पर पहुँचने के बहुत कम मौके मिले थे।

उसे अपने गांव के तुलसी महता की बात हर वक्त याद रहती है। वह कहता था कि आदमी का अपने लिए एक निर्धारित रास्ता होना चाहिए। एक सीधा रास्ता। यह बात कहते हुए तुलसी महता का न जाने क्या तात्पर्य रहा हो पर लालमन के लिए तो वह एकदम सीधी सीधी बात थी जिस पर वह अमल करता आ रहा था। उसे याद है बचपन में वह एकाध बार इमली के पेड़ वाले रास्ते में मित्रों के साथ खेलने चला गया था और उसके बाप ने उसे कान पकड़वाते हुए कहा था कि वह कभी भूल से भी उस रास्ते से न जाए। उसके बाप ने इस रुकावट का कोई भी कारण उसे नहीं बताया था पर उसकी मां ने उसके बालों पर हाथ फेरते हुए कहा था कि उस रास्ते में अच्छे लोग नहीं जाया करते। लालमन को इस बात से बड़ा आश्चर्य हुआ था और काफी देर बाद जब वह कुछ बड़ा हो चला था तब उसे मालूम हुआ था कि उस रास्ते में दो तीन ऐसी औरतें रहती हैं जो अपनी शरम को बेचकर जीती हैं। यह बात भी उसकी समझ में उस समय अच्छी तरह नहीं आयी थी पर इस मामूली बात पर सिर खपाना उचित न समझ उसने उसे भुला देना ही ठीक समझा था।

ईख के हिलते डोलते पत्तों को ठट से कांपते देख उसके अपने शरीर में भी सिहरन आ ही गयी थी। जंगली कीड़ों की मिली जुली आवाजों के साथ स्वर

मिलाकर गुनगुनाते हुए वह चलता रहा। उसे सिनेमा का बहुत शौक था और उसने अपने साथियों की तुलना में बहुत कम फिल्म देखी थी पर फिल्मी गानों का उसे बहुत अधिक शौक था। बात बात पर फिल्मी गीत गुनगुनाते रहने के कारण वह कई बार अपने बाप से खरी खोटी सुन चुका था पर यही एक बात थी जिसे वह अपने बाप की बातों से भी अधिक महत्त्व देता। एक तरह से ये फिल्मी गीत उसके एकाकीपन के अच्छे साथी थे। कभी तो एक-दो गानों पर वह देर तक सोचता ही रह जाता था। उसे ऐसा लगता मानो उन गीतों में बहुत बड़ी-बड़ी बातें कह डाली गयी हों और उसके मन में भी गीत रचने का विचार पैदा हो जाता। धीरे धीरे गीत की एक दो पंक्तियां बन भी जातीं और वह उन्हें फिल्मी धुन के साथ गुनगुनाने लगता। ठंड में अपने इन गीतों से उसे गरमी भी मिल जाती। इधर कई दिनों से वह एक ट्रांजिस्टर रेडियो खरीदने की बात भी सोचता आ रहा था।

हर शाम जब रात होने को होती उसकी माँ घर से बाहर आँगन में खड़ी उसकी राह देखती। उसका बाप अपनी आँखों की कमजोर रोशनी के कारण सूरज की विदाई के साथ ही अपने को घर के भीतर बन्द कर लेता। जबकि दिन ही में उसे कुछ ही दूरी की चीज पहचानने में दिक्कत होती थी तो फिर रात तो रात ठहरी। लालमन की माँ रोज अपने बेटे की राह देखती और रोज उसे देखते ही उसके हृदय की धड़कनें तेज हो जातीं। उन खुशी की धड़कनों के साथ वह लम्बी सांस लेकर अपने बेटे का कंधा थाम घर के भीतर पहुँचती।

अपने घर के चिराग पर नजर पड़ते ही लालमन गीत गुनगुनाना बन्द कर देता। अपने बाप के सामने उसका सारा समय खामोशी में बीत जाता था। उसे अपनी खामोशी खलती सी लगती पर न जाने क्यों चाहकर भी वह अपने बाप के सामने बातें न कर पाता। इस बात के लिए उसकी माँ और दोनों छोटी बहनें भी उसे कई बार टोक चुकी थीं। उसकी माँ बार बार यही प्रश्न उसके सामने रखती कि आखिर बात क्या है जो वह अपने बाप के सामने होते ही गूंगा बन जाता है। वह अपने बाप से उतना अधिक तो नहीं डरता जितना कि स्कूल के अध्यापक से कभी डरता था। अगर वह सरकारी स्कूल में चार कक्षाओं से अधिक नहीं पढ़ सका तो चौथी कक्षा के अपने अध्यापक के कारण ही। दुनिया में यही एक व्यक्ति था जो उसे कभी भी आदमी जैसा नहीं लगा। वह सचमुच ही उससे भयभीत था। पर अपने बाप से डरने की बात को वह खुद नहीं समझ पाता। अपनी बहनों से बातें करते हुए वह इसी नतीजे पर पहुँचता कि वह बात डर जैसी कोई चीज न होकर कुछ और ही थी। उन दिनों की एक धुंधली याद उसके भीतर बाकी थी जब उसका बाप उसके बोलने के हर प्रयास को रोकते हुए कह उठता था कि बड़ों के सामने बच्चे नहीं बोला करते और अगर अब भी वह

उसके सामने नहीं बोलता है या बहुत कम बोलता है तो केवल इसी एक बात के लिए कि वह अब भी अपने को छोटा और अपने बाप को बड़ा मानता था।

वह तेईस पार कर चुका था। उसके ऊपरी होंठ की मूछें भी घनी होने लगी थीं। चेहरे पर एक-दो ऐसी फुंसियाँ भी आ गयी थीं जिनको उसके साथी जवानी की फुंसिया कहते। तीन वर्ष पहले ही चोरी से उसने अपने बाप के उस्तरे को अपने गालों पर फेरा था और तभी से दाढ़ी बनाना उसके लिए जरूरी हो गया था। लालमन ने विरासत में अपने बाप के शरीर को हूबहू पाया था और चेहरा माँ का था। उसका चेहरा अपनी दोनों बहनों से एकदम मिलता जुलता था। वह केवल प्रभा का रंग था जो कि घर के किसी भी व्यक्ति के रंग से नहीं मिलता था।

उसकी मां का घर पर सबसे अधिक खयाल सफाई का होना इसलिए लालमन को विवश यह आदत बना लेनी पड़ी थी कि खेत से लौटते हुए चाहे कितनी ही रात और ठंड क्यों न हो हाथ-पाँव धोकर ही घर के भीतर पहुंचना होता। इस भ्रान्त को बनाए रखने में लालमन प्रायः अपनी मां की आंखों में धूल झोंक जाता। उसे दिखाते हुए वह नल के पास तो पहुँच जाता था पर उस अँधेरे में नल को पूरा खोलकर वह चन्द मिनटों के लिए दूरी पर खड़ा रहता और फिर मुट्ठी भर पानी हाथ मुंह पर लपटकर वह घर के भीतर पहुँच जाता। उसकी दोनों बहनों में प्रभा उसकी इस बात को जानती थी पर उसे मना लेना लालमन के लिए बाएँ हाथ का खेल था। उसके सामने मुसकराकर केवल इतना कह देना उसके लिए बहुत होता कि ठंड हड्डियों तक पहुँच रही है। इस तरह के बहाने उसे गरमी में नहीं करने पड़ते थे क्योंकि उस मौसम में रोज बिना नहाये उससे रहा नहा जाता था।

घर में प्रवेश करके लालमन एक नजर अपने बाप की ओर देखता गोया वह उसका मौन अभिवादन हो। फिर दूसरे कमरे में पहुँचकर अपनी भात की टोकरी को दीवार की खूंटी से लटका देता। छाया जिसे हमेशा अपने भाई की प्रतीक्षा होती थी, रसोईघर से दौड़कर आती और उस गाँव की कोई न कोई बात सुनाने लग जाती। छाया की उम्र कोई बारह वर्ष थी। उसकी बातें लालमन को बहुत अच्छी लगती पर उसकी माँ को यह बात तनिक भी पसन्द नहीं थी। वह बार-बार छाया को कोसती हुई यही कहती कि उसकी जीभ बहुत लम्बी है, सास के घर उसका गुजारा कैसे होगा। लालमन को यह बात अजीब-सी लगती कि आखिर लड़कियों को गूंगी बनाने की कोशिश क्यों की जाती है? उसकी अपनी चुप्पी पर माँ उसे कोसती और छाया और प्रभा को वह हमेशा अधिक बोलने से रोका करती थी। प्रभा लालमन से दो ही वर्ष छोटी थी। छाया की उम्र की होने पर वह भी उसी की तरह चाँय चाँय बोला करती थी पर जब

जलती सिगरेट छुटने न पाती। लालमन को लगता कि सचमुच ही आदत बहुत ताकतवर होती है। उसके मस्तिष्क में प्रश्न पैदा हो जाता—क्या अच्छी आदतें भी इसी तरह सशक्त हुआ करती हैं? वह अपने ही भीतर तलाशता रह जाता। पर उसे अपने में कोई भी आदत दिखाई नहीं पड़ती और फिर आदत के लिए तो अवकाश चाहिए जो कि उसके पास बिलकुल नहीं था। अधिक सोचते रहने पर खेत की ज़िन्दगी उसे भ्रान्त सी ही प्रतीत होती, पर अपने आप से तर्क करके वह उसे कुछ और ही समझना अधिक उचित समझता।

बालू के भारी बोझ के साथ चिल्लाती चीखारती लारी रास्ते से गुजरी। उसकी उस प्रलयंकर घरघराहट से हर हृदय दहल गया होगा। काफी देर तक वह आवाज़ लोगों के कानों में गूंजती रह गयी। लालमन की तंद्रा टूट चुकी थी। उसने प्रभा की ओर देखा। वह कड़ाही में फोरन तैयार कर रही थी। लालमन ने जाना कि अब दाल छौंकी जाने वाली थी और चन्द ही मिनटों में भात की थाली उसके सामने होगी। उसने सोचा भूख भी क्या अजीब चीज़ है। जिस बैगन की तरकारी से उसे चिढ़ है उसी के लिए भूख उसे बेताब कर रही थी।

उसकी माँ और छाया के रसोई के भीतर आने पर उसके हाथ में थाली आ गई थी। सभी चीज़ें गरम थीं और थाली की वह गरमी उसे बहुत ही अच्छी लग रही थी। कौर गरम होते हुए भी वह उन्हें मुंह तक पहुँचाता ही गया। पहली बार बैगन की तरकारी उसे इतनी स्वादिष्ट लग रही थी। उसके ठीक सामने बैठी राधिका उसे एकटक देखे जा रही थी। लालमन आज भी उसके लिए वही नन्हा सा लल्लू था जिसे गोद में लिये आंगन में घुमा घुमाकर वह खिलाया करती थी और जब लल्लू खाने से इनकार करता वह उसे लकड़बग्घे का डर दिखाते हुए जल्दी जल्दी एक दो कौर अधिक खिलाकर आत्म सन्तोष की गहरी सांस लेती। इस समय भी अपने बेटे को खाते देख वह उसी पुराने सुख का मन-ही-मन अनुभव करने लगी थी।

लालमन दोबारा भात मांगता कि इससे पहले ही प्रभा ने भर कलछी भात उसकी थाली में रख दिया और बिना कुछ कहे लालमन थाली की बची दाल के साथ उसे सानने लगा।

३

खाना खा लेने के बाद घर के सभी लोग बीच वाले कमरे में चन्दन के इद गिर्द बैठ जाते। टिमटिमाते चिराग के प्रकाश में सभी की आखें चन्दन पर होती। प्रभा और छाया उससे एकदम सटकर चारपाई पर बैठी होतीं और लालमन अपनी मां के साथ सामने की दूसरी चारपाई पर। अपनी खासी पर काबू पाकर उसका बाप कहानियां सुनाया करता और वे सभी सुना करते। लालमन कभी सुनते सुनते दूसरे ख्यालों में भी खो जाता। बड़ी ही रोचकता और सजीवता के साथ चन्दन कहानियाँ सुनाया करता था। इस परिपाटी को निभाते हुए उसकी सभी कहानियां समाप्त हो जातीं और फिर से वह उन्हीं कहानियों को कुछ दूसरे ढंग से जोड़ तोड़कर सुनाने लग जाता जो पहले सुना चुका होता। हर कहानी को शुरू करने का उसका ढंग एक ही जैसा होता। शुरू हमेशा वह इस तरह करता—'बहुत दिन पहले एक देश में' और समाप्ति के बाद इन चन्दनाइन्दा का कहना कभी न भूलता— वे लोग सुख चैन से रहने लगे। उसकी सभी कहानियों में कोई न कोई राक्षस या कोई परी अवश्य होती थी। सभी में दुख और संघर्ष के बाद अन्त में सुख और खुशी होती।

अपने बाप की उन कहानियों पर गौर करते हुए लालमन अपने आप सोचता रहता और पूछता कि वे सभी राक्षस और परियां अब कहां चली गयीं। फिर सोचता—वे कहीं गये न होंगे बल्कि इस दुनिया में किसी दूसरे रूप में छिपे हुए होंगे तभी तो दुनिया में बुराइयाँ और अच्छाइयां आज भी होती रहती हैं। वह तो यही मानता था कि सभी बुराइयों को करने वाले वे राक्षस ही होते होंगे और सभी अच्छाइयां परियाँ ही करती होंगी।

बीच में रखी अंगीठी के कोयलों के अंगारे अपनी चमकती लाली को खोकर अब अपनी खासियत को खोने लगे थे। भूरी राख की परतों के नीचे से एकाध

बार हवा के किसी अकारण झोंके से प्रभावित व फिर से प्रज्वलित होना चाह कर भी असफल रह जाता। अपनी खोयी हुई शक्ति को दोबारा पाना बड़ा ही कठिन था उनके लिए। लालमन अँगारा से आगे हटकर अपने बाप की ओर देखने लग जाता और उसे लगता कि सचमुच ही खोयी हुई शक्ति का फिर से पाना कठिन ही नहीं असम्भव है। उसे अपनी शक्ति का भान था। लोगों के मुंह से सुनकर वह इस सच्चाई को भी जानता था कि गाँव में उसकी तरह शक्ति रखने वाले बहुत कम थे। उनका बाप भी यही कहता था कि उसके अपने यौवनकाल में कोई भी उसकी टक्कर का नहीं था। वह तो अपनी जवानी और ताकत का सदुपयोग कर चुका था। अपनी माँ से लालमन को यह बात भी मालूम हुई कि इस घर में आज जो कुछ भी है वह उसके बाप की ताकत की बदौलत है। इस घर में कभी कुछ भी नहीं था और आज बहुत कुछ है और इन सभी बातों के पीछे संघर्ष लगन और परिश्रम की एक लम्बी कहानी थी। राधिका से शादी के समय च दस उस खेत में एक मामूली सा मजदूर था जो आज उसका अपना खेत है। अपने बलबूते आज वह चार बीघा खेत का मालिक था। अपने बाप के सभी किस्सों के साथ साथ वह उसकी इस सच्ची कहानी के बारे में भी बहुत ध्यान से सोचता और उसके भीतर अपने आप एक प्रण सा पैदा हो जाता कि उसे भी अपनी जवानी और शक्ति का पूरा लाभ उठाना है। धधकते अँगारा को वह शिथिल पड़ते देखता आ रहा है जो इस बात का प्रमाण था कि हर शक्ति का कभी न कभी अन्त होगा। अपनी शक्ति का अधिक-से-अधिक उपयोग करने के ख्याल से ही वह अपने समय के अधिक भाग को खेतों के हवाले करता आ रहा है।

ऐसे तो अंग्रेजी और फ्रेंच उसने केवल चौथी तक पढ़ी थी परन्तु अपनी हिन्दी की पढ़ाई उसने काफी देर तक जारी रखी थी। एक तरह से उसकी यह पढ़ाई अभी भी नहीं रुकी थी। उत्तमा की परीक्षा दे लेने के बाद भी वह पढ़ता ही रहता। उसे खुद इस बात का आश्चर्य होता कि हिन्दी की पढ़ाई को उसने इतनी लगन के साथ क्यों अपनाया था। मन में भी उसकी भाषा की डायरी में हिन्दी की कोई न कोई पुस्तक अवश्य होती थी लेकिन उसे मालूम ही था मानो होता कि इस पढ़ाई में उसे कभी अधिक मेहनत नहीं करनी पड़ी हो। उसके कभी मित्र सरकार में हिन्दी अध्यापक बनने की इच्छा लिए घर रहे थे जिनमें से कइयों ने मुगुवा का बंगा घ ग्राम में खा रहा। लालमन के हिन्दी पढ़ने के पीछे कोई भी ग्राम मरगन नहीं था। हिन्दी से उसे लगाव था इसलिए वह उसे पढ़ता रहा। कुछ मित्र उससे कहते कि आखिर वह अंग्रेजी और फ्रेंच का भी कुछ अध्ययन क्यों नहीं कर लेता जिससे उसे भी सरकारी नौकरी में हिन्दी अध्यापक बन जाने की आशा होती। इस पर लालमन हँसकर रह जाता। उसकी धारणा नजरा

म खेता के काम से अच्छा कोई भी दूसरा काम नही था। यह सच था कि खेती के काम म अधिक थकावट होती है अधिक पसीना बहाना पडता है पर काम को जब इन दो विशेषताओ स जुदा कर लिया जाय तो फिर वह काम किस काम का!

वह कविताए अधिक पढता था और उसके भीतर अपनी अनुभूतियो को भी कागज पर उतारने की अभिलाषा ज्वलन्त थी पर अतिशयोक्ति के भय से वह ऐसा नही कर पाता। फिर भी अपनी इस अभिलाषा को समय के साथ कभी न कभी साकार करने की उसकी आशा कभी भी धुधली नही पड पाती थी। यदा कदा वह अपने भीतर के कुछ भावो को घनश्याम के सामने गुनगुना देता और घनश्याम हर बार यही कहता कि उसे अपने इन भावो को लिखना ही चाहिए।

केवल शनिवार के दिन वह अपने गाव से सवेरे लौटता था और उसी मौके पर वह अपने इने गिने मित्रो के बीच होता। रविवार को आस पास के किसी भी खेत में काम नही होता लेकिन वह था कि अपने खेत का एक चक्कर काटे बिना रह नही सकता था। अगर रविवार के दिन वह खेत नही पहुचता तो उसकी दोस्ती धरमेन से कभी न होती क्योंकि धरमेन शहर म रहकर पढता था और केवल अपना शनिवार और रविवार गाव म बिताता था। पहले लालमन धरमेन को नही जानता हो ऐसी बात तो नही थी पर उसके साथ उसकी दोस्ती नही थी। हर रविवार कधे पर बदूक लटकाये धरमेन खरगोश के शिकार को निकलता था। और इस अवसर पर हमेशा लालमन से उसकी बातें होती और फिर समय के साथ दोनो के बीच घनिष्ठता बढती गयी। इस बात से लालमन की मा को भी कम खुशी नही हुई थी कि रमेशरसिंह के बेटे से उसके बेटे की मित्रता हो चली थी।

सभी के चेहरो पर मिट्टी के तेल के चिराग की आभा थी। सबसे अधिक प्रकाश उसके बाप के चेहरे पर था जिससे उसकी काली मूछो के बीच के इने गिने सफेद बाल उसकी हर सक्रियता के साथ चमक उठते। उसकी धूमिल आँखें सूरज की तरह चमक उठती जिससे देखने वाले को यह मानने म हिचकिचाहट होती कि वे धूप की सतायी आँखें थी जिन्होने अपनी आभा का तीन चौथाई भाग खेतो म चमकती सूर्य किरणो को दे दिया था ठीक उसी तरह जिस तरह उसने अपनी शारीरिक शक्ति को भी अपने खेतो के चप्पे चप्पे पर बिखेर दिया था। आगे के दिन उसे अपनी एक चौथाई शक्ति के साथ काटने थे और बाकी दृश्यो को एक चौथाई रोशनी स देखना था। उसकी अपनी कमजोर आखो के सामने चीजें भी एक चौथाई हैसियत रखती था। वह तो यह मानता था कि आज आज भी सही सलामत था और धुधला तो बाहरी वातावरण था। उसे लगता ये चिराग अब पहले जसी लगन से नही जलते। उसे इस बात का डर था कि कही यह हवा उसके बेटे को भी न लग जाये और वह भी पुरखो की लगन म

शिथिलता आ सकती है। घर में पड़े पड़े भी उसे बाहरी दुनिया की कुछ न कुछ खबर मिल ही जाती थी। नये जमाने के नये लोग उसे भ्रामकसी प्रतीत होते। इन खयालों से चिंतित उसे पुरखों की याद आ जाना स्वाभाविक था। वह आश्चर्य के साथ यह प्रश्न अपने आप से करता कि क्या यह नयी पीढ़ी अपने पुरखों के खून से वंचित है और अगर नहीं तो फिर उसमें यह सक्रियता की कमी कहाँ से आ गयी। क्या ये उन्हीं भारतीय मजदूरों की संतानें हैं जिन्होंने अपने माथे के पसीने की बूँद बूँद से इस धरती को सींचा है? वह यह कभी मान न सका कि नये लोग इस बात को भी भूल गये हैं कि इस देश की समृद्धि उनके बाप-दादा की थाती है।

आज वह अपनी पोतियों को अपनी कठिन कहानियाँ सुनाया करता है पर कभी उसकी माँ उसे इस देश की सच्ची कहानियाँ सुनाया करती थी—उन प्रथम प्रवासियों की कहानी जिन्होंने अकाल और अनावृष्टि से तंग आकर अपने प्यारे बिहार को छोड़ा था, अपनी भारत माँ को छोड़ा था—इस उम्मीद से कि मारीच के देश में वे अच्छे दिन देख पायेंगे।

चन्दन के सामने वे दृश्य साकार और सजीव हो जाते। उन तमाम दृश्यों को जिन्हें उसने देखा तो नहीं था पर अपनी माँ के मुँह से सुना था वह अपनी आँखों के सामने देखने लग जाता और उसके साथ ही उसकी माँ का स्वर भी स्पष्ट होता जाता।

' बड़ी उम्मीदवा से सब हम सब हियाँ पहुँच ली, जा पर उम्मीदवा पर पानी फिर गयल जब सबन को मालूम भयल कि पत्थर के नीचे सोना नहीं बिच्छू ही बिच्छू होवे। हाँ, दुख वचन बस होई। कुत्ता से भी गयल गुजरल जीवन बितावे परल। एक दाना चावल के खातिर सौ बूँद पसीना और दस बूँद खून।

चन्दन विह्वल हो जाता पर फिर लालमन की ओर देखते हुए वह मन-ही मन संतोष कर लेता क्योंकि उसका लालमन किसी तरह के बहकावे में नहीं आया था। उसे खेतों की जमीन से घृणा नहीं थी और वह सरकारी नौकरी के प्रलोभन में नहीं आया था, इस बात की उसे खुशी थी। उसे इस बात का भी संतोष था कि अभी से अगर उसका परिवार कुछ भी न करे तब भी घर के पाँचों सदस्यों का जीवन काफी लम्बे समय तक सुख-शांति के साथ गुजर सकता था। लेकिन अनपढ़ होते हुए भी चन्दन इस बात को महत्त्व देता था कि अच्छे कामों के लिए संतोष मौत की निशानी है। इसलिए उसे इस बात का संतोष नहीं था कि इतना कुछ हो गया, अब इससे अधिक क्या होने को? उसे अब भी अपने बाप और दादा के कामों और सफलताओं की तुलना में अपनी सफलता अधूरी सी प्रतीत होती। यही कारण था कि वह चाहता था कि उसके अधूरे काम को

उसका इकलौता बेटा पूरा करे। किस्मत से उसे इस बात की शिकायत जरूर थी कि उसने उसे एक ही बेटा क्या दिया पर इस बात का सतोष भी था कि लालमन अधूरा मद नही था।

अँगीठी के अँगारो के अस्तित्वहीन होते ही बाहर की ठड ने भीतर प्रवेश पा लिया। परो के पास स कम्बल उठाकर चन्दन ने उसे अपने गले तक लपेट लिया। लालमन अभी उस ठड को महसूस भी न कर पाया था कि उसकी माँ ने अपनी साडी के आँचल को उसकी पीठ पर फला दिया। लालमन ने मा की ओर देखा और फिर कहानी सुनने लग गया। यह वही पुरानी कहानी थी जो पहले भी कई बार उसका बाप सुना चुका था और जिसम एक रानी के दो बेटे होते हैं—एक के मुह म तारा और दूसरे के मुह मे चाँद।

कई बार इस कहानी को सुन चुकने के कारण लालमन का ध्यान उस पर न होकर टाजिस्टर रेडियो पर था। तीन वष होने को है जब पहली बार उसने अपनी मा से रेडियो खरीदने की बात कही थी। उस समय उसके बाप ने कहा था कि पडोस के रेडियो की आवाज जब अपने घर म इतनी साफ हो तो फिर रेडियो खरीदना मूखता नही तो और क्या। उसकी माँ को भी अपने पति की बात जच गयी थी और उसने भी हँसकर लालमन से यही कहा था कि जब घन श्याम के रेडियो की आवाज अपने यहा एकदम साफ सुनाई पडती है तो फिर दूसरा रेडियो खरीदने स क्या लाभ! कुछ निराशा के साथ वह अपनी मा की बात मान गया था लेकिन इधर कुछ दिनो स उसके भीतर रेडियो की नई इच्छा जागी थी। इसलिए नही कि घरमन का टाजिस्टर उसे बहुत पस द आ गया था बल्कि उसमे आकाशवाणी और सीलोन रेडियो स जो सुन्दर गाने प्रसारित होते वे उसे बेताब-से कर गये थे। वह चाहता था कि खेत मे काम करते समय वह अपने रेडियो को बल के पेड से टाग दे। उससे आते सगीत मे खोकर वह कुछ अधिक काम कर लेने की बात सोचने लगा था।

अस्सी रुपये मे रेडियो मिल जाने की सम्भावना थी। माँ के पास उसके अपने पचहत्तर रुपये धरोहर थे। जो कम होगा वह माँ दे देगी इसकी पूरी उम्मीद थी उसे। पहले तो उसने सोचा था कि घनश्याम ही को पसा दे देगा और वह अपना ही जसा रेडियो शहर से खरीदकर ला देगा, पर फिर खुद शहर पहुचकर खरीदने की उमग को वह मोही दबा भी तो नही द सकता था। अपने जीवन म उसने बहुत कम चीज खरीदी थी। पिछली सक्रान्ति के अवसर पर जब उसने अपने लिए नीले रग की कमीज खुद खरीदी थी उस समय तो उसे ऐसा एहसास हुआ था मानो उसने दुनिया खरीद ली हो। सचमुच ही चीजें अपने आप खरीदने म एक आनन्द था। वह उस आनन्द की ललक को छोडना नही चाहता था।

आज कहानी उसे लम्बी प्रतीत हो रही थी। वह चाहता था कि वह जल्दी पूरी हो जाये ताकि दूसरे कमरे में पहुंचकर वह अपनी माँ से रंडिया की बात कह सके, पर जितनी जल्दी वह चाहता था कहानी समाप्त होने में उतनी ही देर हो रही थी। अपने बाप की अब तक की कहानियों में इतनी नीरसता का आभास उसे कभी नहीं हुआ था। उसे हैरत थी कि उसकी दोनों बहनें उस कहानी को उतने अधिक ध्यान से कैसे सुन पा रही थीं। उसकी माँ भी तो पलकें नहीं झपका रही थी। इन कल्पित बातों को सुनते हुए उसकी माँ की आँखों में हमेशा आंसू आते रहते थे। कभी कुछ कहानियाँ लालमन के हृदय को भी छू जातीं पर वह ऊपर से मुसकराते हुए अपनी माँ को पगली कह जाता।

उसके बाप के दोनों हाथ कम्बल के भीतर कांपते से लग रहे थे। वह कंपन उसकी आवाज में भी था। बाहर से पेड़ों के पत्तों के ठिठुरने और कांपने की आवाजें भी रह रहकर सुनाई पड़ जातीं। कोई आधा मील की दूरी से समुद्र के कराहने की आवाज भी टीस लिये आ जाती थी। ठंड की कसक सभी स्वरों में थी। एक आवारा ख़याल ने लालमन को यह सोचने को विवश कर दिया कि इस कड़ाके की ठंड में रात नंगी कांप रही थी। हवा में जो सिसकियाँ थीं वह रात की व्याकुलता थी। इस आवारा अकारण ख़याल के साथ उसे उन लोगों की याद भी आ गयी जो अपने छाजनहीन घरों में अधनंगे सो रहे होंगे। यह ख़याल एकदम अकारण नहीं था क्योंकि अपनी कहानी में उसका बाप इसी तरह की मिलती जुलती गरीबी का ज़िक्र कर रहा था और लालमन ने अपनी माँ की आँखों में आँसुओं में चिराग़ की झिलमिलाती रोशनी को भरकते देखा। लालमन जानता था कि पुराने दिनों की याद के वे आँसू थे। उसकी माँ अपने बचपन के दिनों की कहानी सुनाती हुई कभी नहीं रोती थी। वह अपने सभी आँसुओं को भीतर ही रोके रह जाती थी पर उसकी तीनों औलाद अपने आँसुओं को नहीं थाम पाती थीं। लालमन की आँखों से अगर कभी आँसू टपके थे तो वह केवल अपनी माँ का अतीत सुनकर।

बिल्ली जो कि ठंडी पड़ी अँगीठी के पास बैठी थी किसी चूहे की भनक पाकर दूसरे कमरे की ओर झपट पड़ी। चूहा चूं चूं करता हुआ जान बचाने के लिए बिल की ओर दौड़ा। कहानी एक क्षण थमकर फिर अपनी वही रफ़्तार ले चुकी थी। बिल्ली भी निराश लौट आयी थी। लालमन ने सोचा कि चूहा हर क्षण अपने को मौत से बचाता रहता है। बिल के बाहर हर वक्त मौत उसका इन्तज़ार करती रहती है। उसकी परवाह किये बिना वह बिल से बाहर होता ही रहता है। मौत जब उस पर झपटती है तो वह किसी-न-किसी तरह बिल में पनाह पा ही लेता है। यह सोचते हुए लालमन को इन्सान और चूहे में एक बहुत सारा फ़र्क़ दिखाई पड़ने लग जाता।

चिराग की लौ का भी ज़्यों कमरे की ठंड से काँप जाना उतना ही स्वाभाविक था जितना कि लालमन का भी एकाएक बार ठंड का महसूस करके सिहर जाना। चिराग के काँपने से रात का रंग और भी चटकीला हो जाता। चन्न ने नयी सिगरेट जलाई और कश के बाद कहानी को आगे बढाया। बीच बीच मे उसकी खाँसी भी जारी रहती। छाया की आँखें नींद से बोझिल होने लगी थीं, फिर भी अपने को झपकियों से बचाते हुए वह अपने बाप की बगल में बैठी रही। बिल्ली की चमकती हुई आँखें अपने खाये हुए शिकार की तलाश में चंचल थीं और लालमन का अपना ख्याल भी चंचल था।

कहानी काफी देर से समाप्त हुई। अपनी माँ के पीछे पीछे लालमन भी बिनारेवाले कमरे में पहुँचा जहाँ उसकी माँ अपनी दोनों लड़कियों के साथ सोती थी। वह अपनी माँ की चारपाई पर बैठ गया। बिना कोई भूमिका बाँधे उसने सीधे माँ के सामने ट्रांजिस्टर की बात रखी। राधिका पहले तो कुछ सोचती रही, फिर लालमन की ओर देखकर बोली—

—मैं सोचती हूँ तुम्हें रेडियो से अधिक आवश्यकता कपड़ों की है।

—कपड़े बाद में खरीद लूँगा।

—मैं तो चाहूँगी कि तुम रेडियो बाद में खरीदो। तुम्हारे जो पैसे मेरे पास हैं उनसे नये साल के लिए अपने कुछ कपड़े खरीद लो, लल्लू।

—नया साल तो अभी दूर है माँ।

—सोचने में दूर है पर तुम देखोगे कि देखते ही देखते कटनी समाप्त होगी और सामने आ जाएगा। दिन बीतते देर नहीं लगती।

अपने भाग्य में रेडियो नहीं। लालमन ने जान-बूझकर इस ढंग से कहा जिससे उसकी माँ को उस पर दया आ गई।

—तुम तो बच्चों की तरह बातें करने लगे। मैंने यह थोड़े ही कहा कि तुम रेडियो न खरीदो। मेरे कहने का मतलब तो केवल इतना है कि पहले उससे भी आवश्यक चीज़ का प्रबन्ध कर लो, फिर क्या जाएगा।

—पर फिर पैसा कहाँ से आएगा?

—मैं दूँगी।

लालमन ने कुछ नहीं कहा और हल्की निराशा के साथ उस कमरे में लौट गया जहाँ उसका चारपाई के नीचे बिल्ली चूहे की ताक में बैठी थी। घनश्याम के घर में अब भी रेडियो का संगीत गूँजता हुआ चला आ रहा था और लालमन का ध्यान अब भी खयालों में अटका हुआ था। उसी के बोझ के साथ वह अपनी चारपाई पर लेट गया।

४

पहली बार परमन को अपने कुत्ते के साथ खरगोश के पीछे, दौड़ते देखकर सालमन को ऐसा लगा था कि उसे शिकार मिल गया है। खरगोश भाग कर झाड़ियों को पार करता हुआ उसके पास से गुजर गया था। परमन का कुत्ता ऊँचा मुंडेर के पास भौंकता हुआ पास पीछे, दौड़ता हुआ उसे पार करने में असमर्थ था और परमन निशाना साधे खड़ा का खड़ा रह गया था। पहले सालमन भी दो खरगोशों के पीछे हाथ धोकर पड़ा हुआ था। उस समय उधर खेतों में शलजम और बैंगन के पौधे थे—खरगोशों का मनचाहा खाद्य। रात में चारों ओर की मुंडेरों के बीच-बीच में उसने जो जाल डाल रखे थे उनसे भी छूटकर वे निकल भागते। खरगोश को कोई बहुत ही बुद्धिमान जानवर बताता तो कोई बहुत मूर्ख। सालमन सोचता, शायद उसे परमन का वह खरगोश मिल जाये जो शिकारी को चकमा दे गया था। उससे कम होशियार खरगोश उसे कई दफा मिले थे जो जाल के भीतर से न होकर मुंडेर के ऊपर छलांग मारकर निकल जाते थे। उसे चार पाँच मूर्ख खरगोश भी मिले थे जो बगीचे के पौधों को चट करने से पहले ही जाल में फँस गये थे। पाँचवाँ खरगोश जो उसे मिला था वह जीवित था। छाया को बहुत अच्छा लगने के कारण सालमन ने उसी शाम लकड़ी और लोहे के तारों से एक कठघरा बनाकर उसे उसमें रख छोड़ा था। दूसरे दिन से उसके लिए हरी पत्तियाँ लाने की जिम्मेदारी भी उस पर आ गयी थी। और खेत से लौटते हुए पंजे भर घास लाना वह कभी नहीं भूलता। धीरे धीरे उसे भी छाया की तरह खरगोश से लगाव हो चला था और वह भी उससे बातें करने लग जाता।

एक सप्ताह बाद ही एक दूसरा खरगोश भी उसके हाथ आ गया था। उसे भी उसने उसी पिंजड़े में रखा। खरगोश हमेशा उसे एक उदास जानवर सा लगता था पर दूसरे खरगोश के आते ही दोनों खरगोश हर वक्त उसे हँसते-से

लगते। अपनी अपनी मूंछों पर ताव देते हुए दोनों आपस में खेलते रहते और उस दिन जब घनश्याम ने कह दिया था कि खरगोश सभी जानवरों से अधिक प्यार करना जानते हैं तो लालमन भी उनकी क्रीड़ाओं का अध्ययन करने लग गया था। उसे भी ऐसा ही प्रतीत हुआ था कि दोनों खरगोश जी भरकर एक दूसरे से प्यार करते थे। दोनों खरगोशों को अपने से बेहतर समझते हुए उसे क्षणिक ईर्ष्या भी हो जाती। पिंजरे में बंद खरगोशों के खेलों को देखते हुए वह मन ही मन सोचता कि इस आजाद देश के आजाद लोगों से अधिक खुशनसीब तो ये बन्दी हैं। अधिक सोचते रहने पर वह इस नतीजे पर पहुँचता कि जो जीना जानता है वह हर जगह इसी खुशी के साथ जी सकता है।

पिंजरे के दोनों खरगोशों से भारी लगाव हो जाने पर लालमन ने अपने खेत के सभी जालों को हटा दिया। अब खरगोश उसके खेत में स्वच्छन्द घूमते। चूंकि खेत में उनके खाने लायक सब्जियाँ नहीं थी, इसलिए जंगली घास पत्तों को खाकर वे बिलों में लौट जाते। अभी कल ही की तो बात है, कुएं की बगल वाली झाड़ी में उसने दो खरगोशों को आपस में खेलते देखा था। दोनों जवान खरगोश अपनी ही धुन में कुछ इस तरह खोये हुए थे कि उन्हें लालमन की उपस्थिति का तनिक भी भान नहीं था। अपने कानों को खड़े किए, मूंछों को मटकाते हुए, एक दूसरे की नाक से नाक रगड़ते हुए दोनों प्यार भरी बातें किये जा रहे थे। वह दृश्य ही कुछ इतना अधिक प्यारा था कि लालमन के हृदय में भी बरबस ही एक इच्छा सी जाग उठी थी। लेकिन उसे एसा एहसास हुआ था कि स्वतन्त्रता केवल जानवरों को नसीब है इन्सानों को नहीं। मन ही मन उसने सोचा—क्या इन्सान भी इतनी स्वतन्त्रता के साथ एक दूसरे को प्यार कर सकता है? न जाने वह कौन सी दीवार थी कौन सी झिझक! दोनों खरगोश लम्बी घासों के बीच कभी लोट जाते और कभी कभी इधर उधर को दौड़ जाते। कहते हैं खरगोश सतर्क जानवर है लेकिन लालमन देख रहा था कि अपने प्यार भरे खेल में वे बेखबर थे। प्रलयंकर आवाज और मौत दोनों से बेपरवाह वे अपनी ही मस्ती में खेलते रह गये थे।

खरगोशों के पास अपनी रक्षा के लिए न ही कोई सींग था न ही कोई ताकत, फिर भी प्रकृति ने उनकी टांगों को वह रफ्तार दी थी कि दौड़कर वे अपनी रक्षा कर लेते। लालमन की नजरों में यह छोटा सा प्यारा जानवर अजीब ताकतवर ठहरा। कभी न थकने वाली उसकी टांगों के बारे में सोचते हुए वह मन ही मन कह उठता कि आखिर आत्मा के परों को भी यह रफ्तार क्यों न मिली। पर तभी खयाल आता कि इन्सान को अगर यह विशेषता मिली होती तो शायद वह दुनिया की हर अच्छाई और अपने पड़ोस की समृद्धि को चुराकर इस तेजी से भागता फिरता कि कभी उसे कोई पकड़ न पाता। फिर हँसकर सोचने लग जाता कि अच्छा

हुआ भगवान् ने इंसान को बहुत जल्द थक जाने वाला जीव बनाया अन्यथा वह अनथों से कभी नहीं थकता। उसे लगता कि आदमी के भीतर की हर अहम्मन्यता एकदम खोखली चीज है, तभी तो हर छोटे से छोटे जानवर की निजी विशेषताओं के सामने वह लाघव भावना महसूस करता होगा। जानवरों की विशेषताओं से हीन वह उनकी बुराइयों को अपने में पाकर अपनी विशेषता समझ बैठता है। यही कारण है कि कभी वफादार कुत्ते को आदमी से अच्छा बताया जाता है उसके चन्द गुणों के कारण और कभी आदमी को कुत्ते से भी गया गुजरा कहा जाता है।

पूरी आजादी के साथ इन दो मोल मान जानवरों को खेलते देख उसने सोचा था कि घर जाते ही अपने यहां के चन्द दोनों खरगोशों को भी मुक्त कर देगा पर छाया उसे ऐसा करने देती तब तो ! पहले दिन जब उसके घर खरगोश पका था उस समय वह अपने बाप के लिए दो माप शराब खरीद लाया था। घर के सभी लोगों ने कहा था कि गोश्त बहुत ही नरम और स्वादिष्ट था इस लिए उसे भी मानना ही पड़ा था। अब खरगोशों से एक तरह की दोस्ती भी हो जाने पर वह सोचता क्या अब उसी चाव से खरगोश का मांस खाना उससे हो सकेगा ? कभी उसे अपनी भावुकता पर हंसी भी आ जाती। उस दिन धरमन ने कहा था कि कुत्ते को पकड़ में खरगोश के आ जाने पर दौड़कर उस कुत्ते के पंजों और मुंह से छीनना पड़ता है। इससे साफ था कि कुत्ते को भी खरगोश का गोश्त उतना ही भाता था जितना कि आदमी को।

नाम कुछ अधिक सिंदूरी थी। बगल के खेतों में ईख के बगनी फूल कुछ अधिक मस्ती के साथ झूम रहे थे। धरमन का कुत्ता उससे पहले ही लालमन के खेत में घुस आया था। इस कुत्ते को अपने खेत में दौड़ते देख लालमन भीतर ही भीतर खीझकर रह जाता। खैरियत यह थी कि सब्जियों के पौधे बढ़ आये थे जिससे नुकसान का उतना डर तो न था फिर भी उसे यह बात पसन्द नहीं थी। मिर्च भिंडी और बैंगन की जगह अगर टमाटर के पौधे होते तो न जाने उनकी क्या गत होती। अप्रत्यक्ष रूप से लालमन कई बार धरमेन से कह चुका था कि उसके कुत्ते का इस तरह खेत में दौड़ना उसे पसन्द नहीं पर धरमन बात समझने की कोशिश ही नहीं करता।

कुत्ता मिट्टी सूंघता हुआ कुएं की ओर बढ़ गया। कुछ ही मिनट बाद सामने की पगडंडी से धरमेन भी कंधे पर बन्दूक थामे आता दिखाई पड़ा। निराई समाप्त करके लालमन कमर सीधी कर रहा था। धरमेन को अपनी ओर आते देख, बेल के पेड़ के नीचे पहुंच वहां पड़े एक बड़े से पत्थर पर बैठ गया। इधर कुछ दिनों से कॉलेज की छुट्टी थी जिससे धरमेन का इधर आना प्रायः रोज ही हुआ करता था। अपने कुत्ते के पीछे न जाकर धरमेन पगडंडी छोड़ते हुए बेल के नीचे आ गया। लालमन के पास ही बैठते हुए उसने जेब से सिगरेट का पैकेट निकाला

और लाईटर से सुलगाते हुए दूसरे हाथ से पकेट को लालमन की ओर बढ़ा दिया। लालमन कुछ न बोलकर उसे देखता रहा और धरमन ने पकेट को अपनी कमीज की ऊपरी जेब में पहुँचाते हुए अपने निचले होठ को आगे बढ़ाकर पहले कश के धुएं को ऊपर फेंका और हँसते हुए कहा—

—मेरे कॉलेज की लड़कियाँ तक सिगरेट पी लेती हैं।

—सभी?—हैरत के साथ लालमन ने पूछा।

—सभी तो नहीं। फिर भी अनेक हैं।

—हिन्दू लड़कियां?

—हिन्दू लड़कियाँ भी।

—बेशरम होंगी वे।

—तुम तो मेरे भाई से भी अधिक बूढ़े विचार वाले हो। खैर! कल मेरे यहां पहुँच रहे हो या नहीं?

—तुम्हारी ये सिगरेट पीनेवाली लड़कियां भी वहां आयेंगी?

—उन्हें देखना चाहते हो?—लालमन के मुंह पर धुआं फेंकते हुए धरमेन ने पूछा।

—उनसे बचना चाहता हूँ।

—तो इतमीनान रखो वे नहीं आ रही हैं।

क्षितिज पर शाम की लाली जमी सी लग रही थी। समुद्र का गर्जन क्रमशः बढ़ता ही जा रहा था। पंछी उड़ जा रहे थे। धरमन की बंदूक इस समय उसके पैरों के पास थी। उसका कुत्ता गंध लाकर दुम हिलाता हुआ लौट आया था। कुछ ही दूर के किसी खेत में ईख की पुरानी जड़ों को हटाने के लिए आग लगायी गयी थी। धधकती लपटों के साथ काला धुआं आकाश में उठता चला जा रहा था। आग को अन्य खेतों में प्रवेश पाने से रोकने के लिए बहुत से लोगों के इधर से उधर दौड़ने का दृश्य भी उस धुआंधार वातावरण में स्पष्ट था। मिली जुली आवाज़ों का कोलाहल लपटों के साथ ज़ोर पकड़ता जा रहा था।

कुछ मिनट बाद सूरज की किरणें अपनी लालिमा को छोड़कर सागर की अथाह गहराई में खो गयी थीं। आग की लपटों के साथ मिलकर वह लाली और भी चटकीली थी। नीचे से बंदूक को उठाकर उसकी नली को पोछते हुए धरमन ने कहा—

—आज शिकारी शिकार के पीछे नहीं जायेगा।—उसकी नजर आग लगे खेत की ओर थी।

लालमन उसकी इस बात का मतलब समझ गया था। वह जान गया था कि आज धरमन यहीं बैठे शिकार करेगा। इस बात में ज़रा भी सन्देह नहीं था कि आग से बचने के लिए उधर के खरगोश भागते हुए इधर आ निकलेंगे। कुछ

ही देर बाद धरमन ने अपने को गन्तव्य तयार पाया। बहुत देर तक वह इधर से उधर चहलकदमी करता रहा। अपने कुत्ते को लगातार भौंकते पाकर वह अधिर सतर्क होकर सामने की ओर देखने लगा। सरसराहट! और उसने देखा एक बड़ा-सा खरगोश बतहाशा दौड़ा चला आ रहा था। कुत्ते की आवाज सुनकर उसने रास्ता बदल लिया। धरमन ने जल्दी कर दी थी जिससे गोली कुछ पहले ही निकल गयी थी। सनसनाती हुई वह खरगोश की नाक की बगल से निकल गयी। खरगोश ने दायरा लिया बल्कर दौड़ता हुआ बच निकला था। एक लम्बे फासले तक धरमन का कुत्ता भी उसके पीछे दौड़ता रहा। एक क्षण के लिए लालमन को ऐसा प्रतीत हुआ था कि वह वही खरगोश था जिसे कल उसने भाजी के बीच एक दूसरे खरगोश के साथ खेलते पाया था। उसके बच कर निकल जाने पर राहत की लम्बी सांस लेते हुए उसने धीरे से कहा—

—तुम फिर चूक गये धरमन!

उसने कुछ इस ढंग से कहा मानो वह जीवन भर चूकता ही आया हो।

धरमन के घर के सामने से वह कई बार गुजर चुका था। चारों ओर से बाँस की घिरावट के बीच में था उसका वह बड़ा सा घर। प्रवेशद्वार पर लोहे का बड़ा सा फाटक था जिसकी छड़ों के बीच से उसके आँगन की फुलवारी साफ दिखाई पड़ती थी। लालमन जब भी इधर से गुजरा था उसकी आँखें फुलवारी के फूलों पर इस तरह निसार हो जातीं कि सामने के सुन्दर घर को वह कभी भी अच्छी तरह देख नहीं पाया था। फाटक खुला था फिर भी भीतर जाते हुए उसे हिचकिचाहट हो रही थी। इतने बड़े आँगन और इतने बड़े घर में दाखिल होने का उसे कभी मौका नहीं मिला था। खेत का काम देवन्ती और जगदीश पर छोड़कर आया था इसलिए उधर से तो वह बिलकुल निश्चिन्त था। देवन्ती नाते में उसकी बहन लगती थी और जगदीश धनुवा भगत का नाती था। जगदीश शुरू से ही उसके साथ काम करता आ रहा है जबकि देवन्ती केवल उन मौकों पर लालमन का काम करती है जबकि खेत का काम बढ़ जाता हो या सब्जियाँ तोड़नी पड़ती हों। आज उसने खेत में मिर्च और बैगन एक साथ तोड़े गये थे। वह उस समय खेत से निकला था जब धनुवा भगत की गाड़ी सब्जियाँ बटोरने उसके खेत में पहुंच गयी थी और देवन्ती जगदीश के साथ बैगनों को बोरे में भर रही थी।

धरमन के घर के सामने पहुंचकर उसने उसे आवाज दी। दरवाज़ा खोलकर उसे भीतर प्रवेश कराने वाला घनश्याम था। घनश्याम को सामने पाकर उसकी हिचकिचाहट और झिझक जाती रही। जिस बड़े से कमरे में उसे बैठाया गया उसमें पहले से गौतम और किशोर भी बैठे हुए थे। लालमन गौतम के किसी

—पार्टी में दो सौ रुपये खर्च करके चार पाने की उम्मीद भी तो थी।—वचाव वकील के स्वर में घनश्याम ने धरमेन की ओर देखते हुए कहा।

—यह भी एक कारण है जो मुझे बिलकुल पसन्द नहीं। एक तो पार्टी के कोलाहल से मुझे चिढ़ है दूसरी बात यह भी है कि मैं आकर्षण का केन्द्रबिन्दु बनना नहीं चाहता।

—अब तो मानोगे न कि तुम्हारी इन्हीं बातों के लिए तुम्हारे मित्र तुम्हें अजीब कहा करते हैं। आधुनिकता और पाश्चात्यता की धार हमेशा भुके रहते हुए भी तुम पार्टियों और आधुनिक रस्म रिवाजों से कतराते हो।

गौतम की इस बात पर धरमेन ने उसकी ओर देखा और फिर मुसकराकर कहा—

—तुम्हें यह मेरी विचित्रपना सी नहीं प्रतीत होती?

—ठीक है अपनी भी तो मौलिकता चाहिए।

—तो अपने तमाम दोस्तों में कम उदासी में मांग लेने के लिए तुमने हमीं चार को अधिक योग्य समझा!—किशोर ने कहा।

—यहाँ उदासी थोड़े ही है। और फिर उदासी और खुशहाली में उदासी अधिक जीनियस है यह तो तुम्हें मानना ही पड़ेगा क्योंकि तुम शेक्सपियर के स्पेशलिस्ट ठहरे।

—यही बात अगर पहले कह दी होती तो कम से कम हम खाली हाथ तो न आते।

—जबकि तुम्हारा खाली हाथ आना मुझे अधिक पसन्द है। आदमी जब खाली हाथ आता है तो उसका हृदय खाली नहीं होता।

और देखते ही देखते उस बड़े से कमरे में अच्छी खासी पार्टी जम गयी। लालमन अपनी हल्की आत्महीनता के कारण सबसे कम बोल पा रहा था। धरमेन की भाभी जब अपने हाथों चारों को खाना परोस रही थी उस समय धरमेन ने उसकी ओर एकटक देखते हुए कहा था—

—इस घर में मैं भाभी का सबसे प्रिय हूँ।

जिस निगाह से उसकी भाभी ने उसे देखा था उससे किसी को धरमेन की बात पर अविश्वास न हुआ। उस छोटी सी पार्टी में जो सब से बड़ी बात हो गयी वह थी चारों मित्रों के विवश करने पर लालमन का भी बीयर का गिलास खाली कर जाना। दूसरे गिलास को भी उसी भिभक के साथ उठाते हुए वह अपने घर लौटने से डरने सा लगा था। पर इस डर के बीच भी उसे प्रभा पर विश्वास था।

५

पिछले तूफान से पहले रसोईघर बहुत ही छोटा था पर तूफान से छाजन उड़ जाने के बाद जब चन्दन ने उसकी मरम्मत शुरू की थी तो साथ ही उसने रसोईघर का कुछ अधिक विस्तृत भी कर दिया था। ऐसा करके उसने अपनी पत्नी को बहुत खुश पाया था। कभी इसी रसोईघर में प्रवेश करने के लिए राधिका का कमर काफी भुकानी पड़ती थी जबकि अब सालमन भी जो कि घर में सबसे लम्बा था बिना सिर भुकाये भीतर आ जाता। राधिका पत्थर की दीवार से सटकर बैठी मसूर की दाल फटकार रही थी। ऐसा करते हुए भी उसकी नजर प्रभा पर थी जो चूल्हे की अधभीगी लकड़िया को ठीक कर रही थी। रसोईघर धुआंधार था। लकड़िया को अच्छी तरह अलगा देने से लपटें धधक आयी और धुआं कुछ कम हुआ। कोने से ईख के दो सूखे पत्ता को मरोड़ कर उसने लकड़िया के बीच रख दिया जिससे लपटें कुछ अधिक ऊपर उठ आयी। लकड़िया अगर अधभीगी थी तो प्रभा अपने ही को उसका कारण मानती थी क्योंकि कल बादलों के उमड़ने से पहले ही उसकी मा ने उसे आवाज देते हुए आंगन से लकड़िया को उठाकर रसोई में रख लेने की बात कही थी। उस समय प्रभा अपनी नीली ओढ़नी में सफेद बेल काढ़ रही थी इसलिए उठने में उसे कुछ देर हो गयी थी और इतने में बारिश शुरू हो गयी थी।

राधिका उसे पहले ही खरी खोटी सुना चुकी थी इसलिए अब चुपचाप उसे देख रही थी। प्रभा को हर बार कोसकर वह बाद में पछताती सी रह जाती थी क्योंकि प्रभा छाया से भिन्न थी। छाया अधिक दुलार की होने के कारण बात-बात में मुंहजोरी करती रहती जबकि प्रभा सभी कुछ सुनकर भी कभी मुंह नहीं खोलती थी। उसकी भूल जितनी ही बड़ी होती उतनी ही अधिक चुप्पी

साथ रहती थी वह। कम से कम उसकी इस बात पर राधिका भी खुशी थी। छाया को कोसती हुई वह हमेशा यही कहती कि उसे पूरा विश्वास है कि प्रभा की ससुराल से उसे कभी भी कोई उलाहना सुनने को नहीं मिलेगा और अन्त में छाया को भी समझाती हुई वह यही कहती कि लड़कियाँ जितना कम बोलें उतना ही अच्छी समझी जाती हैं। इस पर छाया तपाक से कह उठती—

—शायद ससुराल में। पर अभी तो मैं नैहर में हूँ।

और जब राधिका उसे घर में शान्त बनाने की बात कहती तब वह ठुनककर कहती कि अभी तो बहुत सवेर है। अभी से बनाई शान्त कहाँ पहुँचते पहुँचते छूट सकती है। उससे तर्क करके जीतना राधिका को कभी नहीं आया इसलिए हर बार वह यह कहकर चुप रह जाती कि ठीक है तू ही मेरी सास ठहरी।

ईंधन के सूखे पत्तों से प्रोत्साहन पाकर चूल्हे की आग ने भीगी लकड़ियों पर अधिकार पा लिया था। उन धधकती लपटों से राधिका के चेहरे का रंग बदल सा गया था। उसके अध कुम्हलाये चेहरे पर भी लपटों के कारण नई चमक आ गयी थी। उसकी आँखों में अब भी आग की लपटों को एकटक देखते रहने की ताकत थी। अपने पति से मात्र दस वर्ष छोटी होते हुए वह उससे कुछ अधिक ही कम उम्र की दीखती थी। उसके बालों के बीच बड़ी ही कठिनाई से किसी को एक दो सफेद बाल मिल सकते थे। अगर उसके चेहरे पर एक दो सिलवटें थीं तो उस पिछली बीमारी से जिसके कारण वह तीन महीनों तक चारपाई नहीं छोड़ सकी थी। उसे एक ही साथ मधुमेह और बवासीर दोनों की शिकायत थी। उसके पैरों में कुछ इस तरह की जलन होती कि वह उसे सह नहीं सकती थी। आपरेशन के बाद किसी तरह उसे बवासीर से तो छुटकारा मिल गया था पर उसका मधुमेह अब भी बराबर था। मक्की का भात और गेहूँ की रोटी खाकर उसे जीना पड़ रहा था और वह जी रही थी उसी लगन के साथ जिससे उसने पहले भी कभी जीवन को जिया था। वे क्षण दारुण दण्ड यन्त्रणा और अभाव के थे पर जब उन्हें किसी तरह जी लिया गया था तो फिर उन क्षणों के सामने ये दुःख तो मामूली थे। उसे अपने इस रोगी जीवन में भी विशेषता दिखाई पड़ने लगी थी। वे दिन अपने और अपने पति के सुख के लिए जीने के दिन थे और ये दिन अपने बच्चों के सुख के लिए जीने के थे। अपने पति के प्रति बच्चों के आदर को बढ़ाते रहने के लिए वह हमेशा कहती रहती कि इस घर को कुछ से कुछ बनाकर यहाँ तक लाने के लिए उसके पति को बहुत कुछ करना पड़ा था। अपने तीनों बच्चों को बहुत कुछ सुनाकर भी वह कुछ बातें नहीं सुनाती जिन पर बहुत सारे आँसू पहले ही वह बहा चुके थे।

दाल फटकती हुई वह प्रभा को यह भी कह चुकी थी कि वह चूल्हे में लकड़ी

विफायत स डाल। आसपास म सभी जगल साफ हो जाने क कारण लकडी का अभाव हो चला था। वह तो लालमन है जा मेत स लौटत हुए कभी-कभार कुछ लकडियां लाता रहता है। वर्षों हान को है जब पिछली बार तुलसी महतो की पत्नी और पताहू के साथ वह समुद्र किनारे भावे की सूखी लकडियां बटोरने गयी थी। अब न तो व लकडियां थी और न ही उसम सिर पर बोझ ढोने की हिम्मत।

दाल स चुने ककड पत्थरो को वह बाहर फेंकती जाती और मुर्गिया उन्हे चुगती जाती। कभी उन मुर्गियो के बीच एक दो गौरया भी आ जाती और जब मुर्गिया उन पर झपटती तो वे फुर स उड जाती। मुर्गियां जब तग करती हुई पास तक आ जाती उस समय उनकी ओर बिना देखे ही राधिका अपने हाथ के सूप को थपथपाती हुई उन्हें खदेडने की कोशिश करती। एक क्षण के लिए मुर्गियां वहां स हट जाती पर दूसरे ही क्षण वे फिर आ जाती।

प्रभा को कभी बेपरवाही के साथ रसोई मे काम करते पाकर राधिका उसे समझाने लग जाती। उसे लापरवाही और फिजूलखर्ची से चिढ थी। तरकारी मे कुछ अधिक तल पड जाना या जल्दी म चीनी या नमक का गिर जाना उस अच्छा नही लगता। वह चाहती थी कि उसकी दोनो लडकियां भी चीजो का मूल्य समझें और उन्हें सतना आये, क्योकि वह यह मानती थी कि सतने से बरकत आती है। यह बात एकदम सही थी कि उसके पति ने अपनी जवानी म घोर परिश्रम किया था पर साथ साथ यह भी सही था कि राधिका ने घर को बडी ही कुशलता से चलाया था। उसके हाथो म बरकत थी। कभी भी जानकर उसने एक दाना या एक बूद को फिजल नही जाने दिया। उसकी इस आदत पर चन्दन हँसकर उस कजूसा की रानी कहता। हर चीज को दाता स पकडने की उसकी आदत को अगर उसक पति ने शुरू म कुछ और ही समझा था तो बाद मे उस अपने इरादे को बदलते हुए यह मानना ही पडा था कि वह गृहिणी की विशषता ठहरी।

चूल्हे के सामने से प्रभा के हट जाने पर लपटो की झिलमिलाहट उसकी माँ के चेहरे पर और भी स्पष्ट हो चली थी। एक ओर से उस पुराने चेहरे की झुर्रियां को स्पष्ट करती हुइ वे उसकी उस पुरानी सुन्दरता को भी चमका रही थीं। समय के घषण क बावजूद भी वह चेहरा इस बात का गवाह था कि अति सुन्दर न होकर भी वह अपन समय का सुन्दर चेहरा था। उस सुन्दरता म शायद धुधलापन आ गया हो पर उसकी कमनीयता बाकी थी। उन आँखों और होठो पर अब भी ममता की निर्मलता जवान थी और पराकाष्ठा पर थी। आँखें मृगनयनी न होकर भी मातृत्व और प्यार से लबालब थी। होठो पर जो थिरकन थी उसम भी वात्सल्य की चमक थी। आग की लपटो की चमक उस दिव्य चमक

को चूमती सी लग रही थी।

कुछ पुरानी बातें थी जिन्हें याद करके राधिका को बहुत भारी सुख मिलता था। उन बातों में आसपास के लोगों की कुछ बातें भी होती थी। तुलसी महतो की पत्नी कहती कि आसपास की सभी सासें राधिका को सराहती हुई अपनी अपनी बहुओं से कहती कि वे घर सम्भालना उससे जाकर सीखें। राधिका को उन बातों से खुशी होती थी पर अधिक खुशी उसे अपने पति की बातों से होती जब बड़े ही प्यार के साथ वह उसके बालों से खेलते हुए कहता कि वह गाँव की सबसे अच्छी पत्नी और सबसे योग्य माँ थी। राधिका जानती थी कि उसका पति उसे खुश करने के लिए बहुत सी झूठी प्रशंसाएँ भी कर जाता था फिर भी इस पिछले वाक्य पर वह हृदय से विश्वास कर जाती थी। एकाध बार लालमन ने भी तो उसे कहा था—

—माँ, सचमुच ही तुम दुनिया की सबसे अच्छी माँ हो!

इस वाक्य की अतिशयोक्ति को समझते हुए भी राधिका उसे झूठ मानने को तैयार नहीं थी। मन ही मन वह यह भी महसूस करके खुश रहती कि भगवान ने उसे अच्छा पति और अच्छी औलाद दी थी। अपनी दोनों लड़कियों को अच्छा मानकर भी वह उन्हें केवल इसलिए डाँटती डपटती रहती थी ताकि वे अपनी अच्छाई में बाज न आएँ।

कभी वह इस घर में अकेली रहती थी। चन्दन खेतों में होता था और उसका कोई बच्चा नहीं था। उस समय लालमन ने जन्म लेकर सबसे पहले इस घर की नीरसता को तोड़ा था, फिर घर की बरकत को बनाया था। और जब प्रभा ने जन्म लिया तब तो पति पत्नी उसे घर की लक्ष्मी समझ खुशी से गद्गद हो गये थे। आज भी कभी कभी वह पुरानी तनहाई इस घर में आ ही जाती थी। लालमन खेतों में होता छाया कॉलेज में होती प्रभा सिलाई सीखने चली जाती और चन्दन तुलसी महतो के घर आल्हा सुनने चला जाता। अकेले में रहकर राधिका पुराने दिनों के दुख सुख के बारे में सोचा करती। उन दुख सुख के दिनों को एक साथ याद करने में एक आनन्द निहित था और वह घंटों उसमें खोयी रहती। उस समय वह घर की दीवारों से भी अधिक खामोश रहकर अतीत की खामोशी को सुनती रहती। कभी तुलसी महतो की पत्नी पुकारती हुई भीतर आ जाती और उसे सपनों में खोयी देख झकझोर देती।

कभी एकाकीपन से ऊबकर वह अपने पति के साथ खेतों को चली जाती। ज़िद करके ही वह चन्दन के साथ हो पाती थी क्योंकि चन्दन यह नहीं चाहता था कि खेतों की कड़कती धूप में राधिका अपने गोरे रंग को खो दे। रंग का उसे इतना अधिक खयाल था कि जब प्रभा का जन्म हुआ था उस समय उसके साँवलेपन को देखकर वह कई दिनों तक चिंतित रह गया था। प्रभा ने नाक

नक्शे मे अपनी मा की सूरत पायी थी पर उसका रग अपने बाप से भी अधिक साँवला था। इस बात की चिंता चन्दन को आज भी थी जबकि राधिका इस अंतर को देख नही पाती। उसके भीतर जो माँ थी वह रग रूप के झमेले मे कभी न पडकर अपने बच्चो मे केवल अच्छी आदतें डालने की चिंता मे रहती। वह अच्छी तरह देख और समझ सकती थी कि प्रभा साँवली थी, शायद कुछ अधिक ही साँवली थी वह पर राधिका यह कैसे मान जाती कि वह सुन्दर न थी। गाँव के सभी लोग अगर एक स्वर मे कहते कि प्रभा कुरूप है तो भी राधिका इस बात को नही मानती। उसे अपने तीनो बच्चो से अगाध प्यार था और यही कारण था कि उनकी कमजोरियो की ओर देखने का उसे बहुत कम अवसर मिलता था। प्रभा और छाया को वह अगर डाटती डपटती रहती थी तो उनकी कमजोरियो को देखकर नही जितना कि उन्हे सुशील और सुलक्षणा बनाने के लिए।

तुलसी महतो की स्त्री जब यह कहती कि चन्दन की बेटी के पास सऊर नहीं सूरत लेकर क्या किया जाय जब औरत ही न हो तो। वह गाँव की उन सभी लडकियों को राधिका के सामने कोसती रहती जो उसकी अपनी नजरों मे बिना लच्छन की थी। उसकी बातो को सुन राधिका सहम सी जाती। सोचने लग जाती—कहो उसकी दोनो लडकिया भी कोई फूहड, लदमेसरी और कुलच्छनी न रह उठे पर इस बात की आशका उस समय भी नहीं थी कि कोई उसकी प्रभा को बदसूरत कह बैठे।

तीनो बच्चो मे अगर कभी प्रभा के लिए उसके भीतर थोड़ा सा स्नेह अधिक पैदा हो जाता तो उसके साँवलेपन पर दया करके नही बल्कि अतीत के उन दिनो को याद करके जब खेत खरीदने के कारण उन लोगो की स्थिति कुछ नाजुक हो गयी थी। उस समय घर तक कर्ज था। तभी और अभाव के बीच भी राधिका ने अपने पति और बालमन को कभी भूखा नही रखा था। उस समय छाया पेट मे थी। अपने साथ साथ प्रभा कभार वह प्रभा को भी भूखे सुला लेती थी। उस समय प्रभा आधी बातो को समझती और आधी को नही। फिर भी मा के साथ पेट दबाये चुपचाप सो जाती थी। उस दिन को राधिका कैसे भूल सकती थी जब उसके पति ने प्रभा से पूछा था कि उसने भात खाया या नही और भूखी प्रभा 'हाँ' कहकर दूसरे कमरे मे दौड गयी थी। उन्ही दिनो राधिका ने चाहा था कि वह भी खेत मे पहुँचकर वहा के कामो मे चन्दन का हाथ बँटाये पर चन्दन को यह बात मजूर नही थी। उस समय उसने राधिका के सामने जो बात कही थी वह भी राधिका को जीवन भर याद रहेगी। औरत घर की रानी होती है जगत सेवा की नही—उसके पति ने कहा था।

प्रभा उसकी दूसरी बच्ची होते हुए भी एक तरह से उसकी तीसरी सन्तान

पागलपन, लालमन के लिए एक सपना। प्रभा इस बात को महत्त्व नहीं दे पाती जबकि छाया के लिए वह एक सकल्प था।

अपने हाथ के सूप को बगल की लकड़ी की अध टूटी कुर्सी पर रखकर राधिका अपनी जगह से उठ खड़ी हुई। कोने की छोटी मेज पर के बरतनों से फूल की कटोरी उठाकर उसने उसे प्रभा को दिखाते हुए कहा—

—लूड और राख की कमी हो गयी है क्या ?

प्रभा को समझते देर नहीं लगी कि उसकी मा कटोरी की सफाई से सतुष्ट नहीं थी। मा के हाथ की कटोरी को उसने छिपी नजरों से देखा और सिर झुकाये खड़ी रही।

—या खाती नहीं हो ? बरतनों को रगड़ने की ताकत भी तुम्हारे हाथ मे नहीं ! क्या कारण है कि मेरे धोने पर ये ही बरतन सोने की तरह चमकने लग जाते हैं।

सामने के तख्ते पर से लोटे को उठाकर प्रभा को दिखाती हुई कहती—

—मेरा धोया हुआ है यह लोटा। उसमे मुह दिखाई पड रहा है। आखें उठाकर देखती क्यों नहीं। सास के घर जाओगी तो भाग पकड़कर सिखायगी। तुम्हे बरतन रगड़ना अभी तक नहीं आया।

आग के बुझ जाने से रसोईघर धुआधार हो चला था। कटोरी को मेज पर झनक के साथ रखकर राधिका अपनी आखो को मलती हुई रसोईघर से बाहर हो गयी।

सामने से फूकनी उठाकर चूल्हे को फूकती हुई प्रभा अपनी मा की आवाज को सुनती रही। घर के भीतर वह छाया पर बरस पड़ी थी—

—तुम्हारी टक्कर का कामचोर कहीं और मिलना मुश्किल है। दिन रात पुस्तकों को सामने रखे इस तरह बैठी रहती हो जैसे पडिताइन बनने का इरादा है।

—माँ, तुम पढ़ने नहीं देती।

—भगवान जाने तुम पढ़ती हो या हम पढ़ाती हो।

आग फिर से जल उठी। धुआ अपने आप कम होता गया और प्रभा मेज से कटोरी उठाकर बरतन माजने चली गयी। बाहर की हवा मे ठण्ड थी।

६

सचमुच प्रभा की बदौलत ही घर में किसी भी दूसरे व्यक्ति को यह मालूम न हो सका था कि उस दिन लालमन बीयर के हल्के नशे में घर लौटा था। सुबह प्रभा के सामने उसकी पलकें उठ नहीं पा रही थी क्योंकि केवल प्रभा ही जो इस बात को जानती थी कि लालमन ने अपनी मां की सबसे बड़ी सीख की अवहेलना कर डाली थी। प्रभा की उपस्थिति में भी राधिका कई बार लालमन को वे बातें सुना चुकी थी। वह शराब ही थी जिसके कारण उसकी मां को दर दर की भिखारिन बनना पड़ा था। लालमन के नाना ने शराब के पीछे पुरखों की सारी कमाई पानी की तरह बहा दी थी। उन सभी दृश्यों को एक एक कर राधिका अपने बेटे के सामने रखती जाती जो उसके परिवार के सत्यानाश के कारण बने थे। इस उद्देश्य से वह सब कुछ सुनाती ताकि उन भयानक दृश्यों से भयभीत होकर लालमन कभी भूल से भी शराब को हाथ न लगाये। लालमन अपनी मां के उद्देश्य को समझने में छोटा नहीं था पर क्या करता उस समय वह मित्रों और अपनी मां के बीच खड़ा था। उसने जो कुछ किया था इस विचार मात्र से कि मां तो अपनी ठहरी उसकी उस अवहेलना को माफ कर सकती है पर मित्र अपनी अवहेलना को माफ कर देते इसका उसे संदेह था। और फिर बीयर तो शराब नहीं। बहुत सारे प्रतिष्ठित लोग बीयर को यह तो बीयर है कहकर पी लिया करते हैं। शायद शराब और बीयर में बहुत भारी फर्क हो। लेकिन इस समय लालमन का मन इस तर्क को मानने के लिए तैयार नहीं था। वह अपनी मां का गुनाहगार था। उसके सामने जाते उसे डर लग रहा था। उसकी मां ने तो यह भी कहा था कि शराब की लत एक बार लग जाने पर वह कभी नहीं छूटती। और लालमन इस सच्चाई को कैसे नकार सकता था कि लत उसे लग चुकी थी।

वह अपने घर के जिस कमरे में मूर्ति की तरह अडिग था, वह उसे कैद खाने के उसी कमरे की तरह लग रहा था जहां कुछ दिन पहले वह धनुवा भगत के बड़े बेटे को सजा भुगतते देख आया था। लोहे की नंगी चारपाई, लकड़ी की पुरानी मेज, लकड़ी की ही दो अधटूटी कुर्सियां—कुछ कमी थी तो सामने की खिड़की पर लोहे की छड़ें। खिड़की के सामने पहुंचकर वह दूर के दृश्यों को देखता रहा। एक ओर मुडिया पहाड़ वचन तोड़ने की सजा को भुगत रहा था। दूसरी ओर ईख बटे खेतों के उस पार नारियल और भावे के पेड़ों के बीच से उफनता हुआ समुद्र झिलमिला रहा था।

उसे अपने आप पर एक खामोश हैरत थी। कभी उसे अपना यह कमरा पागलखाने के कमरा सा भी लगता और कभी ऐसा भी लगता कि वह अस्पताल के किसी कमरे में खड़ा है। अपने आप में प्रश्न करता—क्या पहली बार मुझसे इतना बड़ा अनर्थ हुआ है? क्या सचमुच इसे नहीं होना चाहिए था? तो फिर यह क्या हो गया?

छोटी सी नादानी और अब इतना सा दर्द! वह चहलकदमी करने लग जाता। इस कमरे में उसकी माँ एकाएक आ सकती है, उसे ऐसा लगता कि अपने ही कमरे में वह सुरक्षित नहीं था। खेतों की ओर दौड़ जाने को जी करता पर आज तो रविवार था और फिर खेत से तो लौट आया। आज खेत में धरमन से भी भेंट नहीं हुई वरना बातचीत में कुछ समय कट ही जाता। रास्ते से मोटरों के आने जाने की आवाज आती रही। ये आवाजें पहले कभी मस्तिष्क के इतने भीतर तक नहीं पहुंच पाती थीं। इन आवाजों से वह तिलमिला उठता। उसका सिर भनभना उठता। अपने ही कमरे में वह कैद था और कैद से बाहर के हरियाली भरे दृश्य उसे बहुत ही सुहावने लग रहे थे। वे दृश्य इतने सुन्दर पहले कभी नहीं लगे थे और इतने दूर भी नहीं। वह अपने को सामने के सुन्दर हरे भरे दृश्यों से दूर पा रहा था। बीयर के गिलास को उसने कस पकड़ा था कस उठाया था, कब खाली किया था—इन दृश्यों को फिर से सामने लाना कठिन था। एक तरह से उसे याद भी नहीं था। सभी कुछ अपने आप हुआ था। सपनों में घटनाएँ अपने आप घटती जाती हैं। ठीक उसी तरह उस दिन सभी कुछ अपने आप हो गया था पल भर में। पलकें झपकते ही वह क्षण गुजरा था तभी तो सोचने विचारने का समय भी उसे नहीं मिल पाया था। उसने फिर अपने आप से प्रश्न किया—क्या हर गलत कदम को उठते इसी तरह जरा भी देर नहीं लगती? तभी तो दुनिया के सभी अपराध क्षण भर में हो जाते होंगे। अगर ऐसा नहीं होता तो लोगों को ऐसा करने से पहले सोच विचार का अवसर तो मिल जाता।

लालमन को इस बात का सारा दुख था कि वह वह नहीं था जो उसने

सोचा था। वह वह था जो उसने कभी नहीं सोचा था। बाहर भीतर हर जगह ठड थी पर वह ठड और गरमी गमी स बचकर अपने ही ताप म जकडा हुआ था। खिडकी स सटकर खडा वह एकटक बाहर क खालीपन को देखता रहा। घनश्याम के घर स रडियो की धुन चली आ रही थी। अपने घर स सट खेत म मुनआ प्याज क पौधो क बीच निराई कर रहा था। इसी खेत म शुरू स आज तक भुक रहने क कारण मुनुआ की कमर भुक गयी थी। जिस दिन घनश्याम को सरकारी नौकरी मिली थी उस दिन गाव क सभी लोगो न आश्चय स मुनुआ को सीधा खडा होते देखा था। गाँव का वह पहला व्यक्ति था जिसने आध बीघ खेत क बल अपने बेटे को पढ़ाकर हिन्दी अध्यापक बनाया था। लालमन इस बूढे को देखते हुए हमेशा उस मन ही मन दाद देता था। आज वह किसी भी परिपाटी की रौ म अपन को नहीं पा रहा था। रडियो स आते हुए गीत के साथ स्वर मिलाकर गुनगुनाना भी आज उसे नहीं आ रहा था। खिडकी से हटकर वह बीच कमरे म पहुचकर खडा हो गया। कमरा उसके लिए खाली था। वह खालीपन उसके अपन भीतर भी था। कमरे के धुधलपन स ऊबकर वह फिर से खिडकी की ओर लौट पडा। मुनुआ स कुछ ही दूरी पर उसका नाती घर की सफेद दीवार पर कोयले स अस्त-व्यस्त रेखाए कर रहा था। रेखाए आपस म मिलती जा रही थी और उस दूरी स भी लालमन देख पा रहा था कि घनश्याम का वह नन्हा भतीजा मानव आकृतिया जसे चित्र बनाता जा रहा था। लालमन को व दिन कस याद नहीं आते जब वह भी कोयल स सफेद मिट्टी की दीवारो पर इसी तरह के चित्र बनाया करता था। उस समय उसकी मा उसके हाथ से कोयले छीनकर उससे कहती कि दीवारो पर लिखने से कर्ज बढता है। लालमन छोटा था पर बात समझता था इसलिए उसे यह बात पसन्द नहीं थी कि उसके बाप का कर्ज बढे। तभी स उसने दीवारो पर चित्र बनाना छोड दिया था। वह जमीन पर भी लकीरें काटने स डरता था कहीं वसा करने स भी उसके बाप का कर्ज बढता ही न जाये। मुनुआ के नाती को समस्त भोलेपन के साथ चित्रकारी करते देख उसके मन म आया कि यहा स चिल्लाकर उसे अपने परिवार का कर्ज बढाने से रोक दे पर यह सोचकर उसे अपने आप पर हंसी आ गयी कि उसका बाप तो ईख क कारखाने म ऐसी जगह पर है जहा से उसे पसा ही पसा मिलना है मगर खून पसीना एक करके। घनश्याम का यह बडा भाई तो खुद पर दूसरो को कर्ज दिया करता है।

बच्चा लकीर काटता ही जा रहा था और उन अस्त व्यस्त रेखाओं से आकृतियाँ स्पष्ट होती जा रही थीं। कहीं कोई लडका किसी लडकी के पीछे दौडता सा दिखाई पड रहा था कहीं कोई लडकी स्कूल जाती प्रतीत हो रही थी। बच्चे के उस असूक्ष्म प्रयास मे कला थी। उसकी महत्ता बढाने म लालमन

की नजरों में अगर कुछ कमी थी तो उन चित्रों के नीचे एक प्रतिष्ठित हस्ताक्षर की और फिर वह कला आधुनिकता की पराकाष्ठा पर थी। उसे अपने द्वीप के उस प्रख्यात कलाकार की याद आ गयी जिस पर कभी पत्रकारों ने आरोप लगाया था कि वह ब्लफ ठहरा। उसकी चित्रकारी बच्चों की सी थी। इस पर चित्रकार ने उत्तर दिया था कि निश्छल कला को जन्म बच्चे ही दे सकते हैं और उसे तो इस बात का भी विश्वास था कि कभी अगर भगवान धरती पर उतर आये तो वह दुनिया के बीच बच्चे की तरह पेश आना ही अधिक पसंद करेगा तथा उसके हाथ से भी जो चित्र बनेंगे उनमें बच्चों जैसी कला में स्वाभाविकता और निश्छलता ही होगी। उस चित्रकार को आज भी कुछ लोग बहुत बड़ा दार्शनिक और कुछ लोग पागल तक भी मानते हैं पर लालमन उसे पागल नहीं मानता।

क्षण भर को उसका खयाल अपने ही बनाये दायरे से बाहर हो गया था पर फिर झटके से दायरे में भीतर लौट आया। खिड़की से हटकर वह अपनी चारपाई के पास आ गया। प्रभा उस पर कपूर की तरह सफेद चादर बिछा गई थी। लालमन ने सोचा कि उसके बैठने से उस पर सिलवट आ जायेगी पर चूंकि खड़ा खड़ा वह थक गया था इसलिए बैठ गया। सामने की दीवारों पर रामायण महाभारत के कुछ चित्र थे। बहुत ही पुराने होंगे ये चित्र। खुद उसे नहीं मालूम ये चित्र इस दीवार पर कब लटकाये गये होंगे। उसकी माँ को अगर सफाई का बहुत अधिक ध्यान न होता तो इन चित्रों के ऊपर धूल की मोटी परतें होतीं पर चित्र साफ थे क्योंकि प्रभा हमेशा इन पर झाड़ियाँ चला दिया करती है। उन चित्रों को देखते हुए वह सोचता—क्या वे दिन सच्चे थे? क्या सचमुच राम और कृष्ण कभी इस धरती पर थे? तब तो रावण और कंस भी रहे होंगे। सीता का हरण भी हुआ होगा और महाभारत का युद्ध भी। तो फिर दुनिया में नया क्या है?

ठीक खिड़की के नीचे एक आवारा कुत्ता कहीं से आकर अकारण भूकने लगा था। सरकारी नल भी ठीक सामने था जहां से पानी के लिए झगड़ती औरतों की कोलाहलमय आवाजें आ रही थीं। बिना साईलेंसर की एक लारी दहाड़ती हुई रास्ते से गुजरी जिससे वह मकान भी काँप उठा जिसके भीतर लालमन था। बगल में बांस की घिरावट के उस पार जगदत्त महतो की मृत्यु से जो खेत उजड़ा पड़ा था उसे गाँव के बच्चों ने गेंद खेलने का मैदान बना लिया था। उन बच्चों के चिल्लाने की आवाज भी सुनाई पड़ती। इस समय केवल समुद्र शान्त था और पीपल का वह पेड़ भी जिस पर सुबह शाम दुनिया भर के पक्षी चहचहाते रहते हैं।

चाहा कि अकेले समुद्र किनारे चला जाए पर फिर खयाल आया कि वहाँ की रमणीकता और रौनक उसे नहीं भायगी। रविवार होने के कारण द्वीप के

कौने कौन से लोग अपनी सप्ताह भर की थकान को समुद्र में डुबाने आ गये होंगे। समुद्र उसे उस समय बहुत ही सुन्दर लगता जब उसके इस छोर से उस छोर तक सन्नाटा होता है। अकेले किसी चट्टान पर बैठकर लहरों का कराहना उसे बहुत अच्छा लगता है। उसे मन्दिर का ख्याल आया। वहाँ भी इस समय भीड़ होगी। कहीं-न कहीं उसे जाना ही था क्योंकि घर के भीतर एक अकुलाहट सी थी। खेतों की ओर जाने का उसका विचार जरा भी नहीं था। गाँव के छोटे से सिनेमा-घर के सामने भी अधिक भीड़ होगी। घनश्याम भी घर नहीं होगा। हर रविवार को वह हिन्दी की माध्यमिक कक्षाओं को पढ़ाने जाता है। यह निःशुल्क काम लालमन भी कर चुका था। अब भी करता रहता अगर वह छोटा सा काण्ड न हो गया होता तो। वह घटना बहुत छोटी होते हुए भी लालमन को कभी बहुत अधिक बड़ी प्रतीत होने लगती। मामा से उसकी घनिष्ठता हो जाना एकदम स्वाभाविक था क्योंकि वह उस पाठशाला का मुख्य अध्यापक था और मामा वहाँ की एकमात्र अध्यापिका थी। उसके कविता पढ़ने के ढंग को मामा बहुत अधिक पसन्द करती थी और वह मामा की आवाज में देखना बहुत पसन्द करता था। लेकिन जो बात सबसे अधिक स्वाभाविक थी वह थी मामा के बाप द्वारा पाठशाला के सभी बच्चों के सामने उसका अपमान। जाति भेद जैसी बातों को उसने कभी भी महत्त्व नहीं दिया था पर उस दिन मामा के बाप ने अपनी सभी ताकत के साथ चिल्लाते हुए कहा था कि उसकी अपनी जाति के सभी लोग अभी मरे नहीं। उसी शाम घनश्याम की यह बात भी लालमन की समझ में नहीं आयी थी जब उसने कहा था कि मामा का बाप उलटी गंगा बहा गया क्योंकि लालमन ने तो कभी इस सच्चाई पर भी गौर नहीं किया था कि अलग जाति के माँ बाप की औलाद होते हुए भी वह मामा से बहतर जाति का था। कम-से-कम उसे इस बात का तो संतोष था कि उसके अपने घर से किसी ने उसे यह नहीं कहा था कि वह अनर्थ कर रहा है। उस घटना के बाद उसकी माँ ने केवल इतना कहा था कि यह एतराज जो मामा के बाप की ओर से हुआ एकदम निराधार था और अगर आपत्ति की बात पैदा भी होती है तो वह अपने परिवार की ओर से होनी चाहिए थी मामा के बाप की ओर से नहीं क्योंकि किसी भी हैसियत से वह अपने परिवार से आगे कभी नहीं हो सकता। उसकी माँ ने यह भी कहा था कि कुछ भी हो अपनी जाति उससे बहुत अच्छी है और फिर वह आत्म सांत्वना थी जब उसने कहा था कि अच्छा ही हुआ मामा अछूती जात की ठहरी। यह बात भी लालमन की समझ में नहीं आयी थी।

आज एक ख्याल से बचने के लिए दूसरे ख्याल का सहारा लेते हुए लालमन ने अपने को इस दूसरे ख्याल में और भी सख्ती से जकड़ पाया। बहुत दिनों बाद तो नहीं फिर भी कुछ देर ही से लालमन को मामा की याद आयी थी।

मोमा को भूल जाने की कोशिश उसने कभी नही की, फिर भी अपनी हर धड़कनों में मामा को सजोए रखना भी उसने ठीक नही समझा। अभी उसी दिन जब मामा उस खेता के बीच की पगडडी पर मिल गई थी उस समय उसके भीतर का तार तार झनझना उठा था। वे सभी दृश्य सजीव से हो गए थे जब बरगद के पेड़ के नीचे वह उसे कविताएँ सुनाया करता और मामा तन मन से उन्हे सुना करती थी। पगडडी पर मिल जाने पर उसकी मा भी साथ था, फिर भी बिना किसी झिझक के उसने पूछ ही लिया था कि आखिर लालमन की उसकी सुधि क्या नही रहती। उसकी मा की उपस्थिति में लालमन से कोई उत्तर नही बन पडा था। प्रश्न करना चाहकर भी वह कुछ न पूछ पाया था परन्तु मामा ने उस के साथ चार दग चलकर जो कुछ कहा था उसस यह स्पष्ट था कि मामा उसे हर वक्त याद करती है। उसके सिर पर चाल हवा से प्रोत्साहन पाकर लालमन के चेहरे से आ लग थ। कुछ ही दूर चलकर मामा को दूसरा रास्ता ले लेना पडा था और उस दोराहे पर खडा लालमन सोचता रह गया था कि शायद ऐसा ही होना है। दोनो को चार पग चलकर हमेशा के लिए अलग रास्ते ले लेने पडेंगे।

घनश्याम ने उसमे कहा था कि वह डरपोक है और उसने उसकी बात को मान लिया था। और किसी बात के लिए न सही पर इस बात के लिए सचमुच ही वह डरपोक था। वह खुद नही जानता कि उसके भीतर हिम्मत की कमी थी या मामा के प्रति स्नेह की। दो गिलास बीयर के नशे में उस दिन उसे मामा की बहुत अधिक याद आयी थी। धरमन की वह बात उसे बेबुनियाद-सी लगी कि नशे में बहुत सारी चुभन वाली बातो को भुला देने की ताकत आ जाती है। नशे ने तो उसे एक विपरीत शक्ति दी थी। वह तो याद को और भी ताजा करने वाली ताकत थी। उस याद में टीस थी और हल्का उल्लास भी था इसी लिए लालमन कुछ तय नही कर पा रहा था। बीयर पीने की उस बात को वह अच्छा न मानकर बुरा भी नही मान पा रहा था। फिर एक बार पीने की ख्वाहिश न रखते हुए भी वह उससे तोबा करने को भी अपने को तैयार नही पा रहा था।

वह अब भी खेतो में काम करने वाले कपडो में था। उसकी माँ कालीमाई गई हुई थी वहरिया पूजा में करना अब तक उन मैले कपड़ो में वह नही रह पाता। प्रभा दो बार उसे कपडे बदलने को कह चुकी थी। चारपाई पर अब भी उसकी नीली कमीज और काली पतलून ज्यो के-त्यो रखे हुए थे। खिड़की की बगल में दीवार से टगा था वह छोटा सा शीशा जिसके सामने खड़े होकर वह दाढ़ी बनाया करता है। उस ओर न देखते हुए भी उसकी आख कई बार शीशे से टकरा गयी थीं। उसके चेहरे पर सप्ताह भर की दाढ़ी थी। अगर प्रभा उसके पीछे न पडी रहे तो वह दाढ़ी भी महीना तक नही बन पाती। अपने चेहरे को

मेहों के साथ खेलना उसे भी पसन्द नहीं था पर क्या करे रोज दाढ़ी बनाना उसके लिए दुनिया का सबसे कठिन काम था। वह घरमन को दाद देता। गाव के लोग उसके लम्बे बालों और दाढ़ी के कारण उस सनकी कहते थे पर लालमन को उसका वह रूप पसन्द था। घनश्याम उसे धरमन नाम से न पुकार कर हिप्पी नाम से पुकारता था। शुरू में यह सम्बोधन लालमन के सामने कोई मतलब ही नहीं रखता था पर बाद में घनश्याम ने उन तमाम विलायती नव युवकों और नवयुवतियों की कहानियां सुनाई थी जो अपने परिवार से कट हुए थे जिन्हें अपनी निजी दुनिया की तलाश थी और जो भारत को एक बार फिर गुरु मानकर आत्मशांति के लिए उधर लपके चले जा रहे थे।

एक बार भारत हो आने की प्रबल इच्छा लालमन के भीतर भी हुई थी। आज तक वह भारत को मात्र पुस्तकों में ही देखता रहा है। बिहार का वह प्रान्त दर्शन की ज्वलन्त अभिलाषा भला किस मारीशसीय हिन्दू को नहीं घनश्याम बात-बात पर यह कहता जहां से सभी के दादा-परदादा आये थे। लालमन की कल्पना को उस भूमि पर लोटना बड़ा ही स्वाभाविक था। महाशिवरात्रि के दिन जब स्वामी जी ने अपने भाषण के दौरान कहा था कि वह राम कृष्ण की जन्म भूमि से आया है उसने अशोक और बुद्ध की चर्चा की थी। कालिदास और रवीन्द्रनाथ ठाकुर के देश की महानता को बताते हुए उसने सुभाष और गांधी की बात की थी और लालमन के भीतर की भारत दर्शन की अभिलाषा को और भी तीव्र कर दिया था। इस समय अपने ही कमरे में बन्द लालमन अपने भीतर की हर चाह का शिथिल पा रहा था।

यन्त्र मानव की तरह एक चेतनाहीन सक्रियता में उसने अपने कपड़े बदले और घर से बाहर हो गया। बिना किसी निर्धारित ठौर को लक्ष्य किए वह चलता रहा। उसके भीतर कुछ निश्चय करने की ताकत अभी नहीं थी। चलते समय उसके पैरों से कोई भी आवाज़ नहीं पैदा हो रही थी। खुद उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि वह चल रहा था। अपने आप उसके भीतर कविता की एक दो पंक्तियाँ पैदा हो गई थी। किसी को सुनाने की विह्वलता थी उसकी सांसों में।

वह चलता रहा नींद में चलने वाले की तरह।

जो पंक्तियाँ उसके भीतर पैदा हुई थी वे अपने आप बिखर गयी। ठीक भी था इसीलिए उसने भी उन्हें बिखर जाने दिया। उसने शब्दों को एक सूत्र में गूंथा था पर वे शब्द अलग अलग अर्थ रखते हुए भी एक सूत्र में गुंथकर कोई अर्थ नहीं रखते थे इसलिए उसने उन्हें हवा में खो जाने दिया। कुछ पुराने शब्द थे जो उसके हृदय में चुभ रहे थे। वे मिलकर कम्पन पैदा कर रहे थे। अपने आपको भारहीन पा रहा था वह उन शब्दों को नहीं भारहीन पा रहा था। उसे ऐसा महसूस हुआ कि शायद वो वह नशा भर था उसकी धमनियों में

था। तभी उसने अपना नाम सुना किसी दूसरे के मुह मे। वही जानी पहचानी आवाज थी वह। भामा की सुरीली आवाज! पर वह तो ईख के खेतो के बीच मे पहुँच आया था। वह भामा की आवाज कैसे हो सकती थी! वह तो उसकी अपनी ही आवाज थी। और बहुत दिनो के बाद उसने हृदय से चाहा कि सयोग से भामा की आवाज को अपने पीछे से आते हुए वह क्या नही सुन लेता? सच-मुच ही एक बार भामा उसके सामने आकर खडी क्यो नही हो जाती? उससे दूर होकर भामा और भी सुन्दर दिखाई पडने लगी थी।

सामने का समुद्र शान्त था। प्रवाल रेखा के उस पार फेनिल लहरो का वह विद्रोह अदृश्य था पर जिस तरह भामा की याद उसके भीतर छिपी हुई थी ठीक उसी तरह काली चट्टानो के बीच उन ज्वारभाटो का अस्तित्व भी छिपा हुआ था, एकाएक साकार हो जाने के लिए।

७

रात को सभी के खा लने के बाद प्रभा सब से पीछे रसोइघर ही मे खाना खाती थी। कभी उसकी मा सामने होती और कभी वह अकेली ही होती। पूर्व वाला कोना ही उसका वह स्थान था जहा रोज बैठकर वह भोजन करती थी। बिल्ली पूछ उठाये म्याऊँ म्याऊँ करती इधर से उधर घूमती रहती। ऐसे तो प्रभा की खुराक घर म सबसे कम थी फिर भी वह बहुत ही धीरे धीरे भोजन करती थी। और खाने के तुरत ही बाद वह भाड़ू उठाकर रसोईघर को बुहारने लग जाती। रात होने के कारण बुहारे हुए जूठन और कूडे करकट को बाहर न करके वह उ ह पश्चिमी कोने म एकत्र कर देती और वही पर भाड़ू को भी खड़ा देती। शुरू म कई बार वह भाड़ू का खडा रख दिया करती थी और इस पर उसकी मा उसे कोसने लग जाती। इस सच्चाई को जानकर भी कि बहुत कम उम्र स ही प्रभा घर के कामो को सभाल लेती थी उसकी मा उसकी बहुत कम सराहना करती थी। उसे इस बात का डर बना रहता था कि कही वह खुद अपने कामो से सतुष्ट होकर अपनी प्रगति म शिथिलता न ला दे। राधिका जब छोटी थी उस समय घर के कामो म उसकी सफाई और कुशलता को देखती हुई उसकी मा उसे चिकनढट्टी कहकर पुकारा करती थी। वह अपनी बेटी को भी बारीकी और सफाई म उसी तरह माहिर बनाना चाहती थी पर उसकी धार स जो ज्यादती होती रहती उससे तग आकर भी प्रभा चुपचाप अपने कामो म जुटी रहती।

प्रभा की आँखें बहुत ही सुन्दर थी। उसके कान भी जितने लम्बे थे उतने ही सुदर भी थे लेकिन मुखडे की सम्पूर्ण बनावट म सुन्दरता का कुछ कमी हो गयी थी। शुरू म प्रभा का इस बात का बिलकुल पता नही था पर दूसरों की बातें सुनकर वह महसूस करने लग गयी थी कि उसम अपने भाई और बहन का

वह गोरा रंग नहीं। वह सुन्दरता भी नहीं थी जिसके कारण तुलसी महतो की पत्नी उन दोनों को सुगा सुगी कहा करती थी। जब वह उस बात को समझने लग गयी थी उस समय घर की अलमारी के बड़े से शीशे के सामने खड़ी होकर अपने को निरखती हुई अपने चेहरे में सुंदरता की जो कमी थी उसे आंकती रहती। पहले पहल तो वह सुन यह नहीं समझ पायी थी कि उसके चेहरे की बनावट की कमजोरियों का असली जिम्मेदार कौन था। बारी-बारी से वह अपनी माँ अपने बाप और भगवान तक को इस बात के लिए कोसती रहती पर समय के साथ वह अपने आपको कोसने लगी था फिर अपने भाग्य को और अब तो वह उसे भाग्य की बात भी न समझकर केवल संयोग समझने लगी थी। एक दिन उसने किसी को कहते सुन लिया था कि जब इस लड़की को पूरी सूरत देने में कंजूसी करनी थी तो फिर भगवान ने उसे इतनी सुंदर आँखें और बाल क्यों दिये। समय के साथ अगर प्रभा अपनी लाघव भावना को भूलकर भी अपने को बनाती सवारती रहती तो इस खयाल से नहीं कि वह अपने को अधिक आकर्षक बना सके बल्कि इस आदत से विवश होकर कि सफाई उसकी माँ की दी हुई उसकी सबसे बड़ी सीख थी। उसकी मा बात बात पर कहती थी कि सफाई गृहिणी का सबसे बड़ा धर्म होता है। छाया को डाँटती हुई वह कहती—

—केवल मुंह साफ रखने से क्या होता है!

कभी कभार राधिका के पास प्रभा के लिए एकाध अच्छे शब्द भी होते। छाया को डाटती हुई अप्रत्यक्ष रूप से वह उसकी प्रशंसा कर जाती।

—प्रभा का अनुकरण करके भी तुम सफाई सीख सकती हो!

घर के आगे के आँगन को वह रोज सूरज की प्रथम किरणों के साथ बुहारती। इस काम में प्रभा कुछ इतनी अधिक नियमित और समय की पाबन्द थी कि ऐसा प्रतीत होता सूरज की किरणें शायद कभी समय के आगे पीछे हो जाती होंगी पर प्रभा नहीं। वह बुहारती हुई आगे बढ़ती जाती और सूरज की ये प्रथम रश्मियाँ पीछे पीछे उन बुहार मार्गों को चूमने लग जाती। हमेशा साफ सुथर रहने वाले उस आँगन के दो तरफ बाँस की घिराव थी जो कई दिनों से न काटे जाने के कारण काफी बढ़ आयी थी। घनश्याम के घर की ओर का भाग खुला हुआ था। एक दिन जब लालमन ने उधर भी बाँस बाने की इच्छा प्रकट की थी, उस समय उसकी माँ ने उसे यह कहकर रोक दिया था कि घनश्याम और अपने परिवार को एक परिवार समझना चाहिए। एक परिवार के बीच दीवार ठीक नहीं होगी। घर के पिछवाड़े जो थोड़ी सी जमीन थी अधिक उपजाऊ न होने के कारण उसमें जंगल उग आया था। फिर भी उसमें बकरियों के लिए घास मिल ही जाती थी। इसी जंगल पड़े खेत के बल उसकी माँ कभी दस बारह बकरियों को पालती थी लेकिन पिछले सूखे में जब घास की तंगी हो गयी थी उस समय

प्रभा ने भाई न माँ को वरिंयाँ बन दा की बात कही थी। पर घर का कोई भी यह नहीं चाहता था कि राधिका दूसरे जगह से यान साथ इसलिए लालमन की बात को सभी ने मान लिया था और दूसरे ही दिन सात वरियाँ को बेच दिया गया था। सभी के पूरे चार सौ पचीस रुपय मिल थे और लाल मन ही ने कहा था कि उन पैसों से प्रभा के गहने बना लिए जाएँ क्योंकि उसे विश्वास था कि यही कोई दो तीन वर्ष म अधिक प्रभा इस घर में रह नहीं सकती। उसका बाप हमेशा यही कहता रहता था कि लड़की के हाथ जितनी जल्दी पीले हो सकें उतना ही अच्छा होता है। लालमन की बात राधिका को जँच गयी थी अतः दूसरे ही दिन सुनार भी घर पहुँच गया था।

प्रभा को इस बात का गौरव-सा था कि घर में लालमन उसे ही सबसे अधिक प्यार करता था। आज सुबह चन्दराम की बहू एक बड़ा सा रामफल दे गयी थी। उसे हाथ में लेते ही प्रभा को अपने भाई की याद आ गयी थी। वह जानती थी लालमन को रामफल बहुत ही भाता था। उस अध पीले और अध लाल फल को देखकर उसके अपने मुह में भी पानी आ गया था फिर भी उसने उसे सभी की नजरों से छिपाकर रख लिया था। वह चाहती थी कि लाल मन अपने हाथों उसे बाँटे। उसके हाथ म जब भी कोई अच्छी चीज आ जाती वह उसे अपने भाई के लिए सँजो रखती। जिस दिन उसके गहने बनकर आये थे उस दिन प्रभा को लालमन का उतना ही ख्याल था। उसकी माँ जब डिब्बा खोलने लगी थी उस समय प्रभा ने उसे रोकते हुए कहा था—

—इतनी जल्दी क्या है? भैया को आ जाने दो वही अपने हाथों खोलेगा।

—वाह बिना मुर्गा सवेरा नहीं होगा! हमारे देख लेने से ये गहने जूठे पड़ जायेंगे क्या जो तुम्हें अपने भाई की याद आ गयी!

प्रभा की बात का अनसुनी करती हुई राधिका ने डिब्बा खोल ही दिया था। उस समय उन गहनों को देखकर प्रभा को वह खुशी नहीं हुई जो उसे होनी चाहिए थी। रात को जब लालमन लौटा था उस समय वह उस बच्चे की तरह जो नया खिलौना पाकर मित्रों के पास दौड़ जाता है, उसके पास डिब्बा लिये पहुची थी और लालमन के होंठों के बीच मुसकान देखकर वह सचमुच बहुत अधिक खुश हो चली थी। उसने उससे पूछा था—

—कैसे हैं ये गहने?

—डिब्बे में तो सुन्दर हैं पर

—पर क्या?

—इनकी असली सुन्दरता का पता तो तुम्हारे पहनने ही से चलेगा।

लालमन को कहे देर नहीं हुई थी कि डिब्बा उठाये प्रभा दूसरे कमरे म दौड़ गयी थी और कुछ ही मिनट बाद उन गहनों को पहने लालमन के सामने आ

खड़ी हुई थी। लालमन चुपचाप उसे एकटक देखता रह गया था। प्रभा ने अजीब अन्दाज से पूछा था—

—अब कैसे लगते हैं?

—बहुत सुन्दर!

—और मैं?

—तुम भी!—प्रभा के गाल पर चिकोटी काटते हुए लालमन उसके उस भोलेपन को देखता ही रह गया था। कुछ देर बाद एकाएक पूरी गम्भीरता लाते हुए लालमन ने कहा था—

—ये गहने एक बात कहते से प्रतीत हो रहे हैं।

—कौन-सी बात?

—ये कह रहे हैं कि तुम्हें बहुत जल्द हमसे जुदा हो जाना पड़ेगा।

यह सुनते ही प्रभा की उन खुशियों में एक धुंधलापन आ गया था। वह उदास होकर अपने भाई की ओर देखती रह गयी थी। वह जानती थी कि इस घर से उसके चले जाने का सबसे अधिक दुख लालमन को ही होगा। छाया को शायद सबसे कम दुख हो क्योंकि वह तो बात बात पर उससे झगड़ती रहती थी। एक दिन जब घर पर प्रभा की शादी की प्रथम चर्चा हुई थी उस दिन छाया ने तालियां बजाते हुए कहा था कि बहुत अच्छा होगा। प्रभा को इस बात का तो पूरा विश्वास नहीं था कि सचमुच ही छाया को उसके चले जाने की बहुत अधिक खुशी होगी। अगर उसे खुशी भी हुई तो ऊपरी। कम से कम एक बात की खुशी तो उसे कभी भी नहीं हो सकती थी कि प्रभा के जाते ही घर के सभी कामों की जिम्मेदारी उस पर आ जायगी। दोनों के बीच बात बात पर छोटे मोटे झगड़े होते रहते थे पर प्रभा ने कभी भी यह नहीं चाहा था कि छाया को घर के वे सारे काम करने पड़ें। उसके अपने मन में भी यह अभिलाषा थी कि [illegible] इन झंझटों में न पड़कर पढ़ लिखे और सचमुच ही कुछ बने। गाँव की [illegible] लड़की सरकारी अध्यापिका थी दूसरी अस्पताल में परिचारिका और [illegible] शहर के किसी दफ्तर में काम करती थी। प्रभा चाहती थी कि [illegible] बहन भी कम से कम उन लड़कियों जैसी बन जाय।

प्रभा घंटे पहले ही कपड़े धोकर वह घर के भीतर [illegible] अपनी माँ को अपने बाप से कहते सुना था कि अगले रविवार [illegible] रहे हैं। प्रभा को बात समझने देर नहीं लगी थी। [illegible] होती आ रही थी और अब उन लोगों के आने का [illegible] चुका था। पहले ही दिन से प्रभा उन आनेवालों के बारे [illegible] बारी बारी से वह उन सभी के बारे में सोचती और [illegible] रहती कि अच्छा हो अगर उसकी होने वाली सास [illegible]।

ऊपर से चाहे कठोर पर भीतर से बहुत अधिक कोमल। अपने बाप की तरह ससुर पाना चाहती थी वह। और वह व्यक्ति जो उसे पसंद करके जीवन भर उसका बनने जा रहा था वह भी बहुत अच्छा हो ठीक उसके भाई लालमन की तरह। इन बातों को वह हर बार सोचती रहती लेकिन आज इन्हीं बातों में वह एक तरह से खो गयी थी। बहुत सारे प्रश्न थे उसके मस्तिष्क में। न जाने उसके सपने साकार होंगे या नहीं वह दुविधा में थी। कैसा होगा वह घर? कैसे होंगे उस घर के लोग? ये पराये अपने कैसे बन जाते हैं और अपने पराये कैसे हो जाते हैं? क्या सभी लड़कियों का जन्म केवल इसी परिपाटी को पूरा करने के लिए होता है? रसोईघर के सामने की धूप में बैठी प्रभा कुछ अधिक आज़ादी से सोचने में लगी हुई थी। उसने अपनी माँ के मुँह से यह भी सुना था कि अगर बात पक्की हो गयी तो इसी वर्ष के आखिरी महीने तक उसकी शादी हो जाने की सम्भावना थी। इस शादी शब्द के प्रति उसके भीतर जो जिज्ञासा थी उसमें सुख का भी कुछ अंश था लेकिन दुःख का अंश कुछ अधिक था। एक नयी दुनिया पाने की खुशी से कहीं अपनों से विछुड़ने का दुःख था। सबसे अधिक वह उस व्यक्ति के बारे में सोचती जो उसका सर्वस्व बनने जा रहा था। उसने तो ऐसा ही सुना था—अपनी माँ से, तुलसी महतो की पत्नी से और अन्य लोगों से भी। उसके लिए यह बड़ी अजीब बात थी कि कोई आधी उम्र के बाद मिलकर पूरे जीवन का मालिक बन जाय। कैसा होगा वह व्यक्ति जो उसका सभी कुछ बनने वाला था। क्या वह लालमन की तरह होगा या घनश्याम की तरह? ये ही तो दो मर्द थे जिन्हें कुछ अधिक नजदीक से वह जानती थी। वह तो यही चाहती थी कि इन्हीं दोनों में से किसी एक की तरह वह हो। क्या उसकी आवाज भी लालमन की आवाज की तरह सुरीली होगी? पर सभी लोगों की आवाज़ें सुरीली थोड़े ही होती हैं? उसका स्वभाव कैसा होगा? भगवान न करे वह रामदेव शराबी की तरह हो।

रविवार में केवल चार ही दिन तो रहते थे। उसके लिए सबसे बड़ी बात थी उस दिन साड़ी में उन लोगों के सामने खड़ा होना। माँ कहती है—लहँगे और ब्लाउज में उन लोगों के सामने जाना ठीक नहीं होगा। अब तक केवल दो अवसरों पर ही उसने साड़ी पहनी थी—एक बार महाशिवरात्रि के अवसर पर जब वह परी तालाब जल स्नान गई थी और दूसरी बार जमुनी की शादी में। साड़ी पहनने की चाह तो उसके भीतर काफी प्रबल थी पर उसमें लिपटी अजनबियों के सामने आ खड़ा होना उसे बड़ा कठिन प्रतीत हो रहा था। फेरीवाले उसमान चाचा से उसकी माँ ने नीले रंग की नई साड़ी खरीदी थी उसके लिए। वह साड़ी उसे बहुत पसंद थी। उसी रात अपनी माँ की आँखें बचाकर उस साड़ी में वह अपने भाई के सामने पहुँची थी। लालमन अपनी

प्यार भरी निगाहों से उसे देखता ही रह गया था। फिर उसकी कलाई पकड़कर उसे अपने पास चारपाई पर बैठाते हुए उसने कहा था—

—तुम बहुत सुन्दर लग रही हो प्रभा !

लालमन को अपने इस वाक्य पर खुद विश्वास नहीं था। प्रभा बदसूरत नहीं थी, फिर भी उसे बहुत सुन्दर कहकर उसने ममत्व प्रेम ही तो प्रदर्शित किया था। वह जानता था कि यह अतिशयोक्ति थी लेकिन उसकी नजरें यह मानने को भी तैयार नहीं थीं कि उस साड़ी में उसकी बहन फब नहीं रही थी। लोग चाहे कुछ कहें, लालमन के लिए प्रभा भी उतनी ही सुन्दर थी जितनी छाया। कुछ हद तक अपने स्वभाव के कारण वह छाया से भी अधिक सुन्दर थी पर कौन मानता इस बात को !

प्रभा धूप में बैठी अपने भीतर बहुत सारे प्रश्नों के उत्तर ढूंढ रही थी कि छाया भी उसके पास आकर बैठ गयी। पैर में चोट आ जाने से जूते न पहन सकने का बहाना करके वह दो दिनों से कॉलेज नहीं जा रही थी। कई बार छाया की ओर देखती हुई प्रभा अपने आप से पूछ उठी थी कि आखिर भगवान ने उसे भी छाया जैसा रंग रूप क्यों नहीं दिया। कभी उसे ऐसा भी एहसास होता कि छाया की सुन्दरता से उसे ईर्ष्या थी। उसकी यह भावना क्षणिक होती थी। उसे इस बात की खुशी थी कि छाया पास पड़ोस की सभी लड़कियों से अधिक रूपवती थी। उसके चेहरे के साथ साथ उसके शरीर की गठन भी बेमिसाल थी। प्रभा उससे बड़ी थी पर ऐसा लगता कि छाया में अधिक जवानी थी। वह डाली के किसी तैयार फल की तरह थी। सिर से पांव तक उसमें कशिश थी आकर्षण था, मादकता थी नजाकत थी। प्रभा अपलक उसकी ओर देख रही थी। वह परख रही थी उसके शरीर की बनावट को। उसे अपनी ओर एकटक देखते पाकर छाया ने पूछा—

—क्या देख रही हो दीदी ?

जिस समय वह प्रभा से झगड़ती नहीं थी उस समय वह उसे दीदी कहती, पर झगड़ने पर उसे लोलू कहकर पुकारती। लालू अब नहीं रहा। उसकी मृत्यु महीनों पहले अकस्मात हो गई थी। प्रभा और उसमें काफी बनती थी। घन श्याम की बहन ने एक दिन छाया से कह दिया था कि दोनों एक-दूसरे को प्यार करते हैं। तभी से जब भी दोनों के बीच झगड़ा होता छाया प्रभा को लालू नाम से चिढ़ाया करती थी। लालू की मृत्यु का प्रभा को बहुत दुख हुआ था क्योंकि वह उसे उतना ही चाहती थी जितना कि अपने भाई को। गांव के गर्ल्स ... ी लोलू की मृत्यु का दुख हुआ था। बहुत सारी लड़कियाँ ... उदास रही थी।

छाया के प्रश्न से चौंककर प्रभा ने उस पर से आँखें हटा लीं। ...

दोबारा प्रश्न किया।

—क्या देख रही थी, दीदी ?

—देख रही थी कि तुम तो आजकल मुझसे बडी दीखने लगी हो।

—सच, मैं तुमसे बडी दीखने लगी हू ?

—हाँ !—प्रभा ने सिर हिलाते हुए कहा।

—तब तो तुम से पहले बूढी हो जाऊगी।

—बडी से मेरा मतलब यह थोडे ही था।

—तो फिर यह कहना चाहती थी कि मेरी शादी तुम से पहले हो जानी चाहिए है न ?—मुसकराती हुई छाया बोली।

—जब से मेरी शादी की बात चली है तब से तुम कुछ अधिक खुश दिखाई पडने लगी हो।

—भला अपनी बहन की शादी की बात से किसको खुशी नही होगी ?

—पर तुम्हारी इस खुशी का कारण

—तुम से पीछा तो छूटे।

—मेरे चले जाने पर समझ जाओगी।

—क्या समझ जाऊँगी ?—प्रभा की ओर देखते हुए छाया ने पूछा।

—घर के सभी काम तुम्हे करने होंगे।

—मैं यहाँ से भागकर तुम्हारे यहाँ आ जाऊगी।

—मेरे यहाँ ?

—तुम्हारे यहाँ न सही जीजाजी के यहाँ।

—अभी तो पीछा छुडाने की बात कर रही थी ?

—तुमसे न झगडने का दुख तो हर घडी बना ही रहेगा।—बडे ही गम्भीर स्वर मे छाया बोली।

—छाया, आज से मैं तुमसे कभी नही झगडूँगी।

—पर झगडती तो मैं तुमसे हू।

यह कहती हुई छाया ने अपने सिर को प्रभा के कधे से सटा लिया। आकाश पर कुछ पतले बादलों के छा जाने से आँगन की धूप मिट चुकी थी। सामने दो मुर्गियाँ आपस मे झगड रही थीं। प्रभा ने सामने से एक ककड उठाकर दोनों के बीच दे मारा। एक क्षण के लिए अलग होकर दोनों मुर्गियाँ फिर एक दूसरे पर चोंच द्वारा प्रहार करने लगीं तभी भीतर से प्रभा को आवाज देती हुई राधिका ने कहा कि वह आँगन से कपडों को उठा ले, वर्षा की सम्भावना है। यह सुनते ही प्रभा छाया को वहीं बैठी छोड खडी हो गयी।

८

घासास भरी एक पगडंडी थी वह जो धनुवा भगत के घर तक ल जाती थी। यह रास्ता इतना अधिक उबड खाबड था कि इस पर केवल पदल ही चला जा सकता था। लालमन ने एक दिन जब साइकिल पर सवार धनुवा भगत के यहा पहुँचने की कोशिश की थी तो नतीजा यह हुआ था कि साइकिल के उलट जाने स वह तमाकू के खेत की मुडर पर जा गिरा था। चोट गहरी आयी थी और धनुवा भगत न हँसत हुए कहा था—

—मरे महल तक पहुचने क लिए तो पदल या हवाई जहाज की सवारी चाहिए, साइकिल की नही।

उस घाव का दाग लालमन के माथे पर आज भी स्पष्ट था। रात की वर्षा के कारण यह रास्ता आज कीचड और फिसलन स भरा हुआ था। जहा तहा मिट्टी का रग लिये पानी अब भी जमा था। बडी सावधानी स परा का उठाते रखते वह धनुवा भगत के घर के सामने पहुँचा। उसके आगन के इकट्ठे पानी म कुछ बच्चे नाव चलाने और मछलिया मारने का खेल खेल रहे थे। उनम जगदीश भी था। वह भी बच्चो के साथ बच्चा बना हुआ था। लालमन न उसे कुछ कहना चाहा पर तभी खयाल आया कि वह तो उससे भी बडी उम्र तक बच्चा का खेल खेला करता था और फिर जगदीश की उम्र तो कठिनाई से दस पार रही होगी। धनुवा भगत अपनी झुकी छत वाल बरामद म बठा बच्चा का खेल देख रहा था। लालमन पर नजर पडते ही अपने हाथ की चिलम की राख को झाडते हुए उसने कहा—

—कसे भूल पडे इधर ?

गाजे की गध अब भी ताजी थी। इस गांजे क कारण धनुवा भगत दो बार कद की सजा भगत आया है। एक बार तो उसक आगन म गाजे क पूर बीस

पौध मिले थे जिसके लिए उसने बीस महीने जेल काटी थी। दूसरी बार उसके घर से सेर भर गाँजा बरामद हुआ था। एक दिन जब लालमन ने उससे अपनी इस आदत से बाज आ जाने को कहा था तो भगत ने हँसकर उत्तर दिया था—

—बेटा यह आदत तो अब मौत के बाद ही छूटेगी और अगर मौत देने में भोले शंकर देर करते हैं तो इसमें मेरा क्या दोष! इस घर में तेरह व्यक्तियों को उनका प्यारा होते देखा है। एक मैं हूँ जिसे वे बेकार समझते हैं।

इस पुराने घर में भगत अपने नाती के साथ अकेला रहता है। कोई दस वर्ष हुए उसकी पुत्रवधू भी एक दिन अकस्मात जगदीश को जन्म देकर चल बसी थी। उसकी मृत्यु के सात ही महीने पहले उसके पति की मृत्यु भी अकस्मात हो गई थी। गाँव का पुजारी कहता कि भगत पर देवी मैया का प्रकोप है। भगत की बहू की मृत्यु के बारे में लालमन को कुछ भी याद नहीं था। उस समय वह बहुत छोटा रहा होगा लेकिन उसने सुन रखा था कि उसे चुड़ैल लग गयी थी। सूखकर काँटा हो जाने पर भी उसके प्राण उसके शरीर को छोड़ नहीं पा रहे थे। मृत्यु शैया पर उसके उस दारुण दुख को देखकर गाँव के सभी बच्चे बूढ़े यही चाहने लग गये थे कि जल्द ही उसको मौत आ जाती तो बेहतर होता। हर रात को लोगों को ऐसा प्रतीत होता कि कल की सुबह वह नहीं देख सकेगी पर हर सुबह के साथ उसकी वे सूनी हुई आभाहीन आँखें टकटकी लगाये आस पास के लोगों को देखने लग जाती। एक जीती लाश की तरह वह महीनों चारपाई पर पड़ी रही थी। एक दिन गाँव के पुजारी को कुछ सूझा और उसने भगत से एक लोटे में कुछ पत्ते डलवाये और उसमें पानी भरवाया फिर कुछ अस्पष्ट मन्त्रों को पढ़ते हुए उसने आम के पत्ते से उस पानी के दो घूँट भगत की पत्नी को पिलाये। गले के नीचे उन घूँटों के उतरते ही बुढ़िया ने जोर से मुँह खोला और फिर हमेशा हमेशा के लिए सो गयी थी। इस बात से बहुत से लोगों को गुरुजी पर आश्चर्य हुआ था। किसी तरह उसके प्राण निकल पाये थे इस बात की सभी को खुशी थी। बाद में पुजारी जी ने कहा था कि भगत की पत्नी का पैसों का बहुत भारी मोह था। उसकी चारपाई पर के बिस्तर के नीचे जो थोड़े बहुत पैसे जमा थे उन्हें छोड़कर जाना बुढ़िया को गवारा नहीं था।

गाँव के बहुत कम लोग थे जिन्होंने पुजारी जी की बात पर विश्वास न किया हो। केवल एक दो नौजवानों ने जिन्होंने यही तक कह दिया था कि भगत की बहू को जहर की पानी में घोल कर पुजारी ने बेचारी को मौत से पहले ही मार डाला। कुछ लोग नौजवानों की इन आवाजों को महापाप समझकर कान बन्द कर लेते।

धनुवा भगत के घर का भीतरी भाग धूमिल था। लालमन का वह धुँधला पन बहुत पसन्द था। अभागुना निदकों से मामा का घर साफ दिखाई पड़ रहा

था। लकड़ी की कुर्सी लालमन की ओर बढ़ाते हुए भगत ने दूसरे कमरे से अपने लिए पीढ़ा उठा लिया। एक तो घर में एक ही लम्बा सा कमरा था पर बीच में सन के बोरों की छत तक ऊँची दीवार थी जिस पर वर्षों पुराने समाचारपत्र सटे हुए थे—कहीं सीधे कहीं उलटे। जगह जगह पर उन अखबारों के फट जाने से दरारें दिखाई पड़ रहे थे। लालमन को मामा के घर की ओर देखते पाकर भगत ने कहा—

—अब तो तुम्हें मामा की याद भी इधर नहीं लाती।

लालमन अपने ही विचारों में था। क्या मामा ने रास्ते में उसे आते नहीं देखा था? तो फिर अब तक वह सामने क्यों नहीं आयी! सामने का दरवाजा और वह लाल खिड़की भी खुली थी। उसे अपने आपको आश्वासन देना भी आता था इसलिए कह उठता—शायद उसने मुझे देखा ही न हो! भला लालमन का मन यह कैसे मान सकता था कि मामा उसे बिसार चुकी थी!

वह जिस स्थान पर बैठा था वहां के गोबर से लिपे हुए फर्श का एक गोल भाग अब भी भीगा हुआ था। उसने सिर उठाकर ईख के सूखे पत्तों के छाजन की ओर देखा और उसे जानते देर न लगी कि वर्षा में छत रिसती रहती है। सामने की पत्थर की दीवार का एक भाग भी भटास के पानी से भीग चला था जिस पर की सफेद मिट्टी का लेप अपना रंग खो चुका था।

लालमन को बार बार खिड़की के जरिये मामा के घर की ओर देखते पाकर धनुवा भगत ने कहा—

—वह कल से कुछ बीमार है।

—मामा?—लालमन के स्वर में आश्चर्य था।

—हाँ अभी अभी तो उसकी मां बता गया।

—क्या हुआ है उसे?

कई दिनों से लालमन ने मामा की कोई खबर नहीं ली थी लेकिन वह यह मानने को भी तैयार नहीं था कि उसका चिन्ता उसे नहीं थी। उसने शायद कभी भी यह नहीं सोचा था कि मामा कभी बीमार पड़ सकती है। और अचानक ही यह एकाएक की छटपटी सी जो उसके भीतर पैदा हो गयी थी इसका भी उसे कोई पूर्व प्रबोध नहीं था। भगत को चुप पाकर उसने तुरंत ही अपने प्रश्न को दोहरा दिया—

—क्या हुआ है मामा को?

—बुखार है।

—बहुत अधिक?

—नहीं मैं सोचता हूँ मामूली है। सर्दी के कारण हुआ होगा।

—दवा आदि का कोई प्रबन्ध?

—उसकी माँ ने बताया कि रात म उसने अदरक और अगियासर एक साथ उबालकर उसे दिया था।

—अदरक और अगियासर से बुखार थोड ही छूट सकता है। यह तो सर्दी की दवा है।

—सर्दी मिटने के बाद ही बुखार मिट सकता है। सचमुच तुम तो बहुत अधिक परेशान दिखाई पडने लग। पर बेटा, जब तुम्हे उसकी इतनी ही चिन्ता थी तो फिर इतनी देर बाद उसकी खबर लने की क्यो सोची ?

—चाचा मैं एक बार उसे देखना चाहता हूँ।

—शामत आयी है। अरे बेटा उसका बाप इस वक्त घर पर ही है। एक बार अपमानित होकर भी तुम ऐसी हिम्मत कर सकते हो ? तुम्ह क्या मालूम कि वह मुझे भी खरी खोटी सुना गया है। कहता था कि मैंने तुम्हारे साहस को बढाया होगा। ऐस बात एकदम झठ भी तो नही पर उसक कहने का ढग मुझ जरा भी पसन्द नही था। पाजी अगर नशे म न होता तो उसे करारा सा जवाब देता पर चुप रह जाना पडा।

—इस हालत म अगर मैं उस एक बार न देख तो मैं अपन को स्थिर नही कर पाऊगा।

—वह बहुत अधिक बीमार थोड ही है।

—कुछ भी हो मैं उस एक बार अपनी आखो से देख बिना यहा से नही हटूगा।

—समझ गया।

—क्या ?

—सचमुच तुम्ह मामा से बहुत अधिक प्यार है। पर फिर भी एक बात समझ म नही आती जब सचमुच ही तुम उसे इतना अधिक प्यार करत हो तो फिर इतने दिना बाद उसकी सुध कसे ली ? यह बसबी जो तुम्ह इस वक्त हो रही है पहल क्या नही हुई ?

—चाचा तुम्हें यह कसे मालूम कि यह बसबी मुझ पहल नही हुई होगी ?

—हुई होती तो यहाँ दौड नही आते ?

—यहा दौड आने की बात कई बार सोची थी।

— तो फिर जब वह रोज टकटकी लगाये बठी रहती थी तो तुम पहुच क्यो नही ?

—क्योकि पहुचना उचित नही था।

—और आज उसके घर तक पहुचन की बात को उचित समझने लगे ?

—वह बीमार है।

—मानता हू पर उसक घर पहुचन वाली बात ना अपन दिमाग स निकाल

दो। तुम चाहो तो मैं जगदीश को भेजकर या खुद जाकर उसकी खबर ला देता हूँ।

धनुवा भगत वह पहला आदमी था जिसे मामा और लालमन ने प्यार से प्यार था। जिस दिन अपनी उदासी को न छुपा सकने पर मामा ने पहली बार उसे अपने हृदय की बात कह डाली थी उस दिन भगत के अपने भीतर का तार तार झनझना उठा था। मामा को लालमन की याद में उदास पाकर उसे अपने जीवन की वह भारी उदासी याद आ गयी थी। उन दिनों उसे एक नया अनुभव हुआ था। एक नयी बात उसे मालूम हुई थी और उसने मान लिया था कि बराबरी में भी अन्तर होता है। झुनिया के परिवारवालों ने केवल इतना कहकर उसे ठुकरा दिया था कि वह उन लोगों की जात का नहीं है। बात का उसकी समझ में आ जाना उतना आसान नहीं था। उसकी अपनी माँ तो हमेशा यही कहती रहती थी कि झुनिया सबसे गयी गुजरी जात वाली थी और झुनिया के परिवारवाले कहते कि भगत की जाति सबसे नीच ठहरी। धनुवा भगत ने तो कभी भी झुनिया को छोटी जात वाली नहीं माना था और न अपने ही को नीच जात का मानने को वह तैयार था।

धनुवा भगत का एक बड़ा भाई था जो सारा और अपने को सुधारक कहता फिरता था। हवन मन्त्र की एक दो पुस्तक रटकर वह पंडित बन बैठा था। शुरू में तो वह भी जाति पाँति का कट्टर विरोधी था पर बाद में भगत के सामने पहुँचकर वह भी यह कहने लग गया था कि उनकी अपनी जाति हिन्दुओं में सबसे ऊँची जाति थी।

—हम तो सीधे महाराणा प्रताप के वंशज हैं।—बड़े गर्व से वह कहता।

शायद इसी कारण उसने अपनी मूँछें भी एकदम महाराणा प्रताप जैसी रख छोड़ी थी। झुनिया के परिवारवालों को वह किसी जूते सीने वाले का वंशज बताता और अपने को असली राजपूत। धनुवा को इस बात से और भी आश्चर्य होता जब इधर उधर की कुछ पुस्तकों से वह अपनी दलील को और भी मजबूत बनाने की कोशिश करने लग जाता। भगत को वे प्रमाण जाली प्रतीत होते। वह अपने को बड़ी जाति का मानने को बिलकुल तैयार नहीं था क्योंकि अगर वह इस बात को मान लेता तो सचमुच झुनिया उसकी नजरों में गिर जाती। उसे यह जरा भी गवारा नहीं था। किसी भी हालत में वह यह नहीं चाहता था कि झुनिया उससे कम हैसियत की प्रमाणित हो जाये। उसने कभी भी किसी तरह के भेद भाव को नहीं माना था और न मानने को तैयार था। उसे अपने को ब्राह्मण मानना भी गवारा नहीं था। उसे मात्र इन्सान रह जाना अधिक पसन्द था।

वह जवान था उस समय जब उसके बाप द्वारा हर वर्ष वाराह पूजा हुआ करती थी। सूअर का गोश्त जो देवता का प्रसाद था, खाने के लिए उसका बाप उसे

जबरदस्ती करता। माँ कहती—इस प्रसाद को ठुकराने वाला देवता की नजर से गिर जाता है। तभी से भगत यह कहने का आदी था कि देवता की आँखों से गिर जाने का उसे कोई गम नहीं। वह आदमी की आँखों से गिरना नहीं चाहता था। लालमन की ओर देखते हुए उसने कहा—

—कहो क्या कहते हो ?

—क्या कहना है ?—लालमन ने जिसे भगत के पिछले प्रश्न का बिलकुल खयाल नहीं था पूछा।

—जगदीश को भेजकर उसकी हालत का पता लगाऊँ ?

—नहीं चाचा।

—तो फिर मैं खुद जाकर देख आता हूँ।

—अगर हालत अच्छी हुई तो

—जरूर साथ लेते आऊँगा।

यह कहकर धनुवा भगत गाँजे की महक को अपने साथ लिये घर से बाहर हो गया। बाहर के बच्चों का कोलाहल पराकाष्ठा पर था। दीवार पर के अखबारी चित्रों को देखते हुए उसने अपने आप से प्रश्न किया—यह विह्वलता पहले क्यों नहीं हुई ? और जब कोई संतोषजनक उत्तर नहीं सूझा तो वह अधिक सोचना बन्द कर धनुवा भगत की वापसी का बेसब्री के साथ इन्तजार करने लगा। इस प्रतीक्षा में वह कुछ इतना अधिक शांत और उद्विग्न था कि उसे अपनी हृद की धड़कनें सुनाई पड़ जातीं। वह अधीरता थी जो उसके ऊपर बोझ बनी हुई थी। समय के साथ वजन बढ़ता चला जा रहा था। वह केवल यही चाह रहा था कि धनुवा भगत के साथ वह मामा को भी अपने सामने पा ले। उसे विश्वास था कि मामा की हालत सुधर गयी होगी और वह भगत के साथ अवश्य आयेगी।

और वही हुआ जिसका उसे विश्वास था। धनुवा भगत के पीछे मामा को देख कर उसे जरा भी आश्चर्य नहीं हुआ पर मामा की सूरत देखकर उसे अन्त अधिक हैरानी हुई। दो दिन की उस बीमारी में वह दो युग की मरीज सी प्रतीत हो रही थी।

—जोरों का बुखार है इसे, फिर भी तुम्हारा नाम सुनते ही चारपाई से उतर पड़ी।—भगत ने कहा।

लालमन उसे चुपचाप देखता रहा।

मन ही मन उसने कहा—तुमने अपनी क्या यह हालत बना रखी है मामा ?

उसके मुरझाये चेहरे पर भी एक ऊपरी मुसकान थी। अस्त-व्यस्त बालों की कुछ लटें अधिक तन के कारण चेहरे पर इधर उधर बिखरी हुई थीं जिससे उसके चेहरे की कान्ति और भी कमी-सी लग रही थी। उसकी आँखों से बुखार का अन्दाजा लगाया जा सकता था जिसे अपनी ऊपरी मुसकान की परत से ढाँपना

चाह कर भी वह असफल थी। उसके शरीर की कमजोरी का खयाल करते हुए लालमन ने अपनी कुर्सी उसकी ओर बढा दी। घर के बाहर होने के लिए दरवाजे तक पहुचते हुए धनुवा भगत ने कहा—

—खरियत रही इसका बाप नशे म सो रहा था।

धनुवा भगत के चले जाने पर मामा कुर्सी पर बैठ गयी। उसके कधो पर हाथ रखते हुए लालमन ने करुण स्वर म कहा—

—मुझसे रूठी हुई हो न ?

—क्या रूठू तुम से ?

—तो फिर बीमारी की खबर मुझे क्यो नही दी ?

—दो दिन की मामूली सर्दी भी कोई बीमारी होती है। और फिर न जाने बीमारी की बात को भी तुम बहाना समझ हसकर रह जाते।

—तुम अब भी बातो का उल्टा सीधा अर्थ लगा रही हो, मामा ?

—बहुत दिनो बाद तुम्हे मेरी याद आयी !

—तुम्हारी याद तो हर दूसरे क्षण आती है।

—और हर दूसरे क्षण तुम मेरी खबर लेने आ जाते हो! तुम निष्ठुर निकले, लाल। पर शायद तुम्हारा कोई दोष नही। तुम्हारी जगह कोई दूसरा भी ऐसा ही करता और फिर मेरे बाप ने तुम्हारे साथ जो कुछ किया है उसका बदला लेना भी तो जरूरी है।

—मामा तुमने किसी डॉक्टर को नही दिखाया ?

—नही लालमन, तुम अपने को इतना अधिक कठोर न बनाओ।

—मैं कठोर नही हूँ मामा।

—बनने की कोशिश भी मत करो। मैं जानती हूँ तुम पत्थरदिल नही हो, कोई दूसरा तुम्हे मुझसे अधिक कैसे जान सकता है। कोई भी यह दावा नही कर सकता। तुम्हे जानकर भी मैं आज अनजान बनी बैठी हूँ। तुम जो नही हो उसे बताने का झूठा प्रयास क्या करते हो ?

—तुम्हे जोरो का बुखार है मामा। तुम्हें यहाँ बुलवाकर मैंने अच्छा नही किया।

—मैं खुद आयी हूँ।

—विश्वास करो अब तुम्हे देखने रोज आया करूँगा।

—छोड पाओगे अपने खेत को ?

—तुम्हारे लिए छोड पाऊँगा।—मामा के गरम माथ से अपने माथ को सटाते हुए लालमन ने कहा।

बरामदे से भगत के आल्हा गुनगुनाने की आवाज आ रही थी।

९

प्रभा ने घर के हर काम को अपनी माँ की कड़ी देख रेख में किया था। अपनी माँ को संतुष्ट करने के लिए उसे हर काम में दुगुनी मेहनत करनी पड़ी थी, दुगुना समय देना पड़ा था, फिर भी उसकी माँ को मनचाहा संतोष नहीं मिला था। चन्द मिनट पहले उन बरतनों के सामने पहुँचकर जिन्हें लुड़ और राख से रगड़ रगड़कर धोने में प्रभा ने घंटा लगा दिया था, उसने कहा था कि वे साफ नहीं हुए थे। प्रभा को एक मोटी सी गाली देने के बाद उसने कहा था कि मेहमानों को ऐसे बरतनों में चाय देकर अपना फूहड़पन जताना है। मेज पर जिस ढंग से प्लास्टिक की चादर बिछाई गयी थी वह भी उसे पसन्द नहीं था। ऊपर से फूलदान और तश्तरी गिलासों को हटाकर उसने अपने हाथों चादर को ठीक किया। यद्यपि प्रभा और उसके बिछाने में कोई अन्तर था या नहीं, एक तरह से राधिका के बिछाने पर चादर एक ओर कुछ सलवट सी गयी थी फिर भी ऐसा करके राधिका ने एक लम्बी साँस ली थी। इसी तरह कुर्सियों के स्थान भी उसने बदले, फूलदान के फूलों को ठीक किया। दीवार के चित्रों पर साफी चलाई, कोने-कूचे में झाड़ू दी। आँगन से पत्ते पत्ते को चुना। हर अस्त व्यस्तता को दूर किया और तब जाकर वह चैन से बैठ सकी।

लालमन ने जब हँसकर अपनी माँ से कहा था कि आज वह उसमें अजीब स्फूर्ति देख रहा था उस समय राधिका ने केवल इतना कहा था कि जो मेहमान आ रहे हैं वे साधारण थोड़े ही ठहरे। वे शहरी लोग हुए, सफाई पर सबसे अधिक ध्यान देते होंगे। शहर के लोग और अधिक सफाई, लालमन को यह बात उतनी ठीक नहीं जँची थी। शहर जाने के उसे कम अवसर मिले थे फिर भी उसने वहाँ जो सफाई देखी थी उसे वह सफाई मानने को तैयार नहीं था। एक दो ऐसी गलियों से वह गुजरा था जहाँ के नालों की दुर्गन्ध से कई दिनों तक

उसकी नाव म रही थी। जगह जगह उसने कूडा-कडकट क ढेर देखे थे और उन पर भूखे आवारा कुत्ता के भण्ड का देखा था। कुछ जगहा पर नाल के पानी का बामी भात और तरकारियो क सामन निखिल पड जाते देखा था। उन दश्या को सोचत हुए जब शहर के प्रति उसका मन खट्टा हो गया था उस समय कुछ अधिक सोचन के बाद उसन अपने आप को इस दलील स मना लिया था कि शहर म सफाई भी तो थी, अच्छाई भी तो थी।

प्रभा को सभी कामा स निवत्त होत देख राधिका ने उस जा र नहा आने को कहा। फिर छाया का भी कपडे बदल लन को कहो। लालमन स समय पूछा। मालूम हुआ कि मेहमाना के पहुचने म अधिक समय नहीं रह गया है। सूजी का मोहनभोग वह अपन हाथो बना चुकी थी। सोचा, कोई पन्द्रह मिनट म चाय भी वह अपने ही हाथा तयार करेगी। उसे पूरा विश्वास था कि गाय क ताज घी म उसन जो मोहनभाग तैयार किया था उससे उसके मेहमान प्रभावित होकर ही रहेंग। वह जो चाय तयार करने वाली थी उसके लिए भी वह इलायची, आदि का प्रबन्ध पहल ही स कर चुकी थी। वह चाहती थी कि उसक घर आये मेहमान यह मानकर रह कि घर के काम काजो और रसोई म उसका यह घर अपना निजी स्थान रखता है। प्रभा म खूबसूरती की कुछ कमी के लिए उस डर था। वह उस अन्य विशेषता से दूर कर देने का निणय किये बठी थी। वह चाहती थी कि लोग इस घर की सफाई और शील स्वभाव स मुग्ध हो जाय। इस बात म उस जरा भी सदेह नहीं था कि प्रभा के स्वभाव का देखकर वे उसकी ओर अवश्य आकर्षित होग। आखिर चेहरे की जरा सी बनावट और रग की कमी के अलावा उसम और किस दूसरी बात का अभाव था। गाँव की सभी औरतें इस बात का मानती हैं कि प्रभा पूरे गाव की सबसे सुशील लडकी थी। उसकी आवाज की वह मिठास भी अनूठी थी। छोट से बडे सभी उसे प्यार करत थे। कामा के लिए उसम जो स्फूर्ति थी वह शायद ही गाँव की किसी लडकी मे थी।

च दन बहुत पहले ही स तयार बठा था। नयी धाती और महाशिवरात्रि के अवसर पर खरीदी गयी नयी सफेद कमीज म था वह। माथे का फूलदार रूमाल भी साफ था। बरामदे की आरामकुर्सी पर बठा वह रास्ते की ओर ताक लगाये हुए था। मन ही मन वह यही मना रहा था कि लोगा का प्रभा पसन्द आ जाये। उसक लम्बे जीवन का यह पहला अवसर था कि वह अपनी औलाद की शादी रचाय। लालमन उसका पहला लडका था पर चूकि लडकियाँ पहले ही शादी के लिए तयार हो जाती हैं इसलिए प्रभा की बारी भी लालमन स पहले आ गयी थी। चन्दन तो यही चाहता था कि वह अपने तीनो बच्चा के विवाह अपनी आखा से देख ले पर अगर उसकी ढलती उम्र क कारण यह असम्भव हुआ ता

भी प्रभा और लालमन के विवाह वह देख ले, यह उसकी सब से बड़ी अभिलाषा थी।

आस पास के वे चार पाँच लोग भी आ गये थे जिन्हें न्यौता था। वह तुलसी महतो की पत्नी था जो सबसे पहले पहुंची थी और जो यहाँ से सब से बाद में निकलेगी इस बात में भी किसी को सन्देह नहीं था। वह जहाँ भी जिस काज में जाती है सबसे पहले पहुंचती है और सबसे बाद में विदाई लेती है। जहाँ तक प्रसाद मिठाई आदि की बात रही उसके बारे में उसकी अपनी खास नीति थी। प्रसाद या मिठाई का अपना हिस्सा ले लेने के बाद वह भर में अपनी बहुरिया और नाती पोते के नाम लेती हुई दोनों हाथों को आगे बढ़ाती। यही कारण था कि कुछ लोग उसे परसाद वाली कहकर पुकारते थे और चूंकि परसाद शब्द का सबसे कामचोर था इसलिए तुलसी महतो की पत्नी को इस नाम से चिढ़ थी।

लालमन अपनी माँ के आदेश पर रास्ते ही में मेहमानों की प्रतीक्षा कर रहा था। निश्चित समय से कोई आधा घंटे बाद दो मोटरें घर के सामने रुकीं। बड़े आवभगत के साथ लालमन सभी को घर में ले आया। दस व्यक्तियों में सात स्त्रियाँ थीं। पहले ही से पड़ोस से कुर्सियाँ माँगकर दो कमरों में सजा दी गयी थीं। घर की कुर्सियाँ जो काफी पुरानी हो चली थीं उन्हें पीछे रख दिया था। पुरुष एक कमरे में बैठे और स्त्रियाँ दूसरे में। बात होती रही। पारिवारिक बातों से होते हुए देश की समस्याओं पर पहुंचते हुए घनश्याम के बाप ने कहा—

—जितने आदमी उतनी समस्याएँ!

—कभी कभी तो यह समझना भी कठिन हो जाता है कि आज के इस अभाव भरे जीवन का असली जिम्मेदार कौन है। कोई दोष सरकार पर डालता है तो कोई जनता पर।

सुखुवा ने इस बार अतीत की स्मृति के साथ कहा—

—आज से तीस पतीस वर्ष पहले जीवन इतना दुश्वार नहीं था। गरीबी में भी किसी तरह रूखा सूखा खाकर सभी खुश थे। लोग जी जान से मेहनत करके किसी न किसी तरह अपने और अपने परिवार के लिए रोटी का प्रबन्ध कर ही लेते थे।

—उस समय की यह सबसे बड़ी विशेषता रही होगी कि जनसंख्या की कमी होगी और बेकारी का कहीं नामो निशान न होगा।—लड़के के बहनोई ने कहा।

—उस समय की हर बात निराली थी। मैं अपनी बात कहता हूं। केवल लोटा भर पानी पीकर मैं काम पर पहुंच जाता था। ग्यारह बजे तक काम करते रहने के बाद मैं अपनी पत्नी को खाना लिए आते देख कमर सीधी करता था। उस समय के पानी और अनाज में जो ताकत थी अब कहाँ है। अब तो दूध में

वह मलाई भी दिखाई नहीं पड़ती जो पहले दिखाई पड़ती थी।

सुखवा की बात से प्रभावित होकर चन्दन ने भी अपनी ओर से कहा—

—आज तो लोग जितना खाते हैं उतने ही कमजोर दीखते हैं। अब तो लोगों में मेहनत करने की वह लगन भी दिखाई नहीं पड़ती।

—बात एकदम सही है। पहले आदमी जो कुछ करता था एक अनुराग में करता था अब तो ववसी से करना पड़ता है। अभी कल की बात है, हम त्रिलोक के शिवालय गए थे। वह मंदिर देखते ही बनता है। यह सोचने की बात है कि उतना विशाल मंदिर उस समय लोगों ने बनाया था जब सुविधा और साधनों की कमी थी। आज हमारे पास हर तरह की सुविधा और साधन हैं, फिर भी नये सिरे से वैसा मंदिर खड़ा करना आज के लोगों के लिए एकदम नामुमकिन है।

—इस बात से अचरज होता है आखिर पहले की सभी अच्छाइयाँ कहाँ गायब हो गयीं? अब तो बात बात पर भ्रष्टाचारी, बदनामी, धोखेबाजी, चरित्र हीनता और शिथिलता नजर आती है।

—जमाना बदल गया।

—जमाना कैसे बदल सकता है! हम खुद बदल गये हैं।

—और फिर हमारा बदल जाना भी क्या अस्वाभाविक हो सकता है।—हँस कर लड़के के बहनोई ने कहा

—वह स्वाभाविकता क्या है?

—वातावरण ही जहरीला हो गया है।

—आप शायद ठीक ही कह रहे हैं। फल, सब्जियों और अनाजों में दवाई डाल डालकर उनकी सभी शक्तियों को घटा दिया गया है।

—हमारे जमाने में जो तरबूज होते थे अब तो सपने में भी वे नहीं दीखते। फलों के वे रंग और मिठास भी अब गायब है। भला अब केले आडू और अननास जैसे फलों में कीड़े पड़ जाते हैं। अगर ऐसा ही रहा तो कुछ दिनों में हमारे देश से नारियल का नामोनिशान भी मिट जायगा। सभी पेड़ों को कीड़े तहस नहस करते जा रहे हैं।

—सुना है आजकल ईख में भी मोमोज्ञ नाम की कोई बीमारी फैलने लगी है।

—भगवान जाने और क्या क्या होने वाला है।—चंदन ने कहा।

—जितनी दवा उतनी बीमारी वाली बात हुई।

—मैं तो कहूँगा इन्सान की नीयत ही आज बदल गयी है वरना प्रगति का फल दुख कैसे हो सकता है।

लालमन के भीतर भी बहुत सारे विचार थे। वह भी कुछ बोलना चाहता था लेकिन बड़ों के सामने कुछ बोल जाने का साहस उसमें नहीं था। बातें हो ही

रही थी कि उसकी माँ ने दूसरे कमरे से आवाज़ देकर उसे बुलाया। औरतों के बीच जाते उसे कुछ झिझक तो हुई पर पहुँचा। जिस कमरे में स्त्रियाँ बैठी थीं उसी की बगल वाले छोटे से कमरे का परदा पकड़े छाया खड़ी थी। लालमन के साथ राधिका उसी छोटे से कमरे में पहुँची जहाँ प्रभा गुलाबी साड़ी में तैयार बैठी थी। उसके मुखड़े पर की लज्जा साफ दिखाई पड़ रही थी। कंपन भी स्पष्ट था। लालमन पहली बार अपनी बहन को साड़ी में देख रहा था इसलिए अपलक देखता रहा। तभी उसकी माँ ने कहा—

—सुखुवा चाचा को बुला लाओ।

प्रभा के चेहरे पर छाये भय के कारण को समझने का असफल प्रयत्न करते हुए लालमन मर्दों के कमरे की ओर बढ़ गया। दूसरे ही क्षण औरतों के बीच से न होकर, दूसरे दरवाजे द्वारा सुखुवा को लिये वह अपनी माँ के सामने पहुँचा। उसकी माँ ने सुखुवा से कहा—

—प्रभा तैयार है।

—लोटे में पानी लेकर आना होगा।

—सभी कुछ तैयार है।

—प्रभा बेटी, डरने और शर्माने की कोई बात नहीं है। सामने पहुँचकर सभी को प्रणाम करना।

मेज पर के लोटे की ओर संकेत करते हुए राधिका ने उसे उठा लेने को कहा फिर उसकी ओढ़नी को कुछ आगे की ओर खींचकर उसने कहा—

—अगर लोग कुछ पूछें तो चुप न रह जाना।

जिस रास्ते से सुखुवा आया था उसी रास्ते प्रभा उसकी बगल में अपने भारी कदमों को उठाती हुई मर्दों के बीच पहुँची। इतनी बड़ी परीक्षा उसने पहले कभी नहीं दी थी। इधर कई दिनों से उसकी कल्पना बावली थी। पिछली रात तो बड़ी देर से उसे नींद आयी थी। अपने परिवार को छोड़कर कहीं और को बस जाने की बात का वह काफी देर तक सोचती रह गयी थी। उस अजनबी के बारे में भी उसने तरह-तरह की बातें सोची थीं। कड़वाहट और मिठास की तरंगों में डुबकियाँ ली थीं। दर्द भी अनुभव किया था और खुशी भी। और उस अजनबी को एक बार देखने की अपनी अधीरता पर उसे आश्चर्य भी हुआ था। समय के साथ उसे देखने की इच्छा प्रभा के भीतर जितनी प्रबल हुई थी इस समय वह उतनी ही दब गयी थी। वह लज्जा का बहुत भारी बोझ था जिससे उसकी पलकें उठ नहीं पा रही थीं।

सभी लोगों को नमस्कार करके उसने लोटे को मेज पर रख दिया और अपने ही आप में सिमटी हुई वह मूर्ति की तरह खड़ी रही। उसे इस बात का जरा भी भान नहीं था कि अनेक नजरें उसे घूर रही थीं। सुखुआ दादा की

आवाज़ थी जिसे वह सुन पायी—
—लड़की आपके सामने है।
तभी एक दूसरी आवाज सुनाई पड़ी—
—क्या नाम है तुम्हारा, बेटी ?
प्रभा को जबान धोखा देती-सी प्रतीत हुई। किसी तरह साहस बटोरकर उसने अपना नाम बताया। फिर उसी स्वर ने दूसरा प्रश्न किया—
—पढ़ना लिखना कुछ जानती होगी न ?
—हिन्दी पढ़ लेती है। रामायण इतना अच्छा बांचती है कि सुनकर आप मुग्ध हो जायेंगे।—प्रभा को चुप देख सुलुवा ने कहा।
—ठीक है बेटी तुम जा सकती हो।
यह सुनकर प्रभा ने राहत की लम्बी साँस ली। वह पीछे को मुड़ी ही थी कि दूसरे कमरे से उसकी माँ की आवाज आयी—
—इधर आना प्रभा।
वहाँ पहुँचकर प्रभा ने सभी स्त्रियों को प्रणाम किया। उसे बैठ जाने को कहा गया। उसके बैठते ही किसी ने सवाल किया—
—घर के सभी काम काज कर लेती हो ?
—हाँ।
—घास आदि भी काट लेती हो ?
इससे पहले कि प्रभा कुछ कहती तुलसी महतो की पत्नी बीच ही में कह उठी—
—भगवान की कृपा से हमारे घर की लड़कियां घास के लिए जंगल जंगल मारी नहीं फिरतीं।
—सिलाई तो आती होगी ?
इसका जवाब भी तुलसी महतो की पत्नी ही ने दिया—
—चारपाई पर की यह चादर इसी की बनाई हुई है। घर का कोई भी कपड़ा सिलाई के लिए बाहर नहीं जाता।
और कई प्रश्न हुए। कुछ के उत्तर प्रभा ने दिये कुछ के तुलसी महतो की पत्नी ने। फिर आवाज़ देकर लड़के को सामने बुलाया गया। उसके आते ही तुलसी महतो की पत्नी ने उससे कहा कि वह लड़की को अच्छी तरह से देख ले। लड़का साँवला था। राधिका को विश्वास था प्रभा उसे पसन्द आ जायेगी। जलपान के दौरान तुलसी महतो की पत्नी ने लड़के से भी कुछ प्रश्न किये जिससे पता चला कि वह अपनी उम्र से भी कुछ अधिक बड़ा दीखता था। सरकार में तीन दिन की इधर उधर की नौकरी थी। लड़कों का अभाव था इसलिए छोटी मोटी बातों पर नुक्ताचीनी करना ठीक नहीं था। लड़कीवालों की ओर से लड़का पसन्द था।

रही थी कि उसकी माँ ने दूसरे कमरे से आवाज देकर उसे बुलाया। औरतों के बीच जाते उसे कुछ भिझक तो हुई पर पहुँचा। जिस कमरे में स्त्रियाँ उठी थी उसी की बगल वाले छोटे से कमरे का परदा पड़े छाया गड़ी थी। लालमन के साथ राधिका उसी छोटे से कमरे में पहुँची जहाँ प्रभा गुलाबी साड़ी में तैयार बैठी थी। उसके मुखड़े पर की लज्जा साफ दिखाई पड़ रही थी। बचपन भी स्पष्ट था। लालमन पहली बार अपनी बहन को साड़ी में देख रहा था इसलिए अपलक देखता रहा। तभी उसकी माँ ने कहा —

—सुखुवा चाचा को बुला लाओ।

प्रभा के चेहरे पर छाए भय के कारण को समझने का असफल प्रयत्न करते हुए लालमन मर्दों के कमरे की ओर बढ़ गया। कमरे ही क्षण औरतों के बीच से न होकर, दूसरे दरवाजे द्वारा सुखुवा को लिए वह अपनी माँ के सामने पहुँचा। उसकी माँ ने सुखुवा से कहा—

—प्रभा तैयार है।

—लोटे में पानी लेकर आना होगा।

—सभी कुछ तैयार है।

—प्रभा बेटी, डरने और शर्माने की कोई बात नहीं है। सामने पहुँचकर सभा को प्रणाम करना।

मेज पर के लोटे की ओर संकेत करते हुए राधिका ने उसे उठा लेने को कहा, फिर उसकी ओढ़नी को कुछ आगे की ओर खींचकर उसने कहा—

—अगर लोग कुछ पूछें तो चुप न रह जाना।

जिस रास्ते से सुखुवा आया था उसी रास्ते प्रभा उसकी बगल में अपने भारी कदमों को उठाती हुई मर्दों के बीच पहुँची। इतनी बड़ी परीक्षा उसने पहले कभी नहीं दी थी। इधर कई दिनों से उसकी कल्पना बावली थी। पिछली रात तो बड़ी देर से उसे नींद आयी थी। अपने परिवार को छोड़कर कहीं और की बन जाने की बात को वह काफी देर तक सोचती रह गयी थी। उस अजनबी के बारे में भी उसने तरह-तरह की बातें सोची थीं। कड़वाहट और मिठास की तरंगों में डुबकियाँ ली थीं। दर्द भी अनुभव किया था और खुशी भी। और उस अजनबी को एक बार देखने की अपनी अधीरता पर उसे आश्चर्य भी हुआ था। समय के साथ उसे देखने की इच्छा प्रभा के भीतर जितनी प्रबल हुई थी इस समय वह उतनी ही दब गयी थी। वह लज्जा का बहुत भारी बोझ था जिससे उसकी पलकें उठ नहीं पा रही थीं।

सभी लोगों को नमस्कार करके उसने लोटे को मेज पर रख दिया और अपने ही आप में सिमटी हुई वह मूर्ति की तरह खड़ी रही। उसे इस बात का जरा भी भान नहीं था कि अनेक नजरें उसे घूर रही थीं। सुखुमा दादा की

आवाज़ थी जिसे वह सुन पायी—

—लडकी आपके सामने है।

तभी एक दसरी आवाज़ सुनाई पडी—

—क्या नाम है तुम्हारा, बेटी ?

प्रभा को जबान धोखा देती सी प्रतीत हुई। किसी तरह साहस बटोरकर उसने अपना नाम बताया। फिर उसी स्वर ने दूसरा प्रश्न किया—

—पढना लिखना कुछ जानती होगी न ?

—हिन्दी पढ लेती है। रामायण इतना अच्छा बाँचती है कि सुनकर आप मुग्ध हो जायेंगे।—प्रभा को चुप देख सुगुना ने कहा।

—ठीक है बेटी तुम जा सकती हो।

यह सुनकर प्रभा ने राहत की लम्बी साँस ली। वह पीछे को मुडी ही थी कि दूसरे कमरे से उसकी माँ की आवाज़ आयी—

—इधर आना प्रभा।

वहा पहुँचकर प्रभा ने सभी स्त्रियो को प्रणाम किया। उसे बैठ जाने को कहा गया। उसके बैठते ही किसी ने सवाल किया—

—घर के सभी काम काज कर लेती हो ?

—हाँ।

—घास आदि भी काट लेती हो ?

इससे पहले कि प्रभा कुछ कहती तुलसी महतो की पत्नी बीच ही मे कह उठी—

—भगवान की कृपा से हमारे घर की लडकियाँ घास के लिए जगल जगल मारी नही फिरती।

—सिलाई तो आती होगी ?

इसका जवाब भी तुलसी महतो की पत्नी ही ने दिया—

—चारपाई पर की यह चादर इसी की बनाई हुई है। घर का कोई भी कपडा सिलाई के लिए बाहर नही जाता।

और कई प्रश्न हुए। कुछ के उत्तर प्रभा ने दिये, कुछ के तुलसी महतो की पत्नी ने। फिर आवाज़ देकर लडके को सामने बुलाया गया। उसके आते ही तुलसी महतो की पत्नी ने उससे कहा कि वह लडकी को अच्छी तरह से देख ले। लडका साँवला था। राधिका को विश्वास था प्रभा उसे पसन्द आ जायेगी। जलपान के दौरान तुलसी महतो की पत्नी ने लडके से भी कुछ प्रश्न किये जिससे पता चला कि वह अपनी उम्र से भी कुछ अधिक बडा दीखता था। सरकार मे तीन दिन की इधर उधर की नौकरी थी। लडको का अभाव था इसलिए छोटी मोटी बातो पर नुक्ताचीनी करना ठीक नही था। लडकीवालो की ओर से लडका पसन्द था।

परिश्रम मेरे मित्र के उस रात में
जमीन से ऊपर नहीं आ पाते
उसके आगे गगनचुम्बी पेड़ों का
यह घना जंगल जो खड़ा है
जिन में दोनों से वे अच्छे खास लोग
शिकार करते हैं हिरणों के
ईर्ष्या की प्रतियोगिता जिससे होती है
उस भयानक जंगल के कारण ही
पूर्वी हवा पहुंच नहीं पाती कभी भूल से भी
ऊपर आने की शक्ति नहीं दे पाती कल्ला को
सूरज की उष्ण किरणें कभी।
गरीब में सूरज का इसी तरह रोकने का
प्रयास हर दिशा से होता रहेगा
और प्रतीक्षा बनी रहेगी
जंगल के हटने की नहीं
सूरज की दिशा बदलकर आ जाने की

हरियाली से होती हुई लाली समुद्र के नीलेपन से जा मिली थी। धुंधलपन को बढ़ते देख रालमन ने कागज को चार तहों में मोड़कर अपनी जेब में रख लिया। एक दो नयी पंक्तियां उसके मस्तिष्क में चक्कर काट रही थी। उन्हें याद रखने के लिए कई बार दोहराते हुए वह उन पंक्तियों को गुनगुनाता रहा।

घर के रास्ते में दिल ने चाहा कि भामा के घर की ओर से होकर गुजरे। पर फिर खयाल आया कि वहां पहुंचते पहुंचते तो अंधेरा हो जायेगा। जब भामा से भेंट ही न हो सकेगी तो फिर वहां पहुंचने से क्या लाभ! यह सोचकर वह सीधे रास्ते पर चलता रहा। भामा को रोज मिलने का वचन देकर भी वह उसे निभा नहीं पा रहा था। उसे सबसे अधिक चिंता इस बात की थी कि भामा उसकी प्रतीक्षा करती रह गयी होगी। उसने अपने आपको कठोर कहा, फिर खुद को समझाते हुए मन ही मन बोला—उसकी उस बीमार हालत में उससे रोज मिलना जरूरी था पर अब तो वह स्वस्थ हो चली है। उसने अपने आप से प्रश्न किये—तो क्या उसकी बीमार हालत में ही मैं उसे हृदय से प्यार करता हूं? अगर यह दया हुई तो फिर दया प्यार से अधिक सशक्त कैसे हो पायी? उसे रोज मिलने का वचन देते समय तो मैं काफी गम्भीर था। तो फिर मुझे उस वचन का खयाल क्यों नहीं? दिल्लगी भी इस तरह की हुआ करती है?

शाम की लालिमा की तरह उसके ये खयाल भी क्षणिक ठहरे। जिस समय वह धरमेन के सामने था उस समय उसने अपने को दूसरे विचारों में खोये हुए

गया। रास्ते में ठीक कालीमाई की बगल वाले पुराने नीम के पेड़ के नीचे धरमेन उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। लालमन के साथ वह उसके घर पहुँचा। उसकी बातों को टाल न सकने के कारण लालमन ने कपड़े बदले और उसके साथ हो लिया। उसके घर से बाहर होते ही उसकी माँ ने आवाज़ दी। लालमन ठिठक गया। उसकी माँ धुंधले आकाश की बदली के बीच दूज का चाँद देख रही थी। आगे बढ़कर उसने लालमन के गालों को चूमते हुए कहा—

—एक ही साथ मैंने तुम दोनों के मुँह देखे हैं।

धरमेन होले से हँस दिया।

—चाची, मेरी सूरत देखकर तुमने मनहूस की सूरत देखी है। इस महीने कोई भी अच्छा दिन नहीं देख पाओगी।

—मुझे विश्वास है कि तुम दोनों के मुँह एक साथ देखने का मतलब है खुशियों भरा महीना।

लालमन का कंधा थामे धरमेन हँसता हुआ वहाँ से चल पड़ा। दूज का वह चाँद काली बदली के एक टुकड़े के पीछे छिप चुका था। कुछ ही दूर जाने पर लालमन को मालूम हो गया कि धरमेन के साथ वह गाँव के उस एकमात्र रेस्तराँ की ओर जा रहा था जिसे वह आज तक मजदूरों के लिए गलत स्थान समझता था। वह उन सभी मजदूरों को भली भाँति जानता था जो उस दूकान से लगा परीचित थे। उनमें बहुत ऐसे थे जो अपनी कमाई का तीन चौथाई दूकान में छोड़ जाते। उसने बहुत सुना था कि जीवन की थकान को मिटाने के लिए शराब ही मजदूरों की एकमात्र दवा थी मगर उसके अपने जीवन में तो किसी तरह की थकान थी नहीं। तो फिर वह क्या बढ़े जा रहा था उस ओर? उस दिन बीयर पीकर अपने भीतर की जिज्ञासा को तो उसने मिटा लिया था पर उसके मिटते ही एक प्यास सी क्या लग आयी थी उसे? धरमेन उससे बातें करते हुए चल रहा था पर वह खोया हुआ था अपने ही प्रश्नों में। धरमेन की जिस बात को वह सुन पाया था वह थी उसकी पढ़ाई बन्द कर देने की बात। गाँव के कई लड़के अपनी पढ़ाई बीच ही में बन्द कर चुके थे पर उन सभी के लिए तो ऐसा कर जाने की मजबूरी थी। उनमें एक भी ऐसा नहीं था जिन्होंने अपनी इच्छा से पढ़ाई छोड़ दी हो। सभी के लिए पैसे का अभाव ही सबसे बड़ा कारण था। पर धरमेन के लिए तो ऐसी बात नहीं हो सकती। भला उसके पास पैसे की क्या कमी थी? कारण जानने के लिए लालमन को कोई प्रश्न नहीं करना पड़ा था क्योंकि धरमेन ने यहाँ तक कह दिया था कि वह अपने भाई के साथ खेतों की जिम्मेदारी सम्भालने जा रहा है। धरमेन को खेतों की ओर झुकते पाकर लालमन को खुशी थी पर उसकी पढ़ाई रुक जाने का उसे दुख भी था। उस इच्छा का पढ़ लिखकर डाक्टर वकील बन जाने का। जो बनना चाहता उस इच्छा नहीं।

मिलता और जिस अवसर मिलता है वह बनना ही चाहता।

यह संयोग था जिससे दूकान के सामने पहुँचते ही घनश्याम मिल गया। तीनों एक साथ भीतर पहुँचे। लालमन के दोनों मित्र इस दूकान में पहले कितनी बार पहुँच चुके होंगे। इस बात का पता लालमन को नहीं था पर वह पहली बार इसके भीतर दाखिल हुआ था।

पहली बार जब प्रभा को यह ज्ञात हुआ था कि उसका भाई पीकर घर आया है उस दिन उसे आश्चर्य तो हुआ था पर उस साधारण नशे में पाकर वह घबराई नहीं थी। आज भी लालमन पर उसकी नजर सबसे पहले पड़ी थी और आज उसे देखते ही वह घबरा गयी थी। कंधा देकर प्रभा उसे उस कमरे में पहुँचा आयी जहाँ कोई नहीं था। उस चारपाई पर लिटाकर उसने खिड़की खोल दी। इस बात के लिए उसने भगवान को धन्यवाद दिया कि घर के सभी लोग गहरी नींद में थे। कुछ देर तक इधर उधर की बातें करते रहने के बाद लालमन को उबकाई आने लगी। प्रभा भयभीत थी कि कहीं उसका बाप आवाज सुनकर जाग न पड़े। चारपाई से उठाकर प्रभा ने उसे लकड़ी की कुर्सी पर बिठाने की कोशिश की और जब वह छाती पकड़े पूरा मुँह खोलकर ओकने लगा उस समय वह दौड़कर बाहर गयी और पुरानी बाल्टी लिये भीतर आ गयी। लेकिन उसके पहुँचने से पहले लालमन फर्श पर उलटी कर चुका था। असह्य दुर्गंध आ रही थी उस वमन से। उसके आगे बाल्टी रखकर प्रभा पानी लाने चली गयी। उस जिस बात का सबसे अधिक डर था वह था उसके बाप का जाग जाना। वह जानती थी कि उसके भाई को इस हालत में देखकर उसका बाप एक ही वाक्य में सभी कुछ कह जाएगा जिसका यह तात्पर्य होगा कि शराबी के लिए इस घर में कोई स्थान नहीं। उसका बाप अपने घर को मन्दिर कहता है वह हमेशा यही कहता आया है कि मन्दिर में कभी झूठ बोलने की कोशिश न की जाय। झगड़ा फूट गालियाँ—सभी बातों से वह घर के हर व्यक्ति को रोकता आया है। मन्दिर में शराबी! भला यह बात उसे कैसे पसन्द आ सकती थी?

वमन के बाद जब लालमन कुछ शान्त हुआ तो प्रभा उसे दोबारा कंधा देकर चारपाई पर ले गयी। दो तकियों के सहारे उसके माथे को टिकाकर सब प्रथम वमन से भरी बाल्टी को वह बाहर छोड़ आयी। वह दुर्गंध उसकी नाक में समा सी गयी थी। जल्दी जल्दी उसने फर्श साफ किया फिर भी दुर्गंध का एक दम मिट जाना दुश्वार था। हाथ पाँव धोकर लौटने पर प्रभा ने अपने भाई को चारपाई पर बेसुध सोया पाया। पैताने से चादर लेकर लालमन को ओढ़ाने के बाद उसने खिड़की बन्द की चिराग बुझाया और उस कमरे में चली गयी जहाँ उसका अपना बिस्तर था। घर के किसी भी व्यक्ति को कुछ भी पता नहीं चला था इस बात की उसे खुशी थी।

अपनी मा की चारपाई के पास ही नीचे बिछे बिस्तर पर लेटकर प्रभा फिर से उन्ही खयालो म खो गयी जिनम दिन भर खोयी हुई थी। उसके ये खयाल अतीत के उन धुधले दृश्यो से शुरू हुए थे जब घनश्याम के आगन म वह आस पास की लड़कियो के सग खेला करती थी। इमली का वह बडा सा पेड अब न रहा। पिछले तूफान म उसके उखड जाने का उसे बहुत दुख हुआ था क्योकि उस पेड के नीचे उसके बचपन के बहुत से अविस्मरणीय क्षण बीते थे। उसी की छाया म घनश्याम की बहन के साथ वह गुडियो की शादी रचाती थी। वही पर घनश्याम की बहन उससे असली शादी की बातें किया करती थी। सोमा बडी थी इसलिए इस तरह की सभी बातें वही करती थी। प्रभा पूरे ध्यान से केवल सुनती रहती। जिस दिन सोमा की शादी हो रही थी उस दिन पहली बार प्रभा ने अपने दूल्हे की कल्पना की थी।

उस दिन जब वह व्यक्ति उसे देखने आया था उस समय लाख चाहकर भी प्रभा अपनी नजर ऊपर नहा उठा पायी थी। उसके चले जाने पर वह घन्टो तक सपनो म खोयी रह गयी थी। उस समय उसे ऐसा एहसास हुआ था कि वह वही व्यक्ति था जिसकी कल्पना उसने उस दिन सोमा के विवाह म की थी। उस व्यक्ति को गये आज पाचवा दिन था। जाते हुए लोगो ने यही कहा था कि कुछ दिनो के भीतर उत्तर भेज देंगे। घर के सभी लोग बेसब्री से उत्तर की प्रतीक्षा कर रहे थे। प्रभा भी अधीर थी। लालमन को चिन्ता थी। इस समय उसकी चिन्ता नशे म सो रही थी लेकिन प्रभा की अधीरता अब भी जाग रही थी और उसकी कल्पना भी उतनी ही सजीव थी। वह जहा जायगी वह एक सुन्दर घर होगा। अपने इस घर की तरह बडा न भी हुआ तो कोई हर्ज नही पर वह सुन्दर हो वहा के सभी लोग अच्छे हो। लोग उसके कामो को पसन्द करे और वह उनके प्यार को उस घर का प्यार समझे। अपने भाई को आज इस विचित्र सी हालत म देखकर उसने मन ही मन एक प्रार्थना की। वह नही चाहती थी कि उसका होने वाला पति शराबी हो। पास पड़ोस की कई औरतो म वह सुन चुकी थी कि शराबी अच्छा पति नही हुआ करते। वह हर सूरत म एक अच्छा पति चाहती थी और इस एक इच्छा के सामने वह बाकी इच्छाओ को छोड सकती थी। उसे चान्दो की कहानी याद है। चान्दो की शादी एक बहुत ही धनी घर मे हुई थी। उसके सास ससुर भी बहुत अच्छे थे। रानी बनकर वह उस घर मे पहुची थी पर कुछ ही दिनो म उस घर मे उसका जीना दुश्वार हो गया था। अपनी शादी के पहले तीन दिन एक बूद भी न पीकर उसके पति ने अपने घर के सभी लोगो को चकित कर दिया था। चौथे दिन उसके घर के भीतर आते ही भूचाल आ गया था। किसी तरह महीना तक उस घर म रहकर एक दिन चान्दो वहा से भाग आयी थी। उसकी कहानी से प्रभा का दिल दहल उठा था। इस समय

भी वह उन बातों को सोचकर भीतर ही भीतर काँप रही थी। आज जिस हालत में उसका मन। भाई का प्यार था उससे उसके भीतर का भय और भी बढ़ गया था। फिर भी उसे भरोसा था कि कल तक घर। भाई ने सब ठीक तरह बातें करना और उसकी इस बुरी आदत को सम्भाल रखी।

प्रभा रो रहा था रही थी। दूसरे का बुरा सोचने उसके दिल कर रखी तमाम रातों में फिर थी जब उसे बात के सामने कहानियाँ सुना सुनाकर उसे यहाँ पर नींद आने लग जाती। दूसरे कई बार उसने कहानियाँ कहा सुनी थी। उसे ऐसा प्रतीत होता लगता था कि वह उसके घर के लोगों में एहसान कर रही गया थी। वह उसकी बातों समझने की कोशिश करती और समझ न पाती।

कल उस अपने मामा के विवाह जब उसकी माँ उस मान रही थी उस समय भी उसने यह अनुभव किया था कि अभी कुछ उस घर में अलग ध्यान के लिए किया जा रहा था। उसकी माँ ने कई बातें यों उसके सामने रखी थी और सभी का सार यही था कि ससुराल का वह घर समझ और वहाँ के सभी लोगों की आँखों में बस रहने के लिए सभी से अपना जैसा पन पाये। दूर भूली भटकी बात को समझाते हुए उसकी माँ कहती कि लड़कियों का सच्चा घर तो उसका ससुराल ही होता है। अपने इन विचारों में खोये रहने के कारण प्रभा अपनी माँ की सभी बातें नहीं सुन पाती। ज्यादा बार उसे ऐसा आभास हुआ था कि इस घर में उस विवाह में हर तरह की जल्दबाजी की जा रही थी। इतना तो वह समझती थी कि लड़कियाँ माँ-बाप और भाई के सिर बोझ हुआ करती हैं इसलिए उस जल्दबाजी के व्यवहार से उसे आश्चर्य नहीं होना।

कई बार रहते जितात जितात उसकी माँ उस पर गालियों की बौछार कर चुकी थी। कभी उस पर कुलनी बना गयी थी कभी चिमटा कभी झाड़ू। कभी क्रोध में आकर उसकी मृत्यु की कामना भी कर चुकी थी। उन मौकों पर प्रभा किसी कोने में पहुँचकर सिसकती रह जाती। उस समय मन ही मन वह कहीं दूर चल जाने की बात सोचती। उसे ऐसा लगता कि उसकी माँ अपनी न होकर सौतेली थी लेकिन धीरे धीरे उसकी आँखों के आँसू जैसे जैसे सूखते जाते, वह अपने खयाल को बदलती जाती। उसकी समझ में आने लगता कि ये सब अत्याचार नहीं थे। समय के साथ उसे इस बात की जानकारी भी होती गयी थी कि उसकी माँ उसे बेहद प्यार करती है। उन तिरस्कारों और ताड़न में भी प्यार छिपा हुआ था। एक दिन बहुत पहले जब उसकी माँ ने उसे बहुत अधिक कोसा था उस वक्त प्रभा के मुँह से एक धीमी गाली निकल पड़ी थी और उसके साथ ही भभककर वह वहाँ से हट गयी थी। बाद में इस बात के लिए उसे जो पश्चाताप हुआ था वह उसके जीवन का सबसे बड़ा पश्चाताप था। मन ही मन कोई हज़ार बार उसने अपनी माँ से क्षमा माँगी थी।

इस समय भी चारपाई पर लेटी-लेटी वह उन्हीं पुरानी बातों को सोचती जा रही थी। पुरानी स्मृतियों के धागे के साथ वह भविष्य को बाँधने का प्रयास कर रही थी। उसने सहेलियों से यह सुन रखा था कि लड़कियों के लिए शादी एक जुए की तरह होती है—कभी हार, कभी जीत, कभी बेहतर, कभी बदतर। इस बात का उसे पूरा यकीन था क्योंकि अपनी सहेलियों में सचमुच ही उसने कुछ को मायके से अधिक सुखी ससुराल में पाया था और कुछ के लिए जो सुख मायके में मिला था वह ससुराल में सपना बनकर रह गया था। इन बातों को सोचते हुए प्रभा अपने भविष्य के झरोखे से अपने भाग्य को झाँकने का प्रयत्न करती। इस घर में सभी दुखों के बावजूद भी उसे जो सुख मिला था वह बहुत भारी सुख था। उसे विश्वास नहीं था कि किसी दूसरे घर में उसे यहाँ जैसा प्यार और सुख नसीब हो सकता है। फिर भी उसकी आशा उसे हताश नहीं होने देती थी।

प्रभा के भीतर की आशा उसे धीरज बँधाती हुई कहती कि उसके ससुराल के लोग कभी भी निर्दयी नहीं हो सकते। अपने पति से उसे वह प्यार मिलेगा जिससे वह निहाल हो जाएगी। वह किस तरह उसके सामने जायगी, किस तरह उससे बातें करेगी, वह किस तरह उससे पेश आयेगा—बस इन्हीं बातों को प्रभा सोचती चली जा रही थी। किसी अजनबी के प्रति इतना कुछ सोच जाना और उससे इस तरह आकर्षित हो जाना उसे एक बहुत बड़ा रहस्य-सा लगता। वह अपनी सहेलियों से पूछकर देखना चाहती थी कि क्या सभी लड़कियाँ उसी की तरह सोचती होंगी या वह सभी से भिन्न थी।

उस दिन जब उसके भाई ने हँसते हुए कहा था कि शादी के बाद लड़कियाँ अपने मा-बाप और भाई-बहन को बहुत कम याद करती हैं उस समय प्रभा उससे झगड़ पड़ी थी। वह मानने को तैयार नहीं थी कि लालमन को वह एक क्षण के लिए भी बिसार सकती है। वह सोचती कौन सा ऐसा काम होगा जिसे करते समय वह अपने भाई को याद नहीं करेगी? वह सोचकर हार जाती पर घर के कामों में कोई भी ऐसा काम न था जिसके साथ उसके भाई का कोई न कोई सम्बन्ध न हो। उसके चावल बीनते समय उसका भाई सूप से चावल लेकर बिखेर जाता। वह पानी भरती होती तो लालमन छींटे देकर उसे भिगो जाता। रसोई घर में होती तो वह पीछे से आकर उसे चिकोटी काट जाता। कोई भी ऐसी जगह न होती कोई भी ऐसा दिन नहीं था जब दोनों के बीच एक छोटी-सी रूठ मनौअल न हो जाती।

प्रभा खयालों में डूबी जब तक जागती रही बाहर की नीरवता को भंग करके आती हुई झींगुरों की आवाजों को सुनती रही।

११

पहले तो लालमन ने घनश्याम क प्रस्ताव को योंही खेल मात्र समझा पर अत मे जब उसे भात हा ही गया उसके वे चारो मित्र उतने ही गम्भीर थे जितना कि वह खुद था तब तो उसे समझते देर नही लगी कि वे मजाक नही कर रह थे। सभी को नीचे से उपर तक तयार पाकर उस भी तयार होना ही पडा पर इतन पर भी अपने मित्रो की पवतारोहण की बात का वह सनक समझने से अपने को रोक नही पा रहा था। उसकी अपनी नजरो म तो किसी समुद्र किनारे की पिकनिक अधिक ठीक रहती। उसके इस सुझाव को काटते हुए धरमेन ने कहा था कि पहाड पर चढने म जो आन द जो सनसनी हाती है वह समुद्र किनारे नही मिल सकता और फिर समुद्र तो रोज वाली चीज ठहरा। उसके सनसनी श द से लालमन प्रभावित हो गया था। सोचा इस सनसनी का भी अनुभव करके देख ल।

घनश्याम न तो कहा था कि एक बार मतर से मलकर उसका आनन्द भी लूट लिया जाय और जब खाने पीने की चीज खरीदते समय किशोर ने बीयर लेने की बात कही थी उस समय फिर घनश्याम ही न कहा था कि अगर मरने का इरादा है तो बीयर की कुछ बोतलें अवश्य ल ली जायें। इस पर धरमेन न हँसकर कहा था कि वहाँ ता परा म अपन आप लडखडाहट हागी उसके लिए दूसरी चीज की क्या आवश्यकता है।

घनश्याम को छोडकर बाकी लोगो क लिए यह पहला अवसर था इसलिए शुरू करन के लिए एक छोटे पहाड को ही ठीक समझा गया। पूस पवत का प्रस्ताव घनश्याम ही ने रखा था और सभी ने उस मान लिया था। उसका कहना था कि आसपास के पहाडो म इसी की चढाइ सबस आसान थी। तडके ही बस द्वारा व शहर पहुच। वहाँ से आधा घन्टे की चढाई क बाद व पहाड की गोद म

पहुच गये। वहाँ पहुँचने से पहले सन के कारखाने के पुल के पास कीचड़ और गन्दगी को देखकर लालमन की आधी हिम्मत जाती रही। पहली बार उसने मल कुचले सूअरों और उनके बच्चों को नालियों की गन्दगी में लोटते देखा था। वहाँ की दुर्गंध इस समय भी उसकी नाक में थी।

झाड़ियों, जगलों को पार करके वे उस पगडंडी पर पहुचे जो चक्कर काटती हुई ऊपर को जाती थी। ऊपर देखते हुए वह रास्ता लालमन को बहुत ही दुर्गम प्रतीत हुआ पर अपने को बाकी मित्रों में अधिक डरपोक बताने का विचार उसे नहीं था। घनश्याम लोगों का पथप्रदर्शक था। आधा पहाड़ चढ़ने के बाद जब लालमन भी हाँफने लगा तब जाकर उसे मालूम हुआ कि सचमुच पहाड़ की चढ़ाई में एक आनन्द निहित था। वह जितनी कठिन थी उतनी ही मनोरंजक भी। एक दूसरी बात जो उसे मालूम हुई वह यह कि इस चढ़ाई में घनश्याम का अपना खास मकसद था।

प्रशिक्षण विद्यालय की ओर से जो आर्थिक प्रदर्शनी होने वाली थी उसमें पवतारोहण पर उसे प्रोजेक्ट तैयार करना था। अपने साथ लाये कैमरे से वह ठौर ठौर पर चित्र खींच रहा था। हलके जलपान के लिए जिस चट्टान पर वे रुके वहाँ से समूचा शहर फ्रेम में कसे एक चित्र सा दीख रहा था। ऊँची इमारतें और बन्दरगाह के सभी जहाज खिलौने से प्रतीत हो रहे थे। सभी उन दृश्यों को निरखते रहे। इतने सुन्दर नजारे लालमन ने कभी नहीं देखे थे। सूरज की कोमल किरणों के साथ जगमगाता शहर और समुद्र सुनहरे सपने से लग रहे थे। उस सौंदर्य में आराम तक बढ़ चल जाने का प्रोत्साहन था।

जिस समय थके मादे लड़खड़ाते कदमों से वे चोटी पर पहुंचे सूरज की किरणें अपनी कोमलता खो चुकी थीं और सभी के चेहरे पर पसीने की बूँदें चमकने लगी थीं। अपने खेत में दिन भर कड़ी मेहनत के बाद भी लालमन ने इस तरह की थकावट कभी नहीं महसूस की थी। सामने के काले पत्थर पर जिस समय वह बैठा उस समय उसके पैर काँप रहे थे। उसके ठीक सामने एकदम नीचे की ओर घुड़दौड़ का मैदान था कागज पर मानचित्र की तरह। कुछ आगे रंग बिरंगे घर थे और उससे आगे अपनी गोद में जहाजों को सजोये नीला समुद्र था। पीछे की ओर अधकटे खेतों की हरियाली थी और निम्नवर्ग बस्तियाँ थीं।

थकान दूर होने ही नारंगी का रस लिया गया फिर बातें शुरू हुई। देश की स्थिति परिस्थिति, अभाव बेकारी और महगाई से होती हुई बहस राजनीति पर जम गई। लालमन को अगर किसी चीज से चिढ़ थी तो वह राजनीति ही थी। यही कारण था कि वह कुछ भी न बोल पाकर केवल सुन रहा था। उसने सुना धरमन ने मार्क्स के सामने जड़ किसी बाट मापने वाले व्यक्ति की तरह

कहा—

—राजनीति से नाक सिकोड़ने वालों को मैं और कुछ न कहकर भी अजाव अवश्य कहूँगा क्योंकि शासन प्रणाली के लिए राजनीति की उतनी ही आवश्यकता है जितनी कि जीने के लिए आदमी को हवा की।

—तुमने ठीक कहा, धरमन !—व्यंग्य भरे स्वर में घनश्याम बोला, इसका तो यही मतलब हुआ कि केवल हवा पीकर जिया जा सकता है।

—मेरी बात तुम्हारी समझ में नहीं आयी।

—तुम्हारी बात मेरी समझ में आ गयी। तुमने तो यही कहा कि जीने के लिए इंसान को हवा की जरूरत होती है। इससे तो यही साफ हुआ कि प्रजा के पालन-पोषण के लिए भी राजनीति पर्याप्त है। जिस तरह जीने के लिए भोजन पानी दूर की बात ठहरी उसी तरह प्रजा के लिए न्याय अधिकार की रक्षा तथा अन्य मौलिक आवश्यकताएँ भी कम महत्त्व की बातें ठहरीं।

—तुम दोनों तो अपने अपने ढंग से कह जा रहे हो। तुममें से कोई एक यह तो बताने की कोशिश करे कि आखिर राजनीति का उद्देश्य क्या है?—गौतम ने पूछा।

—देश चलाना।

—चाहे सिर के बल ?—धरमेन के उत्तर पर घनश्याम ने प्रश्न किया।

—मैंने तो ऐसा नहीं कहा।

—मैं तो वही कह रहा हूं जो आजकल हो रहा है। आज देश को सही ढंग से चलाया जा रहा है मैं इस बात को कैसे मान लूं ! अगर ऐसा ही होता तो फिर दुनियाभर में असंतोष की भावना क्यों ?

—तो तुम दुनियाभर की बात कर रहे हो ?

—तो क्या तुम राजनीति का पक्ष केवल अपने देश के बल पर ले रहे हो ?—हंसते हुए घनश्याम ने पूछा।

—तुम्हारा मतलब है कि दुनियाभर की राजनीति नपुंसक है ?

—मैंने तो ऐसा नहीं कहा !

—तो फिर ?

—दुनियाभर के राज्यों में अशांति है इसे तो नकारोगे नहीं।

—राजनीति को इसका कारण बताओगे ?

—प्रजा तो इसका कारण नहीं हो सकती।

—वह प्रजा भी नहीं जो अपनी जिम्मेदारी को समझने का प्रयास तक न करे ?

—पहले राजनीतिक नेता अपनी जिम्मेदारी संभालें तब तो। सरकार की अच्छाइयों के विरुद्ध जाने की नादानी कोई क्या करे ? आवाजें तो उसकी

लापरवाहियो के लिए बुलन्द की जाती है।

—देश चलाने के लिए सरकार असहयोग नही, सहयोग की उम्मीद रखती है।

—अपने अधिकारो के लुट जाने का सहयोग कौन किसी को देगा ? क्या राजनीति यही उम्मीद रखती है कि जनता अपनी बर्बादी के लिए किसी को अपना सहयोग दे ! यह तो अपने हाथो अपना घर जलाने वाली बात हुई।

—तुम सोचते हो कि सरकार यह नही समझती कि जनता का खयाल रखना उसका कर्तव्य है और अगर मानते हो कि वह इस बात को समझती है तब तो यह कहना कि सरकार इस बात से बेपरवाह है नादानी होगी क्योकि सरकार यह कैसे नही समझ सकती है कि जनता की प्रगति ही उसकी प्रगति है।

—समझने न-समझने की बात कहाँ पैदा होती है ? बात तो प्राय यह होती है कि समझते हुए भी ढिठाई होती है।

—तुम्हारा मतलब ?

—आसान बातो को समझना कभी सचमुच ही बहुत कठिन होता है। अभी पहाड़ से नीचे उतरते हुए तुम अनुभव करोगे कि उतरना चढने से भी अधिक कठिन है। राजनीति मे आज दो-तीन ऐसी बातें आ गयी हैं जिसके कारण जनता के बीच असन्तोष बढना एकदम स्वाभाविक है।

—कौन-सी बातें है वे ?

—पहली बात तो नेपोटिज्म है। राजनीतिक चुनाव मे मुह के बल गिरे हुए असफल उम्मीदवार को राजदूत बनाकर विदेश भेज देना न्याय सगत नही हो सकता। दूसरी बात तेज रफ्तार से बढते चले आने वाला भाई भतीजावाद है। स्वार्थसिद्धि और फिजूलखर्ची आज के राजनीतिक नेताओ का परिचय है और कुछ ऐसी बातें हैं जिन्हे कहकर मैं तुम्हे उत्तेजित करना नही चाहता।

—राजनीति मे एक बात है जो मुझको भी पसन्द नही—घनश्याम के चुप होते ही गौतम ने कहा।

—तो फिर तुम भी सुना दो अपनी बात।—कोकाकोला की बोतल खोलते हुए किशोर ने कहा।

—जात पात के बखेडे को राजनीति ही ने फिर से प्रोत्साहन दिया है।

गौतम के इस वाक्य से प्रोत्साहन पाकर घनश्याम ने कहा—

—तुम तो मानोगे कि एक नहीं ऐसे राजनीतिक नेता है जो ऊपर से तो जात पात का खण्डन करते हैं पर भीतर ही भीतर उसका प्रचार करते फिरते हैं। ऐसा करने मे उनका अपना उल्लू तो सीधा हो जाता है पर जनता के बीच जो भेदभाव फैल जाता है उसका जिम्मेदार किसे ठहराया जाय ! अपने ही गाव को लो। पिछले चुनाव मे जो कुछ हुआ इसी जात-पात के बल पर हुआ।

क्या इस बात को भी तुम राजनीति की देन नहीं मानते ?

अगर शिकार लोगों के सामने रोशनीवाला और शिवकुमार नहीं खड़ा रहता तो शायद यहां से निश्चितता भी नहीं आती। बहस रुकी नहीं थी। मंथर-गति से तर्क और दलीलें पेश होती रहीं। पूरे घर वाले अपनी जगह छोड़कर खड़े हुए। फोटो लिये गए। प्राकृतिक सुषमा को निरखा गया और तब पूरी सावधानी बरतते हुए पांचों व्यक्ति उतरने लगे। प्रकृति का भी उनका साथ देने को मन हो गया था। सूरज के ऊपर बादल घिर आये थे जिससे वातावरण धूमिल और शीतल था। सतर्कता के साथ उतरते हुए भी धरमन और घनश्याम की बहस जारी थी।

लालमन ने हमेशा यही सुना था कि मारीशस एक बहुत ही छोटा देश है। लोग कहते हैं कि दुनिया के मानचित्र पर वह एक बिंदु की तरह है लेकिन पहाड़ के ऊपर से उसने जिस मारीशस को देखा था वह काफी बड़ा था। उसकी हरियाली इतनी अधिक विस्तृत थी कि सागर के नीलेपन से मिलकर वह समाप्त नहीं हो रही थी ऊपर से उसने वनों की गहरी हरियाली को हिंद महासागर के नीलेपन से मिलते देखा था और सागर का नीलापन आकाश के नीलेपन से जा मिला था। हर नील का संगम था वह जिसमें उसने अपने द्वीप को विशाल पाया था। पहाड़ की चोटी से मारीशस एक दूसरी ही दुनिया सा उसे प्रतीत हुआ था। सचमुच ही वह हिंद महासागर का तारा और धरती का सुनहरा सपना था। अब तक नीचे से उसने जो कुछ देखा था उससे भिन्न था वह मारीशस। उसके लिए मारीशस हमेशा से एक कविता थी एक जमी हुई कविता जिसे हिंद महासागर अपनी गोद में संजोए हुए था लेकिन ऊपर से भिन्न थी वह कविता। क्षण भर पहले उसने जिस मारीशस को देखा था वह कल्पना का स्वर्ग था। इस द्वीप को ऊपर से देखने वाला कोई भी परदेशी यह मानने को तैयार नहीं होगा कि उसके अपने भीतर भी अन्य देशों की तरह या मात्रा में उनसे कुछ अधिक ही दर्द छिपा हुआ था। राजनीति इस दर्द से बेखबर रह सकती है परंतु लालमन उन तमाम दर्दों से परिचित था। उसके अपने जीवन में चाहे दर्दों का अभाव रहा हो पर अपने गांव के अभाव के दर्दों को वह देखता आ रहा था और अगर वह अपने को कभी कभार बहुत अधिक कमजोर समझता तो केवल इसलिए कि उन्हें बांट लेने की शक्ति उसमें नहीं थी। हरियाली और सूखे की तरह उसने अपने गांव में दुख सुख दोनों देखे थे पर दुख उसे अधिक बलवान और स्थायी सा लगता। एकांत में जब उसके अपने खयालों में कविताएं नहीं होतीं उस समय प्रश्न होते—क्या यह दुख कभी भी समाप्त होने वाला नहीं ? और तब अपने आप कविताएं पैदा होने लगतीं और वह अपने आप को सुनाने लग जाता कि एक ओर से एक हाथ सभी दुखों को मिटाने का प्रयास करता है

ग्रौर दूसरी ग्रोर स दो हाथ उस बचात रहने की कोशिश म रहत हैं।

लालमन के घर पहुँचते ही उसकी मा ने उससे कहा कि उन लागा के यहाँ स चिट्ठी ग्रायी है जो प्रभा को देखन ग्राये थे। ग्रपनी थकावट को भूलकर उसने जानना चाहा कि पत्र म क्या था। बिना कुछ कहे उसकी माँ न नीले रग के लिफाफ का उसके हाथो मे रख दिया। जिस ढग से उसकी मा न वह पत्र उसके हाथ मे रखा था उससे बात स्पष्ट थी, फिर भी लालमन ने खुले हुए लिफाफे स बच्चा की वही स फाड गय उस कागज को बाहर निकाला जिस पर वह पत्र लिखा हुआ था।

हिन्दी की ग्रस्पष्ट लिखावट म पत्र इस तरह शुरू हुआ था —

प्रिय भाईजी,

सादर नमस्कार

इसम पहल हम ग्रापको उत्तर नही भेज सके इसके लिए क्षमाप्रार्थी हैं। इधर परिवार के एक सदस्य की बीमारी के कारण हम परेशान थ। ग्रापक घर हमारा जो सेवा सत्कार हुग्रा उसके लिए हम ग्रापको दिल स धन्यवाद दते है। हमने ग्रापकी लडकी देखी। वह बहुत ही ग्रच्छी ग्रौर सुशील लडकी दीखती है इस बात स हम सभी का खुशी हुई। ग्रगर ग्राप इसे ग्रन्यथा न समझ ता हम ग्राप से कहेगे कि हमार लडके का ग्रापकी वह दूसरी लडकी ग्रधिक पसन्द ग्रा गयी है इसलिए इस बार म हम ग्रापकी राय जानना चाहेंगे। हम ग्राशा है कि ग्रापका ग्रपनी छाटी लडकी हम दत हुए काई ग्रापत्ति नही होगी। यह भी ग्राशा रखत ह कि ग्राप शीघ्र ही हम इसका सतोषजनक उत्तर दगे ताकि हम दूसरी ग्रार न बढ। ग्रापका यह जानकर ग्राश्चर्य नही होगा कि हमारे यहा रोज किसी न किसी परिवार की ग्रार स लडकी देखन का ग्रनुरोध पहुचता ही रहता है। इसलिए ग्राप स एक बार फिर ग्राग्रह है कि ग्राप यथाशीघ्र हम उत्तर दें।

इससे पहल कि लालमन उस व्यक्ति का नाम दखता जिसन पत्र पर हस्ताक्षर किया था वह पत्र उसके हाथ स छूटकर नीचे गिर पडा। वह एकटक ग्रपनी मा का दखता रहा। उसकी मा क चेहरे पर मौत की सी उदासी था। ग्रपने को सम्हालते हुए लालमन ने धीरे स पूछा—

—प्रभा कहा है?

—प्रभा कहा है छाया? —लालमन के प्रश्न को दोहराकर उसकी मा न छाया स पूछा।

—रसोईघर मे।

—क्या कर रही है?

—बैठी है।

लालमन उसके पास पहुँचा। अपने भाई पर नजर पडते ही प्रभा ने जल्दी से आखें तो पोछ ली पर अपनी सिसकियां को नही रोक सकी। उसके निकट पहुचकर लालमन ने उसे अपनी बाहों में ले लिया। प्रभा उसके साथ चिपक कर छोटी बच्चों की तरह रोने लगी।

—पगली तुम रो क्या रही हो ?

अपने कधे को आँसुओ से तर पाकर उसने कहा—

—मैं अभी जिन्दा हूँ। चीनिया की सी सूरत वाले उस गँवार से अच्छा लडका तुम्हारे लिए ढूढ निकालूगा।

प्रभा सिसकती रही और लालमन उसके बालो को सहलाता रहा।

उसी शाम को लालमन ने उस पत्र का जवाब लिखना शुरु किया—

'प्रिय महोदय

आपका पत्र मिला। धन्यवाद। अपने पिताजी की ओर से मैं यह पत्र लिख रहा हू। अगर उस दिन हमने अपने घर आपका स्वागत किया था तो केवल यह समझकर कि आप कोई शिष्ट लोग होगे। अगर आपके सामने मेरी बहन को उपस्थित किया गया था तो भी यह जानकर कि आप कोई सभ्य परिवार के होंगे। हम जिस बात की तनिक भी उम्मीद नही थी वह यह रही कि आप लोग सौदागर ठहरे।

अपने बाप की ओर से मैं आपको बहुत ही सरल और स्पष्ट भाषा मे यह कह देता हू कि मुझे अपनी बहनो को बेचना नही है मेरा घर वह दूकान भी नही जहाँ से आप मनपसन्द चीज खरीदने की उम्मीद रखते हैं। आप लोगो में अगर जरा भी ज्ञान होता तो आप इस तरह पत्र नही भेजते। मेरी बडी बहन को आप लोगो ने अपने योग्य नही समझा इसके लिए हम दुखी तो अवश्य है पर आपने मेरी छोटी बहन के बारे में जो बात की है उसके बारे में मुझे इतना कह जाने की इजाजत दीजिए कि मैं भी आप लोगो को अपनी छोटी बहन के योग्य नही समझता।

आप इसे बुरा न मानकर अपना रास्ता देखिए, और हम अपना रास्ता देखते हैं। आशा है आप इस पत्र का बुरा न मानेंगे।'

इसके बाद पत्र के नीचे लालमन ने कुछ इस आवेग से दस्तखत किए कि कलम की नोक कागज में धँसकर रह गई। थकान से चूर चूर होते हुए भी चार पाई पर उसे करवटें बदलते नींद आयी। सुबह जब वह उठा तो भामा की याद लिए हुए। पहला बार उसके मन में अपने सत से दूर रह जाने का विचार पैदा हुआ। आज एकाएक उसे धनुवा भगत से निरहा सुनने की इच्छा भी हुई थी।

१२

वह अपने को अपने ही घर की चारदीवारी के भीतर बन्द पा रही थी। खिड़की से बाहर एक अलग दुनिया थी उसकी अपनी दुनिया से भिन्न। अपनी दुनिया से खिड़की के रास्ते वह खुली हवा वाली दुनिया को देख रही थी। पेड़ों की आड़ में सूरज ओझल होता जा रहा था। पत्तों को डोलते देख वह उस शीतल हवा को अनुभव कर रही थी जिसे दुर्भाग्यवश वह अपनी चारदीवारी के भीतर नहीं पा रही थी। उस खुली हवा में उस मन्द और शीतल हवा में जीवन का स्पन्दन था मुक्ति का उल्लास था अरमानों की सजीवता थी सासों की सक्रियता और जीवन की सफलता थी। नीले आकाश के दूध से बादलों में भी उसी मुक्ति की सक्रियता और सफलता थी। वही उल्लास वहां भी था। प्रभा सोचने लगी थी कि आखिर ये बेजान बादल इस तेजी के साथ कैसे दौड़े चले जा सकते हैं जबकि वह जीव सहित निर्जीव थी। पक्षी भी उड़े चले जा रहे थे उसी स्वतन्त्रता के साथ। खिड़की से बाहर के उस विस्तृत संसार में उमगें थीं उसके अपने संसार में उमस और उस उमस में वह अकुला भी नहीं पा रही थी।

उसके भीतर जो अकुलाहट थी वह बाहर आने के लिए ऊधम मचा रही थी पर इस बात के डर से कि कहीं उसकी उस अकुलाहट को कोई देख न ले वह उसे बाहर आने से रोक रही थी। अपनी यन्त्रणा को वह भीतर बन्द किये हुए थी और खुद उसे कैद किये हुए थी उसकी लाघव भावना। अब यह मानने से वह अपने को कैसे रोक सकती थी कि छाया के सामने उसकी कोई भी हैसियत नहीं थी। उसने तो हमेशा छाया को चाहा है लेकिन आज भी वह उसे उसी तरह चाहती हो इस बात का उसे शक हो चला था। छाया से उसे ईर्ष्या नहीं हो सकती, फिर भी उसके लिए जो भाव एकाएक प्रभा के हृदय में पैदा हो गया था वह ईर्ष्या ही जैसी कोई चीज़ था।

कुछ ही समय पहले लाया उसका मामा नहीं था। उसके पहले भी उसका [illegible] के घरों में प्रभा ने कोई दूसरी चीज लायी थी। उस [illegible] कठिन हो गया था—यह चीज लाला के चेहरे पर भी थी उसकी अपनी ही [illegible]। लाला नारायणी की ओर कुछ बदगुमान थे उनके पर तु अपनी सूरत का अभिमान भी उनमें [illegible] प्रभा में नहीं हो रहा था। वह उस अपनी ही [illegible]।

आसमान [illegible] प्रभा [illegible] जा रही थी। उस [illegible] सूरज और आसमान की [illegible] का उतना [illegible] जितना कि [illegible] जाने का। वह दूसरी [illegible] की ओर यह सोच उसे कुछ न कुछ सोचने को विवश कर रहा था। उसकी माँ ने भी उस अपनी को [illegible] नहीं लिया। प्रभा [illegible] था कि अगर माँ [illegible] इतना वह जानी कि यदि दुखी मन हो तो सचमुच ही प्रभा को [illegible] मिल जाती लेकिन [illegible] उसकी माँ उसी को [illegible] थी। कहा था— [illegible]— जिन्दगी भर उसके सिर बोझ बनकर बनी रहेगा। अपनी माँ की इस बात से प्रभा का [illegible] हुआ था [illegible] उसी की वह। उस दिन दिनभर सभी लोगों [illegible] रहने के बाद [illegible] में जब उसकी आँख डबडबा आयी थी उस समय अपनी माँ के आँचल का उस आँसू पर महसूस किया। उसकी माँ की आँखें भी सजल थीं और सचाई [illegible] में उसने प्रभा के माथे को ढाँप लिया था। कहा था कि करम ही फूटा है उसका और प्रभा ने भी इसी को सच्चाई मान कर अपने आँसुओं को पोंछ लिया था।

रेडियो से आते हुए भी गीत भी उसके ख्यालों को [illegible] नहीं कर पा रहे थे। कल शहर से लौटते हुए लालमन ने अपने दोनों हाथों को पीछे किये हुए उससे कहा था—

—देखो प्रभा मैं तुम्हारे लिए क्या लाया हूँ।

इतना कहते हुए उसने नया ट्रांजिस्टर प्रभा के हाथों पर रख दिया था। प्रभा जानती थी कि उसके भाई को इस छोटे से रेडियो का भारी शौक था— फिर भी उस समय उसे यह जानते देर नहीं लगी थी कि लालमन ने अपने शौक को कम महत्त्व देकर एक दूसरे ही विचार से उसे खरीदा था। वह चाहता था कि प्रभा इससे अपना दिल को बहला लिया करे। संगीत से प्रभा का मन कभी बहल जाता और कभी वह और भी विह्वल हो जाती। वे गीत मरहम भी थे और घाव में नमक भी। वह कभी उन्हें ध्यान से सुनती और कभी एक ही साथ कई गीत अनसुने चले जाते। आश्वासन और टीस भरे उन गीतों में अपने को बाँध देने का उसका प्रयत्न असफल चला जाता।

जिस समय अपनी माँ को उसने बरतन माँजने पर बैठ बरतन माँजते देखा

उस समय उसे अपनी शिथिलता का खयाल आया। कोई और घड़ी होती तो उसकी मां उस पर गालियों की बौछार शुरू कर देती लेकिन इधर दो-तीन दिनों से वह घर के बहुत सारे काम काजों को खुद सम्हाले आ रही थी। कभी-कभार प्रभा के साथ उसका हाथ बटाती हुई वह उसे समझाती भी जाती। कहती कि कुछ घरों में तो दस तरह के लोग आते हैं तब कहीं जाकर लड़की किसी एक को पसन्द आती है। पहली ही बार में हताश हो जाने के लिए वह प्रभा को नादान बताती। मगर प्रभा जानती थी कि न तो वह हताश थी और न ही नादान। उसे किसी बात का दुख था तो केवल अपनी हीनता का। कोई दूसरा उसे पसन्द करे या न करे इसकी जरा सी चिन्ता उसे नहीं थी। उसे चिन्ता थी तो बस पहली ही बार की असफलता की। लड़के तो दस बीस घर घूमने के बाद एक घर से लड़की पसन्द करते हैं—अपनी मां की इस बात को गौर से सोचती हुई वह असमंजस में पड़ी रही। लड़कियों और लड़कों के बीच के इस सारी अन्तर को समझना उसकी पहुँच से बाहर की बात थी। वह अपने आप से पूछती—क्या लड़कियों को अपनी पसन्द का अवसर न देना भगवान ही का बनाया हुआ नियम है या इसके पीछे कोई दूसरी बात भी है? उसका छोटा सा दिमाग इसके आगे नहीं सोच पाता।

प्रभा अपने भाई के काम के कपड़े में पैबन्द लगा रही थी। काम अधिक परिश्रम का नहीं था इसीलिए उसके मस्तिष्क में विचारों की रफ्तार तेज थी। भविष्य के बारे में सोचना तो उसने एकदम ही बन्द कर दिया था। वे बीते हुए दिनों की यादें थीं जिन्हें वह एक सूत्र में बांध रही थी कि तभी अपने बाप की आवाज सुनकर हाथ की सूई को कपड़े में लगाकर वह कुर्सी से उठी और अपने बाप के पास पहुंची। उसे देखते ही चन्दन ने पूछा—

—तुम्हारी मां कहां है?

—दूकान गयी है।

—आज शाम को क्या पका रही हो?

—मां ने कहा है आलू गरम मसाले में पकाने को।

—मेरा जी दाल पीठा खाने को करता है।—चन्दन ने इस ढंग से कहा गोया वह कोई छोटा-सा बच्चा हो।

—तो फिर दाल पीठा ही पकाये देती हूँ।

—ऊपर से घी डालना न भूलना और हां धनिये की चटनी।

प्रभा के सूखे होठों से बीच मुसकान थिरक गयी। धनिये की चटनी लालमन को भी उतनी ही भाती थी जितनी कि उसके बाप को। पर प्रभा की मुसकान का कारण शायद कुछ और ही रहा। वह वहां से जाने को हुई लेकिन चन्दन ने उसे रोक लिया।

—ठहरो, बेटी।

प्रभा ठिठक गयी। उसने अपने बाप की ओर देखा। चन्दन भी उसे देख रहा था। उसे कुर्सी पर बैठने को कहकर चन्दन ने पूछा—

—आजकल तुम इतनी उदास क्यों दिखाई पड़ती हो?

प्रभा चुपचाप कुर्सी पर बैठ गयी। सामने की आरामकुर्सी पर बिल्ली सो रही थी। वह अपने बाप की ओर न देखकर एकटक उसी बिल्ली की ओर देखती रही। उसके बाप ने प्रश्न दोहराया—

—आजकल तुम इतनी उदास क्यों दिखाई पड़ती हो प्रभा?

कहीं से उधार ली हुई मुसकान अपने होठों पर लाते हुए उसने उत्तर दिया—

—नहीं तो।

—पगली कहीं की! मेरी सुनो जो हुआ अच्छा ही हुआ।—एक क्षण ठहरकर उसने आगे कहा—सच पूछा जाय तो वह लड़का मुझे बिलकुल पसन्द नहीं था। बोलचाल चालचलन और सूरत—सभी से बिलकुल गँवार दीखता था।

प्रभा सभी बातें नहीं समझती थी। उसका भाई बात-बात पर उसे मूर्खों की नानी कहता रहता था। सचमुच ही उसके बाप की बातों में कुछ बातें ऐसी भी हुआ करती थीं जिन्हें समझना प्रभा के लिए टेढ़ी खीर था पर अपने बाप की इस बात को भी वह न समझी हो यह मानने को वह तैयार नहीं थी। वह जान गयी थी कि उसका बाप उसे एक झूठी दिलासा दे रहा था। पर ऊपरी मुसकान के साथ वह उसे सुनती रही।

—तुम इतना बड़ी हो इस बार जो लड़का तुम्हें देखने आयेगा वह इस निकम्मे से कई गुना अधिक अच्छा होगा। [illegible] कई लड़कों की बातें आ गयी हैं। *मुझे तो पूरा विश्वास है कि इस बार जो भी इस घर में कदम रखेगा* उसी की तुम बनकर रहोगी।

प्रभा जो पूछना चाहती थी पूछ न सकी। फिर अचानक वह चुप रही और चन्दन कहता ही गया। अपने बाप की सभी बातों में उसे झूठी दिलासा ही नजर आती और उन झूठी दिलासों में जो थोथी-सी दिखावट थी वह थी उसके हर शब्द में छिपी अथाह स्नेह की तरंगें। वह उन्हीं तरंगों के बीच खोयी रही। *उस [illegible] में काम करने वाली चन्दनी की [illegible] था।* इस बात से उसका [illegible] कुछ कम हो चला। किसी भी सूरत में चन्दनी का साथ उसके भाग्य से [illegible] था। [illegible] था। [illegible] था। [illegible] की उम्र में जब [illegible] हो [illegible] कि उसके [illegible] नहीं किया जाता [illegible] था। उस दि[illegible]

पागल की तरह बेतहाशा दौड़ा वह और ज्वार भाटा के आमन्त्रण को स्वीकारती हुई समुद्र किनारे पहुँच गयी। न जाने देवन्ती के दुर्भाग्य से प्रभा का भाई भी समुद्र किनारे की बालू पर बैठा सूरज को धरती में विदाई लेते देख रहा था। देवन्ती के समुद्र में कूदने ही वह भी उसके पीछे कूद पड़ा था। बाद में देवन्ती ने प्रभा से कहा था—

—सानमन ने जिस मौत से मुझे बचाया है उसे तो मैं इस जीवन से बेहतर समझती हूँ।

उस समय देवन्ती के उस वाक्य में प्रभा को केवल भावुक तरस की झलक दिखाई पड़ी थी आज वही बात सोलह आने सच प्रतीत हो रही थी। वह निराशा नहीं वास्तविकता था। उसके अपने जीवन की भी वही वास्तविकता थी। न जाने यह कैसा निराशावादी विश्वास था जो उसके भीतर घर कर गया था। उस विश्वास सा हो गया था कि ठीक देवन्ती की तरह उसे भी कोई पसन्द नहीं करेगा और वह जीवन पर्यन्त कुँवारी रह जायेगी। फिर खुद को सहानुभूति देने की बारी आ जाती और वह अपने आपसे कहती—

—क्या जीने के लिए शादी इतनी जरूरी है? शादी न होने से जिन्दगी थोड़े ही रुक जायगी।

तभी उसे याद आया कि ये तो वे ही बातें थीं जो वह देवन्ती को सान्त्वना देती हुई कह चुकी थी। उसे देवन्ती का वह उत्तर भी याद आ गया—

—प्यार के बिना जीना अपने शरीर के बोझ को जिन्दगी भर ढोने वाली बात होती है।

देवन्ती के इस उत्तर को वह उस समय नहीं समझ पायी थी लेकिन आज वही जटिल उत्तर उसके सामने अपने आप सरल हो गया था।

प्यार?

प्यार के बिना?

देवन्ती तो मरी के यहाँ पली थी। हो सकता है कि सचमुच ही उसे प्यार न मिला हो लेकिन अपने बारे में सोचती हुई प्रभा यह कैसे मान सकती थी कि वह भी इस प्यार नामक चीज से अनभिज्ञ थी। प्यार उसे कभी भी नसीब नहीं हुआ यह वह कैसे मान सकती थी। उसे तो माँ-बाप, भाई बहन—सभी का प्यार मिला था। बाद दूसरे ढंग का भी प्यार हुआ और बन्ने भी मिला तो पूरा हुआ। उसे तो जीवन में जितने प्यार मिले हैं उनमें जीवन बोझ कैसे बन सकता है?

अपनी ही बातों को समझना उसे कठिन प्रतीत होने लगा। एक बात स्पष्ट थी, देवन्ती जब अपने बदतर और सूने जीवन को जीती हुई भी हरदम हँसती रह सकती है, तो फिर क्या कारण था कि प्रभा अपने प्यार से भरपूर जीवन को नहीं जी सकती!

घनश्याम की बहन प्रभा से कोई दो-तीन वर्ष छोटी थी फिर भी मट्रिक
रात्रि से पहले ही उसका विवाह तय हो चुका था। प्रभा जिस बात से डरती थी वह यह कि क्रोध में आकर उसकी माँ फिर यही कहती कि वह सुमन रोगी है फिर भी उसे परिवार मिल गया। एक तुम हो तुम्हारी खातिर तो इस घर में बुढ़िया बैठा दिया है। न जाने क्या सोचकर कहा था कि प्रभा को अपनी माँ की ममता भावना से अधिक प्यार मिलती थी।

रात को लालमन काफी देर से घर लौटा। उस दिन भी आकर प्रभा ने रोहा की तरह था। उसके भाई के चेहरे का पोर-पोर इस तरह तना लगा मानो वह उससे कोई बहुत ही जरूरी बात कहना चाह रहा हो। उस चुप्पी साथ देख प्रभा ने पूछा—

—क्या बात है भैया?

प्रभा के प्रश्न का कोई उत्तर दिए बिना लालमन अपने कमरे में चुप बैठा रहा। जिस समय प्रभा ने उसके कमरे में आकर बत्ती जलानी चाही उस समय भी वह खयालों में खोया सा लगता रहा। उसके बगल में पीढ़े पर बैठती हुई प्रभा ने फिर से पूछा—

—क्या बात है भैया?

—कुछ नहीं।

प्रभा अपनी चिन्ताओं को भूल बैठी थी। उसने देखा लालमन ने मनचाह बात को और अपने मन तक पहुँचाया और किसी बहुत बड़ी चिन्ता में डूबा वह सिर झुकाए रहा।

—तुम इस तरह गोय-गोय से क्या हो?

लालमन की उस खामोशी से डरकर प्रभा को दोबारा प्रश्न करने का साहस नहीं हुआ। उसके भाई के चेहरे पर परेशानियाँ थीं। उसे स्पष्ट भाव को छिपाने का प्रयत्न करके भी लालमन उसे छिपा नहीं पा रहा था। फिर भी जिस बात को वह अपने भीतर छिपाए हुए था और जिस किसी भी हालत में वह दूसरे के सामने जाहिर नहीं होने देना चाहता था वह थी भामा से सुनी उसकी मगनी की खबर।

यह खबर सुनाते हुए भामा उसके अति पास खड़ी थी। लालमन ने उसे दिल्लगी समझा था और भामा की दोनों बाँहों को थामकर उसने कहा था—

—जानती हो भामा अगर सचमुच ही एक दिन यह बात सच हो गयी तो!

—मैं सच कह रही हूँ।

—उस दिन मैं पागल हो जाऊँगा।

—मैं सच कह रही हूँ लालमन। अगले महीने मेरी मगनी होने जा रही है।

उससे अलग होने तक लालमन को इस बात का विश्वास नहीं हुआ था।

१३

लालमन स्वभाव से अपने को एक सख्त इन्सान समझता था और उसे अपने में भावुकता की कमी नजर आती। अपनी कठोरता को पिघलते पाकर वह किसी भी परिणाम पर नहीं पहुँच पा रहा था। कुछ दिन हुए जब मामा उसके एक दम निकट थी, फिर एक दिन एकाएक वह उससे कुछ दूर चली गयी थी, फिर भी लालमन को बहुत कम दुख हुआ था। उसे विश्वास था कि मामा दूर जाकर भी उससे बिछुड़ी नहीं थी। वह उसकी थी, इस बात का उसे पूरा यकीन था। मगर उसके दूर चले जाने पर वह छटपटाया नहीं था तो इसलिए नहीं कि वह कठोर था बल्कि इसलिए कि उसकी उम्मीद बनी हुई थी। उम्मीद के बल उसने अपने को कठोर महसूस किया था और आज एकाएक जब उम्मीद जाती रही तो उसकी सख्ती को मोम की तरह पिघलते देर न लगी।

बाहर की अँधेरी रात की खामोशी को चीरती हुई घनश्याम की आवाज घर के भीतर पहुँची। प्रभा की ओर देखते हुए लालमन ने कहा—

—हम लोग समुद्र की ओर जा रहे हैं मैं देर से लौटूंगा।

वह बाहर आया। उस अँधेरे में भी उसने घनश्याम, धरमन गौतम और किशोर को पहचान लिया। दिन को उसी के खेत में जब रात में केकड़े के शिकार की बात चली थी उस समय लालमन ही सबसे पहले तैयार हुआ था लेकिन शाम को जब वह मामा से मिलकर लौट रहा था उस समय उसने इरादा बदल दिया था। सोचा था कि रात को मित्रों के आने पर वह सिर दर्द का बहाना कर बैठेगा लेकिन जब उसने घनश्याम का स्वर सुना उस समय एक दूसरा खयाल उसके मन में पैदा हो चुका था। उसकी समझ में आ गया था कि आज रात नींद उसे बड़ी कठिनाई से आयेगी इसलिए मित्रों के बीच रहकर रात काटना उसे सब से सरल उपाय जँचा। उसके बाहर आते ही गौतम ने पूछा—सच लाइट ली

या नहीं ?

बिना कुछ कहे लालमन घर के भीतर पहुंचा और इस बार जब वापस आया तो हाथ में जलती हुई टार्च के साथ। टार्च के प्रकाश का आगे आगे फेंकते हुए वह मित्रों के साथ चल पड़ा। पत्ते नहीं डोल रहे थे। उमस थी। गाँव के सभी कुत्ते किसी शादी के घर पर कले के पत्तों से जूठन चाट रहे होंगे, तभी तो नीरवता अखण्ड थी। उस भारी खामोशी में उनके अपने परों की आहट स्पष्ट थी। सबसे पहले धरमेन ने ही बात शुरू की। फिर उसने खुद महसूस किया कि उसकी बातें नीरस थीं इसलिए उसने घनश्याम से कहा—

—कोई कहानी सुनाते चलो।

—मुझे एक चुटकुला याद आ गया।—बीच ही में किशोर कह उठा।

—तो फिर सुनाने में देर क्या कर रहे हो ?

किशोर ने अपनी चाल कुछ धीमी की जिससे बाकी सभी की चाल अपने आप धीमी पड़ गयी। किशोर ने अपने उसी पुराने अन्दाज के साथ कहना शुरू किया—

—जिस होटल में यह कहानी गुजरी है वह शहर की विधान सभा के ठीक सामने है। एक दिन राकेश नाम का एक व्यक्ति उसके भीतर पहुंचा। दीवारों को देखा। उस पर आधुनिक पेंटिंग्स नशे में झूमती सी लग रही थी। सामने की मेजों से होते हुए वह सीधे काउंटर के पास पहुंचा। काउंटर पर की लड़की का नाम मीमी था। मीमी उसकी ओर देखकर मुसकरा दी। मीमी को खुद अपनी उस मुसकान का पता न चला क्योंकि हर नये पुराने ग्राहक के स्वागत के लिए उसे इसी प्रोसीजर से काम लेना पड़ता था। राकेश की ओर देखते हुए उसने पूछा—

—जी, मैं आपकी ?

प्रश्न पूरा भी न हुआ था कि राकेश ने झट कहा—एक ह्विस्की!

मीमी ने झिलमिलाते गिलास में अपने ही हाथों ह्विस्की उड़ेली और उसी कामर्शियल मुसकान के साथ गिलास को राकेश के आगे बढ़ा दिया। एक ही बार में गिलास को खाली करके राकेश ने कीमत चुकाई और होटल से बाहर हो गया। दूसरे दिन राकेश अपने साथ एक दूसरे मित्र को लिए उसी होटल में पहुँचा। मीमी ने उसी मुसकान से दोनों का स्वागत किया और इससे पहले कि वह कुछ पूछती राकेश अपनी दो अंगुलियों से इशारा करते हुए आर्डर दे बैठा—

—प्लीज दो ह्विस्की!

मीमी ने दो गिलासों में ह्विस्की उँडेली और दोनों पात्र राकेश के सामने बढ़ा दिये। राकेश ने पहला गिलास को अपने मित्र के हाथ में थमाया और दूसरे को अपने हाथ में ले लिया। बगल से आर्केस्ट्रा की धुन आ रही थी।

बस उस दिन से एक सप्ताह तक राकेश अपने मित्र के साथ उस होटल में आता रहा। दीवार के मदहोश आधुनिक चित्रों को देखते हुए अपने मित्र के साथ ह्विस्की के गिलास खाली करके बाहर होता रहा। एक सप्ताह बाद एक दिन राकेश होटल में अकेला पहुंचा। मीमी की मुसकान का उत्तर देने के बाद उसने उसी पहले वाले स्वर में आर्डर दिया—

—डबल ह्विस्की!

मीमी को हैरत हुई। उसने कहा—

—पर आप तो अकेले हैं!

—मेरा मित्र विदेश चला गया। उसकी याद बनाये रखने के लिए उसका हिस्सा भी मैं पी लेता हूं।

मीमी ने दो गिलास भर दिये। राकेश ने बारी बारी से दोनों को खाली किया और होटल से बाहर हो गया। इसी तरह एक सप्ताह तक वह अकेला आता रहा और मित्र की याद में दो गिलास खाली करके चला जाता। एक दिन कुछ उदास सा वह होटल के भीतर पहुंचा और आते ही धीरे से उसने आर्डर दिया—

—एक ह्विस्की।

मीमी को हैरानी हुई। उसने तुरन्त पूछा—

—केवल एक?

—हां, केवल एक—बर्फ के साथ।

एक क्षण चुप रहकर मीमी बोली—

—कहीं आपके मित्र को कुछ हो तो नहीं गया?

—नहीं! मेरा मित्र सही सलामत है।—राकेश ने कहा।

इस पर मीमी फिर बोली—

—आपका शायद उससे झगड़ा हो गया?

—नहीं।

—तो फिर आज आप केवल एक ही ह्विस्की क्यों ले रहे हैं?—गिलास में वाट सिक्स्टी नन उडेलते हुए मीमी ने पूछा।

मीमी के हाथ से गिलास लेकर उसे मुंह तक पहुंचाते हुए राकेश ने कहा—

—बात यह है कि कल से मैंने शराब पीना छोड़ दिया है।—और इसके साथ ही अपने मित्र के हिस्से की शराब उसने अपने गले के नीचे उतार ली।

किशोर अभी चुप भी नहीं हुआ था कि सभी जोरों से हँस पड़े। वह केवल सालमन था जिस पर चुटकुले का कोई भी प्रभाव नहीं पड़ा था।

गाँव पीछे छूट चुका था और वे लोग पगडंडी पर कतार में चल रहे थे। दोनों तरफ के पेड़ों के झुरमुट से जंगली कीड़ों की आवाजें आ रही थीं। उनके

उठा सन्ध्या के साथ साथ समुद्र का गर्जन भी अधिक तेज होता जा रहा था। लहरों और के भाग के पहाड़ से ऊंचे होते हुए वे समुद्र तट पर पहुंचते। काली रात की तरह समुद्र भी काला था। उसके गर्जन भयानक थे। किनारे की थोड़ी दूरी पर कुछ लोग पानी में कुछ मछुए जाल लगाए खड़े थे। बगल में बना हुआ समुद्र की सतह पर जहाँ-तहाँ प्रकाश बिखरा हुआ था। रात की कालिमा में समुद्र दिन से अधिक विस्तृत प्रतीत हो रहा था लेकिन लालमन के लिए अपने भीतर का अंधेरा इससे भी अधिक विस्तृत और गहरा था। उसके शरीर की उत्तेजना विश्राम के लिए तरसकर ठंडी बालू पर लेट गया। पास श्याम और शीला ने भी उसका अनुसरण किया। लालमन और किशोर लेट गए। दूसरे क्षण लालमन को शीला के बीच लेटे छोड़ किनारे की भाग पर गया जहाँ लहरें आ आकर किनारे को चूम रही थीं। उस अंधेरे में भी लालमन लहरों के आने-जाने को महसूस कर रहा था। लहरों के आने जाने की निरन्तरताओं! उस अंधेरे में उसको वह कहानी याद आ गयी—लहरों की कहानी!

उसके गांव के पास में ब्याह जाने वाली मामा की लाख तरह जा उस दूसरे का प्यार में पड़ा नहीं माना किया उमान में मार्कण्डेय थी। उस राजा की सात पत्नियाँ और एक बेटा था। एक दिन राजकुमार कहीं से एक बहुत ही सुन्दर फल उठा लाया। उस फल पर रखकर शिकार के लिए निकलते हुए उसने अपनी बहनों से कह दिया कि जो भी इस फल को खाने की कोशिश करेगी उसी से वह अपनी शादी करेगा। उसकी छोटी बहन वहाँ न थी इसलिए उसने बात नहीं सुनी। मेज पर जब उसने बहुत ही बढ़िया फल देखा तो उसके मुंह में पानी आ गया। वह सोचकर कि उसका प्यारा भाई उसी के लिए फल छोड़ गया है उसने उसे खा लिया। शाम को जब भाई लौटा और उसे मालूम हुआ कि उसकी छोटी बहन ने फल खा लिया है तो उसने कहा कि अब चाहे कुछ भी हो वह उसी से शादी करेगा। यह सुनकर छोटी बहन घर से निकल भागी और तभी से एक लहर बनकर वह अपना पीछा करने वाले भाई दूसरी लहर से भागती रहती है। कहते हैं जिस दिन पहली लहर दूसरी लहर की पकड़ में आ जायगी और भाई बहन के बीच शादी सम्भव हो जायगी उस दिन प्रलय मच जायगा।

लालमन की अपनी कहानी के सामने यह कहानी टिक न सकी और उसने फिर से मामा के खयालों में अपने को डूबकी लेते पाया। एक काल और अथाह पानी की डुबकी थी वह। सामने का अंधेरा जितना घना था उतनी ही स्पष्ट थी मामा की वह याद। लहरों की आवाज़ों के अलावा समुद्र में छोटी मोटी तरंगों की भी आवाज़ थी। धुंधले प्रकाश के साथ एक दो नावों के मछुवे नावों को लकड़ी के टुकड़ों से थपथपाते हुए जाल बटोरने में लगे हुए थे। नावें अधिक

दूर न होने के कारण निम्रोली मेगा की आवाज भी स्पष्ट थी। वह आवाजें सभी की जानी पहचानी थी। गाँव का कोई भी आदमी कह सकता है कि आवाज रेमा के बेटे मार्सेल की थी। नाव की थपथपाहट और लहरों की आवाजें संगीत का काम कर रही थी और मार्सेल अपनी ही धुन में गाता जा रहा था—

अनिता मो माते अनिता मा लावी
मी दा ला मेर तो दा ला तर
(अनिता मेरा प्यार अनिता मेरी जान
मैं सागर में हूँ तू धरती पर
लहरें इतनी जोरदार हैं कि शायद
मेरी पुकार तुम तक पहुँच न सके
कौन जाने इस समन्दर में कब तूफान आ जाय
और कब मेरी नाव डूब जाये
पर अनिता, मेरे दिल में तुम्हारे लिए
जो प्यार है वह कभी नहीं डूबेगा
कभी नहीं डूबेगा अनिता कभी नहीं डूबेगा।)
मो लामूर अनिता जाम लिपा पू न्वाय

यह गीत सभी सुन रहे थे पर इस गीत का जो असर लालमन के हृदय पर हो रहा था वैसा किसी पर नहीं हो रहा था। कुछ क्षण बाद धरमा ने लालमन की तन्द्रा को तोड़ते हुए कहा—

—मेरे यार, यहाँ हम केकड़े पकड़ने आये हैं।—और अपने हाथ की खाली टोकरी लालमन की पीठ पर दे मारी।

किशोर ने टार्च अपने हाथ में ले ली थी। उसकी रोशनी को बालू पर नचाते हुए वह धीरे धीरे आगे बढ़ने लगा। लालमन अब भी मन मारे पीछे पीछे चल रहा था जबकि उसके बाकी तीनों साथी टार्च के प्रकाश में पूरी सतर्कता से चल रहे थे। उनकी आँखें शिकारी आँखों की तरह बालू पर टिकी हुई थीं। बस केकड़े पर नजर पड़ जाने की देर थी। केकड़े पकड़ने का यही सब से सरल साधन था। बिल फाड़कर केकड़े को बाहर निकालने में एक तो बहुत मेहनत करनी पड़ती है और फिर समय भी बहुत बर्बाद होता है। कभी तो कई बिलों को फोड़ देने के बाद भी कोई केकड़ा हाथ नहीं लगता। यह तरीका सबसे आसान था। टार्च की रोशनी में जब केकड़े चकाचौंध होकर सिटपिटा जाते उस समय छलांग के साथ बालू समेत उन्हें दबोच लिया जाता। सबसे पहली छलांग गौतम ने भरी पर वार खाली गया। उसके शरीर की परछाईं पड़ते ही केकड़ा बिल में चला गया और उसके हाथों में केवल बालू आयी। सबसे पहला केकड़ा घनश्याम की मुट्ठी में आया। मुट्ठी भर का था वह।

इससे पहले कि वह केकड़ा उसकी अँगुलियों को काट बैठता घनश्याम ने जोर से उस बालू पर दे पटका और फिर उठाकर टोकरी के हवाले किया।

पूरे दो घंटों का वह शिकार काफी सनसनीखेज और सक्रियता से भरा रहा। टोकरी के तीन चौथाई भर जाने पर लालमन ने कहा—

—दस बज चुके होंगे।

—अभी तो सारी रात बाकी है।

—तुम्हें तो कल दिन भर घर पर बैठना है जबकि अपने को सूरज निकलने से पहले ही खेत पहुँच जाना है।

—नारियल के बगीचे तक चलते हैं फिर वहीं से घर का रास्ता ले लेंगे।—धरमन ने कहा।

शिकार पन्द्रह मिनट और चलता रहा। इस दौरान अब तक के सभी केकड़ों से बड़ा केकड़ा हाथ आया जिसे टॉर्च के प्रकाश में प्रदर्शित करते हुए धरमन ने लालमन से कहा—

—अगर तुम्हारी बातों में आ जाते तो यह माल हाथ नहीं आता।

घर लौटते हुए रास्ते में घनश्याम ने प्रश्न किया—

—अब तक तो सभी कुछ ठीक रहा पर अब तो यह जानना जरूरी है कि आगे का काम किसके जिम्मे सौंपा जाय।

—आगे का काम?

—हाँ भाई ये केकड़े कौन सँभालेगा?

—कोई भी सँभाल सकता है इसमें क्या?

—केवल सँभाल लेने से काम थोड़े ही चल जाता है। इनको पकाने और सूप तैयार करने के बाद सभी को अपने यहाँ बुलाने की बात भी इसी में है।

—धरमन की भाभी से अच्छी तैयारी अगर कोई कर पाये तब तो।

—तो तुम्हारा मतलब है कि कल हम सभी को धरमन के घर पहुँचना है?

—भाई तो और जायेंगे कहाँ?

—बात तो ठीक है लेकिन

धरमन के रुकते ही गौतम पूछ बैठा—

—लेकिन क्या?

—अगर कल मेरा भाई घर रहा तो बीयर नहीं चल सकेगी।

—इसकी चिंता क्या करते हो? पुल पर पहुँचे बिना उसको पार करने की फिक्र क्या करने लगे?

—लेकिन बिना ड्रिंक ?—मुँह बनाते हुए शिवार ने कहा।

—तो फिर वही बात! कौन कहता है ड्रिंक न रखा? टोकरी तो मेरे साथ होगी। अगर अवसर रहा तो बातमें बाहर भी हो आयेंगे।

—और अगर अवसर न रहा तो ?

—तुम तो आल्डस हक्सले की तरह बातें करने लगे।—धरमेन्द ने कहा।

—यह आल्डस हक्सले कौन है भाई ?—किशोर, जाकि हक्सले को सबसे अधिक जानता था उसी ने प्रश्न किया।

—इतमीनान रखो, वह हम जसा कोई केवडामार नही।

लालमन को छोडकर सभी हस पड।

१४

लालमन देर से सोया था इसलिए देर से जागा। अगर छाया उसे झकझोर कर न जगाती तो शायद अब तक वह सोया ही रहता। खीझ के साथ चारपाई छोड़ते हुए वह बाहर पहुँचा। उठते ही वह रोज जिन चिड़ियों का कलरव सुनता था वह इस समय धीमा पड़ गया था। आज सूरज भी उससे पहले जागा था। प्रभा मुरगियों को भी दाने दे चुकी थी। अपनी माँ को उसने सूरज की ओर मुँह किये अर्घ्य देते पाया। मुँह-हाथ धोकर जब वह रसोई के भीतर पहुँचा उस समय प्रभा भात पका रही थी। आज उसे भी अपने कामों में देर हो गयी थी। भात की देगची को फिर से आग पर रखकर उसने चूल्हे की लकड़ियों को खींचकर बाहर कर दिया ताकि भात का रहा सहा पानी अंगारों से सूख जाय। दूसरी देगची खोलकर एक रोटी निकाली फिर उस पर रात की तरकारी जिसे कुछ मिनट हुए उसने गरम किया था रखकर गोल लपेटा और लालमन के हाथों पर रख दी और उसके लिए चाय छानने लगी।

जब लालमन चाय पीकर उठने लगा तब प्रभा ने तख्ते पर से सूची का कागज़ और पैसे लालमन को देते हुए कहा—

—विक्रम चाचा सब्जियों के पैसे दे गये हैं।

—कब आया था वह?

—तुम सो रहे थे।

लालमन सूची के कागज़ पर सब्जियों के भावों को देखता रहा। कुम्हड़ा और बड़ी मिर्च अच्छी कीमत में गयी थीं। करेले का दाम उसे उतना पसन्द नहीं आया। उसने सभी पैसे गिने। पूरे पैंतीस रुपये थे। तीन दिन पहले उसने सोचा था कि इस सप्ताह के पैसे से माँ के लिए एक अच्छी-सी साड़ी खरीदी जा सकती है। लेकिन वह उत्साह जो तीन दिन पहले उसके भीतर था वह जाता

रहा। साडी तो वह अवश्य ही खरीदेगा पर पहली शका जो उसके दिल म हुई वह यह कि न जाने मामा इस भेंट को स्वीकार करेगी या नहीं। वह तो साहस बटोरकर एक साडी खरीद सकता था पर मामा के इनकार कर दो पर उसकी जो दशा होगी उससे वह भयभीत था।

आज दिन म उससे मिलन की बात थी। वहा से होकर उसे घरमेन के यहाँ पहुँचना था। न जाने मामा के सामने क्या गुजरेगा। यह भी अनिश्चित था कि वहा से निकलकर वह धरमेन के घर पहुच सकेगा या नहीं। बिना मूड उसका वहा जाना कैसे हो सकेगा। उसे साथ हुए देख लोग उसकी नाक म दम कर देंगे। पिछली बार मामा और उसके बीच जो बातें हुई थी व अब भी अस्पष्ट थी, फिर भी उसे विश्वास था कि आज सभी कुछ स्पष्ट हो जायगा।

खेत पर पहुँचकर देवती और जगदीश को सभी काम बताये और वहाँ से सीधे घनुवा भगत के घर की ओर चल पडा। उसने भगत को कधे पर हँसुआ लिये बरामदे मे खडे पाया। लालमन को देखकर वह आगे बढ आया और यह कहते हुए कि मामा भीतर उसकी प्रतीक्षा कर रही है वह बाडे की ओर चल पडा जहा उसकी गाडी तयार थी। घनुवा भगत का दरवाजा अधखुला था जिसे थोडा सा और खोलते हुए लालमन भीतर पहुचा। बीच कमरे मे सिर भुकाये मामा खडी थी। अपने हाथ के बडल को उसकी ओर बढाते हुए लालमन ने धीरे से कहा—

—मामा! बहुत दिनो से तुम्हें कुछ भेंट करना चाहता था पर हिम्मत नहीं हो रही थी। तुम्हें याद है तुम्हें उस गुलाबी भगले म देखना मैं बहुत पसद करता था इसलिए आज उसी रग की एक मामूली साडी तुम्हें भेंट कर रहा हूँ।

मामा पत्थर की प्रतिमा की तरह ज्यो की त्यो खडी रही।

उसके दोनो हाथो को अपने हाथो म लेकर अपने हाथ का पकेट उसके हाथो म थमाते हुए लालमन उसे एकटक देखता रहा। मामा को मानो किसी ने जोर का धक्का दे दिया हो वह लालमन से लिपट गयी। अपने मुक्त हाथो से लालमन ने उसे एक क्षणिक बधन म बाध लिया। फिर अगले ही क्षण बधन अपने आप ढीला पड गया। लालमन ने देखा मामा की आँखो म आँसू थे। बिना कुछ कहे उसने दोबारा उसे अपनी बाँहो म जकड लिया। तभी उसने मामा की लडखडाई आवाज़ सुनी—

—ऐसा क्यो हुआ लालमन?

एक पल चुप रहकर लालमन ने जवाब दिया—क्योंकि ऐसा होना था।

—कल रात भर माँ भगडती रही। वह नहीं चाहती कि मेरी शादी कहीं और हो पर पिताजी बार बार यही कहते रहे कि या तो मेरी शादी उनके मनचाहे वर से होगी या वह मेरी जान ले लेंगे और फाँसी पर झूल जायेंगे।

कल ही रात धनुवा चाचा भी घटा तक पिताजी को समझाते रहे। उनको भी पिताजी ने यही कहा कि ये दो ही बातें होकर रहेंगी—दो महीने के भीतर मेरी शादी या मेरी मौत! लालमन, मैंने तो जब से होश संभाला है तुम्हारी बनकर रहने का सपना देखती आ रही हूं। मैंने तो कभी भूल से भी यह कल्पना नहीं की कि मैं किसी दूसरे की हो सकूंगी। इससे मैं मर जाना बहतर समझती हूं।

और लालमन की बांहों से छूट साड़ी के बण्डल को छाती से चिपकाये वह कोने में पहुंच सिसकियां लेने लगी।

—तुमने भेंट भी मौके से दी है। कफन का काम देगी।

उसके पास पहुंच लालमन ने भारी आवाज में पूछा—

—मामा, तुमने मुझे प्यार किया है न? तो क्या यह प्यार इतना कमजोर है कि तुम्हारी शादी होने ही वह टूट जायगा? मैं तो यह नहीं मानता। फिर तुम यह क्यों मानती हो कि शादी के बिना प्यार का अस्तित्व नहीं।

—मैं ऐसा नहीं सोचती लेकिन

—तो फिर रोती क्यों हो? जब तुम्हें विश्वास है कि तुम्हारी शादी होने जा रही है तुम्हारे प्यार की मृत्यु नहीं तो फिर इस तरह दुखी होना नादानी है मामा!

लालमन को अपने प्रचारक का यह स्वर स्वयं पसन्द नहीं आया पर वह कहता ही गया—

—विवाह विवाह होता है और प्यार प्यार होता है। तुम्हारा विवाह तुम्हारे घरवाले कर रहे हैं और प्यार तुम करती हो। दोनों दो अलग चीजें हैं मामा।

—तो मेरी इस बरबादी को रोकने के लिए तुम कुछ भी नहीं करोगे?

—किसी की शादी रोकने का अधिकार किसी को नहीं।

—मैं मर जाना बहतर समझूंगी।

—तब तो अपने साथ तुम मेरे प्यार को भी मार डालने की सोच रही हो जिसका अधिकार तुम्हें नहीं है मामा! तुम जो बात बात पर भगवान की दुहाई देती रहती हो इस सचाई को क्या नहीं मानती कि अगर इसी धरती और इसी जन्म में आदमी को सभी सुख और सभी सफलताएं मिल जाएं तो फिर भगवान के यहां और दूसरे जन्म में क्या लेना बाकी रह जाएगा? नहीं मामा यह विवाह करके भी तुम्हें यह आशा बनाये रखनी है कि इस बार न सही अगले जन्म में हम अवश्य मिलेंगे। पुनर्जन्म की बात मानने की यहां तो सब से बड़ी विशेषता है मामा कि आदमी कभी हताश न होने पाये। याद है तुम्हीं ने तो मुझे बताया था कि जीवन का दुख जितना घना हो उतना ही बड़ा अगले जन्म का सुख होता है। और फिर मिलन भी तो जुदाई के बाद होता है।

अपनी बातों से स्वयं उसे प्रचारक की बू आ रही थी। यह जानते हुए भी कि

ये सारी बातें खोखली थी वह चाहता था कि उनसे मामा को एक राहत सी मिले। पाठशाला के समय से उसे ज्ञात था कि मामा बड़ी-बड़ी बातों पर विश्वास करती है। यही कारण था कि वह भी आज उसके सामने भारी बातें रख रहा था। उन बातों पर विश्वास न करते हुए भी मामा के सामने उन्हें रखने में उसका उद्देश्य केवल इतना ही था कि मामा को कुछ हद तक आश्वासन मिल जाय।

—नहीं लालमन इस शादी को रोकने के लिए तुम्हें कुछ न-कुछ करना ही होगा। शादी चाहे माँ बाप ही क्यों न करते हों पर उसमें लड़की की पसन्द की बात भी तो होती है। यह तो बिना मर्जी की शादी ठहरी। तुम्हें इस शादी को रोकना ही होगा लालमन नहीं तो मैं

—तुम पागलों जैसी बातें कर रही हो। जिन उपन्यासों के बीच तुम अपना समय काटा करती हो क्या उनमें तुमने कभी भी यह नहीं देखा कि लोग, जिन्हें समाज भी कहा जाता है हमेशा माँ बाप का साथ देते हैं लड़के लड़कियों का नहीं ?

—मुझे लोगों से लेना देना थोड़े ही है। मैं तो अपनी और तुम्हारी बात कर रही हूँ।

—अपनी बातें तो खुदगर्जी हुई।

—लालमन सच मानो अगर तुमने कोई उपाय नहीं निकाला तो मैं जान दे दूँगी।

—मैं तो तुम्हें साहसी समझता था।

—तुम्हारी ये बातें मुझे यह सोचने को विवश कर रही है कि तुम वह लालमन नहीं रहे जो बात बात पर मुझसे पूछता रहता था कि मामा एक दिन मुझे अकेले छोड़ दूर तो नहीं चली जाओगी। उस समय जब मैं तुमसे दूर नहीं थी तो इस ख्याल मात्र से तुम्हारे चेहरे पर भारी उदासी छा जाती थी। आज जब सचमुच मैं तुम से दूर जा रही हूँ तो तुम मुझे रोकने की कोशिश भी नहीं करना चाह रहे हो ?

—असम्भव के लिए कैसी कोशिश ?

—लालमन मेरी शादी तुम से होगी, तुम्हारे अलावा किसी से नहीं।

जिस समय मामा लालमन की बाँहों में थी उस समय बाहर वर्षा शुरू हो गयी थी जिससे धनुवा भगत के घर का धुंधलापन और भी बढ़ गया था।

कोई घंटे बाद लालमन अपने खेत में अकेला था। सूरज ओझल हो चुका था और उससे बहुत पहले ही देव नी और जगदीश घर लौट गये थे। खेत में लालमन के लिए कोई भी काम नहीं था। अगर वह इधर भटक आया था तो अपने हरे भरे पौधों के बीच अपने कुम्हलाये मन को हरा करने के लिए। कुछ

दूरी पर के भावे के पेड आज अजीब सांय साय के साथ कराहते से लग रहे थे। समुद्र का रोदन भी आज जारी का था। नालमन उन बातो के बारे म सोच रहा था जो घटो पहले मामा और उसके बीच हुई थी। जो बात उसके अपने मुह से निकली थी इस समय उनस कोइ अथ निकालना उसके लिए आसान नही था। वे दूर स लायी गयी एकदम खाली बातें थी और इस समय वह उसी खोखलपन म समा गया था।

अपने को बहुत कमजोर जानकर मामा का पूरे होश हवास के साथ किसी दूसरे की बॉहो म धकेल देना उसे अजीब सा लग रहा था। उसने तो हमेशा अपने को सशक्त इसान माना है। जो व्यक्ति चट्टानो पर भी चीजें उगा सकता है वह कमजोर कम हो सकता है ! लेकिन सामने की परिस्थिति पर विचार करते हुए वह अपने को शक्तिशाली भी तो नही मान सकता। जब उसम मामा को रोकने की ताकत नही रही तब वह बडे बड अथहीन शब्दो का सहारा लकर उसके सामने खोखला उपदेश देता रहा। वह जानता था कि मामा जिसे उसन बेमतलब की बातो स ऊबा दिया था इस समय अपनी चारदीवारी के किसी कोने म आसू बहा रही होगी। झावे के पड़ो और लहरो के कराहने म वह मामा की सिसकियो को महसूस कर रहा था।

मामा को कसे भुलाया जा सकता है ? यहाँ उसके मस्तिष्क म भुलाया शब्द अपने दोनो अर्थों के साथ था। उसके भीतर जो दूसरा शब्द गरम पानी की तरह खौल रहा था वह था—उपाय। कोई रास्ता नही सूझ रहा था उसे। उसके खेत के पौधो के पत्तो पर के कीटाणुओ की तरह उसके दिलो दिमाग म जो कीडा रेंग रहा था वह था—

कोई उपाय !

कोई रास्ता ! !

मामा से बिछुड जाने पर जिस बात स उसने अपने को सात्वना दी थी वह थी आशा। बिछुड जाने के बाद भी उसे आशा थी कि मामा उससे सदा के लिए नही बिछुडी है। आज नही तो कल वह उसकी बनकर रहेगी। इसी उम्मीद के सहारे उसने उस क्षणिक विरह की वेदना को सह लिया था। इस समय उसकी वही आशा टूट चुकी थी और वह पुराना दद सजीव हो गया था। मामा के सामने अपने इस दद को छिपाने की कोशिश म उसने उसे और भी ददनाक बना दिया था।

समुद्र की लहरें उस पर व्यग्य करती हुइ जोरो के साथ कराह रही थी। अपने जिस खेत के बीच उसने जीवन की सबसे बडी खुशी पायी थी उसी खेत म दो आसू उछालना उसे गवारा नहा था। वह नहा चाहता था कि उन गरम बूदो स उसके खेत की हरियाली झुलसकर रह जाय इसलिए वह उन्ह भीतर

ही रोके रहा। इस प्रयास मे उसे ऐसा आभास होने लगा था जैसे वे आँसू भीतर ही भीतर उफन रहे हों और कब वे बाढ के रूप मे आ जायें पता नही।

कुत्ते के भौंकने की आवाज आयी। अपने खयालो से छूटकर लालमन ने उस धूमिल वातावरण मे सामने की ओर देखा। धरमेन का कंधे पर बन्दूक लिये आ जाना सयोग ही था। कोई और अवसर होता तो लालमन को इस आगमन पर बेहद खुशी होती मगर इस समय तो यह बात उसे खटककर रह गयी। कुत्ते को खेत के पौधों को रौंदने से रोकते हुए धरमेन ने चुटकी बजाकर पुचकारते हुए उसे अपने पास बुला लिया। लालमन एकदम भूल गया था कि आज रात उसे धरमेन के यहाँ पहुँचना था और जब उसे यह बात याद आयी तो धरमेन को यहा पाकर उसे हैरत हुई। उसकी हैरानी को मिटाते हुए धरमेन बोल पडा—

—लोग आठ को पहुच रहे हैं इसलिए सोचा कंधे पर बन्दूक रखकर तुमसे मिलने आ जाऊ। अगर खरगोश मिल गया तब तो पार्टी ही समझो। अरे हा, पहले तुम्हे यह खुशखबरी सुना दू कि मेरा भाई आज घर पर नही रहेगा।

लालमन इस बात का मतलब समझ गया। आज रात बीयर चलेगी इस बात से उसे जो खुशी होनी चाहिए थी वह नही हुई। कोई आधा घटे की असफल शिकार के बाद दोनो ने घर का रास्ता लिया। रास्ते मे अपनी बन्दूक को एक कधे से दूसरे कधे पर पहुँचाते हुए धरमेन ने कहा—

—आजकल मेरे घर पर एक झमेला चल रहा है।

लालमन को अपनी ओर ताकते पाकर धरमेन को मालूम हो गया कि बात उसकी समझ मे नही आयी इसलिए उसने आगे कहा—

—आजकल खेतो के सभी कामो की देखरेख एक तरह से मैं ही कर रहा हूँ, भैया बाहरी कामो को सभालता है।—एक क्षण चुप रहकर उसने कहा—खैरियत है तुमने यह नही कहा कि भला मुझ से क्या सँभलेंगे। मेरी भाभी तो कहती है कि मोमाइल बकरी लकडी चबावे। वह अब भी यही चाहती है कि मैं कॉलेज लौट जाऊं।

—आखिर तुम खेतो मे करते क्या हो?

—घूमा फिरा करता हूँ। जहा काम अच्छा होता है वहा रुककर मजदूर से दो बातें कर लेता हूँ, और जहाँ नही अच्छा होता है वहाँ मजदूर को इशारा करके आगे बढ जाता हू।

—तुम क्या पहचानो खेत के कामो को?

—सारा ठेका तुमने थोडे ही ले लिया है। भाई, मुझे देखकर बूढे सरदार को भी हट जाना पडता है।

—यह तो तुम्हारे खेतों के बीच पहुँचने पर ही जानूंगा।

—कब आ रहे हो?

—निरीक्षक की तरह आऊँगा और निरीक्षक दिन देकर नहीं आता। तुम्हें यह भी कहे देता हूँ कि वहां पहुँचकर मैं मजदूरों के पक्ष में होऊंगा।

—तो फिर पाँच दस रुपये तुम्हारे हाथों पर रखकर तुम्हारे प ा को खरीदना ही पड़ेगा।—हँसते हुए धरमेन बोला।

—आखिर जमींदार का बटा जो ठहरा।

लालमन सीधे घर पहुँचा। गरमी के कारण उसे मजबूरन स्नान करना पड़ा। कपड़े बदलकर जब वह घर से निकलने लगा उस समय इधर कई दिनों के बाद उसने प्रभा के चेहरे पर मुसकान की एक झलक देखी। उस मुसकान का कारण जाने बिना वहां से जाना उससे नहीं हुआ। ठिठककर उसने प्रभा से उसका कारण पूछा। प्रभा हँसकर रह गयी।

रास्ते में भी लालमन प्रभा की उस हँसी का कारण समझने की कोशिश करता रहा। धरमेन के घर पहुंचकर उसे मालूम हुआ कि वह सबसे पहले पहुँच गया था। उस समय धरमेन भी किसी जरूरी काम से च द मिनटों के लिए बाहर गया हुआ था। धरमेन की भाभी ने एक भोली भाली मुसकान से उसका स्वागत किया और धरमेन के कमरे में उसे बिठाती हुई बोली—

—मुझे तुमसे कुछ जरूरी बातें करनी हैं।

लालमन ने हैरत भरी नजरों से उसे देखा। इससे पहले कि वह कुछ पूछ पाता धरमेन की उस पतली सी गोरी भाभी ने जिसे धरमेन के बाप ने लाखों के बीच से ढूंढा था हँसते हुए कहा—

—अभी नहीं, फिर कभी।

लालमन कुछ समझ पाता कि तभी धरमेन हाथ में टोकरी थामे भीतर आ गया।

१५

धरमेन के घर के सामने से वह जिस समय गुजरा उस वक्त सूरज ऊपर आ चुका था। सुबह के उस उजाले ने अपने नर्मीले आंचल से चेहरे को सामन कर लिया था जिससे चीजें अपने आप स्पष्ट हो चली थीं। जिस पगडंडी से होते हुए वह अपने खेत की ओर बना उसकी घास पर ओस कण अब भी मोती की तरह चमक रहे थे। सूरज की लोलुप किरणें अब भी उन्हें मोती समझ निगलती जा रही था। रास्ते के जिन सभी लोगों को हाथ उठाते हुए लालमन आगे बढ़ना आज उन्हीं लोगों से वह कटा हुआ सा था। छोटे बड़ों के सामने एक यान्त्रिक सक्रियता से उसके हाथ उठते थे कभी सचमुच ही नमस्कार के लिए और कभी आदत से विवश या औपचारिकता के इशारे पर, लेकिन आज उसी आदर, उसी आदत और उसी औपचारिकता को एकदम भूलकर वह यन्त्र मानव की तरह चलता रहा।

आज वह हर बात और हर चीज से अलग था। खेत की ओर बढ़ते हुए वह केवल परिपाटी को निभा रहा था। उसे न अपने गांव का खयाल था, न अपने खेत का। कौन पीछे छूटता, कौन पास आता जा रहा था—इसका भी उसे भान नहीं था। ईख के बने हुए खेतों से कहीं कहने भाकने लगे थे कहीं पौधे छूटने तक आने को थे। इन सभी पौधों को कण कण बढ़ते वह देखता आ रहा था। जिस दिन उसे ऐसा आभास होता कि आज पौधे अधिक नहीं पनप पाये उस दुख सा होता। उसका अपना ईख का खेत तो नहीं था पर ईख उसके देश की आशा थी, इस बात को वह कैसे नहीं समझ पाता। वह नहीं चाहता था कि किसी भी हालत में ईख के पौधे बढ़ने में पीछे रह जायें। उसके मस्तिष्क में किसी तरह का कोई खयाल नहीं था और वह शून्यता लिए चल रहा था। खयाल से खाली भीनी चाल से वह अपने खेत में पहुँचा जहाँ

देवन्ती और जगदीश अपने अपने कामों में लगे हुए थे। उनसे हाल चाल पूछने तक का खयाल भी उसे नहीं रहा। जगदीश और देवन्ती को इस बात से आश्चर्य न हुआ यह बात नहीं थी, फिर भी वे दोनों आपस में बात करते हुए अपने अपने कामों में लगे रहे।

लालमन चट्टान पर चमकती धूप में बैठ गया। जगदीश और देवन्ती ने सोचा लालमन को ठंड लग रही होगी इसीलिए उसने काम तक न पहुँचकर धूप में बैठ रहना ही उसने ठीक समझा हो जबकि लालमन ठंड से बचने के लिए धूप में नहीं बैठा था। उसे न ठंड लग रही थी न गरमी उसे तो अपनी साँसों का भी आभास नहीं था। ठीक सामने की क्यारियों में बैगन और टमाटर के पौधे तैयार थे। प्रतिरोपण इसी सप्ताह शुरू कर देने की बात हुई थी इस समय उसे यह भी याद नहीं था। भामा की याद भी नहीं थी उसे।

उधर तो समुद्र के प्रलयंकर ज्वार भाटा की आवाजें भी आज उसके कानों तक नहीं पहुँच रही थीं। तुरई और कद्दू की बेलों पर आये नये फूलों पर उसकी नजर नहीं पड़ पा रही थी। वह बैठा रहा यह न जानते हुए भी कि वह अपने खेत में था जहाँ आज से पहले वह कभी भी चेतनाहीन होकर नहीं बैठा था। कोई आधा घंटे बाद देवन्ती उसके पास पहुँची। वहीं हमेशा की औपचारिक बातों के बाद उसने लालमन से उसकी उदासी का कारण पूछा और जब लालमन ने सूखी मुसकान से बात को टाल दिया तब देवन्ती ने अपने दिमाग पर जोर दिया और जब उसे विश्वास हो चला कि बात वही हो सकती है जो वह सोच रही थी तो उसने अपने स्वर में आश्वासन का भाव लाते हुए कहा—

—लालमन भैया, भामा की शादी हो रही है इसी बात के लिए तुम इस तरह उदास हो न ?

देवन्ती की इस बात से लालमन को विस्मय नहीं हुआ। जब गाँव के छोटे बड़े सभी जानते थे तो फिर कोई कारण ही नहीं था कि यह बात देवन्ती से छिपी रहती। देवन्ती लालमन को अपने ढंग से समझाती रही और लालमन हँसते रहने का असफल प्रयास करता रहा। उसकी आँखें और ध्यान क्षितिज पर थे। सामने के पेड़ों के बीच की खिड़की से वह सागर अम्बर के संगम को देखता रहा।

भात खाने के समय देवन्ती फिर से लालमन के पास आकर बैठ गयी।

—भोजन नहीं लाये हो आज ?

उसने मुस्कराते हुए सिर हिला दिया।

—तो फिर तुम्हें मेरे साथ खाना होगा।

—नहीं मुझे भूख नहीं।

—या मुझ गरीब का खाना तुम्हें पसन्द नहीं आएगा ?

—अगर पहल कभी न खाया होता तो वह सकती थी।

—तुम्हें खाना ही होगा।

—यहा न नही खा सकूंगा।

—थोडा-सा।—यह कहती हुई अपने खाने के बरतन को ढपनी म वह तरकारी और भात रखने लगी, फिर लालमन की ओर देखती हुई बोली—जाओ, हाथ धो आओ।

एक क्षण बठे रहने के बाद लालमन चट्टान से उठा और कुए की ओर बढ गया। बहुत पहले ही उसने देवती के बारे म अपना विचार बना लिया था। वह सूरत से जितनी गरीब थी दिल से उतनी ही धनी थी। लालमन उसे प्रभा स कम प्यार नही करता था। कल रात जब उसने यह सोचा था कि अपनी कहानी प्रभा को सुनाने से उसका मन कुछ हल्का हो सकता था लेकिन उसी समय उसे यह बात भी याद आ गयी थी कि प्रभा तो पहले ही से दुखी था उसे अपनी बातों से अधिक दुखी क्या किया जाय। इस समय देवती का सामने पाकर उसे अपना मन हल्का करने की बात फिर सूझी। हाथ मुह धोने के बाद अपने दोनो हाथो को कमीज क छोर स पोछते हुए वह देवती के पास लौट आया। देवती ने ढपनी का भोजन अपने लिए रखकर बरतन लालमन की ओर बढ़ा दिया।

—पागल तो नही हो गयी।—लालमन ने पूछा।

—पागल क्या होने लगी?

—मैं सभी कुछ खा लूगा तो तुम क्या खाओगी?

अपने हाथ की ढपनी की ओर सकेत करते हुए देवती बोली—मैं भी तो खाने जा रही हूँ।

—ढपनी मेरे हवाले करो और यह तुम खाओ।—बरतन को अपने सामने स हटाते हुए लालमन बोला।

कुछ देर तक की हा-नहा के बाद देवती को विवश हो बरतन लेना पडा और लालमन को ढपनी देनी पडी जिसम खाना कम था।

बिना रुचि लालमन खाता रहा और सोचता रहा कि उसे जो कुछ कहना था किस ढग से कहे और कब शुरू करे। काफी देर तक इसी तरह सोचते रहने के बाद अन्त म उसने अपने आपसे प्रश्न किया—कहने और न कहने से क्या होता है? कहने से कुछ बनने की उम्मीद तो नही। मन हल्का करने की बात भी तो दूर की बात रही।

सूरज ढलने से पहले ही वह अपने खेत को छोडकर समुद्र की ओर चल पडा। पडो के झुरमुट से आता हुआ सूरज का प्रकाश अन्तिम आँख मिचौनी खेल रहा था। एक विचित्र चाल से लुढकता सा हुआ वह बालू भरे रास्ते पर

चलता रहा। समुद्र पास आता गया और उसका खारीपन बढ़ता गया। वह कुछ न सोचते हुए भी केवल इतना सोच रहा था कि आना था गुजरना था व गुजर चुका। उसकी काई चीज पीछे छूट चुकी थी। पीछे लौटकर उसे उठा लाने की तमन्ना थी उसके भीतर पर यह सोचकर आगा टिक न सकी कि उस चीज को अब तक कोई उठा चुका होगा। पीछे लौटना समय की बर्बादी के अलावा और हो ही क्या सकता है? समुद्र का गर्जन अधिक स्पष्ट होता गया। उस खलती हुई आवाज से भाग जाने की इच्छा हुई पर जिस खामोशी की उसे तलाश थी वह और भी खलने वाली चीज ठहरी इसलिए कोई दूसरा चारा न पाकर वह समुद्र की ही ओर बढ़ता गया और फिर समुद्र से तो उसे वह प्यार था जो क्षणिक नहीं हो सकता।

सूरज सोने की थाली की तरह क्षितिज पर टगा हुआ था। डोर टूटने ही वाली थी और उसके लुढ़क जाने में शायद अधिक देर न थी। कम-से-कम यह एक दृश्य था जिससे लालमन की अशान्ति क्षण भर के लिए भग होकर रही। वह उस स्थान पर जा खड़ा हुआ जहाँ लहरें झाग सहित पूरी शक्ति के साथ कठोर चट्टानों से टकरा रही थीं। झाग के पानी को अपने चेहरे पर महसूस करके उसने ठडक पायी। दो पक्षी काँव काँव करते हुए उसके सिर पर से गुजर गये। दो अन्य जोड़ियाँ क्षितिज की लालिमा को चुगने के लिए तेज रफ्तार के साथ डूबते सूरज की ओर बढ़ी जा रही थीं। वह कोई पागल नाविक रहा होगा जो पाल चढ़ाये उस उफनते सागर के सीने को चीरते हुए सिन्दूरी क्षितिज की ओर अपनी नाव को दौड़ाये लिये जा रहा था। क्षण भर के लिए लालमन ने उस नाव में अपने बैठे होने की कल्पना की। कुछ भी हो उसके लिए वह एक आनन्द यात्रा थी। दूधिया रग की एक बड़ी सी फेनिल लहर लालमन के पैरों के पास आकर चकनाचूर हो गयी। उसका समूचा शरीर भीग चला था। अपने को सम्हालते सम्हालते उसने देखा नारगी छाप छोड़कर सूरज सागर में डूब चुका था।

रात को वह किसी की कविता पूरी करने में लगा हुआ था। प्रमा उसके सामने बैठी हुई थी। अभी चन्द मिनट पहले वह लालमन से भोजन न करने का कारण पूछ रही थी और लालमन ने सिरदर्द का बहाना किया था। लालमन भात खाने से इनकार कर जाये ऐसी स्थिति पहले कभी नहीं आयी थी। यही कारण था कि इस बात से प्रमा को आश्चर्य हुआ था। उसके बार-बार कहने पर भी लालमन ने बात नहीं मानी थी और अन्त में प्रमा को चुप रहना पड़ा था। उससे भी खाया नहीं गया पर जब लालमन ने पूछा तो उसने कह दिया कि वह पहले ही खा चुकी है।

कविता पूरी न होते देख लालमन ने बही को मेज पर रख दिया और प्रभा की ओर देखा। प्रभा के चेहरे पर वही रहस्यमय मुसकान थी। वह प्रभा को देखता रहा। एक सावले चेहरे पर किसी गोरी सूरत की मुसकान थी वह। बातें करने के रौ म न होते हुए भी लालमन ने पूछा—

—कल से तुम बहुत खुश नजर आ रही हो।

—हा। —प्रभा ने उस मुसकान के बीच छोटा सा उत्तर दिया।

—कारण ?

—कोई खास कारण तो नही है बात सिफ इतनी है कि मैंने एक प्रण किया है।

प्रभा को चुप हो जाते देख लालमन ने पूछा—कसा प्रण ?

—शादी न करने का।

—जो चीज़ असम्भव हो उसके लिए प्रण कसे किया जा सकता है ?

—असम्भव क्यों है ?

—यह बात केवल तुम्हारी मर्जी की थोड़े ही है।

—मैं जानती हूँ कि इसमे सभी की मर्जी है पर यह भी तो सच है कि मेरी मर्जी के बिना कुछ कसे हो सकता है।

आश्चयचकित लालमन अपनी बहन को देखता रहा। वह किसी पढाये हुए तोते की तरह बोल रही थी। उसकी इस आवाज़ पर लालमन को विश्वास नही हुआ। वह आवाज उसकी बहन की आवाज सी नही थी। वह अभी उस वाक्य को समझने की कोशिश कर ही रहा था कि प्रभा आगे बोल उठी—

—शादी जरूरी है इस बात को मैं मानती हूँ पर शादी न करके अपनी मा के घर रह जाना कोई पाप भी तो नही हो सकता।

—किसने सिखाई तुम्हे यह बात ?

—किसी ने नही।

—यह मैं कसे मान जाऊँ ?

—कौन सिखायेगा मुझे ऐसी बातें ?

—शादी न करना कोई पाप न सही पर लोगो की आवाज़ो को रोकना भी तो आसान नही।

—मैं यह सब नही जानती। मैंने तो निणय कर लिया है कि अब कुछ भी हो जाय मैं शादी नही करूंगी।

—तुम खुद नही समझती हो प्रभा कि तुम कह क्या रही हो ? लडके के लिए शायद यह बात कुछ हद तक सम्भव हो जाये पर लडकी का इससे बचना कठिन ही नही असम्भव है। सबसे पहले तो मा और पिताजी तुम्हारे इस प्रण को तोडने म कुछ भी बाकी नही छोडेंगे।

—मेरी भाभी, मैं तो यह मानती हूँ कि ऐसी बात का [illegible] भी [illegible] उचित [illegible] होता है।

रात को चारपाई पर पड़े हुए लालमन [illegible] सभी बातें [illegible] प्रभा के बारे में सोचता रहा था। उस समय भी उसे इस बात की हैरानी थी कि आखिर प्रभा उस तरह की बातें कैसे कर पाती थी। [illegible] कुछ न [illegible] प्रभा का [illegible] समझता रहा था। [illegible] उसकी सभी बातें यह [illegible] नहीं थीं। उसकी वे सभी बातें कुछ [illegible] पर भी वे बातें साधारण न थीं। लालमन को ऐसा आभास होने लगा कि प्रभा [illegible] से बाहर आ गई थी। पर वह निश्चय नहीं कर पा रहा था कि उसने जो कुछ पाया था वह सही था। प्रभा ने [illegible] अस्वाभाविक बातें की थीं। वे सारी बातें उस पुस्तकों की बातों-सी प्रतीत हुई थीं मगर लालमन जानता था कि वे पुस्तकों की बातें नहीं थीं। यथार्थ का अंश उनमें कहीं अधिक था। वह यथार्थ उससे भी छिपा नहीं था।

एक ही बार में लालमन के सामने वे सभी [illegible] जब प्रभा छोटी थी और उसने [illegible] उस दुनिया [illegible] करती थी। यह इसलिए कि अब भी उसके पास गुड़िया की [illegible] जाती थी प्रभा हमेशा दुनिया की ओर [illegible] रही थी। लालमन को यह कुछ अजीब-सा लगा कि [illegible] दुनिया [illegible] आएगी। [illegible] उसने अपनी बहन के चेहरे पर जो भाव देखा था वह दुःख था। वह मुस्कान भी सफलता की मुस्कान थी। कम-से-कम लालमन को इस बात की तो खुशी थी कि अपनी बहन को उसने खुशी भरी मुस्कान के साथ देखा था। उस [illegible] निराशा और उदासी के बाद उसने उसके चेहरे पर जो नई चमक देखी थी वह असाधारण था।

और फिर उसने अपने बारे में सोचना प्रारम्भ किया।

अपने बारे में सोचने के लिए उसके पास बहुत कुछ था और कुछ भी नहीं था। धनुवा भगत की उन पुरानी बातों में से कुछ [illegible] बार-बार उसे याद आ जाती। धनुवा भगत उन बातों को गीत के रूप में गाता था और लालमन उन्हें अपने ढंग से समझता। उन बातों में यह बात भी थी—

ज़िन्दगानी ना [illegible] तो बहता पानी है।
चट्टान और पहाड़ से जो होकर बह जाय
बस वही सबसे बड़ी ज़िन्दगानी है।

लालमन को गाने का राग अच्छी तरह नहीं आता था फिर भी मन ही मन वह उसे गुनगुनाया करता। न जाने इन चन्द [illegible] में कौन सा आश्वासन था!

१६

धरमेन की भाभी ने जिस बात के लिए लालमन को बुलाया था उसे न शुरू करके कोई दूसरी ही चर्चा शुरू कर दी थी। गांव के सभी लोग लालमन और भामा की बात जानते थे। इधर जब भामा की शादी के प्रेम में कुछ ही दिन रह गये थे तो बातों का रूप भी बदलता जा रहा था। कोई कहता—भामा के बाप की आंख हमेशा से धनवान दामाद के ऊपर टिकी हुई थी। उसे भी तो इस बात का पता था कि उसकी बेटी के पास अनुपम सुन्दरता थी। सुन्दरता की अच्छी कीमत न लगाई जाये यह बात उसे कैसे पसन्द आ सकती थी। कुछ लोगों ने यह भी कहा कि अपनी जाति उसके लिए सोना है बाकी जातियां कुछ भी नहीं। धरमेन की भाभी ने औरों से जो कुछ सुना था उसी के आधार पर लालमन से प्रश्न किया—

—यह बात यहां तक सच है, लालमन ?

—कौन सी बात ?

—जो आजकल हर एक के मुंह से सुनी जा रही है।

—बातें तो बहुत सुनी जा रही हैं भाभी। तुम कौन सी पूछ रही हो ?

—सचमुच क्या भामा मां बनने वाली है ?

—यह झूठ है भाभी।

—तुमने भी यह बात सुनी है या नहीं ?

—सुन चुका हूं।

—अगर ऐसी बात है तो शादी तुम्हारे ही साथ होनी चाहिए थी।

—शादी किसकी किसके साथ होनी चाहिए यह तो और बात हुई। मैं तुम्हें यह विश्वास दिलाना चाहता हूं कि भामा के साथ मैं इतना नीचे नहीं कभी उतरा और उसकी मां बनने वाली बात एकदम बेबुनियाद है।

धरमेन की भाभी क्षण भर के लिए चुप रही । लालमन भी चुप रहा । दूसरे क्षण धरमेन की भाभी ने अपने स्वर में अधिक मृदुता लाते हुए पूछा कि क्या सचमुच ही वह भाभी को बहुत प्यार करता है । और जब उसके इस प्रश्न का उत्तर लालमन ने हाँ में दिया तो वह फिर कुछ क्षण के लिए चुप रह गयी । उसके इस प्रश्न का लालमन ने कोई उत्तर नहीं दिया कि क्या भाभी की शादी के बाद भी वह उसे प्यार करता रहेगा ? लालमन को चाय देने के बाद वह फिर से उसी विषय पर टिकी रही । इस बार उसने लालमन से यह प्रश्न किया कि भाभी की जुदाई को वह कैसे सहेगा । लालमन मुस्करा दिया गोया वही उसका उत्तर था । धरमन की भाभी ने भी यही समझा कि वह हँसकर सह लेगा । इतना आत्मविश्वास था लालमन की उन गहरी नीली आँखों में ।

लालमन को अपने पास बुलाने के विशिष्ट उद्देश्य पर वह काफी देर से पहुँची । वह भी लालमन के पूछने पर कि आखिर उसे क्या बुलाया गया था, धरमेन की भाभी ने बात प्रश्न के सहारे शुरू की ।

—धरमन जो कुछ कर रहा है उससे तुम परिचित हो ?

इस प्रश्न से लालमन के भीतर जो दूसरा प्रश्न अपने आप पैदा हो गया वह यह था कि आखिर धरमन अनुचित क्या कर सकता है ? प्रश्न का उत्तर उसने प्रश्न से दिया—

—क्या कर रहा है वह ?

—अगर तुम नहीं जानोगे तो और कौन जानेगा ?

—खेतीबारी में लगा हुआ है ।

—खेतीबारी को उजाड़ रहा है ।

—यह कैसे हो सकता है ?

—धरमेन तो वही कर रहा है जो नहीं हो सकता ।

—वह खेतों को उजाड़ कैसे सकता है ?

—तब तो इसका यह मतलब हुआ कि सचमुच ही तुम कुछ भी नहीं जानते ?

—अगर इसमें आगे कोई बात हुई है तो सचमुच ही मैं नहीं जानता ।

धरमन की भाभी चुप रही । लालमन भी आगे सुनने के लिए चुपचाप बैठा रहा । धरमन की भाभी का साथ देखना उसमें रहा हो ऐसा था पर जब काफी देर तक उसने उसे चुप पाया तो आँख उठाकर उसकी ओर देखते हुए पूछा—

—क्या किया है उसने ?

—सनक सवार है उस पर । धर्माधिकार बनने की धारणा में वह गया कुछ भूल रहा है । खेतों में कोई पन्द्रह लोग काम करते हैं । उन लोगों का मालिक न होकर वह उन सभी का नेता बन बैठा है । उनके परिवारों का भाग लेकर वह

पर मे वकालत करता रहता है। पिछले सप्ताह से वह उन सभी को समय से दो घंटे पहले ही छोड़ता आ रहा है। पिछले ही सप्ताह तुम्हारे भाई ने उसे पैसे की जिम्मेदारी दे दी थी और यह कहते हुए कि मजदूरों का हक मारने से उसका दिल दुखता है उसने बिना सोचे समझे सभी के पैसे बढ़ा दिए। अब तुम्हीं सोचो इस मतागिरी से मन जायेंगे या रहेंगे! वह तो घर का आटा गीला करने पर तुला हुआ है। तुम्हें इसीलिए बुलाया है कि उसे समझाने की कोशिश करो। उसके भाई के स्वभाव को तो तुम जानते ही हो। धरमेन कुछ भी क्या न कर दे वह उसे कुछ भी नहीं कहेगा। धरमेन की यह बात उसे जरा भी पसन्द नहीं फिर भी उससे कुछ न कहकर वह मुझे सुनाता रहता है। मैंने धरमेन को समझाने का बहुत प्रयत्न किया लेकिन वह अपने इस हरिश्चन्द्र स्वभाव से बाज आये तब तो! हसकर कहता है कि समुद्र से एक गिलास पानी निकाल लेने से क्या कमी पड़ सकती है। तुम तो अपने हाथों खेत सम्हालते हो इसलिए जरूर जानते होगे कि आजकल खेती में क्या मिलता है, क्या नहीं मिलता। ये ही खेत जो सचमुच ही कभी सोना उगलते थे अब तो निगलते से लगते हैं।

धरमेन की भाभी के चुप होते ही लालमन ने धीरे से पूछा—

—तुम सोचती हो कि वह मेरी बात मान जायेगा!

—कोशिश करके देखो। पढ़ाई छोड़कर यह न जाने क्या कर रहा है वह!

कोई पन्द्रह मिनट बाद धरमेन का घर छोड़ते हुए लालमन ने धरमेन की भाभी को दिलासा दिया कि वह उससे बातें करेगा और किसी तरह का अनर्थ करने से उसे रोकेगा। बात कह जाने पर भी उसे यह विश्वास नहीं था कि धरमेन जो कुछ कर रहा था वह अनर्थ ठहरा। धरमेन की जगह पर वह भी तो ऐसा ही करता। वह यह मानने का जरा भी तैयार नहीं था कि उसके अपने देश में मजदूरों को उनका सही पारिश्रमिक उन्हें मिलता है। अगर मजदूरों की आयज कमर न होती तो केवल इसीलिए कि उन्हें पर्याप्त पैसा नहीं मिलता जिससे वे अपने लिए मान खरीद सकते।

दूसरे ही दिन अपने खेत के कामों से छुट्टी पाकर लालमन धरमेन से मिलने उस इलाके में पहुँचा जहाँ उसके खेत थे। खाने का समय था। सभी मजदूर एक स्थान पर बैठे खा रहे थे। धरमेन कुछ ही दूरी पर डिठौरी के पेड़ की छाया में बैठा पढ़ रहा था। लालमन पर नजर पड़ते ही पुस्तक बन्द करते हुए वह खड़ा हो गया। आगे बढ़कर बोला—

—कहीं तुम भी शिकार के इरादे से तो इधर नहीं आ गये! पर यार इस प्रांत में खरगोश नहीं मिलते।

—मुझे अगर कभी शिकार करने की आवश्यकता पड़ी तो मैं बाघ सिंह का शिकार करूंगा।

—मारीगास में तो तुम्हें बाघ सिंह नहीं मिलेंगे। अलबत्ता चूहे और नेवले बहुत मिल सकते हैं। मैं सोचता हूँ चूहों का शिकार करके तुम दगन के लिए बड़ा बड़ा उपकार करोगे। ईख के खेतों को चट होने से बचा लोगे।

—बन्दूक तो तुम्हारे पास है, शिकार मुझ से कैसे होगा।

दोनों डिठौरी के नीचे छाया में बैठ गये। खेतों में कड़कती धूप थी। अकुला देने वाली गरमी थी चारों ओर लेकिन डिठौरी की छाया में एक शीतलता थी जिसे वहाँ पहुँचते ही लालमन ने महसूस कर लिया था। सामने के ईख के पत्तों पर धूप झिलमिला रही थी। गरमी के कारण मजदूरों से सरपट खाया नहीं जा रहा था। भोजन से अधिक पानी पिया जा रहा था। धूप में इतनी दूर तक चलकर आने के बाद लालमन को भी जोरों की प्यास लग आयी थी। अपनी आस्तीन से चेहरे पर के पसीने की बूदों को पोंछते हुए उसने धरमेन से पानी की फरमाईश की। धरमेन खुद आगे बढ़कर मजदूरों के बीच से पानी की बोतल ले आया। पानी पी लेने के बाद धरमेन ने पूछा —

—कहो कैसे टपक पड़े इधर?

—तुम्हीं तो कहा करते थे कि मैं कभी इधर नहीं आता।

—खैरियत है आ तो गये। खाकर आये हो या नहीं?

—मैं तो खाकर आया हूँ पर तुम नहीं खा रहे हो।

—इसी एक काम में मैं किसी से पीछे रहना नहीं चाहता। मैं तो दस ही बजे खा लेता हूँ।

दोनों के बीच उस वक्त तक इधर उधर की बातें होती रहीं जब तक कि सभी काम करने वाले अपने अपने कामों में नहीं जुट गये। मर्द ईख के सूखे पत्तों को कस रहे थे और औरतें निराई कर रही थीं। यहाँ आने के अपने विशिष्ट उद्देश्य पर पहुँचते हुए पहले तो लालमन को सचमुच ही हिचकिचाहट सी हुई पर फिर उसने साहस बटोरकर बात शुरू की। धरमेन उसे सुनता रहा और जब लालमन की बात समाप्त हुई तब उसने हँसते हुए कहा —

—तो मेरी मामी की बातों में तुम भी आ गये?

—मैंने तो केवल इतना कहा है कि पहले अपने घर में दीया जला लेने के बाद अगर कोई मस्जिद में दीया जलाये तो यह बात जँचती है लेकिन अपने घर में दीया जलाने से पहले मस्जिद में दीया जलाने वाली बात शोभा नहीं देती।

—तुम्हारी वह कविता कहाँ गयी जो उस दिन तुम मुझे सुना रहे थे जिसमें तुम्हारे भीतर का कवि चिल्ला चिल्लाकर कहता सा प्रतीत होता था कि उन्हें हक है अपने हक का?

—तुम मुझे गलत क्यों समझने लगे?

—तुम्हारा मतलब कविता से है या अभी की बातों से?

—मेरी कविता की बातें भी सही हैं और इस समय की बातें भी

—तब तो मेरा यही कह देना अधिक अच्छा होगा कि अपनी समझ में कुछ नहीं आ रहा है।

—तुम से पहले तुम्हारे बाप-दादा ने इन खेतों को कड़ी मेहनत से बोया और काटा है। तुम्हारे भाई ने खून पसीना एक किया है तब जाकर कहीं आज तुम्हारा परिवार गांव में सब में प्रतिष्ठित बन पाया है। उन सारे परिश्रमों को महत्त्व देकर ही तुम्हें कुछ करना है। मजदूरों को अधिक पैसा देने के मैं विरुद्ध नहीं पर तुम तो उन्हें पैसा अधिक भी देने लगे और ऊपर से उन्हें दो घंटे पहले भी छोड़ने लगे! अगर तुम्हें गणित आता हो तो गिनकर देख सकते हो इससे तुम्हें कितना घाटा पड़ता है।

—घाटे की बात सोचने का अधिकार केवल हम ही को है या गरीब मजदूरों को भी?

—सभी को है। लेकिन मैं जो तुम्हें समझाना चाह रहा हूँ उसे तुम समझना नहीं चाह रहे हो। मेरे कहने का मतलब केवल इतना ही है कि तुम्हें अधिक परिश्रम की आवश्यकता है और उन्हें अधिक पारिश्रमिक की।

छिठौरी का पेड़ एक टीले पर था। फ्रांसीसियों के जमाने में इस स्थान पर कोई बहुत ही सुन्दर भवन रहा होगा जिसका कुछ अवशेष अब भी खण्डहर के रूप में बाकी था। इस ऊँचाई से काफी दूर तक के दृश्य दिखाई पड़ते थे। लालमन ने समुद्र की ओर देखा जो मोती चादर की तरह झिलमिलाता दिखाई पड़ रहा था। दूसरी ओर दूर तक फैले इख के हरे भरे खेत थे और उनके पीछे पर्वतमालाएँ थीं। लालमन ने सोचा कि अगर उसका अपना खेत भी ऐसी ही जगह पर होता तो वह आज की मेहनत से दुगुनी मेहनत करके उसे दुगुना उपजाऊ बना देता। सचमुच इधर के खेत समूचे इलाके के खेतों से कहीं अधिक आकर्षक थे। इधर के खेतों में अधिक जवानी थी अधिक लावण्य था। लालमन के लिए इन खेतों में कविताएँ थीं। उसने कल्पना की—शाम की सिंदूरी बेला में ये खेत कितने अधिक सुन्दर दीखते होंगे। यहां से हटने को जी नहीं करेगा। धूप के स्थान पर जब इन खेतों पर बादलों की परछाइयाँ होंगी उस समय इन्हें निरखते हुए मन को शांति और शीतलता दोनों मिल जाती होंगी। उसने धरमन के मजदूरों को काम करते देखा। यों तो वह उन सभी को जानता था पर आज इस कड़ी धूप में उसने उन सभी की असलियत को चमकते देखा। उन सभी के माथे की बूंदों के साथ उनकी सक्रियता भी चमक रही थी। इन खेतों की रौनक और छटा के ये ही कारण थे। लालमन कम मान सकता था कि इन मेहनतकशों को अधिक महत्त्व देकर धरमेन ने अतिशयोक्ति कर डाली है। उसकी मामी ने उसे खेतों के लिए अयोग्य बनाया था। अन्त में लालमन ने भी

तो यही सोचा था। कंधे पर बन्दूक लटकाये अपने शिकारी कुत्ते के साथ खेतों को रौंदने वाला अच्छा खेतिहर हो सकता है यह बात उसके लिए कुछ असम्भव सी थी मगर इस समय जब धरमेन के चेहरे के रंग को वह खेतों के रंगों से मिलते पा रहा था तो उसकी पुरानी धारणा को मिटते देर नहीं लगी। धरमेन उस खेतों का देवता सा लग रहा था अपनी समस्त सुकुमारता के साथ।

जिस समय धरमेन उन चंद मिनटों के लिए उसे अकेले छोड़कर अपने मजदूरों के बीच पहुंचा उस समय पूर्वी हवा का एक उष्ण झोंका आया जो लालमन के मस्तिष्क के किसी कोने में दबे ज्वालामुखी को भड़का गया। सामने की जिस लड़की को निराई के बाद कमर सीधी करते उसने देखा वह एकदम भामा जैसी थी। अकुला देने वाली गरमी में भामा की याद उसकी अकुलाहट को चरम सीमा तक पहुंचा गयी। देखते ही देखते तो सभी कुछ हो गया था। उसने अभी अंगड़ाई नहीं ली थी कि भामा की शादी का दिन इतना निकट आ गया था।

आज शाम को उसे भामा से मिलना है। उसी के किये निर्णय अनुसार यह उसका अन्तिम मिलन होगा पर इससे पहले भी तो उसने ऐसा ही सोचा था। फिर उस अंतिम भेंट के बाद भी दो और मुलाकातें हो ही गयी थीं। हर बार वह खास मकसद से उससे मिला था पर इस बार के मिलन का क्या उद्देश्य था यह खुद उसे भी नहीं मालूम था। भामा की आंखों में आंसू देखने की उसकी इच्छा कभी नहीं हुई थी। तो फिर आज वह उससे क्या मिलने वाला था। भगत की बात उसने नहीं मानी थी। उसने कहा था कि जब हृदय पर पत्थर रख ही लिया है तो फिर उस पीड़ा को सह लेने में ही बुद्धिमानी है। एक तरह से इस अंतिम घड़ी में अपनी भावुकता के हाथों बिककर भामा से बार बार मिलना उसे भी कमजोर बनाना था। पिछली बार जब लालमन ने उसे अपनी बांहों में लेकर सभी कुछ समझाया था तो उसने अपने आंसुओं को भीतर ही रोककर उसकी बातों का मान लिया था। ऐसा करके भामा ने शायद यह भी अनुभव किया हो कि लालमन की आज्ञा को मान लेना भी तो उसका कर्तव्य ही ठहरा। एक बार मना कर चुकने के बाद लालमन उससे फिर क्या मिलना चाहता था? अपनी इस बात को खुद भी न समझते हुए वह उधेड़बुन में पड़ा रहा। इस समय भी वह कुछ तय नहीं कर पा रहा था। उसे खुद नहीं मालूम था कि आज शाम वह भामा से मिल रहा है या नहीं।

१७

यह बात सुनकर लालमन को आश्चय नही हुआ कि गाव की एक बठक मे धरमेन मजदूरो की यूनियन की नीव डालने की बात साच रहा है। अगर पहली बठक का भवन समय पर मिल गया हाता तो नीव बहुत पहले ही डाल दी गयी होती। बठक का मन्त्री भवन दन का तयार हो गया था पर प्रधान के साथ एक दो सदस्या न इस बात का विरोध करत हुए कहा था कि उनके राजनीतिक नेता को शायद यह बात पस द न आय इसलिए धरमन से कही और जगह ढूढने की माग की गयी थी। गाव म साम्प्रदायिकता के नाम पर कुछ और बठकें थी। अन्त म एक बठक के सभी सदस्य ऐसे निकले जिन्ह राजनीति का बहुत कम खयाल था।

सूचना पाकर लालमन भी वहा पहुँचा। वहा पर काई चार सौ की सख्या देखकर सचमुच उसे हैरत हुई। उसन तो साचा था कि कोई छोटी सी बठक होगी पर मीटिंग का सा आयोजन दखकर बात उसकी समझ म नही आयी। भवन म जगह नही थी इसलिए प्राय सभी लोग आगन म इस तरह खडे थे गोया वे राजनीतिक मीटिंग सुनने आये हा। खास लोगा को बठाने के लिए बरामदे म जगह बनायी गयी थी। एक मज के आस-पास कोइ दस बारह कुर्सियां रखी हुई थी। धरमेन के आग्रह पर लालमन को भी वहाँ जगह लेनी पडी। सामने की भीड की ओर दखते हुए लालमन ने साचा शायद ही गाव का कोइ मजदूर यहाँ न पहुँचा हा। धरमन के इस आयाजन पर भी उस कम आश्चय नही हुआ।

सभा का उद्देश्य लागो को बताते हुए धरमेन ने ओजपूर्ण शब्दा म यही कहा कि आज देश म मजदूरा की दशा चिन्ताजनक है। खेतो मे काम करने वाले मजदूर खून पसीना एक करके जो पाते हैं वह नही के बराबर है। सरकार

और लगातार नारा लगाते मजदूर थे। इस स्थिति पर ध्यान देते तो साफ दिखाई देता कि मजदूरों के जीवन-मरण की समस्या है। अधिकारों की माँग पर तभी ध्यान दिया जाता है जबकि उन के विकास और मरण की ओर न भी जाती है। कहना न होगा सभी वर्गों के लोगों से अधिक परिश्रम करके भी आज मजदूर पहले से भी अधिक गरीब हो गया है क्यों हुआ ? इस प्रश्न को तभी सुलझाया जा सकता है जब संगठन हो। यूनियन मजदूरों की सबसे बड़ी शक्ति है। यूनियन ही संघर्ष कर सकती है। हम मजदूरों के लिए जो कुछ भी करना चाहते हैं वह सभी कुछ तब हो सकता है जब आप यह समझ लें कि यूनियन ही आपकी शक्ति है। हमारे और आप और सभी मजदूर हैं। हम चाहते हैं कि सभी को एक सूत्र में बाँधकर उनकी हालत को बेहतर बनाएँ।

यह कहना ही था। पूरे एक घंटे तक लगातार बोलते रहने के बाद जब वह अपनी कुर्सी पर बैठने लगा उस समय भीड़ में से तरह की आवाजें आयीं। एक ने कहा—इस तरह के शक्तिशाली नौजवानों की आवश्यकता है आज हम तो दूसरे ने कहा—ये धनी लोग बोलते कुछ हैं करते कुछ।

लालमन भली भाँति जानता था कि धरमेन जो कुछ कर रहा है उसे उसका भाई बिलकुल पसन्द नहीं करेगा। इसलिए भीड़ के छँटते ही उसने धरमेन से पहला प्रश्न किया जिसका यह मतलब था कि वह सक्सेना में आकर जो कुछ कर रहा था उसे समझता भी है या नहीं। धरमेन हँसकर रह गया था।

दूसरे ही दिन धरमेन से दोबारा भेंट होने पर लालमन को पता चला कि उसका वह चुनाव सफल रहा। तीन सौ से ऊपर की सदस्यता की आशा बँध गयी थी। अगली बैठक में जाकर कार्यकारिणी समिति की नियुक्ति के लिए होने वाली थी धरमेन ने लालमन की उपस्थिति को बहुत ही महत्त्वपूर्ण बताया। लालमन ने मुसकराते हुए पहुँच जाने का वचन दे दिया। उसने जब यह जानना चाहा कि आखिर धरमेन यह सब कुछ क्या कर रहा था तो धरमेन ने बहुत छोटा सा उत्तर दिया—

—आत्मशांति के लिए।

आत्मशांति के लिए तो लालमन को भी कुछ न कुछ करना था पर करे तो क्या ? आत्मशांति की आवश्यकता तो उसे धरमेन से भी अधिक थी। यह सोचते हुए एकाएक उसने अपने आपको एक नये सवाल और नये प्रश्न के सामने पाया। आखिर धरमेन को आत्मशांति की आवश्यकता कैसे पड़ गयी ? आत्मशांति की आवश्यकता तो उन लोगों को होती है जो अस्थिर होते है। धरमेन में किसी तरह की अस्थिरता कहाँ से आयी ? काफी देर तक सोचते रहने के बाद लालमन को ऐसा आभास हुआ कि धरमेन को आज भी वह अच्छी तरह नहीं जान पाया है। उसके सामने वह एक रहस्य था। वह अपने आप से बार

बार प्रश्न करता रहा और बार बार धरमेन उसे एक रहस्य ही प्रतीत होता रहा। सयोग से धरमेन उसका मित्र बन बैठा था बहुत कम समय में बहुत ही घनिष्ठ। उसी घनिष्ठता की हैसियत से लालमन यह जानने को अपने को विवश सा पाने लगा कि आखिर धरमेन के जीवन का वह रहस्य क्या है ? उसके मुह से आत्मशान्ति की बात सुनकर न जाने क्यों लालमन को विश्वास हो चला था कि उस व्यक्ति के भीतर कोई न कोई ऐसी बात अवश्य है जिसे वह सभी से छिपाता आ रहा है। एकाएक उसका कॉलेज छोडकर खेतों में लग जाना और अपने परिवार के विरुद्ध जाते हुए अपने आपको मजदूरों के पक्ष में मिला देना किसी साधारण बात का परिणाम नहीं हो सकता।

लालमन के खेत में शकरकंदियां तोडी जा रही थी। देवन्ती की बगल के पौधों से लौकियां भिन्न तोडते हुए लालमन मन ही मन शब्द से शब्द को जोड रहा था। देवन्ती की दायीं ओर जगदीश था। दोनों किसी नई फिल्म पर बातें किये जा रहे थे। जगदीश अपनी नयी देखी फिल्म की कहानी देवन्ती को सुना रहा था और देवन्ती जहा नहीं समझती वहा प्रश्न करती जाती और जगदीश बात को विस्तार से समझाने लग जाता। लालमन के भीतर की कविता आज दूसरे ही ढग की थी। पहले भी मामा के सम्मुख वह इस तरह की कविताएँ सुना चुका था पर ऐसी रचनाओं को लिपिबद्ध करने की आवश्यकता उसने कभी नहीं समझी। इस वक्त भी वह अपनी नयी कविता को गुनगुनाकर हवा के हवाले कर देना चाहता था। उसके मुह से पंक्तिया निकलती जाती और हवा उन्हें लिये सागर की ओर उडी चली जा रही थी।

जीवन के उन सूने-सूने क्षणों में
रिमा के पगों की आवाज सुन मैंने
देखा था और पाया था एक प्रेरणा को
जीवन को हँसकर जी लेने का
साहस दोगुना हो चला था
आज धडकनें पूछे जा रही मुझ से
कब बहारें आयी कब चली गयी।
समुद्र की काली चट्टानों से
टकराकर फनिल लहरें कब आयीं
और कब अस्तित्वहीन हो चलीं।
फूलों को जब डाली से जुदा होना ही है
तो फिर वह फूलना क्या ?
क्योंकि फूलों की जुदाई पर ही

हानी पर पग था ! है क्या इसलिए ?

लालमन के दिमाग में उसके हृदय के किसी कोने के कान में और भी माय थे मातृभूमि थी पर अपनी इस कविता को इन्हीं अंतिम शब्दों के साथ समाप्त कर देना उसे अधिक अच्छा प्रतीत हुआ। अंतिम दो पंक्तियों को वह बार बार दोहराता रहा। इना उ ट निय पश्चिम का मांगती गयी।

इधर कुछ दिनों से उसे अपने खेत की हरियाली धूमिल सी लगने लगी थी। वर्षा भी इधर कुछ दिनों से कमी हुई थी। बादल रोज छाते और रोज वर्षा की सम्भावना होती फिर भी हवा उन काले बादलों को उड़ाकर समुद्र तक छोड़ आती। सभी खेतिहर ललचाई नजरों से समुद्र में वर्षा होते देखते रहते। लोग भगवान को कोसने लग जाते। उसे भी न जाने क्या सूझता है कि पानी में पानी बरसाता रहता है जबकि धरती प्यासी पड़ी हुई है। कुएं के पानी से पार पाना सभी खेतिहरों के लिए दुश्वार था फिर भी सुबह शाम जहां तक सिंचाई हो सकती थी वे करते रहते थे। लालमन का कुआं भी जिसमें हमेशा से सभी कुओं से अधिक पानी पाया जाता था इस बार जवाब दे चुका था। लालमन को सभी किसानों से अधिक विश्वास था कि चंद ही दिनों में मूसलाधार वर्षा होकर रहेगी। उसे अगर किसी बात का डर था तो अपने लोगिया मिर्च के पौधों के सूख जाने का क्योंकि इस समय वही एक चीज थी जो उसके खेत में सभी खेतों से अधिक थी और जिसकी कीमत भी बाजार में चार पांच रुपये थी। जब भी टमाटर की कीमत सभी सब्जियों से अधिक गिर जाती है उस समय मिर्च की कीमत का ऊपर उठ जाना हमेशा स्वाभाविक रहा है। इस समय मिर्च के पौधे उसके खेत के प्राण थे। उस तीती चरपरी चीज में उसके परिश्रम का सभी माधुर्य छिपा हुआ था।

बहुत दिन नहीं हुए उस दिन जब भामा अपनी मुसकान से इस खेत की सुंदरता को बढ़ा रही थी। उस मौके पर लालमन की महत्वाकांक्षा भीतर ही भीतर विद्रोह कर उठी थी। पास में एक जमीन बिकाऊ थी। उसने उसे भी खरीदकर अपने खेत से जोड़ लेने की बात सोची थी। ठीक बगल ही में था वह खेत। उसकी मिट्टी भी इसी खेत की तरह धनी थी। वहां की उपज भी अपनी सानी नहीं रखती थी। लालमन उस जमीन को खरीदकर ही रहता पर बीच में जब प्रभा की शादी की बात चल पड़ी उस समय उसने यही ठीक समझा था कि पहले प्रभा का विवाह हो जाय फिर तो जहां भी चाहे जमीन खरीदी जा सकती है। उस समय अगर जमीन खरीदने की बात उसके भीतर ऊधम मचा रही थी तो केवल इस लिए कि उसने अपनी बगल में भामा को पाया था। भामा को उसने अपनी शक्ति के रूप में माना था। सोचा था उसके नये खेत की वह जान होगी। उसकी उपज और हरियाली की वह देवी होगी। उसने भामा के कानों में यह बात कह भी डाली थी। उस दिन भगत के घर भामा ने अपने आँसुओं के बीच उससे पूछा

था कि क्या अब वह उस अपने खत को जान नही मानता ? लालमन की चुप्पी पर उसने कहा था कि अगर अब भी मानते तो मेरी शादी रुकवाकर मुझे अपनी बनाने मे कुछ भी बाकी नही छोडते । लालमन ने उन शब्दो को सुनकर उन्हें अपने ही भीतर दफना दिया था । भामा का उस बात से उसका समूचा अस्तित्व काँप उठा था । उसने भामा को अपनाने के लिए सचमुच ही कुछ न किया हो यह बात सही नही हो सकती । उसने बहुत कुछ किया पर किसी भी उपाय से बात बनते नजर नही आयी और उसने अपने जीवन मे पहली बार अपने को भाग्य के सहारे छोड देना ही ठीक समझा था ।

अपनी ओर से भगत ने भी सभी कुछ किया था जिससे भामा का बाप मान जाए पर जब उसने उसे अपने हठ पर अडे देखा तो वह भी ताव मे आकर कह ही गया था कि गंगा उलटी बह निकली है । लालमन को धैर्य देते हुए उसने कहा था कि वह अपने भाग्य को सराहे नीच जाति वालो के बीच जाने से बच गया । लालमन को धनुवा भगत की इस बात से धैर्य से अधिक दुख हुआ था ।

खेत से लौटते हुए लालमन की भेंट घनश्याम से हो गयी । उसी ने बताया कि धरमन उससे मिलना चाहता है । घनश्याम किसी काम से कही जा रहा था पर लालमन के विवश करने पर वह भी उसके साथ धरमेन के घर की ओर चल पडा । रास्ते मे वे धरमन और उसकी यूनियन की चर्चा करते हुए चले । घनश्याम की नजरो मे वह धरमेन का पागलपन था । यूनियन की आवश्यकता वह महसूस करता था मगर धरमेन के द्वारा यह काम सफल रहे इस पर उसे जरा भी विश्वास नही था । धरमन मे योग्यता है, लालमन के साथ तर्क करते हुए उसने कहा लेकिन वह धनवान ठहरा और धनवान गरीबो का साथी बनकर धनिया के साथ युद्ध छेड दे यह बात स्पष्ट नही थी । लालमन ने उसे कुछ ऐसी बातें बताइ जहा धनी ने गरीब का भगवान बनकर धनिया के विरुद्ध आवाज बुलन्द की हैं युद्ध किया है और सफल भी हुआ है । घनश्याम के लिए ऐसा करने वालो मे त्याग की भावना नेतागिरी की बातो से अधिक होनी चाहिए जबकि धरमेन जो कुछ कर रहा था मात्र नेतागिरी के खयाल मे कर रहा था । लालमन को घनश्याम की इस बात पर विश्वास नहीं था । उसने यही सोचा कि घनश्याम सरकारी आदमी ठहरा और सरकारी आदमी शायद क्राति और आन्दोलन जैसी बात पसन्द न करते हो ।

धरमन के घर तक पहुँचते पहुँचते वातावरण धूमिल पडने लगा था । चीनी दूकानो के बरामदे मे बैठे लोग राजनीतिक बातो मे लग हुए थे । आमने सामने की दोनों शराब की दूकानो मे चहल पहल शुरू हो गयी थी । कालीमाई के नीम के पेड के नीचे से गाँजे की गध और धर्म की चर्चा भी पूरी रफ्तार के साथ चल पडी थी । पास की हिन्दी पाठशाला से बच्चे हुल्लड करते हुए लौट रहे

थे। उनके कोलाहल को और भी भारी बनाने के लिए कुत्ते भी उनके साथ आवाज़ मिलाये भौंकने लगे थे।

दोनों व्यक्ति अगर एक मिनट देर से पहुंचते तो उनकी भेंट धरमेन से नहीं हो पाती क्योंकि वह घर से बाहर आकर अपनी मोटर में सवार होने ही वाला था कि दोनों आते दिखाई पड़े। दोनों को साथ लिए वह घर के भीतर पहुंचा। अनुमान से लालमन ने जिस बात को सोचा था वही हुई। धरमेन यह चाहता था कि वह इस आन्दोलन में सक्रिय भाग ले। उसने लालमन के सामने यूनियन का कोषाध्यक्ष बनने का प्रस्ताव रखा। उसने उसे यह भी बताया कि सभी औपचारिक बातें धीरे धीरे सफलतापूर्वक पूरी हो रही हैं। सरकारी बातचीत भी काफी सफल रही। वह यह चाहता था कि कार्यकारिणी कमेटी की नियुक्ति के लिए होने वाली बैठक से पहले ही एक बार सभी कुछ तय हो जाना चाहिए। धरमेन की हर बात से सहमत होते हुए भी उसने केवल इतना कहा कि इस आन्दोलन में वह सक्रिय भाग लेगा। यथायोग्य वह सभी कुछ करेगा और इसके लिए यह जरूरी नहीं था कि उसे कोषाध्यक्ष या किसी तरह का पद दिया जाये।

धरमेन के बार बार कहने पर भी जब वह तयार नहीं हुआ तो धरमेन ने उससे यह अनुरोध किया कि चाहे वह कार्यकारिणी का सदस्य न रहे फिर भी पहली बैठक में उसका आना जरूरी था। जब लालमन ने यह बात मान ली तो धरमेन ने उसे वह सूची बताई जिसमें कुछ ऐसे लोगों के नाम थे जिन्हें कार्यकारिणी के पद सौंपने के इरादे थे। उस सूची में कोई भी ऐसा नाम नहीं था जिसे लालमन अयोग्य समझता। खुशी खुशी अपनी सहमति देते हुए उसने एक बार फिर धरमेन को विश्वास दिलाया कि वह उसको अपना पूरा पूरा सहयोग देता रहेगा।

लालमन और घनश्याम घर से बाहर होने ही वाले थे कि धरमेन की भाभी ने दोनों को रोककर कहा कि वे धरमेन को इस गलत रास्ते पर जाने से रोकते क्यों नहीं। इस पर घनश्याम ने तो बहुत कुछ कहा लेकिन लालमन ने केवल इतना कहा कि वे लोग निश्चिन्त रहें क्योंकि धरमेन गलत रास्ते पर नहीं है।

१८

सूरज की प्रथम किरणें जब नर्माती दुल्हिन की तरह पत्तो के घघट से आंख मिचौली खेलने लगी थी और हरी दूब से ओस बूदें सूखी जा रही थी उस समय खेतो के काम पराकाष्ठा पर पहुच चुके थे। धरमेन अपने स्थान स उठकर आगे बढा। काम करने वाली औरतो के बीच से होते हुए वह मर्दों के पास पहुँचा और वहा से होते हुए उस ऊचाई को चढने लगा जहा से उसका पूरा गाँव दिखाई पडता है। ऊपर काली चट्टानो क बीच मुद्दता के बरगद के पेड की छाया मे बैठकर वह कुछ एस खयालो म खो गया जिनम न खोने की उसने एक तरह से सौगन्ध सी खायी थी। गरमी यहा भी थी। ऊचाई चढते चढते उसके चेहरे पर पसीने की बूदें चमकने लगी थी। सूरज आज शुरू से ही सख्ती के साथ पेश आ रहा था। बारह बजते बजत न जाने किस तरह की उष्णता होगी।

रह रहकर पूर्वी हवा के एक दा झोंके मरहम का काम कर जाते पर इससे भी उसके खयालो की गरम कडिया टूट नही पाती। गरमी से अकुलाकर ईख के पौध घुटना से ऊपर आ गय थे पर इधर के लम्बे सूखे से वे कुम्हलाये से लग रहे थे। अपने आन्दोलन की सफलता के उल्लास क पाश्व मे धरमन कुछ और ही महसूस करने लगा था। उसन तो प्रण कर लिया था कि उस ओर अपने ध्यान को कभी नही ले जायगा लेकिन उस बात का जो एक बडी सच्चाई थी वह बिसार देना चाहता था। उससे अनभिज्ञ हो जाना कठिन था। न जाने कैसे वह बात अपने आप उसके सामने आ जाती और वह हतप्रभ-सा हो जाता।

लालमन को याद था उसने उस बिसरी हुई बात को सामने लाकर रख दिया था। कल न्थिौरी के पेड की छाया म लालमन ने उसस कोई प्रश्न किया था। वह धरमेन के जीवन का कोई रहस्य जानना चाहता था। उसके उस प्रश्न स धरमेन को अचम्भा हुआ था फिर भी उसने हँसकर बात टाल दी थी। बहुत

पहले भी कई बार उसके मन म यह बात ग्रायी थी कि किसी न किसी को बात बता देना ग्रच्छा होगा मगर उस किसी न किसी का हल निकालना उसके लिए कठिन था। विश्वास की कमी उस किसी पर नहीं थी। वह तो ग्रजनवी पर भी उतना ही भरोसा करता जितना कि घनिष्ठा पर। मगर जब सवाल होता इस रहस्य को किसी के ऊपर सौंपना तब वह ग्रजीब दुविधा म पड जाता था। लालमन के प्रश्न करने पर मन म ग्राया था कि उसे वह बात कह ही दे। काफी समय तक ग्रपने ग्रापसे संघर्ष करके भी वह उस बात नहीं कह पाया था। लालमन के चले जाने पर उसे ग्रपने स्वभाव पर पछतावा हुग्रा। उस समय लालमन तक दौड जाने की बात पैदा हुई थी उसके भीतर पर तभी ख़याल ग्राया था कि ग्रपना बोझ किसी दूसरे पर क्या रखा जाय ग्रौर फिर वह उस बोझ से दबा हुग्रा थोड़े ही था। बोझ तो जिन्दगी भर का था ग्रौर जब तक जिन्दगी चलती है बोझ को फेंककर चलना तो मर जाने से भी बदतर है।

मजदूरो के शरीर से पसीने की धाराएँ बही जा रही थी।

धरमेन ग्रपनी यूनियन के बारे म सोचने लगा। वह चल पडा था। उसके सामने एक ग्रवधि थी—छह महीने की छोटी सी ग्रवधि। यह एक दायरा था जिसके भीतर धरमेन बन्द था। उसके ग्रपने जीवन की यही एक बात थी जिसे कोई दूसरा नहीं जानता था। इन छह महीनो के भीतर उसे ग्रपने ग्रान्दोलन मे सफल होना था। इस सफलता के बाद जो कुछ भी होना था वह हो सकता था इसकी उसे कम परवाह थी। इस ग्रवधि म यूनियन को ग्रपनी शक्ति परख लेनी है। पहले ही प्रयास म यह साफ जाहिर हो जाना चाहिए कि सरकार ग्रौर जमींदार मजदूर की शक्ति को महत्त्व देते हैं या नहीं। कुछ ही दिन हुए शहर के मजदूरो ने हडताल की थी पर वह हडताल ग्रसफल थी। पत्रो ने उसे फियास्को कहा था। उसके ग्रसफल रह जाने का कारण धरमेन ग्रच्छी तरह जानता था। यूनियन के नेताग्रो ने जिस बात पर ध्यान नहीं दिया था वह था मजदूरो के बीच फैला डर। हडताल से पहले उस भय को निकाल फेंकना जरूरी था। धरमेन को विश्वास था कि वह बहुत जल्द ही गाँव के मजदूरो के बीच से भय की जड को उखाड फेंकेगा क्योंकि जब तक ऐसा नहीं होता वह जमींदार ग्रौर सरकार को हडताल की सूचना नहीं दे सकता।

वह बलदेव का छोटा भाई था जो धरमेन को ग्रावाज देता हुग्रा चला ग्रा रहा था। उसे देखकर धरमेन को यह समझते देर न लगी कि कोई ग्रसाधारण घटना घट गयी होगी। वह भी जल्दी जल्दी नीचे उतरा। बलदेव के छोटे भाई के पास पहुचकर उसने पूछा—

—क्या बात है ?

—दोनो झगड रहे हैं—हाँफते हुए उसने कहा।

—फिर से ?

—हाँ, इस बार बलदेव भया एकदम आपे से बाहर है।

—चलो देखते हैं।

दोनो इमली के पेड की ओर दौड पडे जहाँ कुछ मजदूर ईंध म नमक डाल रहे थे। बलदेव और रामजनन का यह झगड़ा सप्ताह पहले से शुरू हुआ है। हर बार कोई न कोई बीच म आकर दोना को अलग कर देता था। आज सुबह दोना के बीच खुद धरमेन को आ जाना पडा था। झगडे का कारण पूछने पर उसे बताया गया था कि बलदेव पनघट पर रामजनन की पत्नी से बातें किया करता है। इधर कुछ दिनो स रामजनन उसे धमकियाँ देता आ रहा है। अब तक तो दोनो के बीच केवल गाली गलौज होती रही थी पर आज हाथापाई भी हो गयी। जिस समय धरमेन दोनो के पास पहुँचा उस समय दो तरफ स लोग दोना को पकडे हुए थे पर दोना ओर स गालिया और धमकिया जारी थी। धरमेन पर नजर पडते ही दोना इस तरह चुप हो गये मानो उनको रोकने के लिए स्वीच आफ कर दिया गया हो। बारी-बारी स दोना को समझाकर उसने उन्हें अलग अलग कामो मे लगा दिया। उनसे अलग जाते हुए उसने सभी मजदूरो को सुनाने के लिए ऊँचे स्वर म कहा—

—मैं मजदूरो म सगठन चाहता हूँ और तुम लोग छोटी मोटी बाता के लिए आपस मे झगडकर एक दूसरे के दुश्मन बन रहे हो।

टीले पर पहुँचकर वह फिर स अपने ख्यालो म खो गया। कुछ ही देर बाद उसने दोबारा झगडे की आवाज सुनी। तुरत अपने स्थान से उठकर नीचे को उतरने लगा। पर इस बार शायद देर हो गयी थी। उसके पहुँचते पहुँचते वह हो चुका था जिसे नही होना चाहिए था। रामजनन बलदेव पर पत्थर चला चुका था। बलदेव का सिर फट गया था खून की धारा बहने लगा थी। एक क्षण के लिए धरमेन स्तब्ध रहा। दूसरे ही क्षण अपने को सम्हालते हुए वह बलदेव के शरीर पर झुक गया। मुँडेर के सहारे उसे लिटाया गया। यह देखकर कि चोट गहरी थी उसने तुरत आदेश के स्वर म कहा—

—तुम सभी यही ठहरो मैं मोटर लेकर आता हूँ।

वह घर की ओर दौड पडा जो कि आधा मील की दूरी स कम नही था और आधा घटे से कम समय मे वह अपनी मोटर के साथ घटनास्थल पर वापस आ गया। जिस समय कुछ लोगो ने मिलकर बलदेव को मोटर म लिटा दिया, उस समय सभी के बीच रामजनन को ढूँढते हुए उसने पूछा —

—कहाँ है रामजनन ?

—घर भाग गया।

—डर मामला पुलिस तक न जाने पाये। लौटने पर देखा जायेगा।

मोटर स्टार्ट करने से पहले उसने एक बार फिर सामने के सभी मजदूरों की ओर देखा और उलाहना भरे स्वर में उसने कहा—

—तुम में से कुछ लोगों ने यह ठीक ही तो कहा था कि मैं असम्भव कार्य करने का सपना देख रहा हूँ। जमींदार होकर जमींदारी के खिलाफ जाना पागलपन नहीं तो और क्या ? मैंने उस दिन भी कहा था और आज भी कहता हूँ कि जमींदारी के खिलाफ जाने के लिए एक जमींदारी मन की ही आवश्यकता है। परम्परा पर कम विश्वास करते हुए भी मैं इस बात को मानता हूँ। लेकिन जिस बात को मैं सबसे अधिक महत्त्व देता हूँ वह है मजदूरों के बीच संगठन, जिसके बिना कुछ भी नहीं हो सकता। आज जब मेरे अपने लोग इस तरह आपस में झगड़ने लग जायें तो फिर औरों पर कैसे विश्वास किया जा सकता है ?

और अपने साथ दो व्यक्तियों को लेकर उसने मोटर को अस्पताल की ओर दौड़ा दिया। रास्ते में अपनी आशंका को मोटर में बैठे दोनों व्यक्तियों के सामने रखते हुए उसने कहा—

—मुझे डर है कि कहीं बलदेव के पक्ष वाले रामजतन का घर घेर न बैठें।

—तुम निश्चिन्त रहो बेटा, हम सभी को समझा चुके हैं—नाते में धरमन का चाचा लगने वाले उस व्यक्ति ने कहा जो उसके बाप के समय से इन खेतों में काम करता चला आ रहा है। मजदूरों में वही सब में बूढ़ा था और उसी को धरमेन सभी मजदूरों से अधिक महत्त्व देता था।

अस्पताल पहुँचने पर मालूम हुआ कि बलदेव का घाव जितना गहरा दीखता था उतना गहरा न था। सूई दवाई और मरहमपट्टी के बाद उसे लिए धरमन घर लौटा। बलदेव के घरवालों के जी में जी आया। उसकी बूढ़ी माँ सबसे पहले दौड़कर उससे लिपट गयी थी। बलदेव की झोपड़ी में कुछ अन्य मजदूरों के साथ घंटे भर रहने के बाद धरमन अपने घर लौटा। भाभी से मालूम हुआ कि उसका भाई उससे बातें करना चाहता है। धरमेन को आश्चर्य तो नहीं हुआ क्योंकि वह जानता था कि उसका भाई उससे यूनियन के आन्दोलन के बारे में बातें करना चाह कर भी नहीं कर पा रहा था। एक विरला अवसर था यह कि धरमन अपने भाई के कमरे में पहुँचा और उसका भाई उसमें प्रश्नों की बौछार कर उठा—

—तुम करना क्या चाहते हो धरमन ? वर्षों की कमाई को चन्द दिनों में लुटाने का तुम्हारा इरादा इतना पक्का क्या है ? तुम अपने जैसे लोगों के साथ न रहकर अपने नौकरों के साथ क्या रहते हो ? क्या क्वीलिंग कॉलेज को पसन्द छोड़ी थी ?

और भी कई प्रश्न किये उसने। धरमन उन सभी प्रश्नों को चुपचाप सुनता

रहा। ठीक सामने उसकी भाभी खड़ी थी। उसकी उन गहरी आँखों में भी ये ही सारे प्रश्न थे। धरमेन के भाई के चुप होते ही उसकी भाभी ने मृदु स्वर में कहा—

—तुम उस दिन अधिकार की रक्षा की बात कर रहे थे लेकिन तुम तो दूसरों के अधिकार की रक्षा करते हुए अपने अधिकार को मिटाये जा रहे हो।

धरमेन चुप रहा। उसकी उस चुप्पी से खीझते हुए उसके भाई ने कहा—

—खून-पसीना एक करके हमारे पूर्वज हमारे लिए कुछ छोड़ गये हैं। पूर्वजों की इस थाती को तुम बर्बाद करने पर तुले हुए हो। जानते हो गाँव के लोग तुम्हें पागल कहने लगे हैं? क्या तुम इतना भी नहीं समझते कि मजदूरों को तुम अपने ही खिलाफ भड़का रहे हो? तुम उन्हें अपने ही घर में आग लगाने का आदेश दे रहे हो।

अपने भाई से धरमेन ने कभी भी तर्क नहीं किया था। इस समय भी तर्क करना उचित न समझ वह चुपचाप सुनता रहा। दूसरे कमरे में मुन्नी जागकर रोने लगी थी। धरमेन की भाभी उसे गोद लेने के लिए वहाँ से चली गयी। अपने भाई के सामने अकेले होकर धरमेन ने अपने को और भी कमजोर पाया। भाई-भाई का इस तरह जीना शायद ही किसी घर में होता होगा। धरमेन समझना चाहकर भी इस बात को कभी नहीं समझ पाता। दोनों भाइयों के बीच बिना किसी कारण की कोई दीवार सी थी। यह भाभी ही थी जो दोनों के बीच माध्यम का काम करती। धरमेन की माँ इस बात के लिए कई बार अपने बड़े बेटे से शिकायत कर चुकी थी। तुम बड़े हो वह कहती, तुम उससे इस तरह दूर दूर रहोगे तो वह तुम्हारे पास आने का साहस कैसे कर सकेगा? लेकिन जो अन्तर दोनों भाइयों के बीच बहुत ही छोटी उम्र से पड़ गयी थी उससे बाज आना दोनों के लिए कठिन था।

धरमेन का भाई इस उद्देश्य से बहुत कुछ कहता रहा कि वह अपने भाई को उसकी नादानी से रोक ले। वह उसे आज्ञा भी दे सकता था पर ऐसा करना उसके लिए दुश्वार था। आज वह यह सोचने को विवश है कि यह एक अजीब घर रहा है, यहाँ कभी भी किसी ने किसी को आदेश देने की हिम्मत ही नहीं की। उसका बाप हमेशा यही कहा करता था कि जो काम अनुरोध और आग्रह से करवाया जा सकता है वह रोब से कभी भी नहीं पूरा हो सकता। वह उस जमाने की बात थी। इस जमाने में यह बात उसे बेबुनियाद सी लगती पर परम्परागत बात को तोड़ने का साहस उसमें नहीं था।

अपने भाई के कमरे से निकलकर धरमेन अपने कमरे में पहुँचा। खिड़की के परदों को हटाकर उसने कमरे के घुंधलेपन को दूर किया। अकेलेपन की तनहाई को दूर करने के लिए उसने टेप रिकार्डर के स्विच को ऑन कर दिया। उसने हमेशा से पॉप संगीत पसन्द किया था इसलिए उसकी सभी टेपों में पॉप संगीत

भरा हुआ था। जिस तरह साहित्य में उसे प्रतिक्रियावादी को अधिक पसन्द किया
था उसी तरह शरीर में मोटापे बढ़ाने का वह पक्षपाती ... मानता था। मसाले
दार होता ... और उस सामान ... कि उसके शरीर का बढ़ा आ ...
भी जा रहा था। ... हाथ ... किन्तु
हुए अधिक ... था। ... बाहर
बाहर निकला। ... था। वातावरण में उमस
थी। ... पर ... बार ...
पहली बार जिस ... था उस पर ... उसके ... पर
पहुँच गयी थी। ... विश्वास का ... हुआ।
उसे पूरा विश्वास था कि आज ... का ... हो जायगा। उसके काम
करते थे। सभी कुछ ... परिवार ... से ...
था। धर्मेन्द्र को भी जारी रखना था।

धीरेन्द्र का भेद सिर पर थाम का थाम नित पत्नी की भार तौल रहा था।
शाम का धुधलापन धीमी चाल के साथ धीरे-धीरे धीरे-धीरे गौर का पार बढ़ता
जा रहा था। ईख के पौधे अभी छोटे होने के कारण समुद्र दूर से ही साफ नजर
आता था। नारियल और भाव के पत्तों के बीच उछलता लहरें भी दिखाई पड़
जाती थीं। लालमन भी दूर ही से अपने गन्ने के पौधों के बीच दिखाई पड़ गया।
बस से पहले वातावरण का धमित नाहात धन गयी बाबा की नयी सम्भावना
होने लगी थी। लालमन अपने गन्ने में खड़ा दुविधा में था। ऊपर के बादल वाले
को देखते हुए वह यह नहीं तय कर पा रहा था कि पौधों की सिंचाई जल्दी की
जाय या नहीं। कुछ क्षण बाद जब उसे यह ख्याल आया कि बादल तो कई बार उमड़
उमड़कर भी तितर बितर हो चुके तो उसने देवन्ती और जगदीश को सिंचाई
शुरू करने को कह दिया। वह लाल रंग का फव्वारा उठाकर चुका ही और
बढ़ने ही वाला था कि धरमेन सामने आकर खड़ा हो गया। लालमन से हाथ
मिलाते हुए धरमेन ने पूछा—

—बहुत अधिक काम करने हैं अभी तुम्हें ?

—बस सिंचाई करनी है। क्या कोई खास काम ?

—तुम से बहुत ही खास बात करनी है।

—तो फिर मैं फव्वारे को नीचे रखकर आता हूँ।

—समुद्र की ओर चलते हैं।

—जैसी तुम्हारी मर्जी।

देवन्ती और जगदीश को सभी कुछ समझाकर लालमन धरमेन के साथ
समुद्र की ओर बढ़ गया। वातावरण अधिक साँवला होता जा रहा था। ऐसा लग
रहा था कि रात पल भर में हो जायगी। रास्ते में चलते हुए भी लालमन बार

बार उमडते बादलों की ओर देख लेना था।

समुद्र किनारे पहुँचते पहुँचते सूरज जो कि अभी क्षितिज मे काफी ऊपर था काली बदली म एकदम छिप चुका था। यह मान लेना कि इस बार भी बादल फट जायेंगे और वर्षा नही होगी लालमन के लिए जरा कठिन था। बादलो को अधिक घन और वातावरण को अधिक सावला होते देख उसकी खुशी बढती ही जा रही थी। वर्षा एकाएक कब शुरू हो जाय इस बात का पता किसी को नही था फिर भी भीगने का डर दोनो म स किसी को नहा था। बालू पर चलते हुए लालमन ने कहा—तुमने तो अभी तक बात शुरू भी नही की।

कुछ कदम यो ही चुप चलत रहने के बाद धरमन बोला—

—यूनियन की जिम्मेदारी तुम्हे अपने ऊपर लनी होगी।

—कोई नई बात कहो होगी।

—इस मजाक म न लो, लालमन। यूनियन की जिम्मेदारी केवल तुम्ही निभा सकोगे, मुझ तो चारो ओर नजर दौडाने पर भी कोई दूसरा नजर नही आता।

—तुम पागल तो नही हो गये ?

—तुम्हारी इनकारी के बाद शायद हो जाऊ।

—तुमने भावुकता मे यह काम प्रारम्भ किया था धरमेन !

—नही ! मैंने जो कुछ किया है अच्छी तरह सोच समझकर किया है। तुम्हें जिम्मेदारी सभालने की बात भी सोच समझकर ही कर रहा हूँ। यह मत कहना कि तुम्हे अग्रेजी फ्रच नही आती है इसलिए तुम उसके लिए अयोग्य हो।

—बात तो सच है न ?

—नहीं बात सच नही है। इस आदोलन को आगे बढाने के लिए भाषा के ज्ञान से अधिक लगन और श्रद्धा की आवश्यकता है।

एक क्षण चुप रहकर धरमेन ने करुण स्वर मे कहा—

—जिस बात को अब तक सभी स छिपाता आया हूँ उसे तुम्हारे सामने कह देना ही उचित है। तुमने उस दिन मुझसे कई प्रश्न किये थे और मैंने एक का भी उत्तर नही दिया था पर आज उस सच्चाई को तुम्हारे सामने रखने जा रहा हूँ लालमन जिसे जानने को तुम बहुत अधिक इच्छुक थे।

धरमेन अभी चुप भी नहा हुआ था कि वर्षा एकाएक शुरू हो गयी।

१९

बहुत सारी [illegible] भी गढ़ मानकर वह उस पर विश्वास करने को तैयार था लेकिन यह बात जिस ढंग से जिस [illegible] सुना उस पर विश्वास कर जाना उसे बड़ा कठिन प्रतीत हो रहा था। इससे पहले भी कुछ दिनों से धरमेन को देखकर उसे यह आभास अवश्य हुआ था कि उसके भीतर कोई न कोई बात अवश्य छिपी हुई थी। वह बात इतनी बड़ी हो सकती थी इसकी कल्पना उसने कभी भी नहीं की थी। अब भी सरलतापूर्वक उस रहस्योद्घाटन पर विश्वास कर पाना उससे नहीं हो रहा था। उसे इस बात पर भी आसानी से विश्वास नहीं हो रहा था कि धरमेन के अनुरोध को मानकर वह उसे यूनियन की जिम्मेदारी सँभालने का वचन भी दे चुका था। सभी कुछ सपने जैसा हो गया प्रतीत हो रहा था। धरमेन की बातें अब भी उसके कानों मे गूँज रही थी—

—यह बात आज तक मैंने किसी से नहीं कही लालमन इस डर से नहीं कि लोगों को मुझसे घृणा हो जाय या वे मुझ पर तरस खाने लग जायें बल्कि केवल इसलिए कि मैं नाहक किसी को दुखी करना नहीं चाहता। दो महीने होने को हैं जब पहली बार डाक्टर ने मुझे यह कहा था कि मेरा केस उलझा हुआ केस है। एक दिन मैंने डॉक्टर को सच्चाई कह देने मे विवश कर दिया था और वह सच्चाई यही है कि मुझे बचाना मेडिकल साइंस के वश की बात नहीं है।

धरमेन के कहने पर लालमन ने उसके माथे पर हाथ रखकर देखा था। आग सी गरमी थी उसके शरीर मे। धरमेन ने बताया था कि कुछ डाक्टर इसे हार्ट स्क्रीन डिजीज बताते हैं कुछ का कहना है कि यह कार्सिनोमाटोजिस है—एक प्रकार का कैंसर। उसने गरदन पर की गिल्टियों के बारे मे बताते हुए

कहा था कि पिछली बार कॉम्पिग का बहाना करके वह दो सप्ताह के लिए क्लिनिक रह चुका था। गिल्टियो का आपरेशन करके भी बीमारी की जड को बाहर निकालना असम्भव रहा।—एक रहस्यमय मुसकान के साथ धरमेन ने कहा था—

—जब से डॉक्टर ने यह कहा है कि मै छह महीनो से अधिक नही जी सकूगा तब से दो महीने गुजर चुके, अब और चार महीने गुजारने हैं।

—तुम्हारा दिमाग ठीक नही है, धरमेन। डाक्टर भगवान थोडे ही होते है।

धरमेन के होठो की वह कठिन मुसकान बनी रह गयी थी। उसी के बीच उसने आगे कहा था—

—यह विश्वास तो अपने को भी नही होता कि इतनी जल्दी मैं मर सकता हू और इस बात का भी विश्वास नही है मुझे कि सचमुच ही डॉक्टर की यह बात झूठी हो सकती है। इस समय मुझे चारपाई पर होना चाहिए था पर अगर मैं चारपाई पर नही हूँ तो इससे यह स्पष्ट है कि मुझे डाक्टर की बात पर विश्वास हो चला है। जब मरना ही है तो चारपाई पर क्यो मरा जाय?

लालमन ने उसकी आखो मे दर्द देखा था। उसके शरीर के ज्वर को वह महसूस करने लगा था। वे दोनो सन के पत्तो से छाजी मडइ मे थे। वर्षा होड लगाये हुए थी। देव ती और जगदीश पड़ोस के खेत की मडई मे जा छिपे थे जोकि उनके यहाँ से अधिक निकट थी।

धरमेन अगर मजाकिया होता तो लालमन को उसकी बात पर कभी भी विश्वास नही होता पर चूकि वह निरला ही मजाक करने वाला मे था इसलिए अन्त मे लालमन को बात माननी ही पडी। उस समय उसने चाहा था कि वह उससे लिपट जाये और उसकी पीठ पर आखें किये वह जी भरकर रो ले। वे आँखें दो बातो के लिए बह जाती पर बात यह थी कि उसकी पलको के साथ आसू को भी लकवा मार गया था। सभी बातो का विश्वास करते हुए भी वह डॉक्टर की भविष्यवाणी पर विश्वास नही कर पा रहा था। पूरी मजबूती के साथ अपने को समझाते हुए उसने कहा कि यह असम्भव है धरमेन का जीवन इतना अल्प नही हो सकता। यह कहते हुए तो धरमेन ने उस और भी हताश कर दिया था कि उसे तो छह महीने की अवधि मिली है। दो तो बीत चुके। इन बाकी चार महीनो के भीतर न जाने कब अकस्मात ही उसका शरीर शव मे परिवर्तित हो जाय। अपनी अकाल मृत्यु का ख्याल करते हुए ही उसने यूनियन की बात छेडी थी। कोई पन्द्रह मिनट के तर्को के बाद लालमन उसकी हर बात मानने को तैयार हो गया था।

पूरे दो घटे बाद वर्षा थम पायी थी। घर लौटकर जब लालमन ने प्रभा

से कहा था कि आज उसे भूख नहीं। उस समय प्रभा ने भी खाने से इनकार कर दिया था और उसके भाई को विवश खाने पर बैठना पड़ा था। थाली में उसकी मनपसन्द चीजें थी पर न जाने क्या वह लालच में आ न सका। ठीक सामने प्रभा बैठी उसे घूर रही थी जिससे बिना खाये उठ जाना भी उसके लिए दुश्वार था। किसी तरह कुछ और निगलने के बाद वह पीढ़ा छोड़कर उठा और गिलास का पानी लिये खिड़की की ओर बढ़ गया। उसी की थाली में कुछ भात और तरकारियाँ रखकर प्रभा उसी पीढ़े पर बैठ गयी। लालमन अपना मुह कमीज के छोर से पोछते हुए भीतर आया और गिलास को कोने में रखकर रसोई से बाहर हो गया।

अपने कमरे में पहुचकर वह खुली खिड़की के पास जा खड़ा हुआ। बाहर घटाटोप अधेरा था। आकाश के तारे ओझल थे। वातावरण इस बात का बोधक था कि वर्षा फिर एकाएक शुरू हो सकती है। अगर उसे धरमेन की कहानी सुनने को न मिली होती तो इस समय वह बहुत ही अधिक खुशी में होता। अपने खेत के सिवाय वह किसी भी दूसरे विषय पर सोच ही नहीं सकता था। वह अपने सब्जियों के उन पीले पौधों के बारे में सोचता जिनका पीलापन वर्षा से धुल गया होगा। हल्दी लगा दूल्हा स्नान के बाद जितना सुन्दर लगता है उतना ही सुन्दर उसका खेत लगेगा। वह सुबह की प्रतीक्षा में बेताब हो जाता। सुबह की किरणों में अपने नये खेत का नये लावण्य में देखने की उसकी बेताबी बढ़ जाती लेकिन इस समय धरमेन का खयाल कुछ इतना अधिक गहरा था उसके भीतर कि अपने खेत को भूल जाना भी उसके लिए स्वाभाविक था। जिस खेत को मामा के वियोग में भूलना भी उससे नहीं हुआ वही धरमेन के बारे में सोचते हुए पीछे छूट चुका था।

उस समय भी वह धरमेन के बारे में सोच रहा था जब प्रभा भीतर पहुच कर उसकी चारपाई पर की चादर को हटाकर उस पर दूसरी चादर बिछाने लगी। बिछाने के बाद वह लालमन के पास आ गयी। लालमन खिड़की से हटकर मेज के पास वाली लकड़ी की कुर्सी पर बैठा हुआ था। उसकी तन्द्रा को तोड़ते हुए प्रभा ने बहुत ही धीमे स्वर में कहा—

—स्त्री-सभा से सभी लोग परीतालाब जा रही हैं।

अनचाहे से लालमन ने पूछा—

—चलकर या बस द्वारा?

—चलकर। मैं भी जाना चाहती हूँ। पिताजी कहते हैं तुमसे पूछने को।

—इतनी दूर तुम चल सकती हो? तीन दिन घर से बाहर रहना पड़ेगा।

—मुझसे भी छोटी लड़कियाँ जा रही हैं। कुछ न तो कावर भी तयार कर

—अगर तुम सभी बुरा न मानो तो मैं तुम्हें तुम्हारी बेकारी का कारण बताना चाहूंगा।

—पर धरमन भया हम तो इससे बचने का उपाय पूछने आय हैं।

—कारण जान लेने पर तुम्हें उपाय अपने आप मिल जायेंगे।

—तो फिर कारण सुनें।

—तुम सभी पर एक धुन सवार है जिसे मैं तो अपनी भाषा म सनक कहूंगा। तुम लोग अपने आप कुछ भी न करके यह चाह रहे हो कि कोई तुम्हारे लिए कुछ करे। तुम सभी सरकारी नौकरी के पीछे पागल हो। जिस दिन तुम यह मान जाओगे कि सरकार के बाहर भी बहुत सारे काम पड़े हुए हैं उस दिन तुम म से कोई भी बकार नही रहेगा।

—तुम चाहते हो कि सीनियर और एच० एम० सी० के प्रमाणपत्र लेकर हम ईख के खेतो की खाक छानते फिरें ?

—मैं यह नही चाहता, फिर भी यही मान लें। ऐसा हो जाने से क्या अनर्थ हो जायगा। आखिर मैं यह पूछ सकता हूँ कि आजकल के नौजवान खेतो के *काम से कतराते क्यो है ? जमीन से नाक सिकोड़ने वाली बात तो मेरी समझ* म नही आती जबकि मैं भी तुम्ही म से एक हूँ।

—हम खेत क काम को गया गुजरा नही समझते पर हम अपने योग्य काम पाने का भी तो इस स्वतन्त्र देश म अधिकार है।

—तो खेतो का काम तुम्हारे योग्य नही ?—इस बार लालमन ने पूछा।

लालमन क इस प्रश्न का उत्तर देना उचित न समझ कहने वाले ने अपनी बात को आगे बढ़ाया।

—हम तो यह महसूस करते है कि हमारी सरकार अपनी जिम्मेदारी को नही महसूस कर रही है। अपने तीन चौथाई नौजवानो को बकार रखकर वह इतनी निश्चिन्त कैसे है यह बात हमारी समझ म नही आती।

—उनके सामने और भी तो बहुत सारे प्रश्न है। माफ करना, मैं सरकार का पक्ष नही ले रहा हूँ क्योकि हमारी यूनियन को भी उससे शिकायत है पर जहाँ तक नौजवानो की बेकारी का प्रश्न है इस दिशा मे हम कुछ अधिक निरपेक्ष होकर सोचना चाहिए। नौजवान ही है वह जो सभी कुछ कर सकता है फिर भी अच्छी तरह देखा जाय तो यह कुछ भी करना नही चाह रहा है। नौकरी तलाशने से मिलती है।

—तलाश ही तो रहे हैं।

—गलत स्थाना म।

—लेकिन धरमेन हम तो तुमसे अपना आदोलन शुरू करने के लिए सहयोग माँगने आय थ यह समझकर कि तुम शांति को महत्त्व देने वाला मे हो।

२०

जिस मौसेरी बहन की चर्चा देवंती इधर कई दिनों से लालमन के सामने करती आ रही थी आज उसे लिए आयी। लालमन ही ने उससे कहा था कि वर्षा के बाद खेत में और एक व्यक्ति के लिए काम निकल सकता है। उसे देखकर यह विश्वास कर लेना लालमन के लिए कुछ कठिन प्रतीत हुआ कि इतना कम उम्र की दीखने वाली वह औरत एक बच्चे की माँ थी। बाद में उसे यह भी मालूम हुआ कि पति से तलाक लेकर वह अपनी मौसी के घर आ गयी थी। माँ अपनी न होने के कारण बाप के घर जगह पाना उसके लिए कठिन था। लालमन के प्रश्नों का उत्तर देती हुई वह बोली थी कि अपनी बच्ची के लिए वह कठिन से कठिन काम भी करने में नहीं हिचकिचायगी। नौकरी न करके भी मौसी के यहाँ उसे पेट भरने के लिए एक टुकड़ा रोटी का मिल ही जाता लेकिन वह अपनी बेटी को कुछ बनाने का सपना देखती है। इस सपने को वह हर कीमत में साकार करके रहेगी। उसका संकल्प सुनकर लालमन को खुशी हुई थी। वही लहरों और चट्टानों के संकल्प वाले एक दूसरे प्राणी को उसने देखा था। उसने यह कहकर कि इस खेत में उसे बहुत अधिक परिश्रम करना होगा तब जाकर सप्ताह में उसे बीस रुपये मिल सकते हैं देवंती के कानों में लालमन ने कहा था कि वह उससे अधिक काम न करने दे।

जिस समय वह काम में जुट गयी थी उस समय लालमन उसे कुछ क्षण के लिए एकटक देखता रह गया था। उसे ऐसा प्रतीत हुआ था कि उन कोमल अंगों को खेतों की धूप सहने के लिए नहीं बनाया गया था। उसे सबसे पहले सरल काम सौंपा गया फिर भी उसके लिए वह सबसे कठिन काम लग रहा था।

—तुमने अपनी बहन का नाम अभी तक नहीं बताया मुझे?—देवंती के पास पहुँचकर लालमन ने पूछा।

—मैं तो उसे सरस कहकर पुकारता हूँ।

—बड़ा सुन्दर नाम है।

—उसका नाम सरस्वती है।

—पर सरस अधिक सुन्दर है।—लालमन को खुद नहीं मालूम हुआ कि यह वाक्य उसके मुंह से कैसे निकल पाया था।

सरस मामा की तरह नहीं थी फिर भी न जाने क्यों वह मामा की याद दिलाती थी। उसे देखता हुआ लालमन और कुछ न सोच पाकर बस मामा के बारे में सोचे जा रहा था। मामा के बीते हुए दिनों के बारे में वह बहुत कुछ सोच चुका था अब। वह उसके अतीत के बारे में सोचने लगा था। वह सोचता रहा फिर जब उसकी नजर सरस पर पड़ी तो उसने उसे माथे के पसीने की बूंदों को पोंछते पाया। बहुत अजीब थी उसके होंठों के बीच की वह कठिन मुसकान। वर्षा के बाद लालमन का मन भी मुसकरा रहा था। दोनों मुसकानों में एक हल्का सा अन्तर था। एक कठिन प्रतीत हो रही थी, बरबस लायी सी लग रही थी किसी शारीरिक यातना को छिपाने के लिए और दूसरी एक सहज मुसकान थी वर्षा द्वारा भेंट की हुई मुसकान। दोनों को बारी बारी से देखकर लालमन ने भी मुसकराना चाहा पर मुसकरा न सका।

स्कूलों की छुट्टी थी। मछली के शिकार पर जाते हुए घनश्याम गौतम और किशोर खेत में पहुंच गए। कुएं के पास वाले नारियल के पेड़ की ओर संकेत करते हुए गौतम ने यह जानना चाहा कि उस पर से फलों को चोरों के लिए तो नहीं छोड़ा गया है। उसकी इस बात का मतलब समझकर लालमन ने जगदीश को पेड़ पर चढ़कर कुछ हरे नारियल तोड़ने को कहा। दूसरे ही क्षण जगदीश नारियल के पेड़ पर था। बिना किसी छुरी या हंसुए की सहायता से उसने पूरे दस नारियल नीचे गिरा डाले। देवंती से हंसुआ लेकर लालमन ने बारी बारी से सभी में छेद किया और अपने मित्रों की ओर बढ़ाता गया। सबसे पहले गौतम ने नारियल मुंह से लगाया और एक ही सांस में अपने हाथ के नारियल को आधा खाली करके उसने कहा—

—गरमी ने इसमें अजीब मिठास भर डाली है।

—इसमें पतली गरी आ जाने पर मिठास इससे भी अधिक होती।

आधा घण्टे तक इधर उधर की बातों के बाद लालमन को भी साथ चलने को कहा पर लालमन ने यह कहकर कि खेत में इस समय बहुत अधिक काम है उन लोगों को जाने दिया। मौसम एक बार फिर धूमिल पड़ने लगा था। झाऊ के पेड़ों के झुरमुट से कुछ पक्षी बार बार बादलों को धरती पर आमन्त्रण दे रहे थे। हर खेतिहर की तरह लालमन को भी वर्षा कम नहीं हुई थी। मोर की तरह उन्मादित वह बादलों को देखता रहा। सरस उससे कुछ ही दूरी पर पौधों पर

मिट्टी चढा रही थी। उसे एकटक देखते रहने से लालमन को ऐसा लगा कि उसकी जगह पर मामा थी।

बीत हुए बहुत सारे दृश्यों में एक दृश्य सबसे अधिक स्पष्ट होता गया।

यही खेत। ऐसा ही धूमिल वातावरण। देव ती और जगदीश चट्टानों के उस पार थे। इसी स्थान पर लालमन की बगल में मामा बैठी थी, पौधों के हर रंग की ओढनी को अपने कंधे पर गिराये। उसके बाल अनपढ विद्रोही हवा के स्पर्श से चेहरे पर मचल रहे थे। हवाओं में पौधों की भीनी भीनी गंध थी। पहली बार अपने में अद्भुत साहस लाकर लालमन ने मामा के कोमल हाथ को अपने हाथों में ले लिया था। ऐसा करके उसने मानो हृदय की बात उससे कह दी हो। मामा ने पलकों को अपने ही पैरों पर झुका लिया था। कुछ देर तक उस कोमल हाथ से मलते रहने के बाद लालमन ने धीरे से कुछ कहा था जिससे मामा की आँखें एक बार ऊपर को उठकर दोबारा पैरों पर झुक गयी थीं। और फिर कुछ देर बाद जब उसने लालमन के बहुत कहने पर आँखें ऊपर की थीं उस वक्त लालमन ने उन आँखों में जो कुछ देखा था वह स्वीकृति की चमक थी।

वर्षा फिर से हुई और किसानों की उमंगें पराकाष्ठा तक पहुँच गयी। हरपर वरी गाने वाली औरतों ने गर्व के साथ इसे अपने गीतों का फल माना। ग्राम के बगीचे में पन्द्रह दिनों से यज्ञ हो रहे थे। कुछ लोगों ने दावा किया कि आग में घी नहीं डाला जाता तो बूँद भी नहीं टपकती। मंदिर के पुजारीजी इस बात को छोड़कर दूसरी बात मानने को तैयार ही नहीं थे कि अपने घण्टों की आवाज से उसने बादलों को धरती पर बिखेर दिया था। लालमन ने सबकी सुनी और अपनी कही।

—कुछ भी सही, वर्षा तो हुई।

देखते ही देखते उसके खेत में इस छोर से उस छोर तक हरियाली फैलती दिखाई पडने लगी। उस घनी हरियाली में दुगुना परिश्रम कर जाने की प्रेरणा थी जिसे स्वीकार किये बिना लालमन से रहा नहीं गया। सरस को इस खेत में सप्ताह होने को था और सप्ताह से इस खेत की रौनक कुछ और ही थी। वर्षा का जादू और सरस की सरसता दोनों खेत की सुन्दरता को बढाते से प्रतीत होते। सरस सरल भी थी। लालमन के साथ वह घुल मिलकर बातें करने लगी थी। कल ही जब लालमन ने उससे पूछा था कि आखिर तलाक की नौबत कैसे आ गयी थी तो उसने मुसकराते हुए कहा था —

—अपने पति की पहली कमजोरी पर मैंने आँखें बंद कर ली थीं। उसे सह जाने की शक्ति मुझ में थी। हालांकि शराबी पति की कामना मैंने कभी सपनों में भी नहीं की थी मगर जब भाग्य ने वही दिया जो मैं नहीं चाहती थी तो मेरे

सामने एक ही चारा था कि मैं उसे स्वीकार कर चलूँ।

—तुम्हारे पति की दूसरी कमजोरी क्या थी?

—घर की औरत से सतुष्ट न होना।

—तुम्हारा मतलब है कि तुम्हारे होते हुए भी वह किसी और को प्यार करता था?

—अगर हर औरत को प्यार का विश्वास दिलाकर वह अपने वश में कर सकता तो ऐसा करने में कभी भी बाज नहीं आता।—गम्भीरतापूर्वक सरस ने कहा।

—उसके ऐसा करने से तुम्हें किस चीज की कमी महसूस होती थी?

—सभी चीजों की। सभी चीजों को पाकर भी मैं कुछ भी नहीं पाती थी।

—ईर्ष्या?

—हाँ, यह मेरी सबसे बड़ी कमजोरी रही है।

—प्यार और ईर्ष्या का साथ होना शायद स्वाभाविक भी हो।

—शायद न भी हो पर मैं उसे जितना प्यार करती थी उतनी ही ईर्ष्या भी थी मुझमें।

—कहते हैं कि ईर्ष्या केवल तब तक होती है जब तक प्यार में घनिष्ठता नहीं आ जाती। घनिष्ठता के आते ही विश्वास आ जाता है और विश्वास के सामने ईर्ष्या टिक ही कैसे सकती है?

—मुझे अपने पति से बेहद प्यार था। उसे मुझसे कितना प्यार था यह भी तो साफ है। घनिष्ठता में असंतोष की भावना कैसे आ सकती थी?

लालमन को ऐसा आभास हुआ था कि सरस कोई बहुत ही पढ़ी लिखी औरत हो। उसका बातें करने का ढंग बड़ा ही निराला था। लालमन के लिए यह मान लेना जरा दुश्वार था कि वह अनपढ़ थी। इससे पहले उसने कभी भी किसी औरत को इस तरीके से बातें करते नहीं पाया था। मामा की हर बात उसके सामने रखते हुए लालमन को जरा भी हिचकिचाहट नहीं हुई थी। पूरी कहानी सुनने के बाद सरस के चेहरे की वह हँसमुख प्रतिक्रिया एकदम बदल गयी थी। एक लम्बी खामोशी के पश्चात उसने कहा था कि कसूर लालमन का ही हुआ क्योंकि प्यार करके कोई इतना डरपोक नहीं हो सकता। अगर मामा और उसका सम्बन्ध स्थायी न हो सका तो लालमन ही उसका जिम्मेदार था। उसने यहाँ तक कहा कि प्यार करके आदमी पुराने बन्धनों में नहीं रह सकता उसे संघर्ष करके मनचाहा संसार बसाना पड़ता है। उसकी यह बात लालमन की समझ में तनिक भी नहीं आयी थी।

चन्द दिन बाकी थे मामा की शादी में और जैसे जैसे समय बीतता जा रहा था लालमन के भीतर का पश्चाताप भी जोर पकड़ता जाता। अब तो

उसके लिए केवल अपने को कोसना ही बाकी रह गया था। मन में अब वह करने का विचार पैदा होता जो समय के निकल जाने से नितांत असम्भव हो चला था। मामा के उस प्रश्न का मन ही मन उत्तर देते हुए उसने कहा कि सचमुच ही वह प्यार को कुछ और ही समझ बैठा था। उसके अपने भीतर अहम्मन्यता जैसी कोई चीज थी जो इस समय चूर चूर हो गयी थी। उसे अपने त्याग और आत्मशक्ति का जो घमण्ड था उस समय धीरे धीरे खण्डित करता जा रहा था। मामा को कमजोर बताते हुए उसने अपने आपको बहुत ही शक्तिशाली प्रमाणित किया था। आज वह अपनी उस दिखावे की शक्ति के नीचे दब गया था। मामा से दूर रहकर उसने तरस की जो कामना की थी वह कुछ और ही में परिवर्तित हो गयी थी। उस सहानुभूति की प्यास सबसे अधिक थी। शायद उसने यह चाहा हो कि सभी लोग उस पर तरस खाते हुए यह कहें कि बेचारे को मामा छोड़ गयी। वह उसकी भावुकता ही थी जो उसके सामने दूसरे रूप से आ खड़ी हुई थी। आत्म सहानुभूति के बोझ से वह दब गया था। अब तो चिल्लाते भी थम आती थी। लोगों की दया उसे व्यंग्य सी प्रतीत होती। वह केवल सरस थी जिसके सामने वह अपनी कमजोरी का इकरार करके सिर नहीं झुकाता।

सरस सुन्दर थी। उसकी वह सुन्दरता उस दिन अधिक निखर आयी थी जब वर्षा में मड़ई तक आते आते उसकी साड़ी भीगकर शरीर से चिपक गयी थी। दौड़ी हुई पहुँचने के कारण वह हाँफ रही थी जिससे उसकी सुन्दरता सजीव हो गयी थी और वह सजीवता लालमन के हृदय में मामा की याद और भी ताजा कर रही थी। सरस के चेहरे पर वर्षा की बूँदों को झलकते देख मामा की आँखों के वे आँसू लालमन को दिखायी पड़ने लग गये थे। उन आँसुओं का अपने हाथों पोंछना चाह कर भी वह उन्हें पोंछ नहीं पाया था। इस समय मामा के वे आँसू गरम बूँदों की तरह उसके सबसे कोमल अंग को दग्धकर रहे थे। न जाने किन खयालों में खोये रहने के कारण जब वह सरस को मामा कहकर पुकार उठा था वह हँसकर गम्भीर हो गयी थी और लालमन न उसके हँसने का कारण समझ सका था और न ही उसके एकाएक गम्भीर हो जाने का।

नारियल के पेड़ के नीचे लालमन ने सरस से पूछा था—

—तुम शुरू में अपने पति को बहुत ही प्यार करती होगी?

—शुरू में ही क्या?

—अंत तक तुम उसे प्यार करती रही?

—हाँ।

—तो फिर तलाक की नौबत कैसे आयी?

—आ गयी।

—प्यार न होते हुए भी ?

—हाँ।

—तो फिर बिछुड़ने का साहस कैसे हुआ ?

—अपनी बच्ची का कोई भविष्य दिखाई न पड़ने के कारण।

—ऐसा भी तो हो सकता था कि बच्ची तुम्हारे पति को मिल जाती।

—तलाक की माँग मैंने की थी। मिला भी तो मेरे ही पक्ष में। इस हालत में मजिस्ट्रेट ने बच्ची मुझे सौंपी।

—तुम्हें विश्वास है कि तुम्हारे हाथ में उसका भविष्य अधिक उज्ज्वल है ?

—शराबी को तो अपने शरीर की सुध नहीं होती है बच्ची का खयाल उस से कैसे होता ? और फिर औरतों से समय मिले तब तो ?

—ऐसे पति को तुम अन्त तक प्यार करती रही ?

—हाँ, अब भी करती हूँ।

—यह तो अजीब बात हुई।

—अगर मैं अब भी हर वक्त उसकी भलाई की कामना करती रहती हूँ तो इसका क्या तात्पर्य हो सकता है ?—सरस ने मुसकराकर कहा।

—तुम्हारी बातें समझना कभी कभी बहुत कठिन प्रतीत होता है।

—जबकि मैं पहले ही कह चुकी हूँ कि ईर्ष्या घृणा को जन्म नहीं देती बल्कि प्यार ही को।

लालमन सरस की बातों में उलझ जाता और उस उलझन से अपने को मुक्त करने के लिए वह देव ती की ओर चल पड़ता। देव ती की बातें जितनी ही सरल होतीं उतनी ही स्पष्ट और नपी-तुली। लालमन तुलना करने बैठ जाता। सरस सभी से भिन्न थी। कुछ हद तक वह विचित्र थी और उसकी उस विचित्रता ही में वह आकर्षण था जिसकी लपेट में आ जाना लालमन जैसे व्यक्तियों के लिए ज़रा भी कठिन नहीं था। आभा की याद को कम करने के लिए सरस की बातों में अपने को खो देना ही उसके लिए सबसे अच्छा उपाय था।

२१

मामा के घर हल्दी की रस्म पूरी की जा रही थी और उसके घर से कुछ ही दूरी पर बैठक में हड़ताल की तैयारी हो रही थी। पसीने से तर-बतर शरीर लिए कोई तीस मजदूर कामों में लगे हुए थे। झंडियां तैयार की जा रही थीं। तख्तों पर नारे लिखे जा रहे थे। धरमेन सभी कामों में बारी बारी से हाथ बँटा रहा था। लालमन अब भी उधेड़बुन में था। सफलता और असफलता के प्रश्न अब भी उसकी चिंता के कारण थे। मामा के घर से आता हुआ लाउडस्पीकर का जोरदार संगीत खास पैदा कर जाता। उसे अनसुनी करके वह भी अधिकारों की लड़ाई में मशगूल हो गया। तीसरे दिन हड़ताल थी। शहर की दो यूनियनें इन खेतों और कोठियों के मजदूरों के साथ थीं। जुलूस को विधान सभा के सामने तक ले जाने की बात थी। लालमन को इस प्रथम प्रयास में सफलता का बहुत कम विश्वास था। उसे आज भी इस बात का डर था कि वक्त आ जाने पर बहुत से मजदूर पीछे रह जायेंगे। अभी उसी दिन कुछ लोगों ने भय के साथ जिज्ञासा प्रकट की थी कि उनके बहुत सारे बच्चे हैं, परिवार काफी बड़ा है, वे अकेले रोटी के प्रश्न का हल करते हैं। अगर कोठी वालों ने तथा सरकार ने बुरा मानकर उन्हें हमेशा के लिए काम से निकाल दिया तो फिर उनके परिवारों की क्या हालत होगी। लोगों को समझाया गया था। धरमेन ने विश्वास दिलाया था कि जो कुछ किया जा रहा है वह मजदूर जीवन को बेहतर बनाने के लिए, उसे बदतर बनाने के लिए नहीं। ऐसे तो उसके अपने मन में भी असफलता की आशंका सी थी पर इस बात का भी उसे विश्वास था कि अगर सभी कुछ शांतिपूर्वक हुआ तो जमींदार और सरकार दोनों समझ जायेंगे कि मजदूर जाग उठा है।

नवयुवकों की टोली की ओर से उन्हें दिलासा दी गयी थी। वे भी हड़ताल को सफलता प्रदान करने के लिए उसमें भाग लेने को तैयार थे। इस बात में

लालमन को जहाँ खुशी थी वहाँ कुछ भय भी था। अपने आक्रोश और छटपटाहट मे ये लोग कहीं कुछ का-कुछ न कर बठें। हाड बोड के टुकडो और चार्टों पर श्वेत और काले अक्षरो म चेतावनी और धिक्कार भरे वाक्य लिखे जा रहे थ। वे सभी सम्बंधित व्यक्तियो को भरमाने के लिए थे। लालमन एक एक करके सभी तख्तो को पढ रहा था।

—पच्चीस के बाद भी हम छह दिन की नौकरी चाहिए।

—पसीने की बूंदो की कीमत इतनी सस्ती क्यो ?

—हम मजदूरो का भी कोई स्तर हो। देश यह महसूस करे कि उसको समद्धि देने वाले हम हैं।

—मिट्टी स सोना उगलवाने वाला श्रमिक कब तक गरीब रहेगा ?

तख्तो पर सकडो वाक्य थ। सुझावो मागो और चेतावनियो स भरे थ वे। व्यग्य चित्रो म मजदूर के पजर का प्रदशन और जमीदार को मजदूर का खून चूसकर लाल दिखाया गया था। कहीं असन्तोष जाहिर था कहीं फिजूल खर्ची पर धिक्कार भरे शब्द थे। जब तक मामा के घर स सगीत आता रहा तब तक ये लोग अपने अपने कामो म लगे रहे। बारह बजने म कुछ ही मिनट कम थ जब उधर का कोलाहल बन्द हुआ और इधर भी बाकी कामो को कल पर छोडकर सभी अपने अपने घर चल पडे।

ठीक चीनी दुकान के सामने लालमन और धरमेन को रोका गया। एक काली मोटर के इद गिद थे वे पाँच आदमी जिन्होंने दोनो के पास आते ही उनका रास्ता रोक लिया। दुकान के बरामदे के धुधले प्रकाश म उनके चहरे स्पष्ट न होकर भी पहचाने जा सकते थे। दोनो को यह जानते देर नहीं लगी कि वे लोग गाव के नहीं थ। चेहरो से पाँचो व्यक्ति राजनीतिक नेताओ के अगरक्षक से लग रहे थे। वह व्यक्ति जिसके बाल सबसे अधिक लम्बे थे और जो सबसे अधिक भला भी दीखता था दोनो के एकदम पास आकर बोला—

—तुम म स धरमेन कौन है ?

एक क्षण की चुप्पी के बाद धरमेन ने कहा—

—मैं हूँ।

इतने म सभी ने दोनो को घेर लिया।

—तुम पागल हो !— व्यग्य भरे स्वर म सिगरेट का धुआ धरमेन के मुह पर छोडते हुए एक तगडे व्यक्ति ने निराली म कहा।

—मुझे तो मालूम नहीं।—धरमेन ने कहा।

—अपने इस पागलपन को छोड दो वरना

लालमन जो कि अब तक चुप था पूछ बठा—

—आप लोग हैं कौन ?

—हम अपना परिचय देना नही है।

—हम भी आपके बहुत प्रश्ना क उत्तर दन नही हैं।—लालमन न कहा और धरमेन को आग करक वह चलने को हुआ कि तभी उस तगडे व्यक्ति न उसके कध पर हाथ रखकर उसे रोक लिया। लालमन न अपन कधे को भक झोरकर आगे बढन का प्रयत्न किया कि तभी उस व्यक्ति न उसे अपनी मजबूत बाहा म जकड लिया। दूसरे न धरमन को भी रोक लिया। उन सभी के मुह से गाँजे का गध आ रही थी। जो सिगरट व पी रह थे उन्ही म गाजे की मिलावट थी।

—आखिर तुम लोग चाहते क्या हो?—लालमन ने पूछा।

—अपन पागलपन को तुम लोग छाडते हो या नही?—लम्बे बाल वाले व्यक्ति न कडककर कहा।

—कैसा पागलपन?

—हडताल की बात।

—ओह! अब बात समझ म आयी।—धरमेन न कहा।

—तुम्हारी समझ म बात बहुत जल्द आ जाती है। तो फिर यह भी समझ लो कि अगर हडताल हुई तो तुम दानो की खरियत नही रहगी।

—धमकी?

—कुछ भी समझो। हम जो कुछ कहना था हम कह गये। अगर खरियत चाहते हो तो सभी बाता को यही रोक लो।

—सभी बाता को तो अवश्य ही रोक लेंगे पर हडताल को रोकने की बात हमारे वश की नहा। इसके लिए तो गाव के एक एक मजदूर को चेतावनी देनी होगी।—हसते हुए लालमन ने कहा।

तभी पीछे छूटे हुए लोगो क आने की आहट हुई और पाचो व्यक्ति जल्दी से मोटर म बठकर गाली गलौज के साथ वहा स नौ दो ग्यारह हो गये।

उनके जाते हो लालमन न धरमेन स पूछा—

—कौन थे य लोग?

—यह कहना तो कठिन है फिर भी उन लोगो क गुण्डे स लगते हैं जिन्हें हडताल स हानि पहुँचने वाली है।

—मोटर का नम्बर देखा तुमने?

—हा पर इससे कुछ नही होगा क्योकि जिनके इशारे पर य नाचते हैं उन्ही के इशारे पर पुलिस भी नाचती है।—धरमेन न कहा और दोनो आगे बढ गये। पीछे बहुत स लोगो के एक साथ बातें करते हुए आने की आहट मिल रही थी।

घर पहुँचकर लालमन सो न सका। चिन्ताग्रस्त वह अपनी चारपाई पर

करवट लेता रहा। उसे गुंडा की धमकी का उतना भय नहीं था जितना कि हड़ताल के असफल रह जाने का। पिछले दिनों सरकारी अध्यापक जैसे शिक्षितों की हड़ताल सफल न हो पायी थी। गँवार मजदूरों की बात तो और भी निराशाजनक ठहरी फिर भी लालमन सहज ही में यह विश्वास कर लेने को बिलकुल तैयार नहीं था कि मजदूर जीतकर नहीं रहेंगे। खेतों के मजदूरों को बलों का झुण्ड कहा जाता है इस बात से भी लालमन की आशा सशक्त थी। अगर सचमुच ही सभी हड़ताल के महत्त्व को न समझते हुए भी बलों के झुण्ड की तरह एक साथ चल पड़े तो कोई कारण नहीं था कि जमींदार और सरकार को उनकी अदभुत शक्ति का पता न चल जाय।

बसी के घर आज भी भोभाई हो रही थी। झोंझ का हुँकार और ढोलक की आवाज इस वक्त भी रात के सन्नाटे को झकझोर जाती। उन आवाजों से खीझ कर कुत्ते कभी कभार भूंक उठते। लालमन के कमरे का अंधेरा बाहर के घटाटोप अंधेरे से भी गहन था और उसी अँधेरे में वह अतीत और भविष्य दोनों के चित्रों को देखता हुआ नींद की प्रतीक्षा कर रहा था।

मामा की शादी में भरणा को बिताने के लिए लालमन के अपने पास अच्छा खासा बहाना था। हड़ताल की सरगर्मी के सामने विवाह की धूमधाम से उसे जो दाद होनी चाहिए थी वह नहीं हुई। दद हुआ पर हल्का सा। जान-बूझकर लालमन हड़ताल की इतनी अधिक जिम्मेदारियाँ अपने ऊपर ले बैठा था कि दूसरी बातों के लिए अवकाश पाना उसके लिए असम्भव था। उसकी हर साँस में हड़ताल थी। अपने हृदय की धड़कनों और अतीत के सभी क्षणों की स्मृतियों से हड़ताल करके वह हड़ताल की तैयारी में लगा रहा। शहनाई की आवाज को अनसुनी करके वह भावी नारों की अनुगूंजों को सुनता रहा।

—मजदूर जिन्दाबाद!

—पसीने की बूँदें मोती के दाने!

उसके भीतर नई कविता थी। वह उसे मजदूरों के गान के रूप में लिखने की सोच रहा था। उसने कलम ली और तुरंत लिखना शुरू किया—

श्रम बूँदें पीकर जिनकी ये खेत हमारे
उगलते रहते हैं मोती के हर दाने
हरियाली जिनके खून की बूंदों से बनती
उन खेतों के मजदूरों को
अपनी हैसियत बनाये रखनी है
अपने अधिकारों की सुरक्षा से
देश को धनधान्य बनाये रखना है

एकाएक लालमन की कल्पना बावली सी हो उठी और अपनी कलम को नीचे रखकर वह भामा के बारे में सोच उठा। यूँ तो वह इस मजदूर आंदोलन में अपनी सभी शक्ति लगा रहा था पर कौन जाने अगर भामा आज उसके साथ होती तो वह इससे भी अधिक लगन और विश्वास के साथ इसमें लगा रहता। भामा ने तो हमेशा ही उसमें शक्ति का संचार किया था। भामा की यह याद उस समय उसे व्याकुल कर रही थी जब वह दुल्हिन के रूप में अपने नये घर में प्रवेश कर रही थी और वहाँ की औरतें उसकी आरती उतार रही थीं।

बारह घंटे बाकी रह गये थे।

हड़ताल शुरू करने में केवल बारह घंटे बाकी थे। लालमन चाहता था कि ये घंटे जल्दी बीत जायें। वह अधीर था मजदूरों की शक्ति आजमाने के लिए। और फिर उसे अपनी शक्ति भी तो आजमानी थी। अपनी शक्ति को वह बहुत पहले से आजमाता चला आ रहा था। समय के साथ वह अपने को कभी शक्तिशाली अनुभव करता और कभी एकदम निर्बल। अपनी निर्बलता को पकड़कर दूर करने में उसे कठिनाई अवश्य महसूस होती पर वह उसे करके रहता। अपनी एक कमजोरी को मिटाने के लिए ही वह इस आंदोलन में तन मन के साथ भाग ले रहा था।

सुबह देर से हुई और लालमन ने अपने को उससे पहले जागे पाया। गाँव की चहल पहल शुरू होने में अभी घंटे भर की देर थी। आलसी सूरज तीन घंटे बाद जागने वाला था। लालमन को हमेशा से पहले जाग पाकर प्रभा भी जिसकी नींद पहले ही टूट चुकी थी बिस्तर से उठ पड़ी। लालमन अमरूद का दातौन लिये नल की ओर चल पड़ा और प्रभा जल्दी में हाथ मुँह धोकर रसोईघर के कामों में लग गयी। उसे मालूम था कि उसके भाई को आज समय से पहले घर से निकलना था। वह यह भी जानती थी कि आज उसके घर आने का समय भी अनिश्चित था इसलिए वह चाहती थी कि जल्दी जल्दी एक दो पराठे तैयार कर दे। दो मोलों के चूल्हे में एक ओर उसने चाय के लिए पानी चढ़ाया और दूसरी ओर तवा चढ़ाकर आटा गूँधने लगी।

उधर दाँत धोकर लालमन सीधे स्नानघर में चला गया। ठीक पाँच बजे उसे सभा में पहुँचना था जहाँ सभी लोगों के जुटने की बात हुई थी। साढ़े पाँच बजे जुलूस को पदयात्रा पर निकलना था। सात बजे से पहले जुलूस को शहर पहुँचना था। लालमन और धरमन ने सभी लोगों से यहाँ तक कहा था कि दुर्भाग्यवश अगर उनके घर मृत्यु भी हो जाय तो इस यात्रा का अधिक महत्त्व समझकर वे इसमें भाग जरूर लें। सभी ने एक स्वर में स्वीकृति दी थी। लालमन उस भीड़ को उमड़ते देखने के लिए बेकरार था।

पाँच बजने से कुछ मिनट पहले ही लालमन बैठक पहुँच गया। वहाँ की

सुनने को नहीं मिला था फिर भी राजनेताओं के सहमे हुए स्वर से जो दिलासा मिला वो वह संतोषजनक थी। इस शांति के सभी नेताओं का विश्वास हो चला था कि बहुत शीघ्र ही मजदूरों की स्थिति में परिवर्तन आकर रहेगा। लालमन अपनी इस खुशी के बीच भी मामा की याद से अपने को मुक्त नहीं कर पाया था।

लहलहाते खेतों से होते हुए वह अपने खेत पहुँचा। उसके अपने खेत की हरियाली इतनी अधिक घनी हो चली थी कि उसमें चलते समय पूरी सावधानी बरतनी पड़ती थी फिर भी किसी न किसी पौधे की किसी न किसी टहनी का टूट जाना स्वाभाविक था। दवन्ती और जगनैन अपनी ही धुन में काम किये जा रहे थे। सरस खेत में नहीं थी। लालमन ने चारों ओर देखा। चट्टानों के उस पार भी वह दिखाई नहीं पड़ी। दवन्ती के पास पहुँचकर लालमन ने सरस के न आने का कारण पूछा। यह कहकर कि उसे बुखार है दवन्ती ने लालमन को चिन्तित सा कर दिया।

इधर लगातार तीन चार बारिशों से खेत सचमुच ही बहुत सुन्दर दीखने लगा था। पौधों पर लालों की संख्या में फूल हँसते से लग रहे थे। वे भविष्य की सुनहरी कल्पना के लिए लालमन को प्रेरित कर रहे थे। वह घूम घूमकर उन पौधों और फूलों को निरखता और उनकी उपज का अन्दाजा लगाता रहा। अपने में भविष्य की उमंग लिये वह खेत के इस छोर से उस छोर तक घूमता रहा। आज उसका जी काम करने का नहीं कर रहा था। वह केवल खेत को निहारते रहना चाहता था। सरस की अनुपस्थिति उसे खटक रही थी पर यह बात वह अपने आपसे भी नहीं कह पा रहा था। उसके भीतर हड़ताल की सफलता और मजदूरों की एकता की खुशी के साथ साथ अपने खेत को सुन्दर पाने की भी खुशी थी। इतने पर भी अपने भीतर की हल्की उदासी के कारण को वह नहीं समझ पा रहा था। उस वक्त जब हड़ताल अपनी पराकाष्ठा पर थी तब भी उसे इसी तरह की एक क्षणिक उदासी सी महसूस हुई थी।

दवन्ती तो शांति आन्दोलन जैसी बातों को समझती ही नहीं जबकि लालमन चाह रहा था कि उन बातों की चर्चा वह किसी के सामने करे। सरस अगर होती तो वह इस विषय पर उसके साथ घंटों बातें करते रह जाता। उसके साथ हर विषय पर बातें करने में एक आनन्द निहित था। सब्जियों के वे पौधे जिन्हें दो सप्ताह पहले अनेमिया मार गया था अब खिले नजर आ रहे थे। लालमन ने अपने खेत से आँखें हटाकर दूर तक फैले खेतों की ओर देखा। चारों ओर वही हरियाली थी। चमकती धूप के बीच हरियाली भी चमक रही थी। ईख के खेतों में जवानी का रंग आ गया था। उनमें काम करने वाले केवल कमर से ऊपर दिखाई पड़ रहे थे। वर्षा के बाद की गरमी से ईख एकाएक बढ़ आयी

भी [illegible] मालूम किए। [illegible] पास [illegible] कोई पड़ गया था [illegible] भी हरियाली की [illegible] था। [illegible] नहीं थी [illegible] नहीं [illegible] किए।

खेतों में बीज [illegible] काम का [illegible]। [illegible] लालमन [illegible] पहुंचा [illegible] खेतों में [illegible] था [illegible] रही थी। लालमन ने [illegible] में [illegible] हुए पेड़ पर बैठा हुआ लालमन [illegible] की [illegible]। [illegible] बीन बजाता था फिर भी लालमन [illegible] हो गया। [illegible] जरा भी [illegible] नहीं था कि [illegible] उसकी [illegible] में [illegible] रही या नहीं। [illegible] लालमन ने [illegible] भी जो उसकी प्रतिक्रिया भी [illegible] ही थी जैसी कि [illegible] समय [illegible] की थी। यह सब [illegible] प्रतिक्रिया। [illegible] मिनट तक [illegible] रहने के बाद [illegible] में उसने पूछा—

—कल तो मेरा काम पर आओगी न ?

—अगर बुखार बना रहा तब तो नहीं आ सकूंगी।

—[illegible] नहीं ले रही है ?

—सुबह ली थी।

—कड़ी धूप में काम करने की आदत नहीं थी न इसीलिए थकावट से बीमार पड़ गयी होगी।

देव ती ने भी यही कहा और तोड़े हुए पत्तों को बटोरकर चट्टान के पास की झाड़ी की ओर फेंकने चल पड़ी। अकेला रह जाने पर लालमन अपने को भाभा की याद से नहीं बचा सका।

दूसरे सप्ताह लालमन धनुवा भगत की गाड़ी में बैठा खेत की ओर जा रहा था कि पीछे से घनश्याम ने आवाज दी। भगत ने गाड़ी रोक ली और घनश्याम भी दौड़ता हुआ आकर उस पर चढ़ बैठा।

—आजकल रहते कहां हो ?—लालमन ने पूछा।

—मैं भी तो तुम से यही पूछने वाला हूं पर सबसे पहले तुम्हें अखबार की एक खुशखबरी सुना दूं।—यह कहते हुए घनश्याम ने जेब से सुबह का अखबार निकाला और लालमन के सामने फच के मस बराबर काले अक्षरों को पढ़ते हुए कहा—

—तुम लोगों की हड़ताल सफल रही।

—सच! विस्तार से सुनाओ क्या लिखा है ?

—सबसे पहले मजदूरों की मजदूरी बढ़ाने की बात है। इसमें सभी कुछ

स्तार से तो नहीं आया है, फिर भी स्पष्ट है कि सरकार मजदूरों के प्रति सजग कर सोच रही है और वह जमींदारों और बाठोंवालों को भी झकझोरकर जग करने जा रही है। अच्छी तरह जाच पड़ताल के लिए एक कमीशन की युक्ति होने जा रही है। सरकार का दावा है कि यह कमीशन हर तरह से जदूरों के पक्ष मे रहकर उनकी शिकायतों का खयाल करते हुए परिस्थितियों की छानबीन करेगा।

घनश्याम के रुकते ही लालमन पूछ उठा—

—धरमेन को यह बात मालूम है ?

—पता नहीं।

—चलो एक बार उससे मिल आते हैं।

गाड़ी रोकी गयी और दोनों नीचे कूद पड़े। पीछे की ओर लौटते हुए लालमन ने जोर से कहा—

—देवन्ती को कह देना कि मैं कुछ देर से खेत पहुचूंगा।

धरमेन के घर पहुचकर उन्हें पता चला कि वह चारपाई पर बीमार पड़ा है। उसकी भाभी दोनों को सीधे उसके कमरे में ले गयी। धरमेन को चारपाई पर बेसुध सोये देखकर दोनों को आश्चर्य हुआ। दो दिन पहले लालमन उससे मिला था, उस समय तो वह बिलकुल चगा था। दो दिन के बाद की उसकी इस हालत को देखकर लालमन को आखों पर विश्वास नहीं हुआ। धरमेन ने अपनी बोझिल पलकों को ऊपर उठाकर होठों पर एक कठिन मुसकान लाने की कोशिश की। लालमन की नजर उसकी गरदन पर पड़ी जहा दो मोटी गिल्टियाँ निकल आयी थी। उसने उसके माथे पर हाथ रखकर देखा। उसका माथा गरम तवे की तरह तप रहा था।

—परसों तो तुम अच्छे थे।—लालमन बोला।

—कल भी अच्छा था।—धरमेन ने धीरे से कहा।

—तो फिर एकाएक ?

—अपने को तो सभी कुछ एकाएक ही होता रहता है।—अपने होठों की उस कठिन मुसकान को बनाये रखे हुए उसने उसी तरह धीरे से कहा।

—कोई दवा आदि

लालमन की इस बात को बीच ही में काटते हुए धरमेन कह उठा—

—कुछ ही समय हुए गौतम और किशोर आये हुए थे। जो बात तुम दोनों अब सुनाने आये हो उसे तो वे दोनों तुमसे पहले ही सुना गये।

—तुम अपनी बीमारी की बात करो।

—बातें करने के लिए तो इससे भी अच्छे विषय हैं।

इतने में उसकी भाभी पीछे से आती हुई बोल पड़ी—

—तुम्हीं दोना इसे समझाओ। कल से इसने मुह म कुछ नहीं डाला है।

—क्या तुम इतना भी नहीं जानते कि न खाने से बीमारी और भी दबोचती है?—लालमन ने धरमेन को देखते हुए कहा।

—खाने को जी करे तब तो कुछ खाऊँ!

—बीमारी की हालत म इच्छा न होते हुए भी खाना जरूरी होता है।

—यह डाक्टरी भाषा तुम्हें कब से आती है?

—भाभी कुछ ले आओ। हम देखते हैं यह कैसे नहीं खाता है।

—नहीं, लालमन मैं नहीं खा सकूगा।

—तुम्हें खाना ही होगा।

—मुझे समझने की कोशिश करो।

—भाभी, क्या तयार किया है इसके लिए?

—साबूदाना।

—लाओ तो सही।

चीनी के कटोरे म साबूदाना आ जाने पर धरमेन ने एक बार फिर नाक सिकुड़ते हुए इनकार करने का प्रयत्न किया पर उसकी भाभी चारपाई के छोर पर बठकर पहला चम्मच उसके मुह तक पहुँचा चुकी थी। बड़ी कठिनाई से उस तरल पदार्थ को मुह मे लेकर उसने किसी तरह से उसे निगल तो लिया पर दोबारा लेने के लिए उससे मुह न खोला गया। उसकी भाभी ने दूसरा चम्मच आगे बढाया। अपनी भाभी के हठ के सामने धरमन को अपने हठ से बाज आ जाना पडा और न चाहकर भी उसे कटोरा साफ करना ही पडा। भाभी के चले जाने पर लालमन ने उससे पूछा—

—तुम यह बता सकते हो कि तुम खाने से इनकार क्यों करते हो?

—बस कहा न जी नहीं करता।

—और मैंने भी कहा न कि बीमारी की हालत म जी न करने पर भी खाते ही रहना चाहिए। कमजोर शरीर पर बीमारी को बढावा मिलता है।

—लालमन मुझे ऐसा लगने लगा है कि डाक्टर की भविष्यवाणी को सच होने मे अब अधिक देर नहीं।

—तुम्हें जोरों का बुखार है और बुखार म लोगों को बड़बड़ाने की आदत होती है।

—पर मुझे वह बुखार थोड ही है जिसम लोग बड़बड़ाते हैं। इसे बुखार भी नहीं कहते।

—तुम्हारा शरीर आग की तरह धधक रहा है।

—फिर भी यह बुखार नहीं। मेरे ऊपर का चमडा केवल गरम है। इसको मडिकल जुबान म हाट स्किन डीजिज कहते हैं।—अपनी पीडा को छिपाने का

प्रयास करते हुए धरमन ने थके हुए स्वर मे कहा।

—मैं तो यह नाम पहली बार सुन रहा हूँ।—घनश्याम बोला।

—मने भी इसे पहली ही बार सुना था।—अपनी फीकी मुसकान को अधिक विस्तत करके धरमेन ने कहा। लालमन कुछ कहता कि इससे पहले ही धरमेन खुद कहा उठा—

—खर इन बाता को छाडो। यूनियन की आगे की कायवाही के बारे म सुनाओ।

—तुम पहले अच्छे हा जाओ फिर आगे की कायवाही पर गौर करेंगे।

—म अपनी बीमारी को किसी तरह की रुकावट मानने को तयार नही हूँ।

—दवा और भाजन के अलावा बीमारी की हालत म एक और चीज़ की आवश्यकता होती है और वह है आराम। तुम्हे इस समय आराम की सख्त जरूरत है।

—म तो यह सोचता हूँ कि आराम इसान को बीमार कर देता है। म इस समय अपने को बीमार मानने को ज़रा भी तयार नही हूँ।

—तुम बहकी हुई बातें कर रहे हो धरमेन।

—इसीलिए तो तमसे कहता हूँ कि तुम यूनियन की बातें शुरू कर दो और म इन बहकी हुई बातो को बन्द कर दू।

लालमन और घनश्याम दोनो ने देखा कि धरमेन के चेहरे पर अपनी वेदना को छिपाने का प्रयास था। इस बात को लालमन जितना समझ रहा था उतना घनश्याम नही समझ पा रहा था, फिर भी उससे यह बात छिपी नही थी कि धरमेन उधार ली हुई मुसकान का प्रदशन कर रहा था। उसमें बोलने तक का साहस नही था फिर भी वह बोल ही जा रहा था।

तभी धरमेन की मामी ने आकर खबर दी कि बलदेव मिलने आया है। धरमेन न उसे बुला लिया। अपने अधमले कपडा म भीतर आते ही बलदेव ने कहा कि वह कहरिया पूजा के लिए मदद मागने आया है। इस पर धरमेन न कहा कि इसके लिए तो उसे बडे भाई से मिलना होगा क्योकि उनके बाप की मृत्यु के बाद वही पूजा के प्राय सभी खच की जिम्मेदारी अपने ऊपर लेता आया है। काली माई का वह पुराना चबूतरा उन्ही लोगो के नीमवाले खेत म था। उस कालीमाई के बारे मे अनेक कहानियाँ थी। कुछ लाग कहते थे कि यह चबूतरा उस समय बनाया गया था जब भारतीया को यहाँ गुलाम के रूप मे लाया जा रहा था। किसी एक गोरे के अत्याचार पर एक दिन सचमुच ही उस स्थान पर कालीमाई की आवाज सुनाई पडी थी। उसन अपन भक्तो से कहा था कि व उसी स्थान पर एक चबूतरा बनाकर हर साल बकरे की बलि दें बदले म वह गोरा के अत्याचार स उनकी रक्षा करेगी। सयाग की बात तो यह थी कि उसी रात गोरे ने

भी सपने म काली के दगन किय थे। काली ने उससे कहा था कि अगर वह अपने मजदूरो को चबूतरा बनाने के लिए जमीन नही देगा तो उसका समूचा परिवार महाकाल का ग्रास हो जायेगा। सुबह जागते ही गोरे न अपने सरदार को बुलाकर हुक्म दिया था कि नीम के पेड क नीचे आजही स कालीमाई का चबूतरा बनना शुरु हो जाय और सचमुच दो ही सप्ताह म चबूतरा बनकर तयार हो गया था और पहली पूजा म गोरे ने पूजा क सभी खच को अपने ऊपर ले लिया था। कोई तीस वष बाद उसी गोरे क बेटे न उस चबूतरे को ढकोसला कहकर उस पर बढ कर बठा था जो उसे नही करना चाहिए था और उसी रात अचानक उसकी मृत्यु हो गयी थी। इस घटना का गाँव के सभी बूढे सच बताते हुए कहते है कि मृत्यु के समय उस गोरे क बेटे का चेहरा कोयल जसा काला हो गया था और उसकी लम्बी जीभ बाहर आ गयी थी। उसी समय से उस पर सकट क बाद सकट आने लगे थे और सस्ते दामो म अपनी जमीन बेचने के लिए वह विवश हो गया था। धरमेन का दादा उसके चार सरदारो म एक था इसलिए उसने भी तीन चार बीघा जमीन खरीद ली थी। कालीमाई वाली जमीन उसी क हिस्से पड गयी थी। कहते हैं यही कारण है कि धीरे धीरे उसने आस पास के बाकी खेतो को भी खरीद लेने म अपने को सफल पा लिया था।

जब भी कालीमाई की पूजा होती और बकरो की बलि दी जाती धरमन सोचता कि इस आधुनिक युग म इन रिवाजो को मिटा देना अधिक अच्छा होगा पर चाहकर भी उसके उसे रुकवाने की हिम्मत कभी नही हुई थी। पिछले दिनो वह कालीमाई वाले खेत मे काम करवा रहा था। उस समय भी उसके मन म यह विचार पदा हुआ था और उसने सोचा था कि अपने भाई से कहकर वह उस चबूतरे को वहा से हटा देगा पर उसी रात उसने एक भयकर सपना देखा था और उस सपने म उसन अपने बाप को यह कहते पाया था कि अगर कालीमाई के चबूतरे को वहाँ से हटाया गया तो उसका वह परिवार तबाह हो जायगा।

बलदेव को अपने भाई के पास भेजने स पहले धरमेन न लालमन से कहकर खूटी से टगी अपनी कमीज की ऊपरी जेब स बीस रुपय निकलवाये और बलदेव के हाथो पर रखते हुए कहा—

—यह मेरी ओर से है पूजा के लिए।

पहली बार उसन कालीमाई की पूजा क लिए रुपये दिय थ। बलदेव के चले जाने पर उसने मन ही मन यह कामना भी की थी कि भगवान न करे उसके पसे से बकरा खरीदा लिया जाये।

२३

दूसरे दिन सरस को खेत में पाकर लालमन ने लम्बी साँस ली। अपनी गुलाबी साड़ी में खेत की हरियाली के मध्य वह पौधों के फूल सी प्रतीत हो रही थी। लालमन ने अपने आप से सवाल किया—आखिर यह कोमलता कठोरता के लिए क्यों? नजाकत पर सख्ती की बेरहमी क्यों? सरस के चेहरे पर जब पसीने की बूँदें झलकने लगतीं उस समय उसका सौम्य और भी निखरा-सा लगता। लालमन क्षण भर को उस व्यक्ति के बारे में सोचता रहा जिससे यह रूप सँजोया नहीं गया। बातों के दौरान सरस ने कहा—

—मेरे पति ने मुझ में जिस चीज की कमी महसूस की थी वह मेरे लिए बहुत ही खटकने वाली बात थी। मैं यह नहीं कहती कि औरत में सम्पूर्णता होती है फिर भी इतना तो अवश्य ही कहूँगी कि एक मर्द को जो कुछ चाहिए एक औरत दे सकती है। मगर मर्द उससे हर चीज न पाने का ढोंग करके बगावत कर बैठे तो इस असंतोष से औरत को अपना अपमान समझना चाहिए। मेरे साथ जो कुछ हुआ है उस में अपना अपमान समझती हूँ। मेरी बच्ची के भविष्य की बात तो है ही, मगर साथ साथ अपमान की बात भी है। शराब में आत्मशांति ढूँढने वाला आदमी अपनी पत्नी का अपमान करते हुए अपने को भी मूर्ख प्रमाणित करता है। औरत में शराब से भी भारी नशा है। उसके होते हुए शराब की बोतल में डूब जाना मूर्खता नहीं तो और क्या? मैं अपने पति को देवता की तरह प्यार करती रही। उस सबके बदले भी मैं उससे जो कुछ पाती रही वह किसी भी हालत में प्यार नहीं हो सकता।

—क्या यह जरूरी है कि प्यार के बदले में प्यार की उम्मीद रखनी चाहिए?

—जरूरी तो नहीं पर मुझ जैसी स्वार्थी औरत की बात तो कुछ और ही है। मैं जिस चीज की उम्मीद रखकर कुछ करूँ वह अगर मुझे न मिले तो मैं

विरोध करने वाली औरत हूँ।

—तुम्हारे चेहरे की कोमलता तुम्हारी इन बातों पर विश्वास नहीं करने देता।

—औरत जब ऊपर से कठोर होती है तो भीतर से कोमल और जब ऊपर से कोमल तो भीतर से कठोर।—हँसती हुई वह बोली।

—तुम्हारी बातें अजीब हैं।

—या मैं अजीब हूँ?

—शायद दोनों। खैर मैं तुमसे एक प्रश्न करना चाहता हूँ।

यह कहकर वह चुप हो गया। उसे चुप पाकर सरस ने कहा—

—आप चुप हो गये?

—मैं यह पूछ रहा था कि तुम शराब पीने वाले व्यक्ति से इतनी घृणा क्यों करती हो?

—आपको यह कैसे मालूम हुआ?

—तुम्हारी ही बातों से।

—मैं सभी शराब पीने वालों से क्यों घृणा करूँ? मेरी बातों का मतलब तो बस इतना ही था कि मुझे शराब पीने वाले पति से घृणा है।

—पर ऐसा क्यों?

—कह चुकी हूँ फिर भी अगर मेरी बात उतनी स्पष्ट नहीं थी तो उसे स्पष्ट करती हुई इतना कहूँगी कि शराब पीने वाला पति अपने प्यार को पत्नी और शराब के बीच बाँटता रहता है। शराब को यह बात गवारा हो लेकिन मुझे यह गवारा नहीं। शराब को मैं सबसे शक्तिशाली सौत मानती हूँ। यह मेरी अपनी निजी बात है। मैं सभी पत्नियों की ओर से बोलने का दावा नहीं कर रही हूँ। मैं किसी भी हालत में यह सहन नहीं कर सकती कि मेरा पति मुझसे अधिक महत्त्व शराब को दे। अगर अपने जीवन में मैंने किसी से ईर्ष्या की है तो वह शराब है, पत्नी की सबसे बड़ी सौत!

सरस की बात समाप्त हो जाने पर लालमन उसे एकटक देखता रहा। उसे अपनी ओर एकटक देखते पाकर सरस पूछ बैठी।

—क्या देख रहे हैं इस तरह?

—तुम कहाँ तक पढ़ पायी हो?

—मैंने तो केवल उतना ही पढ़ा है जिससे दूसरों का नाम पढ़ सकूँ और अपना लिख सकूँ। आप तो बहुत अधिक पढ़े होंगे?

—उतना नहीं पढ़ पाया हूँ जिससे तुम्हारी बातों को सरलता से समझ सकूँ।

—कहते हैं मूर्खों की बातें समझने में विद्वानों को बातों से भी अधिक कठिनाई होती है।

—यह भी सुना है कि विद्वान लोग कभी भी अपनी विद्वत्ता का ढिंढोरा नहीं

पीटते ।

—देवन्ती कहती है कि आप कविताएँ लिखते हैं पर मुझे तो आपने कभी भी नहीं सुनाई ।

—बातें बदलना कोई तुमसे सीखे । मेरी कविताएँ शायद तुम्हें अच्छी न लगें ।

—ऐसा क्यों ?

—उनमें असन्तोष की भावनाओं के सिवाय और कुछ भी नहीं होता ।

—तब तो विश्वास कीजिये आपकी कविताएँ मुझे सभी कविताओं से अधिक पसन्द आएगी ।

—तो फिर कभी अवश्य सुनाऊँगा ।

—आपको अभी ही सुनाना होगा ।

कुछ देर चुप रहने के बाद लालमन जो कविता उसके खयाल में सब से पहले आयी, उसे ही सुनाने लगा—

घटाटोप अंधेरे में
जब अंधेरे को भी कुछ दीखता नहीं
जब हाथ को हाथ नहीं सूझता
तभी हृदय के आले में
मेरे सामने झिलमिलाने लग जाती हैं
पुराने दिनों की बिसरी यादें
मेरे उर की किस आभा से
आकार पा लिया मेरे अतीत ने
सजीव हो गयी मेरी वेदना
अधर टिके कडवे मीठे पात्र पर
जाग उठी सोयी यादगार
लिये टीस मधुर
मचल उठे तार मेरे गात के
भूले भटके दिनों की
शाम की सिंदूरी वेला सी
उस लम्बी परछाईं को
मैंने दौड़ते पाया गोधूलि सम
अनुसरण करते उसे देखा
हताश भास्कर को
सागर की अथाह गहराई में
डूबकर

उसने आत्महत्या की
या वह डूबी थी गंगा में
पापों की तिलांजलि थी
या नवचेतना संग
उषा की किरणों का सहारा लिये
फिर से ऊपर आने की
वह पूर्व तैयारी ठहरी ?

कविता सुनाते समय लालमन की आंख क्षितिज की ओर था। समाप्त करके उसने सरस की ओर देखा। उसे अब भी अपलक अपनी ओर देखते पाकर उसने पूछा—

—कविता पसन्द नहीं आयी ?

—आपकी जगह खेतों में नहीं है।

—ऐसा क्यों कहती हो ?

—आपकी सुन्दर कविता ऐसा कहने को विवश करती है।

—तुम्हें सभी कुछ आता है, झूठी प्रशंसा भी।

—जो बात मुझे नहीं आती उसके काबिल मुझे न समझें।

यह कहती हुई खाद से भरी घास की टोकरी उठाये सरस वहाँ से आगे बढ़ गयी। उसकी उस चाल को लालमन देखता रहा। उस चाल में बहुत कुछ था प्रेरणा भी।

ठीक बारह बजे खाने पर बैठते हुए लालमन ने पूछा—

—कभी अपने घर मुझे खाने के लिए तो बुलाओ।

—हमारे घर की रूखी-सूखी अगर आपको पसन्द आ जाय तो आज ही आइयेगा।—सरस अपने कौर को मुंह के पास रोकती हुई बोली।

—नेकी और पूछ पूछ। विश्वास करो मैं आज ही रात तुम्हारे घर का भोजन चखने आ जाऊंगा।

—अवश्य आइयेगा।

इतने में छाया बेल के पेड़ की ओर से आती हुई दिखाई पड़ी। आज उसका मन खेत में घूमने का हुआ था। पिछली रात जब लालमन खेत की लहलहाती हरियाली की चर्चा कर रहा था उसी समय छाया उस सौन्दर्य का दर्शन के लिए मचल उठी थी। उसके पास आ जाने पर लालमन ने पूछा—

—तुम्हें भूख नहीं ?

—जब से खेत पहुंची हूं एक पपीता आधा तरबूज और एक खीरा खा चुकी हूँ।—अपने पेट पर हाथ रखती हुई छाया बोली।

—तब तो तुम्हारे पेट को समन्दर समझना चाहिए।—देवकी हँसकर

बोली।

—बल की डाली पर भात की टोकरी है। जा, लेती आ।

—मैं लाय देता हूँ।—यह कहते हुए जगदीश अपनी टोकरी नीचे रखकर बेल के पेड़ की ओर झपट पड़ा।

प्रभा से कहकर कि रात के भोजन के लिए वह उसकी प्रतीक्षा न करे, लालमन घर से निकल पड़ा। सरस के घर सात बजे पहुँचने की बात थी। घर छोड़ने से पहले उसके मन में आया था कि ट्रांजिस्टर साथ ले ले पर प्रभा ने लेने नहीं दिया क्योंकि किसी भी हालत में वह आकाशवाणी के कार्यक्रमों से वंचित नहीं रहना चाहती थी। सीलोन रेडियो और आकाशवाणी के कार्यक्रम उतना स्पष्ट न होते हुए भी मारीशसीय धरा में स्थानीय रेडियो से अधिक लोकप्रिय थे। लालमन की तो स्थानीय रेडियो के हिन्दी कार्यक्रमों से नानी मरती थी। वहां से प्रसारित कार्यक्रम और उनकी हिन्दी बड़ी अजीब होती थी। मित्रों के बीच बात करते हुए लालमन हमेशा यही कहता था कि हिन्दी को अगर आगे बढ़ाना है तो पहले उसे उस स्थान से उसकी रक्षा कर ली जाय जहाँ उसका दम घुटता है।

सात बजने में अभी आधा घंटा बाकी था। लालमन के मन में बीयर लेने की चाह पैदा हुई पर जब उसे याद आया कि वह सरस के घर जा रहा है तो उसने अपने आप हँसकर इरादे को बदल दिया। सरस के सामने वह यह जाहिर होने नहीं देना चाहता था कि उसे भी इन हलकी शराबों का चसका है। रास्ते में वह यही मनाता हुआ चल रहा था कि अच्छा होता अगर उसे गौतम, किशोर और घनश्याम में से कोई न मिल पाता। कई दिनों से वह अपने गांव में घूमा नहीं था इसलिए आधा घंटा बिताने के लिए वह इधर से उधर घूमता रहा। रास्ते में उसे बहुत से लोग मिले केवल वे तीनों मित्र नहीं मिले जिनसे इस समय मिलना वह उचित नहीं समझता था। उनमें से किसी एक के मिल जाने का तात्पर्य होता पास के शराबखाने में दाखिल होना।

अन्त में शिवालय की ओर से होते हुए वह सरस के घर के सामने पहुँचा। एकाएक एक अकारण आवारा सा खयाल उसके भीतर पैदा हुआ और उसने अपने आप से पूछा—

—क्या सरस के घर मेरा जाना उचित है?

और उसने अपने आपसे तर्क किया—

—इसमें अनुचित की बात ही क्या है? लोगों का तो हमेशा कुछ न कुछ कहना ही होता है। वे कहते रहें, इससे बिगड़ता ही क्या है?

अपने में एक आशंका सी लिये जिसकी उसने पहले से कल्पना भी नहीं की थी वह सरस के घर पहुँचा। सबसे पहले देवंती सामने आयी और उसी के

साथ ईंट के सुर्ख पत्तों से छाये वाले उस छोटे कमरे के घर में उसने प्रवेश किया। जिस कमरे में उसे बैठने को कहा गया वह साधारण होते हुए भी साफ-सुथरा था। कोने में रामकृष्ण परमहंस और अन्य देवी देवताओं के चित्रों के सामने मिट्टी का चिराग कुछ ही क्षण में बुझने के लिए आखिरी लौ के साथ जल रहा था। धूप और अगरबत्ती की भीनी गंध से कमरा सुवासित था। दीवार के बीच में महात्मा गांधी के बड़े से चित्र के इर्द गिर्द कुछ अन्य भारतीय नेताओं के काफी पुराने चित्र थे। ये सभी चित्र भारत के स्वतन्त्रता आन्दोलन के चित्र थे। लालमन को उन सभी चित्रों को देखते हुए पहले आश्चर्य तो हुआ पर बाद में जब देवंती के स्वर्गवासी भाई की याद आयी तो बात उसकी समझ में आ गयी। वह मारीशस की सेवा समिति का नायक था। जिस समय भारत की आजादी के लिए संग्राम छिड़ा हुआ था उस वक्त इस देश में भी उन नारों को बुलन्द किया जा रहा था। लालमन उस समय बहुत ही छोटा रहा होगा पर उन घटनाओं की धुंधली सी याद अब भी उसके मस्तिष्क में थी।

लालमन के बैठने के कोई पाँच मिनट बाद सरस अपनी छोटी सी बच्ची की अँगुली थामे सामने आयी। आते ही उसने बच्ची से लालमन को नमस्ते करने को कहा। बच्ची हिचकिचायी फिर अपनी अस्पष्ट तोतली बोली में उसने नमस्ते की और मेज पर की चीजों की ओर अपने छोटे छोटे हाथों को बढ़ाने लगी। देवंती की माँ भी आयी और लालमन से हालचाल पूछकर रसोई को लौट गयी। उसके पीछे सरस भी यह कहती हुई चली गयी कि एक मिनट में वह लौट रही है। इशारे से लालमन ने बच्ची को अपनी ओर बुलाया पर वह थी कि इशारे से डरकर अपने लड़खड़ाते कदमों से सरस के पीछे हो ली। बच्ची ने एकदम अपनी माँ की शक्ल पायी थी। लालमन को वह बहुत ही प्यारी लगी।

इस बार जब सरस वापस आयी तो हाथ में पानी का गिलास लिए हुए। लालमन की ओर पानी बढ़ाते हुए उसने मुसकराकर कहा—

—भोजन तैयार है, हाथ धोइयेगा।

—खेल खेल में तुम्हें तकलीफ दे डाली।

—हमने भी तो सभी कुछ खेल ही खेल में तैयार किया है।

लालमन उत्तर में कुछ कहता कि इससे पहले सरस मुसकराती हुई वहाँ से चली गयी। पीछे से देवंती ने आकर एक कुर्सी मेज के पास रखी और लालमन से उसी पर बैठने को कहा। उसके बैठते ही सरस पूरियाँ और कोई तीन चार प्रकार की तरकारियों के साथ सामने आ गयी। थाली से बहुत ही सोंधी गंध आ रही थी। अपने सामने थाली पाकर लालमन ने हैरत भरे स्वर में कहा—

—इतनी सारी चीजें?

—भोजन के प्रति ऐसा नहीं कहते।

—पर सरस, इतनी सारी चीज खाने के लिए तो मुझे तीन दिन चाहिए।

—ठीक है तीन दिन तक बैठकर खाते रहिएगा।

—देखो इसमें से आधी चीजें निकाल लो।

—इसमें एक मर्द की खुराक से कुछ भी ज्यादा नहीं है।

—पर मैं इतना नहीं खाता।

—खाना ही होगा।

—नहीं सरस, नाहक इन चीजों का नुक्सान होगा। इसमें से आधा निकाल लो जरूरत होने पर मैं माँग लूँगा विश्वास करो।—विनयभरे स्वर में लालमन ने कहा।

—देखिए आप जो खा सकें खाइयेगा जो ज्यादा हो इसी थाली में छोड़ दीजिएगा।

—पर जूठा हो जाएगा।

—जूठा खाने से कोई मरता थोड़े ही है।

लालमन को विवश हो खाना ही पड़ा।

म पा रहे थ। घर के सभी लोग रिश्तेदारी म विवाह म नहर गय हुए थे। धरमन की भाभी का जस इस बात का पूव प्रमाण हो चला था तभी तो जाने से पहल धरमन को वह गयी थी कि वह घर को शराबखाना न बना बठे। उसकी मा ने कहा था कि वह घर से बाहर कहीं न जाय। अपनी मा की बात को उसने रख लिया था। सबसे पहले बलदेव के छोटे भाई को उसने किशोर के पास भेजा था और देखत ही देखते वे सभी आ गये थे जिन्हें आना था।

कोई पन्द्रह मिनट म बीयर की पाच ठंडी बोतलों के बीच शराब की एक लजाती शर्मीली बोतल भी मेज पर थी। साल्मान और मटर की भुजिया के साथ कोई बीस रोटिया भी मेज पर सजा दी गयी। टमाटर और बाकी सामान घर ही पर था। सवाल उठा कि आखिर गाजर की तयारी कौन करेगा? सभी को चुप पाकर किशोर ने कहा—

—यार यह भी एक कला है। तुम सभी को उताय देता हूँ कि मैं इसम भी पीछे नहीं।—और वह चटनी तयार करने म जुट गया।

एक तरफ चटनी बनती रही दूसरी तरफ घनश्याम न सभी गिलासों म पहले बीयर उडेली और फिर उनम शराब मिलाई। लालमन केवल बीयर लेना चाहता था उसकी एक न चली। उसके गिलास म भी शराब डाली गयी। पहली चुस्की के साथ ही बातें भी शुरू हो गयी। कई विषयों से फिसलती हुई बात देश की दशा पर आ रुकी। घनश्याम और गौतम स्थिति से सन्तुष्ट थे, बाकी नहीं। अपने हाथ के गिलास को मेज पर रखते हुए घनश्याम ने कहा—

—सभी दोष राजनेताओं पर क्यों थोप जाते है?

—नाचने वाले वे हैं तो फिर नाच अच्छा न होने पर दर्शकों को दोषी क्या बनाया जाय?—धरमेन ने बदले म प्रश्न किया।

—नतक की सफलता दशक के सहयोग पर भी तो आधारित होती है। अगर व नत्य के आरम्भ होने से पहले ही हल्ला गुल्ला शुरू कर दें तो फिर नतक अपना सवस्व दे ही कसे पायगा?

—दर्शकों को मूख बताना तो उलटी बात हुई। जो पसा देकर शो देखने पहुँचा हो वह उसम खराब करना क्यों चाहेगा? ये नेता भी जो कुछ हैं तथा जो कुछ करते हैं हमारी कीमत पर तो फिर हम यह क्यों चाहन लगे कि वे हमारे जीवन को बदतर बनायें?

—घनश्याम के कहने का मतलब है कि हम उन्हें मौका ही नहीं देते कि वे हमारे जीवन को बेहतर बना सकें।—इस बार गौतम ने कहा।

—वर्षों से वर्षों तक के समय को तुम भी उन्हीं के शब्दों म यही कहना था कि उन्हें मौका नहीं दिया गया। दुनिया की सर और तिजोरी की भराई करते रहने का मौका उन्हें मिल जाता है और जिनके कंधे पर चढ़कर वह कुर्सी पर

बैठे हैं उनके लिए कुछ करने का उन्हें अब तक कोई भी मौका नहीं मिला ! तुम भी मजाक कर रहे हो गौतम !—रोटी के टुकड़े पर सालमान का टुकड़ा रखते हुए लालमन ने कहा।

एक ओर बोतलें खाली होती जा रही थीं दूसरी ओर बहस जोर पकड़ती गयी। शायद दिमाग में लड़खड़ाहट के कारण तर्क और दलीलें भी लड़खड़ाती सी प्रतीत हो रही थीं। कोई घंटे बाद बहस भटकने के साथ राजनीति से धर्म पर पहुँच गयी। एक ओर से धर्म को नकारने का प्रयत्न किया गया, दूसरे पक्ष ने उसे प्राणों से भी अधिक महत्त्वपूर्ण बताया। एक ने उसे विभाजन का औजार बताया दूसरे ने मानवता का सरंक्षक। बहस में शिथिलता सी आते देख घरमन ने जेब से पैसा निकाला और शराब की दूसरी बोतल लाने के लिए किशोर की ओर इशारा किया। लालमन मना करके भी किशोर को रोक न सका। वह पैसा और छोटी सी टोकरी लिये लड़खड़ाते कदमों से कमरे से बाहर चला गया। बहस थमी हुई थी और लालमन के भीतर एक जिज्ञासा जागी।

आखिर सरस को शराब पीने वाले व्यक्तियों से घृणा क्यों है ? नहीं तो वह तो शराब पीने वाले पति से घृणा करती है। वह घृणा कैसे कर सकती है ? वह तो प्यार करने के लिए बनाई गयी है।

वह केवल शराब ही हो सकती थी जो लालमन के स्वभाव को इतना अधिक साहस प्रदान कर सकती थी। इसमें पहले सरस के बारे में इस नये दृष्टिकोण से उसने कभी भी नहीं सोचा था जिस दृष्टिकोण से इस वक्त सोच रहा था। सरस को इस वक्त वह प्यार की मूर्ति के रूप में देख रहा था। सचमुच ही वह प्यार करने की चीज थी—जी भरकर प्यार करने की। इस समय लालमन के स्वभाव में जो सरस मँडरा रही थी वह बाँहों में बंध जाने वाली सरस थी। पहली बार उसकी आँखों और मस्तिष्क में छायी सरस की तसवीर मांस की दीवार में बहुत रंगीन थी। लालमन कभी ही स्वप्न बना और एक सम्पन्न साहब के साथ दफ्तर में काम करने वाली सरस के बारे में सोच जा रहा था। सरस को शराब से नफरत थी और उसी शराब ने लालमन को उसके एकदम करीब ला दिया था और अब दूसरी बोतल आती देख लालमन इन्कार न कर सका। यह तो शराब की उपासना के प्रति कृतज्ञता होगी। सवाल आँखों में उसने गिलास ऊपर उठाया और काफी आँखों में चमक लिये को देखा पर सर्वोत्तम स्वर में कह उठा—

—प्यार के नाम पर !

—नये में किस नाम पर पी रहे थे अब तक ?—गौतम आदि सबने कम नशे ■ था फिर कहा।

—क्या लालमन भाभी की दाद आ गयी क्या ?

—भामा की याद को इतना ताजा बनाये रखना था तो फिर उसे जाने ही क्यों दिया ?

—अपने को तो लगता है कि तुम्हें भामा से सच्चा प्यार नहीं था।

—प्यार तो प्यार होता है भाई उसमें सच्चा और झूठा का प्रश्न ही कहाँ ?—इस गम्भीर वाक्य को भी घनश्याम ने व्यंग्य के ढंग से कहा।

—लालमन मुझे तुम पर तरस आता है यार। जीवन में एक ही बार तो प्यार किया तुमने और असफल रहे।—घनश्याम अभी अपने वाक्य को पूरा भी न कर पाया था कि धरमेन बीच ही में कह उठा—

—तुम्हारे कहने का मतलब है कि सभी व्यक्तियों को तुम्हारी तरह दस पन्द्रह लड़कियों के चित्र जेब में लिये फिरते रहना चाहिए ?

—तुम्हारे सभी निशाने मेरे ही ऊपर क्या होते हैं ? किशोर को क्या छोड़ देते हो ? कोई दस से अधिक लड़कियों से इसका पत्र व्यवहार होता है।

अपना बचाव किशोर ने खुद किया—

—पत्र तो हजारों लड़कियों को लिखे जा सकते हैं इससे क्या ?

—कमाल है ! जिस बात में तुम्हें नाज था आज उसी से कतरा क्या रहे हो ? तुम तो छाती ठोककर कहने वालों में हो कि सीडयूसर तुम जैसा ताजा नौजवां भी नहीं था। तुम तो कहते थे किनारे कि डान जुआन भी तुम्हारे आगे पानी भरने लग जाता।

—वह तो मैं अब भी हूँ।

—तो फिर यह बीच-बचाव कैसा ?

यह बहस पिछली सभी बहसों से लम्बी रही। इसके बाद कुछ क्षण तक यूनियन की बातें हुई पर गम्भीरता की कमी के कारण वह जोर नहीं पकड़ सकी। धरमेन के अलावा केवल लालमन ही था जिसे यूनियन से दिलचस्पी थी मगर इस समय तो उसका अपना दिमाग भी कहीं गिरवी था। वह सरस के अतिरिक्त किसी और विषय पर सोच ही नहीं पा रहा था। शराब की खुमारी के साथ साथ सरस की याद भी उसकी धमनियों में दौड़ने लगी थी। सरस की तुलना भामा से करके वह उसे भामा से बहुत आगे पाने लगा। भामा कुछ थी, सरस कुछ। भामा सुन्दर थी पर सरस सुन्दर भी थी और प्यारी भी।

लालमन के मित्रों में कोई भी स्थिर नहीं था, गौतम भी नहीं। गौतम जो सबसे अच्छा पीनेवाला था और जिसे नशा हमेशा सबसे बाद में आता इस दूसरी बोतल के बाद वह भी बहकी बहकी सी बातें करने लगा था। लालमन बहकी-बहकी बातें नहीं कर रहा था मगर उसका ख्याल बहका बहका था। पिछली शाम के कुछ दृश्य अपनी सभी अस्पष्टता लिये लालमन के खुमार दिमाग में एक बार फिर कौंध उठे।

२५

सिन्दूरी शाम। हवा की नराजी चाल। रेत की मनुपस्थित और जगदीश चट्टानों के उस पार। वल के नीचे जानमन और उसकी बगल में बैठी सरस। बहुत सारी बातें और उन बन्त सारी बातों के बाद एक विशिष्ट बात।

—सरस तुम सभी से भिन्न हो। तुम असाधारण हो।

एक पल की खामोशी फिर सरस की पलकों का ऊपर उठना और

—आप भी तो भिन्न हैं—असाधारण हैं।

—तुम्हारे पति से ?

—सभी से।

—किस ढंग से भिन्न हूँ मैं ?

—पहले मेरी भिन्नता तो बताइये।

—तुम तो हर ढंग से भिन्न हो।

—यानी कि मैं आदमी जैसी नहीं हूँ।

—हां तुम आदमी जैसी नहीं हो।

—अगर चुड़ैल जैसी हूं तब तो आपका मुझसे डरना जरूरी है।

—तुम भिन्न हो सरस। दुनिया की सभी स्त्रियों से भिन्न हो तुम। तुम यथार्थ सी न लगकर कल्पना सी लगती हो।

—तब तो मैं पुरानी चीज ठहरी।

—क्या ?

—क्योंकि कल्पना तो अब पुरानी हो चली है अब तो यथार्थ को महत्त्व दिया जाता है।

—तुम यथार्थ की कल्पना सी लगती हो।

—बस अब तो मुझे खुद भी नहीं मालूम कि मैं क्या हूँ।

—तो फिर यह बता दो कि मैं क्या हूँ।

—आप तो

—क्या बात है तुम रुक क्यों गयी ?

दूसरी बार में अपनी जगह से खड़ी होती हुई सरस ने अपने वाक्य को पूरा तो किया था लेकिन हवा उस वाक्य के बाकी शब्दों को अपने साथ उड़ा ले गयी थी और लालमन यह नहीं जान सका कि सरस की नजरों में वह क्या था।

इस तरह के नशेपन में लालमन घर कभी नहीं पहुंचा था। प्रभा को पहली बार ऐसा एहसास हुआ कि अब उसका भाई शराबी बन चुका है। वह उससे बहुत कुछ कहना चाहती थी परन्तु एक शब्द भी नहीं कह सकी क्योंकि लालमन तो चारपाई पर गिरते ही बेसुध था—आधी रात का प्रभा ने उसे बड़बड़ाते सुना। उसकी उस बड़बड़ाहट में सबसे अधिक सरस शब्द था। उसी क्षण प्रभा ने अपने आप से पूछा था क्या यह सम्भव है ? सरस तो एक बच्ची की माँ है और उसका भाई अब भी कुंवारा था।

अपने आपको समझाती हुई वह बोली—

—नहीं मैंने गलत समझने की कोशिश की है। बात कुछ और ही हो सकती है और फिर नशे में तो आदमी न जाने क्या क्या बकता रहता है। अभी तो मामा की याद भी भैया के मस्तिष्क में एकदम ताजा होगी। उसे एकाएक भुलाकर इस बार उससे भी असम्भव कदम वह कैसे उठा सकता है ?

प्रभा खुद से सवाल करके खुद को जवाब देती रही। दिन भर की थकान के बाद आज रात उसे जो गहरी नींद आने की उम्मीद थी वह एकाएक गायब थी। इन बातों को गलतफहमी मानकर भी वह सो न सकी। रात भारी थी और उसकी पलकें एकदम हल्की जो झुक नहीं पा रही थीं। बाहर से कई कुत्तों के एक साथ रोने की आवाज आ रही थी। रधिया महराजीन इधर दो तीन दिनों से आखिरी दम पर अटकी हुई थी। पिछली रात तो गांव भर में खबर फैल गयी थी कि वह बस बसी पर ज्यों ही उसके मुंह में परीतालाब का पानी डाला गया था उसने फिर से आँखें खोल दी थीं। आज प्रभा की मां कह रही थी कि वह बुढ़िया आज की रात पूरा नहीं कर पायगी। कुत्तों की रुलाई को बरते सुन प्रभा अपने भाई के खयाल से छूटकर रधिया महराजीन के बारे में सोच उठी और उसी के बारे में सोचते हुए उसे नींद आ गयी।

२६

उसने औरों की आवाजें सुनी थी और अपनी भी। औरों की आवाजों में व्यंग्य या ईर्ष्या का आभास था। उन आवाजों को सुनकर अनसुनी कर जाना भी उससे नहीं हुआ। उन तमाम आवाजों में जो आवाज सबसे अधिक चुभने वाली थी वह उसके अपने ही मित्रों की आवाज थी। किशोर और गौतम ने एक ही स्वर में कहा था कि अच्छी औरतों को पति तलाक नहीं दिया करते। यह छोटा सा वाक्य उसके मस्तिष्क में भनभनाता रह गया था। कहने का तात्पर्य बस इतना ही था कि सरस एक अच्छी औरत नहीं थी। अगर वह बदचलन और चरित्रहीन न होती तो उसे परित्यक्ता का जीवन गुजारना नहीं पड़ता अपने विचार को अधिक स्पष्ट करते हुए गौतम ने कहा था।

लालमन केवल इसलिए चुप रह गया था क्योंकि वह जानता था कि किशोर और गौतम की ओर से जो बातें हुई थी वे उसे ठेस पहुंचाने के लिए नहीं कही गयी थी। गौतम और किशोर तो इस बात से भी अनभिज्ञ थे कि सरस लालमन के खेत में काम कर रही है। उन्होंने औरों की बातें सुनी थी और अपनी जोड़ दी थी लेकिन लालमन को दोनों से ऐसी उम्मीद नहीं थी। वे गांव के उन लोगों से भिन्न थे जो खेतों से लौटने के बाद का समय को चीनी दुकान के बरामदे में बिताते हों। वे दोनों अध्यापक थे और अध्यापक इतनी जल्दी किसी के चरित्र के बारे में अपना विचार प्रकट कर दे यह खटकने वाली बात थी। पढ़े लिखे लोग औरों से कुछ सुनकर तुरंत अपना मत नहीं सुना बैठते। वे सुनकर सोचते हैं और सोचने के बाद अगर कुछ कहना जरूरी ही होता है तब अपना विचार देते हैं। इन बातों को भी लालमन बाकी बातों की तरह महत्त्व नहीं देता पर चूंकि वक्त समय उसके दोनों मित्र जरा भी नशे में नहीं थे इसलिए लालमन को उन्हीं की बातें सबसे अधिक चुभी थीं।

सभी कुछ सुनने के बावजूद भी वह यह मानने को तैयार नहीं था कि सरस दोषी थी। न जाने किन भावनाओं से वह उसकी निर्दोषिता की खोज तक जाने को तैयार था। वह तो यह मानता था कि चरित्रहीनता आँखों में लिखी होती है। सरस की आँखों में बहुत कुछ था लेकिन यही एक चीज नहीं थी। एकान्त में होने पर उसने अपने आप से प्रश्न किया। जानना चाहा कि आखिर उसने तलाक क्यों लिया? और इससे भी बड़ा सवाल जो इसके बाद उसके सामने खड़ा हुआ वह यह था कि सचमुच ही तलाक सरस ही ने मांगा था और वह मिला भी तो उसी के पक्ष में। या बात कुछ और थी?

और जब उसने सरस को अपने सामने पाया तो पहली बात उसने यही पूछी—

—सरस, क्या यह सच है कि तलाक की मांग तुमने की थी?

सरस चुप लालमन को देखती रह गयी। लालमन को अपना प्रश्न दोहराने का साहस नहीं हुआ। उसे अजीब उधेड़बुन में देख सरस अपनी गम्भीरता को तजकर मुसकरा उठी। उसकी मुसकान से लालमन को नया साहस मिला और उसने अपने प्रश्न को दूसरे ढंग से प्रस्तुत किया—

— लोग कहते हैं कि तुम्हें जबरदस्ती घर से निकाला गया है। यह बात कहां तक सच है, सरस?

—मैंने जो कुछ भी कहा था उस पर आपको तनिक भी विश्वास नहीं?

—तुम्हारी बातों पर मुझे विश्वास है लेकिन गांववाले

—गांववालों को कहने दीजिए।

—तुमने बातें नहीं सुनीं इसलिए ऐसा कह रही हो।

सरस ने आगे कुछ भी नहीं कहा। वह वहां से हट गयी। उसकी इस हरकत से लालमन की स्थिति और भी विचित्र बनी। सरस को प्यार करके उसकी ऐसी हालत कभी नहीं हुई थी। वह उसके लिए तड़पा अवश्य था मगर इस कदर नहीं। अपने को समझाने की कोशिश करते हुए उसने अपने आप से कहा कि सरस के अतीत से उसे क्या लेना देना। अतीत में तो उसने उससे प्यार नहीं किया। वह तो उसे इस समय प्यार करता है। इस समय वह क्या है और क्या सोचती है क्या करती है—इन बातों से उसे सरोकार होना चाहिए पिछली बातों से क्या?

सरस अगर उसके प्रश्नों की अवहेलना करके टल न जाती तो शायद अतीत को अतीत समझकर वह उन बातों को यों ही चले जाने देता। लालमन के भीतर नया प्रश्न पैदा हुआ। आखिर वह इतनी बड़ी बात को बिना कोई महत्त्व दिये चल क्यों पड़ी? सफाई के लिए तो दो शब्द भी पर्याप्त थे। वह फिर से एक बार केवल इतना कह देती कि लोगों की बातें झूठ हैं तथा उसने खुद अपने पति

से तंग आकर तलाक की माँग की थी तो बात कुछ से-कुछ होती। अगर इतने पर भी कुछ लोग यह कहते फिरें कि अच्छी और हिन्दू औरतें अपने पति से तलाक नहीं मांगती तो उन सभी को उत्तर देने का ठेका लालमन खुद अपने ऊपर ले लेता। वह यह मानने को तैयार नहीं था कि आज भी औरत को सभी जुल्म सहकर भी पति परमेश्वर का नारा बुलन्द करना जरूरी था। यह युग तो स्वतन्त्रता और अधिकारप्राप्ति का है। जब सभी स्वतन्त्रता और अधिकार माँग सकते हैं तो फिर क्या कारण है कि नारी इनसे वंचित रहे। तलाक माँगकर पाना और तलाक जबरदस्ती मिलना औरों के लिए शायद एक ही बात हो पर लालमन के लिए ये दो अलग बातें थी। एक में अधिकार की सुरक्षा थी और दूसरी में अपनी बुराई की सजा। लालमन सरस को प्यार करता था वह यह कैसे मान सकता था कि सरस को उसकी बुराई की सजा मिली है। सरस को वह उन नजरों से देखना नहीं चाहता था जिनसे गाँव के सभी लोग उसे देखते थे।

उसने अपने घर पर भी बातें सुनी थी। घर की बातें लोगों की बातों से भिन्न होकर भी उसी तरह का मतलब रखती थी। घर पर केवल उसकी बहन थी जिसे सरस के बारे में जानकारी प्राप्त थी। अपने भाई से उसने कहा था कि वह अपनी नादानी से बाज आ जाये। सरस शादी के बाद ठुकराई हुई एक बच्ची की मां है जबकि लालमन को अभी तक हल्दी नहीं लगी थी। तुम मोह लिए गये हो भैया—उसकी बहन ने कहा था—क्या है उस औरत में जो तुम उसे अपने ख्यालों में इस तरह बाँध चुके हो? लालमन ने अपनी बहन की बातों को कोई महत्त्व नहीं दिया था क्योंकि मामा के बारे में भी उसने इसी तरह की बात कही थी। लालमन को यह भी विश्वास था कि उसकी ओर से पसन्द की हुई हर लड़की के बारे में वह यह कहेगी।

खेत छोड़ने से पहले लालमन ने एक बार फिर सरस के सामने पहुँचकर प्रश्न किया। वही प्रश्न और सरस की ओर से वही खामोशी। अपने भीतर के विद्रोह पर काबू पाते हुए लालमन ने करुण स्वर में कहा—

—सरस मैं जो कुछ जानना चाहता हूँ उसे जाने बिना मुझसे रहा नहीं जाएगा।

—कुछ कहना बाकी रह गया हो तब तो!

—तुम पति के घर से किस बात के लिए ठुकराई गयी हो?

—जो मैं कहती आयी हूँ आप उसे सच्चाई मानने को तैयार नहीं इसलिए सच्चाई अगर बाकी है तो कल उसे पूरा करूँगी।—मुस्कान के साथ सरस ने कहा और वहाँ से चल पड़ी।

लालमन के हृदय का बोझ बना रहा। भीतर का तूफान दबाये नहीं

दब रहा था। घर पहुँचकर बिना हाथ पाँव धाये वह चारपाई पर जा पडा। दिन की उष्णता के बाद शाम का हेमन्त की पहली हवा अपनी सिहरन लिये बहने लगी थी। खिडकी खुली होने के कारण हवा पूरी स्वाधीनता के साथ भीतर पहुँच रही थी। लालमन को छोडकर वह घर के सभी सामान को ठड का पहला आभास पहुँचा सकती थी। लालमन घर के सामान से भी अधिक निर्जीव था। उस न गरमी थी न ठड। सोचा वह सरस को बहुत अधिक प्यार करने लगा है। यह बहुत अधिक प्यार उसे नही करना चाहिए था पर हृदय को कौन समझाय। सिरदद का बहाना करके उसने भोजन नही किया। एक गिलास दूध पीकर सोने चला गया। वह जल्द-से-जल्द सोकर रात बिताना चाह रहा था। पर यह इच्छा उसके भीतर जितनी ही प्रबल थी उसकी आशा के लिए निद्रा उतनी ही शिथिल थी। उसे अपने शरीर से अधिक थका मांदा अपना मस्तिष्क लगा। थकान के कारण वह खाली सा प्रतीत हो रहा था। खयाल उसम चुभत से लग रहे थे। घर क सभी लोग लम्बी गरमी के बाद आज पहली बार हलकी ठड महसूस कर रहे थे। लालमन इस नय अनुभव से अनभिज्ञ था। इस वक्त भी जबकि घर के लाग चादर और कम्बल की आवश्यक्ता महसूस कर रह थे लालमन बिना कमीज अपनी चारपाई पर था। आँख मूद वह अँधेरे की आखा से अँधेरे की गहराई का अदाजा लगाता रहा। फिर से एक बार मामा और सरस की तुलना की उसने। मामा खुली हुई किताब थी और सरस रहस्यमय थी। शायद इस रहस्यमय स्वभाव के कारण ही लालमन के दृष्टिकोण म वह मामा स आगे थी। लालमन के जीवन म मामा पहले आयी थी पर वह सदा के लिए रह न सकी। उसके चले जाने का दुख लालमन को तब भी हुआ था और अब भी है। फिर सरस उसके जीवन मे आयी और लालमन न हर चीज को नये सिरे स शुरू होते महसूस किया। सरस मे मामा से अधिक विशेषताएँ थी लकिन

लालमन के भीतर डाह की भावना जागी। अपने को सात्वना देने के लिए वह शरत बाबू के किसी वाक्य को अपन दिमाग मे घुमाता रहा।

—नारी क कलक पर अविश्वास करके ठगा जाना उस पर विश्वास करके पाप का भागी बनने से बेहतर है।

यह पुराना वाक्य उसके दिलादिमाग म चक्कर काटता रहा। उससे थक जाने पर उसने उसे बहुत दूर की बात समझकर तज दिया। इतने पर भी वह यह जानने का प्रयास करता ही रहा कि आखिर सरस के बीत हुए दिनो से उस क्या लेना देना था। ईर्ष्या जसा न जाने वह कौन सा भाव था उसक भीतर जो उसे अपन ही तर्कों को खोखला मान लेन का विवश कर जाता। उसके अपने जीवन म इससे पहले भी कइ लम्बी रातें आयी थी पर यह रात कुछ अधिक

नुकीली थी। वह हर करवट के साथ उसे चुभती रही।

बाहर एकाएक तेज हवा शुरू हो चुकी थी जिससे रात सिसकियाँ लेती सी प्रतीत हो रही थी। लालमन को यह अपने प्रति व्यंग्य सा लगा। वह हर कीमत पर सुबह को खरीदना चाहता था। उसे हर कीमत और हर शर्त मंजूर थी। आज की रात कटकर छोटी हो जाय और बदले में कल और परसों की रात चाहे तो दोगुनी भी हो जाय इसमें उसे कोई भी हर्ज नहीं था। मित्रों से वह यह भी सुन चुका था कि आजकल नींद के लिए गोलियाँ आती हैं। इस वक्त वह उन गोलियों को घोटने की इच्छा को भी अपने भीतर प्रबल पाने लगा था पर इस वक्त वे मिल भी तो कहाँ? उसने मन की शांति की इच्छा की थी उसके लिए नींद की और नींद के लिए गोलियों की। न गोलियाँ थीं न नींद और न ही मन की शांति। वह करवट लेता रहा। बाहर के सभी जीव भी सो चुके थे। निस्तब्धता बढ़ती ही गयी। बाहर निस्तब्धता जितनी गहरी थी उतना ही भारी था लालमन के मस्तिष्क का कोलाहल। वह कोलाहल ही था जो उसे सोने से रोक रहा था।

लालमन को आखिर में उस समय नींद आयी जब सभी लोग जागने लगे थे। उसे देर तक सोये देख प्रभा उसे जगाने भीतर पहुँची फिर न जाने क्या सोचकर लौट गयी। कोई आधा घंटा बाद चाय गुनगुनाती हुई भीतर पहुँची और अपने भाई को अब तक सोये पाकर वह सहमी हुई उसे झकझोरने लगी—

—रात को मुर्गी चुराने गये थे क्या?

आनाकानी करके भी लालमन ने करवट लेकर आँगन की ओर देखा। कमरे में खिड़की से आती धूप को देखकर वह जल्दी से चारपाई छोड़कर उठ खड़ा हुआ। दूसरे ही क्षण मुँह हाथ धोने के बाद वह रसोई में पहुँचा और प्रभा को सामने पाकर पूछ बैठा—

—तुमने मुझे देर तक सोने क्यों दिया?

—सोचा देर से नींद आयी होगा।—प्रभा ने सरल उत्तर दिया।

अपनी बहन के हाथ से चाय का गिलास और परांठा लेते हुए वह पाटे के पास पर बैठ गया। चाय की पहली चुस्की लेकर उसने कहा—

—आज मंडी में बहुत-सा काम है। दिन भर सब्जियाँ लादनी हैं और मैं अब तक घर पर हूँ।

सब्जियों के अधिक महत्त्व को अपने ध्यान में बाँध उसने जल्दी जल्दी परांठा खाया और चाय का आखिरी घूँट पीकर खड़ा हो गया। उसकी उतावलेपन का कारण घर में बैठकर प्रभा जान गयी।

जिस समय वह अपने ठेले को लेकर चला तब सूरज ऊपर आ चुका था। सब्जी गरम और नरम।—दोनों काम में लग गये थे। ताजा मक्खन प्रगण सब्जियाँ ताज

रहे थे। सब से पहले देवता के पास से गुजरते हुए उसने मुसकराकर उसकी नमस्ते का जवाब दिया। जगदीश ने दूर ही से चिल्लाकर नमस्ते की इसलिए उसकी ओर न जाकर लालमन भिंडी की कतार की ओर बढ गया जहाँ सरस थी। उससे कुछ सुनने से पहले ही लालमन कह उठा—

—सरस तुमने मेरे मन की शान्ति चुरा ली है।

—रोना तो इस बात का है कि औरत फरियाद करना नही जानती।

—जो कुछ मैंने कल पूछा था अगर तू उसी वक्त बता देती तो मैं इतना बेचैन नही रहता।

—प्रश्न था भी तो आपने चैन नही दिया।

—सरस वे प्रश्न रात भर मुझे कोचते रहे।

सरस ने निगाहे उठाकर लालमन की ओर देखा और बिना कुछ कहे अपने खाचे से कुछ कागज निकालकर उसकी ओर बढ़ा दिए।

क्षण भर को लालमन उन कागजों को देखता रहा, फिर जब कुछ समझ में नही आया तो पूछ बैठा—

—क्या हैं ये ?

—आपके प्रश्न का उत्तर।

—ये कागज ?

—ये वे पत्र हैं जिन्हें मेरे पति ने तलाक के दौरान मुझे लिखा था।

—मैं इनसे क्या करूँगा ?

—पढ़ने से आपको पता चल जायगा कि आखिरी वक्त तक क्या गुजरा था। आप हिचकिचाइयेगा नही। एक-एक शब्द पढ़कर देख लें।

लालमन की समझ मे अब तक भी बात नही आयी थी। पास के एक बड़े से पत्थर पर बैठकर वह उन पत्रो को पढ़ने लगा। सरस अपने काम में लगी रही। उन सभी पत्रों को पढ़ने में लालमन को पन्द्रह मिनट से अधिक नहीं लगा। सभी में लगभग एक ही बात थी—सरस से तलाक से मुकर जाने का अनुरोध। हर पत्र में गिड़गिड़ाहट भरे वाक्यो में क्षमा-याचना की गयी थी। सभी पत्रों को पढ़ लेने के बाद सरस की ओर हैरत के साथ देखते हुए लालमन ने प्रश्न किया—

—जब तुम्हारे पति ने मान लिया था कि सभी दोष उसके थे तो फिर तुमने उसके बार बार क्षमा मांगने पर भी उसे क्षमा क्यों नही किया ?—लालमन के स्वर में राहत थी।

—इसलिए नहीं कि मैं पत्थरदिल ठहरी।

—सरस, सचमुच तुम्हें समझना बहुत ही कठिन है।

—हर सरल चीज को समझना कठिन होता है।

—तुमने यह नही बताया कि तुमने अपने पति पर दया क्यों नहीं की ?

—मैं उस उत्तर का आशय नहीं समझा।

—उसके इनकार और माफी मांगने के बाद भी।

—हां।

—तुम तो इतनी बेरहम नहीं दीखती।

—आपका प्रश्न तो अपने इरादा हो जाता कि मैं अपनी पतिव्रता के लिए ठुकराई गयी थी या मैंने स्वयं तलाक की मांग की थी। जानती हूँ कि आपको इसका उत्तर मिल गया होगा।

—मैं इस बात के लिए शर्मिन्दा हूँ। शायद बहुत अधिक प्यार के कारण ही यह प्रश्न हुआ हो।—सालमा ने गम्भीर स्वर में कहा।

—जब प्यार हो तो फिर शक कैसे पैदा हो सकता है! मैंने अपने पति को इतना अधिक प्यार किया था कि कभी भी उस पर इस बात का शक नहीं किया कि शराब के बाद भी उसकी कोई संगिनी हो सकती है। मैंने उस शराब के लिए माफ कर दिया था। शराब जैसे कि मैं पहले ही कह आयी हूँ पत्नी की सबसे खतरनाक सौत होती है। उससे भी खतरनाक थी वह औरत जिससे बाज आना मेरे पति के लिए नितांत असम्भव था।

—आह! तो फिर तलाक पर अड़े रहने का यही तुम्हारा सबसे बड़ा कारण रहा होगा।

—शायद!

—सरस अभी अभी तुमने कहा था कि तुम अपने पति को बहुत प्यार करती थी।

—करती थी।

—बहुत? अब भी करती हो?

—यह बच्चा का सा प्रश्न क्या कर रहे हैं?

—मुझे कभी उतना प्यार कर सकोगी?

—आप ही सोचकर देखें।

—अगर सचमुच ही तुम मुझे बहुत प्यार करती हो तो इन पत्रों को फाड़ कर फेंक दो।

—नहीं, इन पत्रों को मैं नहीं फाड़ सकूंगी।

—इसलिए कि ये तुम्हारे पति की अमानत है? प्यार की निशानी?

—नहीं! केवल इसलिए कि मेरी बच्ची बड़ी होकर तलाक लेने की मेरी विवशता को समझ सके।

सालमा एकटक सरस को देखता रहा।

२७

—सच बात तो यह है कि मेरे पति को मेरी आवश्यकता कभी नहीं महसूस हुई थी।

—यह कैसे कह सकती हो जबकि अपने पत्रों में उसने यह लिखा है कि तुम्हारे बिना उसका जीवन श्मशान की तरह होगा।

—यह बात किसी दूसरे उद्देश्य से कही गयी होगी।

सरल की बात लालमन की समझ में नहीं आयी। वह उसे उसी तरह एक-टक देखता तो रहा पर उसकी बात का स्पष्टीकरण नहीं चाहा। उसके भीतर कोई दूसरा ही प्रश्न था। कुछ क्षण चुप रहने के बाद उसने पूछा—

—तुमने कभी कहा था कि अब तुम प्यार शब्द पर विश्वास नहीं करती। एक ही बार के धोखे पर तुमने ऐसा कहा था या इससे पहले भी किसी को प्यार करके धोखा खा चुकी हो ?

—अपने पति को छोड़कर मैंने कभी किसी को नहीं जाना। उसके बाद तो मैंने यह निर्णय किया था कि फिर से कभी किसी को प्यार करने की कोशिश नहीं करूँगी लेकिन बात कुछ से कुछ हो गयी।

—तब तो मुझसे प्यार करके तुम पछता रही होगी ?

—नहीं।

—तुम्हारा उत्तर इतना रूखा क्यों है ?

—आपको प्यार करके दुनिया की कोई भी औरत कभी नहीं पछता पायेगी।

—ऊटपटांग बातें क्यों करने लगी !

—औरत जब भी मर्द के सामने हृदय की सच्चाई रखती है उसे *उच्छृंखल* ही समझा जाता है। खैर, अब तो प्रश्न यह है कि अगर सचमुच ही आप मुझे बहुत चाहते हो तो आपको अपना प्यार बाँटना होगा।

—मैं तुम्हारा मतलब नहीं समझा।

—क्या यह सम्भव है कि आप मेरे साथ साथ मेरी बच्ची को भी उतना ही प्यार करें?

—उतना ही का तो वचन मैं नहीं दे सकता पर उसे भी हृदय से प्यार करूँगा इसका विश्वास करो।

—एक बात और। आपको शराब नहीं पीनी चाहिए।

—तुम्हें कैसे मालूम कि मैं शराब पीता हूँ?

—मैं नामी शराबी की पत्नी रह चुकी हूँ।—मुसकराती हुई वह बोली।

—मैं शराबी नहीं हूँ। अवसर पर पी लिया करता हूँ।

—शुरू में सभी अवसर से पीकर फिर रोज पीने लग जाते हैं।

—अगर तुम चाहती हो तो मैं शराब छुऊँगा भी नहीं। और क्या चाहती हो?

—और कुछ नहीं।

सरस को वचन देने के बाद लालमन ने अपने आप से प्रश्न किया कि कहीं शराब छोड़ना कठिन तो नहीं। उसे विश्वास था कि वह उसे छोड़कर रहेगा क्योंकि खुद वह उससे बचने का उपाय ढूँढ़ रहा था। अब तो बहाना मिल गया था। वह ख्यालों में ही था कि सरस ने कहा—

—आपके घर और [illegible] [illegible] आपको शुभ [illegible] [illegible] देंगे।

—तुम तो [illegible] से नहीं डरती!

—यहाँ डरने और न डरने की बात [illegible] है।

—जहाँ तक मेरे घर का प्रश्न है उसके लिए तुम क्या चिंता करती हो?

[illegible] के आ जाने पर [illegible] की बात [illegible] गयी। [illegible] के लिए [illegible] की कमी हो चली थी [illegible] तो यह पूछने आ गयी थी कि [illegible] [illegible] [illegible] रखा जाय। लालमन ने उससे कहा कि [illegible] [illegible] [illegible] कुछ ही घंटों में [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] मिल जायेंगे। लालमन सरस से [illegible] [illegible] [illegible] जा [illegible] रहा था कि [illegible] [illegible] [illegible] से [illegible] आवाज़ भी। मुड़कर देखा। रामजनम उसी की ओर [illegible] चला आ रहा था। पास आते ही उसने कहा—

—परमन [illegible] [illegible] मन में बहाना आ गया थी।

—क्या?

—[illegible] के [illegible] [illegible] [illegible]।

—अभी [illegible] [illegible]?

—[illegible] [illegible] [illegible] घर की ओर [illegible] और मैं आपकी ओर आ गया।

—[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।

देव ती को आवाज देते हुए लालमन ने कहा—

—देवती, तुम सभी काम सम्हाल लेना, मैं धरमेन को देखने जा रहा हूं।

रामजतन के साथ वह गांव की ओर दौड़ पड़ा।

धरमन के घर के सामने कोई दस पन्द्रह मजदूर खड़े थे। लालमन सीधे घर के भीतर पहुँचा। भीतर भी छोटी मोटी भीड़ थी जिनमें औरतों की संख्या अधिक थी। किसी तरह रास्ता पाते हुए वह धरमेन की चारपाई के पास पहुँचा। उसकी भाभी और मां उदास चेहरा लिये उसके सिरहाने खड़ी थीं। दोनों के चेहरे से साफ जाहिर था कि वे रो चुकी थीं। लालमन पर नजर पड़ते ही धरमन की मां फिर से रो उठी। उसकी ओर ध्यान दिये बिना लालमन धरमेन के चेहरे पर झुक गया। उसके माथे पर हाथ रखा। वह धधक रहा था। गरदन के पास की गिल्टियां फिर से ऊपर आ चुकी थीं। लालमन की उपस्थिति का पता धरमन को भी चल गया। उसने धीरे धीरे पलकें ऊपर उठायीं। अपने सूखे चेहरे पर एक नकली सी मुसकान लाते हुए उसने कहा—

—ये लोग नाहक मुझे बहुत बीमार समझ बैठे हैं।

—तुम सचमुच बहुत बीमार हो।

—बहुत बीमार आदमी बातें कम कर सकता है?

बाहर से मोटर के रुकने की आवाज आयी। दूसरे ही क्षण धरमन का भाई डाक्टर के साथ भीतर आ गया। डाक्टर अभी अच्छी तरह उसकी नब्ज देख भी न पाया था कि धरमेन ने मुंह को दूसरे हाथ से दबाये इशारे से बताया कि उसे ऊबकाई आ रही है। उसकी भाभी दौड़कर बरतन ले आयी। उसके आते ही धरमन ने वमन किया और डाक्टर ने अब छोड़कर उलटी के उस तरल पदार्थ को देखने लगा जिसका रंग हरा हरा सा था। अपने चेहरे के भाव को छिपाते हुए डॉक्टर ने कुछ मिनटों तक धरमेन के शरीर की जांच की और तब जल्दी जल्दी इंजेक्शन की तैयारी में लग गया।

कोई पन्द्रह मिनट बाद डाक्टर ने संकेत से धरमेन के भाई को बाहर बुलाया। लालमन भी साथ हो लिया। दूसरे कमरे में पहुंचकर डाक्टर ने सिर हिलाते हुए कहा—

—होपलेस केस!

—आप क्या कह रहे हैं, डॉक्टर?—धरमेन का भाई पूछ उठा।

—मैं सही कह रहा हूं। उसकी उलटी का हरा हरा रंग आपने देखा? वही सभी कुछ कह गया। इस तरह के मरीज की उलटी जब हरे रंग की हो जाये तब समझ लेना चाहिए कि अब कुछ नहीं किया जा सकता। मैंने सुई दे दी है, फिर भी दो-तीन दिन से अधिक उसका टिकना असम्भव है।

लालमन चुपचाप सुन रहा था पर धरमन के भाई की समझ में बात बिल

कुल नहीं आयी थी। विस्फारित नत्रों से उसने लालमन की ओर देखा। लालमन कुछ न कह सका। उसने अपने हाथ को धरमन के भाई के कंधे पर रख दिया।

कुछ मिनट बाद डाक्टर के चले जाने पर धरमन ने भाई की ओर देखते हुए धीरे से पूछा—

—डाक्टर ने क्या कहा ?

—कहा तुम बहुत जल्द अच्छे हो जाओगे।

—तुमने कभी नहीं सुना ?—एक अति कमजोर स्वर में धरमेन ने पूछा।

—क्या ?

—यही कि मरनेवाले से झूठ नहीं बोलते।

बगल में खड़ी उसकी माँ चिल्ला पड़ी। उसे धीरज बँधाते हुए लालमन ने कहा—

—इसे जोरों का बुखार है मौसी। ऐसी हालत में मुहँ से अनाप शनाप निकलना स्वाभाविक है।

धरमन की माँ और उसकी भाभी से डाक्टर की बात छिपाकर रखी गयी। लालमन को अब भी विश्वास नहीं हो रहा था कि डाक्टर ने चन्द मिनट पहले उसके सामने जो बात कही थी वह सच हो सकती है। एक लड़के से अपने घर उसने खबर भिजवा दी दिया कि धरमेन की हालत खराब होने के कारण वह रात वहीं बितायेगा।

कुछ घड़ी बाद जब धरमेन का बुखार कुछ कम हुआ तो उसने पानी माँगा। उसकी भाभी दूध ले आयी। धरमेन सिर हिलाकर इनकार करते हुए बोला—

—पानी !

—पानी तुम्हारे लिए ठीक नहीं।

—पानी ही लेती आओ, भाभी। हो सके तो जरा गरम कर देना।—लालमन बोला।

पाँच मिनट बाद वह गुनगुने पानी में नारंगी का रस मिलाये लायी। अपने तकिये के सहारे सम्भलकर बैठते हुए धरमन ने उसके हाथ से गिलास ले लिया और एक ही बार में उसे खाली कर दिया। उसे तृप्ति नहीं मिली थी फिर भी गिलास लौटाकर जीभ से अपने होठों को चाटता हुआ वह लेट गया। लालमन को गौर से देखने के बाद उसने लड़खड़ाई सी आवाज में कहना शुरु किया—

—यूनियन टूटने न पाये। मेरे बाद तुम्हीं उसकी आत्मा हो। मुझे विश्वास है मेरे बाद तुम मजदूरों के पथप्रदर्शक होगे। उनके हक की हिफाजत में तुम्हारे हाथ छोड़े जा रहा हूँ। यूनियन को मेरी धरोहर समझना। मजदूर बटने न पाए।

—डाक्टर ने तुम्हें अधिक बोलने से मना किया है।

लालमन की इस बात पर वह हँस दिया।

—और क्या कहा है डाक्टर ने ?

—कहा है तुम जल्द अच्छे हो जाओगे।

—बीमार होगा वह डॉक्टर जिसने ऐसा कहा होगा।

—तुम्हें क्या हो गया है बेटा, तुम इस तरह की उलटी सीधी बात क्यों कर रहे हो ?

—मा ! विमला दीदी को खबर भिजवाकर बुलवा दो। मैं उसे एक बार देखना चाहता हूँ।

—तुम्हारा भैया उसे लेने गया है—भराई आवाज में उसकी मा ने कहा।

धरमेन ने आँखें बन्द कर ली। उसके हृदय की धड़कनें तेज थी। पास में बैठे गौतम, किशोर और घनश्याम उसे एकटक देख रहे थे। कुछ देर बाद उसने आँखें खोली। चारो ओर देखा, फिर आँखें घनश्याम पर रुक गयी।

—अब पार्टियों में मैं भाग नहीं लूगा, घनश्याम।

—कौन कहता है नहीं लोगे ?

—जो नहीं लेगा।

—तुम्हें आराम की जरूरत है धरमेन ! अधिक बातें न करो।

—तुम लोग इतनी जल्दी मुझे चुप करना क्यों चाहते हो ? अभी तो समय है।

इसके बाद वह कुछ ऐसी बातें करता रहा जो किसी की समझ में नहीं आयी। कोई आधा घंटे बाद डॉक्टर की सूई ने अपना असर किया और उसे नींद आ गयी। सभी लोगों के चले जाने के बाद लालमन और घनश्याम वहीं बैठे रहे। काफी देर बाद धरमेन की भाभी उसकी बहन और बहनोई के साथ भीतर आयी। उसकी बहन रोती चिल्लाती भीतर आयी। लालमन ने धीरे से कहा—

—सो रहा है जाग जायेगा।

भाभी ने विमला को पकड़कर समझाया। चुप होकर वह धरमेन के सिरहाने पहुँची और पागल की तरह अपने भाई को अपलक देखती रही। उसकी आँखों के आँसू अब भी बहे जा रहे थे। अपनी मा से लिपटती हुई वह पूछ उठी—

—तुम लोगों ने हमें पहले खबर क्यों नहीं दी ?

—कुछ घंटे पहले तो अच्छा था। सभी कुछ एकाएक हो गया।

—वह शुरू से अब तक अपनी बीमारी को तुम लोगों से छिपाता आया। भाभी, तुम भी कुछ न जान सकी ?

भाभी की आँखों से भी आँसू बह चले।

आस-पास के लोग बारी बारी से आने जाने रहे। इस तरह की बीमारी सभी पहली बार देख रहे थे। डाक्टर ने बीमारी का नाम कारसीनोमाटोजिस

बताया था। जब भाभी भाग म प्रश्न किया गया कि यह कौन सी बीमारी है तो किसी को कहते सुना गया कि यह व सर ही जसी कोई चीज रहेगी। लालमन न जब कुछ घनिष्ठा को बताया कि धरमन बहुत दिनों स बीमार था तो कुछ ने तो इस बात का विश्वास नहीं किया क्योंकि किसी ने तो उसे कभी बीमार नहीं देखा था।

धरमन और घनश्याम न रात वहीं बिताई।

सुबह घर के सभी लोगों ने देखा कि धरमेन की हालत कुछ सुधरी हुई थी। उसकी माँ का सासा म राहत थी। उसकी भाभी और वहाँ न मन ही मन दवी मया को धन्यवाद दिया। चूल्हे जलाय गय और घर धीरे धीरे अपनी पुरानी रौनक पाने लगा। धरमन का ध्यान [redacted] देखते हुए उसके भाई न स्वयं को सात्वना दी और डाक्टर की सलाह मानने म अपने को विवश पाया।

धरमन से विदाई लेत समय लालमन न उसके होठों के बीच एक मुस्कान देखी। वह बड़ कठिन और मलिन मुस्कान थी। लालमन अभी चौखट के पास पहुँचा ही था कि धरमेन न करवट बदलते हुए पीछ स कहा —

—देखना लालमन पहुँचने म देर न कर देना।

—तुम चिंता न करो।

लालमन के मुह से यह वाक्य अपने आप निकल गया था जबकि धरमेन ने क्या कहा था वह बात उसकी समझ म नहीं आयी थी। रास्त भर वह उस बात का मतलब निकालते हुए चलता रहा। उसक सामने दो तरह की बात आँख मिचौनी सी खेल रही थी। वह दोनों सम्भावनाओं पर सोचता चल रहा था। न जाने कौन होकर रहेगी।

वह चलता रहा सभी कुछ भूलकर और धरमेन के बारे म सोचता हुआ। बीच बीच म सरम की याद खुद ब खुद आ जाती थी।

२८

गाँव भर में दो ही चर्चाएँ हो रही थीं। धरमेन की अकस्मात बीमारी या शहर में दंगा फसाद, ये दो बातें थीं जो सभी कर रहे थे। धरमेन की बीमारी पर सभी को हैरानी थी और शहर के हंगामे में सभी को चिन्ता। असंतुष्ट युवा वर्ग पथराव से अपने को संतोष प्रदान कर रहे थे। दिन दहाड़े दुकानें लूट ली जा रही थीं। तोड़ फोड़ और मार पीट! गाँव के लोग डर के मारे शहर नहीं जा पा रहे थे। बसें उलट दी गयी थीं। किसी मंत्री की मोटर में आग लगा दी गयी थी। पुलिस थाने को चकनाचूर कर दिया गया था। गिरजाघर और मस्जिदों पर भी पत्थर चलाये गये। किसी राजनेता का घर जला दिया गया।

लालमन को दोनों बातों की चिंता थी—धरमेन की बीमारी की भी और शहर की अशान्ति की भी। उसके अपने खयालों में भी खलबली थी। शहर के नौजवानों को भड़कते देख कहीं गाँव के नौजवान भी न भड़क उठें। अगर धरमेन उन्हें धीरज का पाठ न सिखाता तो वे बहुत पहले ही भड़क उठे होते। लालमन का मन खेत के कामों में नहीं लग रहा था। इसके तीन कारण थे—धरमेन की बीमारी, शहर की गड़बड़ी और सरस की गैरहाजिरी। कल रात सरस का बच्चा भी एकाएक बीमार पड़ गया था। दयन्ती के कहेनुसार इस समय उसे लिए सरस डॉक्टर के पास गयी हुई थी। लालमन के सभी खयाल इसी त्रिकोण के बीच बँधे थे। इस दायरे के भीतर वह अकुलाने लगा था। सरस अगर सामने होती तो शायद वह बाकी दो खयालों से कुछ क्षण के लिए छुटकारा पा सकता था।

कुछ मिनट पहले वह दयन्ती से बातें कर रहा था। उसकी बातों से तो यह आभास उसे हुआ था कि शायद कुछ देर में सरस भी पहुँच जायगी। आठ बजने को था और वह मन ही मन आस लगाये रह रह कर सामने की पगडंडी की ओर देख लेता था। मन ही मन वह सोच रहा था कि अगर दस बज

तब यह नहीं पहुँची तो उसके पास भी गम्भीरता नहीं रह जाती। पर यह सब
वक्त तक जरूर था जानती परमेसर का क्या दिमाग था। परमेसर की बीमारी
की खबर सुनकर तब यह सरला से भी अक्सर बातें नहीं कर सकता था। जी
भरकर बातें तो वह उससे कभी भी नहीं कर पाता। हर बार यह बात मस्तिष्क
में घूम जाती बातें जिस उसके पास पहुँचा था पर न जाने क्या उसके सामने
होते ही उसे मजाक हुई बातें ही सामने बातें उसके दिमाग में कपूर की तरह
उड़ जाती। यह सरला के व्यक्तित्व का आकर्षण था जिसके सामने वह सारी बातें
तो दूर यह सुध भी भूल जाता था। सामान्य भी उसने प्यार किया था पर
उसके सामने उसका क्या स्थिति कभी नहीं हुई था। नारी के प्रति यही
सबसे बड़ा अन्तर था।

उस दिन वह सरला से इसी ध्यान पर बातें कर रहा था कि परमेसर आ
गया था। सरला वहाँ से उठ गयी थी और परमेसर ने पूरी गम्भीरता के साथ
कहा था कि जनाब आपका भी उस योग्य में। परमेसर की उस बात से सामन्त
ने मन ही मन एक भय सा अनुभव किया था मानो यह आश्चर्य प्रसन्नता उसकी
अपनी थी। कुछ अधिक सुनने के लिए उसने परमेसर से पूछा था कि सरला उसे
कैसी लगती है और परमेसर ने हँसते हुए कहा था कि लाखों में एक।

वह परमेसर के बारे में सोचने लगा। सामन्त दुनिया के सबसे बड़े अनर्थ
की खबर सुनने को तैयार था पर परमेसर को कुछ हो जाने की बात को सुनने
के लिए वह अपने को तैयार नहीं कर पा रहा था। सचमुच ही परमेसर के सम्पर्क
में आकर उसके अपने भीतर भी मजदूरों और बेकारों के लिए कुछ करने की
अभिलाषा सी जागी थी। इधर कुछ दिनों से वह भी यही चाहने लगा था कि
मजदूरों के लिए वह कुछ करेगा। आन्दोलन से पहले और प्रदर्शनी के बाद वह इसी
नतीजे पर पहुँचा था कि उसके इस छोटे से विशाल देश में हर क्षेत्र में कुछ
न कुछ हुआ था। सभी के लिए सभी कुछ हुआ था, केवल देश के मजदूर थे
वे जिनके लिए बहुत कम कुछ हुआ था। पहले भी उसने इस तरह की बात
सोची थी और वह सोचकर अपने को असमर्थ पाता था कि उसके करने से क्या
हो सकता था। यूनियन की ताकत देखने के बाद उसे अपनी हीनता पर विजय
प्राप्त हो गयी थी। वह अकेला नहीं था वह मजदूरों के साथ था और मजदूर
उसके साथ थे। अब उसे पूरा विश्वास हो चला था कि यह नया साल मजदूरों
का साल होगा। कोई भी मजदूर अब राजनेताओं के बहकावे में आने को तैयार
नहीं था। बार बार के झूठे दिलासे से तंग आ गये थे वे। उनके हर सवालों
का हमेशा यही जवाब मिलता था कि बाद में देखा जायगा लेकिन अब यह बात
पुरानी हो चली। उनका जो हक है उन्हें मिलना है वह इसी क्षण मिलकर रहेगा।
अभी नहीं तो फिर कभी नहीं। ये परमेसर के नारे थे जिससे सचमुच ही सरकार

सचमुच ही किसी महाजन से उधार लेना था या यह मात्र उलझन था ? इसका उत्तर उसके पास नहीं था। यह इच्छा न हुई [illegible] में [illegible] है [illegible] उसके मन में यह नहीं आया कि उसका अधिकार था [illegible] [illegible] [illegible] आवश्यकता थी। [illegible] पच्चीस और दस पचास [illegible] उसकी शक्ति का प्रदर्शन करता उसकी नजरों में नाराजगी के सिवाय और कुछ भी नहीं था।

पगडंडी अब भी सूनी पड़ी थी। सरस का कहीं भी कोई नामोनिशान नहीं था फिर भी वह आगे नहीं बढ़ सका। [illegible] उसके [illegible] फिर बिखर गये थे। [illegible] उसके मन ही मन [illegible] कि क्या [illegible] अथवा गाँव में पहुँचने की काफी बहुत सम्भावना भी जाती रही। [illegible] लालमन फिर से उसी स्थान पर आ गया [illegible] अधिक देर तक [illegible] रही थी। कोई घंटे बाद वह हताश होकर [illegible] की ओर बढ़ने वाला था कि तभी पगडंडी के दूसरे छोर पर उसकी नजर आकृति दिखी। धीरे धीरे आकृति स्पष्ट होती गयी और लालमन को पहचानते देर नहीं लगी कि वह सरस थी। सरस जिसे वह हजारों में पहचान सकता था।

कोई दस मिनट बाद सरस उसके सामने था। लालमन को उससे जो पूछना था वह न पूछकर उसने शिष्टाचार के नाते पूछा—

—कैसा है तुम्हारा बच्चा ?

—कुछ अच्छा है।

—क्या कहा डाक्टर ने ?

—ठंड लग गयी है।

—दवाई के लिए तुम्हारे पास पैसा था ?

—था तो नहीं पर मिल गया था।

—दूसरों से माँगने की हिम्मत तुम्हें हो गयी और मुझसे नहीं।

वह चुप रही। लालमन ने पूछा—

—कितना खर्च आया ?

—बहुत अधिक नहीं।

—फिर भी

—आपको विश्वास था कि मैं आऊँगी ?

—मैं खर्च के बारे में पूछ रहा हूँ सरस।

—कहा न बहुत अधिक खर्च नहीं हुआ।

—फिर भी जो कुछ खर्च हुआ है उसके बारे में मैं जानना चाहता हूँ।

—यही कोई बीस रुपये।

—अगर तुम मुझे बीस रुपये के लायक समझती तो यह पैसा किसी गैर से न लेकर मुझ से माँगती।—यह कहकर लालमन ने जेब से पचीस रुपये

निकालकर सरस की ओर बढ़ा दिए ।

—अब पैसों की क्या आवश्यकता है ?

—लौटाने के लिए दे रहा हूँ जो मैंने तुमसे उधार लिया है ।

—नहीं ।

—नहीं क्यों ?

—आप उसकी चिन्ता न करें । मैंने दो महीनों की मुहलत पर पैसा दिया है ।

—समय से पहले लौटाने से क्या बिगड़ता है ?

—इस बार जब आवश्यकता पड़ेगी तो मैं अवश्य आपसे माँगूँगी ।

—माँगोगी तो दे सकती हो ?

—मैं इसकी जरूरत नहीं समझती ।

—मैं तो पराये से भी गया गुजरा हूँ ।

—आप गलत न समझें ।

लालमन के बार बार अनुरोध पर भी सरस ने पैसा नहीं लिया । नोट अपनी जेब में रखते हुए लालमन ने हारे हुए खिलाड़ी की तरह सरस की ओर देखा । सरस अपने कामों में लीन थी । लालमन उसे देखता रहा । सरस को समझना उसके लिए उतना आसान नहीं था ।

वातावरण एक बार फिर धुंधला हुआ और बादल पहली बार की तरह फिर से बिखर गये । सूरज फिर से चमकने लगा था पर मौसम ठंडा होने के कारण उसमें उष्णता की कमी थी । बाजार में सब्जियों की कीमत काफी अच्छी थी । यही कारण था कि सब्जी के खेतों में काम करने वालों के शरीर में अजीब स्फूर्ति थी । एक एक पैसा अधिक के लिए एक एक बूंद का अधिक बहाया जा रहा था । कुछ ही क्षण पहले के लालमन के सुस्त शरीर में भी स्फूर्ति आ गयी थी ।

कोई घण्टे भर बाद सरस बाड़े के नीचे बैठी कमर सीधी कर रही थी । देवकी के पास से होता हुआ लालमन उसके पास पहुँचा । वह भी सामने के बन्ध में पत्थर पर बैठ गया । वह बात शुरू करने की सोच ही रहा था कि सरस कह उठी—

—आपसे कुछ पूछना चाहती हूँ ।

—पूछो ।

—बुरा तो नहीं मानेंगे ?

—मुझे तो मालूम भी नहीं कि तुम क्या पूछोगी ।

—एक ऐसा प्रश्न जो कई दिनों से मेरे दिमाग में है ।

—अब तक क्या नहीं पूछा ?

—इस डर से कि कहीं आप बुरा न मान जायें ।

—मैं बुरा नहीं मानूँगा ।

—मैं मामा के बारे में पूछना चाहती हूँ।

एक क्षण चुप रहकर लालमन ने कहा—

—मामा के बारे में क्या पूछोगी ?

—आप उसे बहुत प्यार करते थे न ?

—हां।

—बहुत अधिक ?

—उतना नहीं जितना तुमसे करता हूं।

—मुझे खुश करने के लिए कह रहे हैं ?

—सच्चाई कह रहा हूं।

—आप जब उसे बहुत प्यार करते थे तो फिर आपने उसे अपनाने की कोशिश क्यों नहीं की ?

लालमन के पास उत्तर नहीं था। सरस ने अपने प्रश्न को दोहराया और लालमन से चुप नहीं रहा गया। नीचे से एक कंकड़ उठाकर उससे खेलते हुए उसने कहा—

—जो असम्भव हो उसके लिए निष्फल प्रयत्न से क्या लाभ ?

—मामा और आपका एक होना असम्भव था।

—हां।

—तो फिर हमारे सम्बन्ध के बारे में आप क्या कहेंगे ?

लालमन को फिर से कोई उत्तर नहीं सूझा। सिर झुकाये वह अपने हाथ के कंकड़ से खेलता रहा। सरस ने देखा कि जब लालमन से कोई उत्तर नहीं बन पड़ रहा है तो उसने धीरे से कहा—

—मैं तो मामा से भी कठिन सवाल हूँ।

लालमन इस बात को नकार नहीं सकता था। पहली बार उसने महसूस किया कि वह दुनिया का सबसे कमजोर इन्सान ठहरा।

२९

सरस के घर से निकलकर लालमन ने अपने घर का रास्ता लिया पर फिर न जाने क्या सोचकर उसने रास्ता बदल लिया था। समुद्र की ओर जाने वाले रास्ते पर चलते हुए वह पहले की सभी बातों को अपने मस्तिष्क के किसी कोने में हमेशा के लिए बन्द कर देने का उपाय ढूंढ रहा था। उन क्षणों को वह सजोकर रखना चाह रहा था। सरस के यहां पहुंचने से पहले उसे यह मालूम नहीं था कि सरस उसे घर पर अकेली मिलेगी। जब उसे मालूम हुआ था कि सरस घर पर अकेली थी तो वह डर सा गया था लेकिन सरस के चेहरे की आमन्त्रणभरी मुसकान को देखकर उसे साहस प्राप्त हो गया था और अपने भीतर के भय को हटाकर वह भी निर्भीकता से मुसकरा उठा था।

इस समय समुद्र की तरंगों की आंखमिचौनी खेल को देखते हुए वह सपने से प्रतीत होने वाले उन क्षणों को फिर से साकार करने के प्रयत्न में लगा हुआ था। सचमुच ही जो कुछ हो गया था वह सपना सा प्रतीत हो रहा था। सरस अपनी सभी सरसता के साथ उसके करीब आयी थी और लालमन ने उसकी आंखों में जो आभा देखी थी वह प्यार से लबालब थी। लालमन कुछ भी नहीं समझ पाया था और फिर अपने आप सभी कुछ समझ गया था। जिस समय सरस ने यह कहा था कि वह [illegible] अपने को अपने विश्वास और भाग्य के सहारे छोड़ रही थी उस समय वह लालमन की बाहों में थी। उसकी बन्द आंखों के भीतर की मूक भावनाओं को समझने की लालमन ने कोशिश की थी और उसके फड़कते होठों पर अपने कांपते होठों को रख ही दिया था।

कोई घंटे बाद जब लालमन उसके घर से निकलने लगा था तो सरस ने सहमी हुई आवाज में कठिनाई से कहा था—

—मुझे डर लग रहा है।

—किस बात का ?

—जो कुछ हुआ।

—जो कुछ हो गया उसके लिए क्या ?

—ऐसा नहीं होना चाहिए था।

—आखिर क्यों ? पछता रहे हो ?

—जिस बात से मैं डरती हूँ अगर वह सच हो गयी तो फिर

—तो फिर क्या हो जायेगा ?

—अनर्थ हो जायेगा। मेरी बदनामी होगी।

—अनर्थ से पहले तुम मेरी बन जाओगी।

—यह पाप रहा है।

—और और क्या ?

—अगर पाप है तो क्या नहीं करना।

—मैं भी नहीं कहूँगा जो मैं कहूँगा।

यह बात कह जाने पर भी लालमन को उसके सच होने का कम विश्वास था पर अविश्वास भी नहीं था उसे।

वह इन बातों से पहले की बातों के बारे में अधिक ध्यान से सोचना चाहता था। ये बातें जो इन बातों से पहले हुई थीं अनहोनी भरी बातें थीं। वह खुमारी अब भी उसके भीतर थी। सामने की उफनती लहरों में भी वह उस खुमारी को पा रहा था। इसी तरह का उन्माद उसके अपने भीतर भी पैदा हो गया था। विद्रोही लहरों की तरह उसकी धमनियों का खून भी मचल उठा था और उसने सरस को एक औरत के रूप में पाया था और अपने को एक सम्पूर्ण मर्द के रूप में। अपने में पौरुष की सम्पूर्णता पाने का यह उसका पहला अवसर था।

उसके दिमाग में उस दृश्य की पुनरावृत्ति हुई और होती रही। सामने का सागर उफनता रहा। वह भी ऊपर से शान्त दिखाई पड़ते हुए भी भीतर ही भीतर उफनता रहा। एक खलबली के मिट जाने पर भी वह शान्त नहीं हो पाया था। उष्णता के बाद की वह क्षणिक शीतलता न जाने फिर कहाँ गायब हो गयी थी और वही अकुलाहट पैदा कर देने वाली गर्मी फिर से उसकी धमनियों में कौंधने लगी थी।

उसने फिर से एक बार सोचा। मामा और सरस दो अलग चीजें थीं। सामान्य रूप से दोनों औरत थीं और औरतें होते हुए भी दोनों में भिन्नता थी। जमीन आसमान का फर्क। सरस को जाने बिना लालमन कभी भी यह नहीं जानता कि औरत औरत में इतना बड़ा अन्तर हो सकता है। मामा में औरत की खासियत तो थी मगर वह सम्पूर्णता नहीं थी जो सरस में थी। सरस तुम साक्षात प्यार हो—उसने लहरों से कहा और लहरें उसकी हँसी उड़ाकर किनारे

बिलकुल बदरंग, बेकार।

वह उन खेतों चट्टानों से आगे बढ़ता गया। तीन साल से सब्जी लगाये चट्टानों पर बह रहे थे। इन तालाबों की तरह बरसातियों के रास्ते भी उतरी आंखों में झांकता था। इन जोहड़ों में मछलियों की भरमार रहती थी, बिकता था तो वह यह जिन्दगी भाग्य ... अवश्य मानने को कभी तैयार नहीं हुए। उन्होंने हमेशा भाग्य को मानकर ... मछलियों का शिकार किया है और ... पर भाग्य का ... आयी । तरकारी भर मिल जाने पर ... हमेशा से ... हो गया है। पर छोटी सी मछली के लिए इस तरह खास ... लालमन अनभिज्ञ नहीं था।

वह चट्टानों में भी आगे बढ़ गया। रास्ता छोड़कर वह दोनों तरफ के खेतों के बीच की पगडंडी पर चलने लगा था। गांव की औरतें सिर पर घास का बोझ लिये सम्भाली ... घर लौट रही थीं। इधर उधर चक्कर काटने के बाद लालमन अपने घर में पहुंच गया। आधा घंटा तक चलने के बाद तब वहां रहने के बाद वह घर की ओर चल पड़ा।

उसके घर पहुंचते ही प्रभा ने तपाक से पूछा—

—तुमने कुछ सुना?

प्रश्न सुनकर लालमन चौंक सा उठा। पहला बार उसे घबराहट सी आयी।

—क्या?

—सचमुच तुमने नहीं सुना?

—मैं क्या जानूं तुम किस बारे में बात कर रही हो?

—भामा लौट आयी है।

—क्या कहा?

—भामा लौट आयी है। उसके ससुरालवाले उसे छोड़ गये।

—हमेशा के लिए?—अस्पष्ट स्वर में लालमन ने पूछा।

—हां।

—पर ऐसा क्यों?

—कारण तो मालूम नहीं।

—कब आयी?

—आज ही सुबह।

प्रश्नों की भरमार से लालमन का सिर चकरा उठा। पहले तो उसे प्रभा की बातों पर विश्वास नहीं हुआ पर फिर बात उसे असम्भव भी नहीं लगी। वह अपने दिमाग के हर कोने में भामा के लौट आने का कारण ढूंढता रहा। कहीं इसका कारण वही तो नहीं पर नहीं इस बात का भय उसे क्या

होने लगा। मामा को प्यार करके भी उसने कभी कोई ऐसी हरकत नहीं की जिससे वह ससुराल से ठुकराई जा सकती थी। जिस मामा के बारे में कुछ दिनों से सोचना उसने एकदम बन्द कर लिया था वही मामा इस समय उसके दिमाग में चक्कर काटने लगी थी। मामा के ससुराल से निकाले जाने का कारण जानने के लिए वह बेताब हो उठा। विवाह के तीन सप्ताह बाद किसी लड़की का घर से निकाले जाने की बात उसकी समझ में नहीं आयी।

काफी देर तक तर्क के बाद लालमन घर से निकल पड़ा। रास्ते भर वह तय करता रहा कि ऐसी हालत में मामा के घर पहुँचना उसके लिए उचित था या नहीं। पर बात तो उसके घर पहुँचने की नहीं थी। भगत के यहां भी वह उससे मिल सकता था। क्या इस वक्त उससे मिलना उसके लिए ठीक रहेगा? इसी उधेड़बुन में कदम उठाता वह बनुवा भगत के घर के सामने पहुँच ही गया। उसकी आँखें मामा के घर की ओर थीं। पर जब उधर कोई दिखाई नहीं पड़ा तो फिर धनुवा भगत के बरामदे तक पहुँचकर उसने भगत को आवाज दी। भगत हाथ में चिलम लिये सामने आ गया।

—भला तुम्हारे आने की बात मैं नहीं जानता तो और कौन जान सकता था?—मुँह और नाक दोनों से धुआँ छोड़ते हुए भगत ने कहा।

—तुम्हारी याद आ गयी चाचा।

—झूठ क्या बोलते हो लल्लू! मेरी याद किसी को क्या आने लगी? यह तो बताओ कि तुम्हें कैसे मालूम हुआ कि वह लौट आयी है?

—कौन लौट आयी है?—अनजान बनते हुए लालमन ने पूछा—

—अरे मेरे सामने क्या अनजान बनने लगे? क्या तुम्हें मालूम नहीं कि मामा लौट आयी है?

—मुझे कैसे मालूम होगा?

—तुम गाँव में नहीं रहते हो क्या? खैर भीतर तो चलो।

दोनों घर के भीतर पहुँचे। लालमन अभी अच्छी तरह बैठ भी नहीं पाया था कि बीच कमरे के कोने के झिलमिल पुराने परदे को हटाती हुई मामा सामने आ गयी।

—अच्छे तो हो न?

लालमन से कोई उत्तर नहीं बन पड़ा। वह एकटक मामा को देखता रहा। तीन सप्ताह में मामा कुछ से कुछ में बदल गयी थी। उसके चेहरे का रंग उड़ गया था। बीमार सी प्रतीत हो रही थी वह। लालमन अगर उसे कहीं और देखता तो पहचानता नहीं।

—मैं बदल गयी हूँ न?—एक सूनी मुसकान के साथ मामा ने पूछा।

—तुम कब आयी?—आखिर लालमन पूछ सका।

—ग्राज ही सुबह ग्रायी हूँ ।

—कब तक रहोगी यहाँ ?

—जब तक मौत न ग्रा जाय ।

—ऐसा क्या कह रही हो ?

—सच कह रही हू ।

—भगडकर ग्रायी हो ?

इतने म धनुवा भगत न कहा—

—मई मुझस पूछो मैं बताता हूँ ।

—बात क्या हुई है ?

—बात यह हुई है कि इसके पति के किसी सम्बन्धी को यह बात मालूम थी कि तुम दोना एक दूसरे को प्यार करते थ । शादी स पहल उस सम्बन्धी न तो यह बात नही कही पर पिछल दिनो एक मुर्गी क कारण हुए भगड क दौरान उसने गाव क सभी लोगो को सुना दिया कि शादी से पहल मामा तुम्हारी कुछ लगती थी । बस इसे कलमा कहकर घर स निकाल दिया गया ।

—इतनी सी बात के लिए ?

—इतनी सी बात क लिए तो इससे भी बडे काण्ड हुए हैं ।

—पर यह तो ग्रन्याय हुग्रा ।

—कौन पडता है न्याय ग्रौर ग्रन्याय के चक्कर म ?

मामा की हालत को देखकर लालमन के भीतर बीत हुए भाव फिर स सजीव हो गय थे ।

सरस से बिना कुछ कहे ही लालमन उसके घर न पहुँचकर अदालतवालियों के साथ ना मिला था और सरस आखिरी वक्त तक उसका इन्तजार करती रह गयी थी। शाम की पिछली बस से लौटते हुए लालमन ने चाहा था कि एक बार सरस से मिल ले पर यह सोचकर कि इस वक्त मिलने से क्या लाभ जब सभी लोग घर पर होंगे। वह उससे बातें भी तो नहीं कर सकता था। सुबह खेत में मिलने की बात सोचकर वह अपने घर की ओर बढ़ गया था कि तभी उसे यह खबर मिली जिसे सुनते ही वह धरमेन के घर दौड़ पड़ा था।

धरमेन के घर आस पास के बहुत से लोग जमा हो गये थे। धरमेन की चारपाई के पास पहुँचकर लालमन ठिठक गया। इस बार उसका विश्वास जवाब दे चुका था। उस पर नजर पड़ते ही धरमेन की भाभी ने भर्राई हुई आवाज में कहा—

—सामने आ जाओ लालमन। न जाने कब से धरमेन लगातार तुम्हारे ही बारे में पूछ रहा है।

लालमन का नाम सुनकर धरमेन ने पलकें ऊपर उठाईं। उन बेजुबान आँखों ने लालमन को अपने पास बुलाया।

धरमेन की एकाएक बिगड़ी हालत को देखते हुए लालमन ने उसके भाई से पूछा—

—कब से इसकी यह हालत है?

—बारह बजे से।

वह धरमेन के बिलकुल पास पहुँचकर चारपाई के एक हिस्से पर बैठ गया।

—क्या बात है धरमेन? तुम मुझे ढूँढ रहे थे?

सिर हिलाकर धरमेन ने हामी भरी।

जो होना था वह होकर रहा।

धरमेन को अस्पताल की चारपाई पर रखा गया। उसकी पलकें खाली। अपने भाई को देखा, फिर लालमन को। कुछ बोलना चाहा—शब्द जीभ पर आवाज बाहर नहीं आयी। उसने दोबारा प्रयत्न किया और इससे पहले कि परिचारिका उसके पास पहुँचती उसके मुँह से एक शब्द निकला।

—मां!

और उसने आँखें मूँद लीं। हमेशा के लिए। उसका भाई बच्चों की तरह रो उठा। लालमन का कंठ अवरुद्ध था। अपने निचले होंठ को दाँतों से दबाये वह धरमेन की लाश पर झुक गया और उसकी आँखों में आँसू की दो बूँदें धरमेन के गाल पर टपक पड़ीं। वे प्रथम आँसू एक मित्र के थे। किशोर और घनश्याम केबिन से बाहर थे।

और लालमन यह मानने को विवश हो गया कि उसे अपने में कठोरता का जो दावा था वह मिथ्या था। अगर सचमुच वह कठोर होता तो सभी के सामने वह बच्चों की तरह सिसकियाँ नहीं लेता रहता। इस तरह अपने में जिस कठोरता का दावा उसने किया था वह धरमेन के साथ चल बसी। एक ओर धरमेन की अरथी को पकड़े उसकी माँ, भाभी और बहन चिल्ला रही थीं और दूसरी ओर लालमन एक कोने में अपने आँसुओं को बहाये जा रहा था। उसकी सिसकियाँ पिघलकर बहने लगी थीं।

धरमेन की राख के ठंडी हो जाने पर भी लालमन से भुलाया नहीं गया। उस विलाप की लाख कोशिश करके भी अभी असफल रह गयी थी। लालमन के लिए धरमेन की मृत्यु इतनी असहाय की जान तो नहीं थी जितनी की गाँव वालों और मजदूरों के लिए थी क्योंकि पहले ही से उस पर विश्वास न करते हुए भी इस उसको थोड़ा बहुत आभास मिल ही गया था। वह मृत्यु आश्चर्य न होकर भी लालमन के मन की शान्ति को भंग कर गयी थी। धरमेन उस एक आन्दोलन का अकेला जिम्मेदार छोड़कर चला गया था। उसे अपने ऊपर के विश्वास पर सन्देह होने लगा था। अगर वह अपने में कोई कमजोरी महसूस करता तो वह थी अंग्रेजी और फ्रेंच से उसकी अनभिज्ञता। इन दो भाषाओं की अगर उसे जानकारी होती तो वह धरमेन द्वारा भावी काम को पूरे आत्मविश्वास और कुशलता से निभा सकता था। इतने पर भी वह निराश नहीं था क्योंकि उसे उन दोस्तों और व्यक्तियों पर विश्वास था जो अब तक सभी कामों को सम्भालते आ रहे थे। उस दिन उन लोगों ने तो उससे कहा था कि वे सभी कामों को पहले से अधिक लगन के साथ करेंगे और सभी यही चाहते थे कि लालमन उनका मुखिया रहे। आदेश देना लालमन का काम होगा और मैदान में कूदना उन लोगों का।

लालमन इस बात को समझता था कि मजदूर आन्दोलनकारी उस पर इतना विश्वास करते हैं, तो इसका एक कारण तो यह था कि वह विश्वास धरमन ने उस पर किया था। धरमन के बाद यूनियन उसे धरमन का दूसरा रूप मानने लगी थी। धरमन की मृत्यु के तीसरे दिन यूनियन की ओर से जो शोक सभा हुई थी उसमें सभी सदस्यों ने एक साथ लालमन को अपना नेता करार दिया था। शोकसभा में तो सबने आपस में यही तय कर लिया था कि धरमन मरा नहीं। यूनियन और मजदूर आन्दोलन के रूप में वह हमेशा सभी के बीच जीवित रहेगा और जब तक लालमन आन्दोलन के साथ रहेगा तब तक तो यह कहना मूर्खता होगी कि धरमन हमारे बीच नहीं है।

इस बात का पता तो लालमन को बाद में चला कि मृत्यु से पहले यूनियन की कार्यकारिणी समिति के कुछ प्रमुख सदस्यों से धरमन ने वचन ले लिया था कि वे लालमन को अपना नेता बना लें। जिस तरह और के सब तरह से लोग यह मानने को तैयार नहीं थे कि धरमन आज उनके बीच नहीं, ठीक उसी तरह लालमन को भी हर घड़ी ऐसा ही आभास होता कि धरमन उसके अन्त के किसी अदृश्य ठौर से हर कामकाज का निरीक्षण कर रहा है। धरमन की मृत्यु के बाद आश्चर्य की जो बात हुई वह यह थी कि उसी दिन से उसके कुत्ते को किसी ने नहीं देखा। लाख खोजने पर भी वह कुत्ता कहीं नहीं मिला। अरथी के साथ लगातार चलते उसे सभी ने देखा था पर लौटते किसी ने नहीं देखा।

शाम को लालमन सभा से लौट रहा था कि रास्ते में धनुवा भगत अपने साथ दो व्यक्तियों को लिए उसके सामने आ खड़ा हुआ। गुलमोहर के पेड़ के नीचे सारे व्यक्ति आ खड़े हुए। पूछने पर भगत ने बताया कि उसके साथ के दोनों आदमियों को कोठीवाल ने काम से बाहर कर दिया है। और जब लालमन ने कारण पूछा तो उन दोनों में से एक ने बताया कि वे लोग यूनियन में भरती हुए हैं इसलिए। लालमन ने इसे कोई कारण नहीं माना। उसने दोबारा पूछा और तब दूसरे ने बताया कि कोठीवाल गोरे ने उन्हें कहा था कि वे हस्ताक्षर करके काम न लें पर चूँकि दोनों ने उसकी धमकियों की कोई परवाह किए बिना हड़ताल में हिस्सा लिया था इसीलिए तभी से वह उनके कामों में नुक्ताचीनी करता आ रहा था। इधर पिछले दिनों सरदार से दोनों की तकरार हो जाने के कारण उसे मौका मिल गया और उसने दोनों को कह दिया कि वे कल से काम पर न आएँ।

सभी कुछ सुनने के बाद लालमन ने उन दोनों से कुछ और प्रश्न किए और तब कहा कि इन बातों के लिए किसी भी हालत में वह दोनों को काम से नहीं हटा सकता। उसने बात पर जोर देते हुए कहा कि यह अधिकार किसी को भी नहीं मिलता। उसने दोनों से कहा कि वे कल शाम यूनियन के मन्त्री

से मिलकर अपनी शिकायत उनके सामने रखे। वह अपनी ओर से एक बैठक बुलायगा और जल्द ही इस बारे में छानबीन करके वह मामले को सुलझाकर रहेगा। दोनों को आश्वासन देते हुए उसने कहा कि वे चिंता न करें, उनके काम उन्हें मिलकर रहेंगे।

दिलासा पाकर दोनों वहाँ से चले गये और भगत लालमन के साथ उसके घर की ओर चल पड़ा। रास्ते में कुछ इधर उधर की बातों के बाद उसने कहा—

—मामा तुमसे मिलना चाहती है।

कुछ दूर तक चुपचाप चलते रहने के बाद लालमन ने पूछा—

—क्यों?

—शायद तुमसे कोई जरूरी बातें करनी हों।

—चाचा एक बात कहूँ?

—मामा से मिलने को अब तुम्हारा जी नहीं करता?

—नहीं यह बात नहीं।

—तो फिर क्या बात है?

—मुझे उसकी इस हालत पर दया आने लगी है।

—दया तो उस पर मुझे भी आती है लालमन पर क्या करें? उसके बाप के चलते उसकी जिन्दगी तबाह हुई है। अब तो वह पैरों से रौंदे हुए फूल की तरह लगती है। इतने कम समय में इतना बड़ा परिवर्तन मैंने कहीं नहीं देखा।

—कैसा आदमी होगा वह ?

—खैर लालमन मुझे तुमसे एक बात पूछनी है।

—पूछो।—लालमन ने अनचाहे से कहा।

—क्या तुम मामा को अब भी प्यार करते हो?

लालमन चुप रहा। रास्ते के एक गुलमोहर के पेड़ से दूसरे गुलमोहर तक पहुँचने के बाद लालमन ने भगत के प्रश्न का छोटा सा उत्तर दिया—

—हाँ चाचा।

—उतना ही जितना पहले करते थे?

—यह कहना शायद कुछ कठिन हो।

—मामा तुम्हें आज भी उतना ही चाहती है।

—वह कह क्या रही थी?

—उसके भीतर एक नयी आशा है लालमन।

—किस बात की?

—फिर से एक बार तुम्हारी बनने की।

—तुम इसे सम्भव समझते हो?—लालमन ने भगत की ओर देखते हुए पूछा।

—सम्भव और असम्भव की बात तो तुम्हारे बस की बात हुई ।

—मैं तो अब इसे असम्भव समझता हूँ ।

—इसलिए कि सरस को तुम अधिक महत्त्व देने लगे हो ?

—और भी कारण हो सकता है ।

—मैं तुम्हारे और कारणों को सुनना तो नहीं चाहता पर इतना अवश्य कहूँगा कि अब उसे तुम्हारी जरूरत पहले से भी अधिक है ।

—आपको एक बात का ख्याल करना चाहिए ।

—क्या है वह बात ?

—शामा को प्यार करके भी मैंने कभी भी उसे अपना बनाने का वचन नहीं दिया ।

—तो तुम्हारा मतलब है कि सरस को तुम ऐसा वचन दे चुके हो ?

लालमन चुप रहा और उसकी वह चुप्पी भगत के प्रश्न पर हामी भरती सी प्रतीत हो रही थी । लालमन और कुछ न समझकर केवल इतना समझ रहा था कि शामा को उसकी आवश्यकता थी जब कि उसे सरस की आवश्यकता थी ।

अपने घर तक के बाकी रास्ते को यन्त्रचालित मानव की तरह चलकर उसने तय किया ।

३१

लालमन को खोये खोये से देखकर सरस उसके पास आ गयी। अपने माथे के पसीने को बाह से पोछती हुई वह उसे देखती रही। लालमन को इस बात का पता तक नही चला था कि सरस उसकी बगल म खडी थी। उसे मिनटो तक उसी तरह खोये देख सरस उसके आगे चली आयी। लालमन की तन्द्रा भग हुई और उसने सरस की ओर देखा। इससे पहले कि सरस कुछ पूछती वही पूछ बठा—

—तुम मुझस नाराज हो न ?

—नही तो।

—मुझसे दूर दूर क्यो रहती हो ?

—दूर मैं आपस हूँ या आप मुझसे ?

—उस दिन का बदला लेती सी लग रही हो।

—किस दिन का ?

—जब तुम्हारे पास न पहुँचकर मैं मछुआ के साथ चला गया था।

—आपने तो जिसे अधिक महत्वपूर्ण समझा उसे ही किया।

—प्रश्न महत्त्वपूर्ण का न होकर कुछ और ही था सरस।

—कुछ भी हो मुझे तो आपसे कोई शिकायत नही।

कुछ क्षण बाद सरस ने खामोशी तोडी।

—मैंने आज तक आपके सामने अपने भीतर की सभी सच्चाई को रख दिया है।

—मैं जानता हूँ पर यह क्या कह रही हो ?

—मैं नही चाहती कि आप मुझसे कुछ छिपायें।

—मैंने तो तुमसे कुछ भी नही छिपाया।

—छिपायगे तो नही ?

—क्यो छिपाऊँगा ?

—मामा के वापस आ जाने से आपका पुराना प्यार फिर से सजीव हो गया होगा न ?

—नही सरस, मैं जो प्यार तुम्हे करता हूँ वह किसी को नही कर सकूगा।

—पुरानी यादें !

—तुम्हारी पुरानी यादो की तरह धूमिल पड गयी है।

—लेकिन एक बात है।

—कौन सी बात ?

—कुछ भी हो मामा का स्थान मुझसे पहले है।

—कभी था। पर यह क्या भूल रही हो कि शादी के बाद वह मेरे जीवन से निकल गयी थी और जब लौटी उस वक्त तुम उससे पहले मेरे जीवन मे आ चुकी थी।

काफी देर तक दोनो के बीच बातें होती रही। फिर कुछ देर बाद अपनी जगह से उठते हुए लालमन ने कहा कि उसे यूनियन की एक जरूरी बैठक मे पहुचना है और उसने एक मुसकान के साथ सरस से विदाई ली।

वह सीधे बैठक मे पहुँचा। वहा पहुँचकर देखा कि जिन लोगो को आना था वे सभी आ चुके थे। घंटे भर की बहस के बाद सभा ने यह तय किया कि कोठी वाले ने जिन पचहत्तर मजदूरो को नौकरी से अलग किया है, उन सभी को अगर सात दिन के भीतर काम पर वापस नही लिया गया तो उत्तर प्रान्त के सभी मजदूर हडताल कर देंगे। इस बात की सहमति के बाद भी एक दो सदस्यो ने सदेह प्रकट किया कि अगर दूसरे गाँवो के मजदूर धमकियो मे आकर सहम गये तो हडताल की सफलता अनिश्चित ठहरी। इस पर लालमन ने कहा कि पिछली बार भी मजदूरो के सगठन पर जोर दिया गया था वह बात ठीक नही। यूनियन के सदस्य आसपास के सभी गाँवो मे हैं और सभी सशक्त हैं। उसने विश्वास दिलाया कि अगर हडताल की नौबत आये तो वह पिछली हडताल से भी अधिक सफल रहेगी। भाषण मे आकर उसने राजनीति की नपुसकता का बखान करते हुए कहा था कि जहाँ राजनेताओ की शक्ति समाप्त हो जाती है वहीं यूनियन की शक्ति शुरू होती है। यह बात उसने इसलिए कहा था क्योकि वे पचहत्तर मजदूर जिन्हें [illegible] करके बाहर निकाला गया था उन्होने सबसे पहले मंत्रियो के दरवाजे खटखटाये थे और उधर से निराश हो जाने पर वे अपनी फरियाद लिये यूनियन तक पहुँचे थे। यूनियन ने बातचीत मे मिलकर प्रश्न को शान्तिपूर्वक हल करना चाहा पर कोठीवालो ने जब उन बातो की बात

गिनती नहीं ली तो यूनियन ने बैठक बुलाई और अपने को हड़ताल के लिए विवश पाया।

घर वह काफी देर से लौटा। खाने के बाद जब वह रसोई छोड़कर घर को जाने लगा कि तभी प्रभा ने पीछे से कहा—

—मामा आयी थी।

लालमन ठिठक गया। उसने मुड़कर अपनी बहन की ओर देखा। प्रभा ने दोबारा कहा—

—मामा आयी थी। काफी देर तक तुम्हारी प्रतीक्षा करने के बाद चली गयी।

—क्या कह रही थी?

—ससुराल में जो कुछ गुजरा सुना रही थी। कह गयी है कि कल वह तुमसे मिलने खेत पहुँचेगी।

प्रभा के अंतिम वाक्य ने लालमन के समूचे अस्तित्व को तिलमिला दिया। वह खड़ा रहा। प्रभा ने और कुछ बातें कहीं, पर वह सुन न सका। किसी तरह घर के भीतर पहुँचा और चारपाई पर बैठकर सोचने लगा—कुछ ऐसी बातें जो पहले कभी नहीं सोची थी। सोच रहा था कल अगर किसी बहाने वह खेत न पहुँचना तो अच्छा होता।

रात तो बीतनी थी इसलिए ठिठुरी सिकुड़ी अलसाई चाल से वह बीत कर रही और सुबह होते ही लालमन को अपनी उधेड़बुन के साथ खेत भी पहुँचना था इसलिए सभी बोझ के साथ वह खेत पहुँचा। खेत में उससे पहले केवल जगदीश पहुँचा था। दवनी और सरस काई आधा घंटे बाद पहुँची। इसी जगह पर लालमन ने कभी सभी वसन्ती के साथ मामा की प्रतीक्षा की थी और आज वह यह चाह रहा था कि किसी भी हालत में वह यहाँ न पहुँचे। सरस दूधपीठी लायी थी। एल्यूमीनियम के कटोरे को उसके हाथ से लेकर लालमन ने यह कहते हुए उसे अपनी भात की टोकरी में रख लिया कि बाद में खायेगा। उसके चेहरे की परेशानी स्पष्ट थी। सरस ने कहा—

—आप उदास दीख रहे हैं।

उसने कोई उत्तर नहीं दिया।

कोई पन्द्रह मिनट बाद खाद की टोकरी लिये लालमन के पास से गुजरते हुए सरस ने फिर से पूछा—

—आप परेशान दीख रहे हैं आखिर बात क्या है?

—कहो सुनाता हूँ।

टोकरी को नीचे रखकर सरस पास के पत्थर पर बैठ गयी।

—न जाने इस बात का तुम्हारे ऊपर कैसा असर होगा पर मैं इसे तुम्हारे

शायद रंग देना ही ठीक समझा है। भामा सुभग मेड़ में मिलने आ रही है।

सरस चुप रही और लालमन। उसी स्वर में भामा के सवाल और उद्देश्य की चर्चा की ओर तब अपनी बात कही। अभी कुछ गुनकर भी जब सरस चुप्पी साधे रही तब लालमन ने उसके दोनों हाथों को अपने हाथों में लेते हुए कहा—

—नहीं सरस चाहे कुछ भी हो जाय तुम्हें भूलना असम्भव है।

सरस के होठ फड़के पर वह कुछ बोली नहीं।

—भामा सुभग दूर जा चुकी है। मेरे पास आने के अपने प्रयास से वह और भी दूर जाती रहेगी।

अवसर पाकर लालमन के हाथों से अपने हाथों को धीरे से निकालकर सरस मिट्टी से खेलने लगी। शायद लालमन चाहता था कि सरस कुछ बोले। वह उसे याचनाभरी दृष्टि से देखता रहा। और अन्त तक सरस से जब कुछ भी बोला नहीं गया तो लालमन ने फिर से उसके हाथों को अपने हाथों में जकड़ लिया।

तभी दूर पर दोनों ने एक साथ भामा को आते देखा। दोनों पर एक जैसी प्रतिक्रिया न होते हुए भी दोनों के हृदय की धड़कन तेज हो चली थी। कोई तीन चार मिनट में भामा दोनों के इतने समीप आ जायगी कि उसकी साँसें दोनों को चुभने लग जायेंगी।

भामा जब तक खेत में रही अपने आँसुओं को अपने ही में बाँध रही। उसकी आँखों से आँसू की पहली बूँद उस वक्त टपकी जब वह खेत को छोड़कर पगडंडी पर आ गयी थी। उसके चले आने के बाद लालमन के कानों में उसकी उन सभी बातों की प्रतिध्वनियाँ होती रहीं। वह उसका अंतिम वाक्य था जो लालमन के भेजे को झनझना रहा था। ऐसा प्रतीत हुआ था कि अपनी रुलाई को दबोचते हुए होठों पर कृत्रिम मुसकान लाकर उसने कहा था—

—मैं यह नहीं जानती थी लालमन कि तुम सरस दीदी को प्यार करने लगे हो। जानती तो ऐसा नहीं करती। दीदी मुझे क्षमा कर देना।

जो उसने नहीं कहा उसे सरस ने महसूस किया और जो सरस ने महसूस किया वह यह था—

—सरस दीदी मैं तुम्हारे रास्ते का रोड़ा नहीं

जो लालमन ने महसूस किया वह था—

—मैं तुम्हारे जीवन से निकल रही हूँ।

उसका वह जाना सरस को लालमन से अधिक कठिन प्रतीत हुआ था। काठ की मूर्ति की तरह वह खड़ी की खड़ी रह गयी थी।

लालमन के मस्तिष्क के बवण्डर के कारण खेत की बोआई शिथिल पड़ गयी थी। नाम का जब दिन भर का थका मादा सूरज समुद्र म नहाने के लिए डुबकी लेने जा रहा था उस समय वह सरस के पास पहुंचकर एक गुनाहगार की तरह खड़ा हो जाता है। वह सरस को देखता है और जब सरस उसकी ओर देखती है उस समय उसकी अपनी आखें अपने आप झुक जाती हैं। साहस करके वह दोबारा उसकी आखों के भाव को परखने के लिए नजरें उठाता है और उस रहस्यमय भाव को न समझकर वह पूछ उठता है—

—सरस, तुम्हें मुझसे शिकायत है न ?

सरस ने कोई उत्तर नहीं दिया।

—मैंने कभी माया को प्यार किया था। पर वह समय कभी का बीत गया। अब मेरे जीवन में केवल तुम हो। मुझे तुम्हारी सख्त जरूरत है सरस!

सरस फिर भी चुप रही और लालमन उसी धुन में कहता ही गया।

हड़ताल की सफलता के बाद लालमन खुशी खुशी खेत पहुँचा। यह हड़ताल पिछली हड़ताल से भी अधिक सफल रही। अगाध खुशी के साथ हड़ताल की कविता को गुनगुनाता और खेत के पौधों को सहलाता हुआ वह चट्टान पर जा खड़ा हुआ जहाँ से दूर तक की हरियाली भी उमग में दिखाई पड़ रही थी। उसे विश्वास हो गया था कि धरमेन मरा नहीं था, वह अब भी मजदूरों की धमनियों में दौड़ रहा था। लालमन में जो सशक्तता आ गयी थी वह उसकी अपनी विशेषता से अधिक धरमेन की विशेषता थी। वह अपने एक शरीर में दो व्यक्तियों की शक्ति का आभास पा रहा था। उसके भीतर के संकल्प और निर्भयता में धरमेन की सांसें थी। धरमेन जीवित था उसके भीतर। मजदूरों ने एक बार फिर अपनी शक्ति का प्रदर्शन किया। एक बार फिर सरकार और जमींदार काप उठे। सप्ताह भर की हड़ताल की जो चेतावनी दी गयी थी उसकी जरूरत नहीं पड़ी क्योंकि पहले दिन सरकार को बीच में कूदना ही पड़ा। कोठीवाले को इरादा बदलना पड़ा। सभी कुछ सम्भावना से पहले ही हो गया।

खुशी की मस्ती में झूमते हाथी की तरह लालमन खेत में घूमता हुआ सरस के पास पहुंचा। दौड़कर उसे अपनी बाँहों में कसते हुए वह आत्मविभोर हो कह उठा—

—सरस हड़ताल सफल रही। अब मजदूर अपने को पहचान चुका है, सरस।

उसके बंधन से छूटकर सरस कुछ दूर जा खड़ी हुई। लालमन आगे बढ़ा। उसने फिर से उसे अपनी बाँहों में बाँध लिया और चाहा कि उसके बुलाने पर देने वाले होठों पर अपने प्यासे होठों को रख दे कि तभी सरस ने अपनी सभी शक्ति लगाकर अपने आपको छुड़ा लिया। हैरत से उसकी ओर देखते हुए लालमन

पूछ बठा—

—क्या बात है, सरस ?

—मैं इरादा बदल चुकी हूँ।

—कसा इरादा ? मैं तुम्हारा मतलब नही समझा।

—आपको भी अपना इरादा बदलना होगा।

—पर कसा इरादा ?

—मुझसे अधिक आपकी आवश्यकता मामा को है।

—पागल तो नही हो गयी !

—नही।

—सरस !

—आप मामा को अपना लें।

—क्या कह रही हो ?

—वह जो आपका कर्तव्य है।

—मैं तुम्हे प्यार करता हूँ, सरस। मामा से अब मेरा कोई सम्बन्ध नही।

—मामा आज जिस परिस्थिति म फसी है वह आपके कारण। उसे ठुकरा कर आप पाप करेंगे।

लालमन एकटक सरस को देखता रहा। सरस की आखो म जो चमक रही था वह सकल्प था। लालमन को यह समझते देर न लगी कि सरस उससे दूर जा चुकी है।

वह सरस को देखता रहा। दूर से उल्लास भरी जो आवाजें सुनाई पड़ रही थी व गाँव स आती मजदूरो की जीत की उन्मादित आवाजें थी।